T.T.D. Religious Publications Series No. 1077
Price :

OUR PUBLICATIONS

SRI TIRUMALESH KI SANNIDHI

(Hindi) - Dr. Puttaparthi Nagapadmini

SRI PADMAVATI SANNIDHI

(Hindi) - Prof. I.N.Chandrasekar Reddy

SRI VENKATACHALA MAHATHMYAM (Hindi) - Prof. Yaddanapudi Venkataramana Rao

GOMATHA - JAGANMATHA - Prof. Yaddanapudi Venkataramana Rao

TIRUPPAVAI (Hindi) - Smt. K. Kamala Kumari

LEGENDS OF NAYANMARS

(English) - Smt. Sripada Divya

SRIMAD VALMIKI RAMAYANA AT A GLANCE (English) - Prof. A. S. Raja Rao

COW - OUR MOTHER (English) - Dr. T. Viswanatha Rao

THE GLORY OF BRAHMOTSAVAS OF LORD SRI VENKATESWARA - Dr. T. Viswanatha Rao

Published by **Sri M.G. Gopal,** I.A.S., Executive Officer,
T.T.Devasthanams, Tirupati and Printed at T.T.D. Press, Tirupati.

स्त्रियों के रामायण लोक गीत

तेलुगु मूल :

डॉ. कोलवेन्नु मलयवासिनी

हिंदी अनुवाद :

डॉ. के. लीलावती

तिरुमल तिरुपति देवस्थानम्
तिरुपति

स्त्रियों के रामायण लोक गीत

तेलुगु मूल :

डॉ. कोलवेन्नु मलयवासिनी

हिंदी अनुवाद :

डॉ. के. लीलावती

तिरुमल तिरुपति देवस्थानम्
तिरुपति
2014

STRIYOM KE RAMAYAN LOK GEET

Telugu Version
Dr. Kolavennu Malayavasini

Hindi Translation
Dr. K. Leelavathi

Editor-in-Chief
Prof. Ravva Sri Hari

T.T.D. Religious Publications Series No. 1077
© All Rights Reserved

First Edition - 2014

Copies: 1000

Price:

Published by
M.G. Gopal, I.A.S.,
Executive Officer,
Tirumala Tirupati Devasthanams,
Tirupati.

D.T.P.
Office of the Editor-in-Chief
T.T.D., Tirupati

Printed at
Tirumala Tirupati Devasthanams Press,
Tirupati.

प्राक्कथन

देश के हर गाँव और शहर में रामायण, महाभारत और भागवत की गाथाएँ तो अत्यंत प्रीतिपात्र बन चुकी हैं । यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि हमारे देश में ऐसा कोई प्रांत नहीं हैं जहाँ राम का मंदिर न हो ।

सीता - रामजी तो हमारे देश वासियों के लिए खास तौर से लोक साहित्यकारों के लिए वे दोनों आदर्श दंपती ही नहीं बल्कि आत्मीय बंधु भी हैं । इसीलिए हर साल हम श्रीराम नवमी का उत्सव मनाते हैं । सीता कल्याण तो हर वर्ष उत्सव जैसा ही मनाते हैं ।

''अयोध्या के राम भाई हमारे - तिरछी नजरों वाली सीता भाभी हमारी'' कहते हुए गाँव की युवतियाँ रामायण कथा के पात्रों के साथ रिश्ते जोड़ कर गाती रहती हैं । विशेषतः रामायण के स्त्री पात्रों के साथ ग्रामीण स्त्रियाँ अपनी सहानुभूति व्यक्त करती हुई जो गीत गाती हैं, वे गीत दिलों को छू जाती हैं ।

राम कथा प्रेम की कथा है । इसी कारण कोलावेन्नु मलयवासिनीजी ने रामायण कथा के स्त्री पात्रों को दृष्टि में रखकर ग्रामीण स्त्रियों द्वारा गाये गए गीतों को लेकर तेलुगु मे ''पौराणिक पुरंध्रुलु'' नामक पुस्तक की रचना की है। सीतादेवी के खेल, सीता-राम के वैवाहिक जीवन की घटनाएँ, कुश-लव के पराक्रम, सीता-राम का अनुराग, शांता, मांडवी, श्रुतकीर्ति पात्रों की मनःप्रवृत्तियाँ, आदि विषयों को समझाने वाले गीतों को ही लेखिका ने इस पुस्तक में स्थान दिया है । इसमें कोई शक नहीं है कि ये गीत पंडितों को और साधारण लोगों को आकर्षित कर पायेंगे ।

तिरूमल तिरूपति देवस्थानम ने धार्मिक ग्रंथों के प्रकाशन क्रम मे **'स्त्रियों के रामायण लोक गीत'** नामक इस ग्रंथ को स्वीकार कर प्रकाशित करवा रहा है । विश्वास किया जा रहा है कि पाठक गण इसे आत्मीयता के साथ स्वीकारेंगे ।''

सदा श्रीहरि की सेवा में

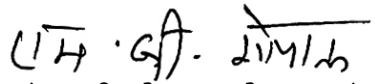

(एम.जी.गोपाल, ऐ.ए.एस)
कार्यनिर्वहणाधिकारी,
तिरुमल तिरुपति देवस्थानम्,
तिरुपति

चमेली फूलों की माला

महाकवियों की रचनाओं में स्त्री पात्रों से संबंधित कई रचनाएँ पाई जाती है । आंध्र की स्त्रियों द्वारा बहुत ही प्यार से गाये जाने वाला साहित्य भी बहुत है । उसे ही लोक साहित्य की संज्ञा दी गयी है । इसमें भी स्त्रियों द्वारा रची गई कथाएँ और उनके द्वारा प्यार से गुंथी हुई घटनाएँ अनेकानेक हैं । मेरा छोटा सा प्रयास रहा है कि स्त्रियों के हृदय से निकल कर गीत रूप धारण करने वाले रामायण, महाभारत, भागवत आदि कथाओं के गीतों में पौराणिक धुरंधरों की विशेषताओं को प्रकट करूँ ।

प्रमुख रूप से स्त्रियों से संबंधित रामायण के गीत करीब पचास से भी अधिक हैं । इनमें प्राप्त ऐसी कई घटनाएँ हैं जो शिष्ट साहित्य में नहीं मिलती हैं । वे तो केवल अंतर्गत हृदय की तरंगें हैं । सीताजी के खेलों को, उनके संवादों को भी इन लोक कवयित्रियों ने गीतों के रूप में संजोकर रखा है । इस प्रकार यह रचना काफी तादाद में प्राप्त रामायण गीतों में प्रस्तुत स्त्रियों की रोचक गाथाओं की विशेषताओं को प्रस्तुत करती हैं । इस कार्य में अगर श्रीनिवास की कृपा हो तो जल्दी ही भारत और भागवत आदि रचनाओं में पाई जानेवाली स्त्रियों से संबंधित लेखों को भी बाहर लाने का प्रयास करूँगी । अब प्रस्तुत विषय है -

''नारदं परिप्रपछ वाल्मिकिर्मुनिपुङ्गवः''

संस्कृत में रामकथा का प्रारंभ वाल्मीकि द्वारा नारद से किये गए प्रश्न से प्रारंभ होता है, इसी प्रकार कहा जाता है कि आंध्र में भी लोक साहित्य का प्रारंभ भी उसी प्रश्न के साथ हुआ है । अब प्रश्न है ।

''उत्तमुनी पेरेमी ? ऊरू पेरेमी ?
सत्य पुरूषुला गन्न साध्वी पेरेमी ?''

अर्थात् ''उत्तम पुरूष का नाम क्या है ? वे कहाँ के रहने वाले हैं ? सत्य पुरूषों को जन्म देनेवाली उस साध्वी का नाम क्या है ?''

जवाब है रामायण का कथा सार। छोटे बच्चों के लिए आंध्र की माँ के मुँह से निकली है, यह लोरी गीत।

''उत्तमुडु दशरथुडु - वूरू अयोध्या
सत्य पुरूषल गन्न साध्वी कौसल्या
इल्लांडृ मुग्गुरे आ दशरथुनकु
पिल्लांडृ नलुगुरे पेरूगलवारू
अयोध्यालो वारु अंदरून्नारू
सयोध्या लो वारु सरि लेनि वारू
श्रीराम जयराम श्रृंगाररामा
कारूण्य गुणधाम कल्याणरामा
जगतिपई रामय्य जन्मिंचिनाडु
सत्यंबु लोकान स्थापिंचिनाडु
इल्लालितोपाडु हिंसपड्डाडु
तल्लिदंडृलमाट चेल्लिंचिनाडु
एडेडु एंड्लू पदुनालुगेंड्लु
एट्टुलुंटिवि नीवु नट्टडिविलोना ?
लक्ष्मण्ण ना मरिदि रक्षिस्तिवुंटे
ना केमि भयमम्मा नट्टडविलोना

रामुडंतटिवाडु रट्टुपड्डाडु
मानवुलकेट्लम्मा माट पडकुंडा
देवुडंतटिवाडु जननिंदपडेनु
मानवुलकेंतय्या माट पडकुंडा''

अर्थात् ''राजा दशरथ उदात्त पुरूष हैं। अयोध्या उनका नगर है। सत्य पुरूषों को जन्म देने वाली साध्वी है कौशल्या। दशरथजी की पत्नियाँ हैं तीन। च्चे चार हैं जिन्होंने बहुत नाम कमाया है। वे सभी अयोध्या में रहते हैं। मिलकर रहने में उनकी बराबरी कोई नहीं कर सकते हैं। श्री राम जयराम श्रृंगार राम, कारूण्य गुण धाम कल्याण राम। इस जगत में रामजी ने जन्म लिया है। इस जगत में उन्होंने सत्य की स्थापना की है। पत्नी के संग कष्ट झेले। माँ - बाप की बातों का मान रखा है। सात और सात, चौदह सालों तक कैसे रह पाए उस घने जंगल में ? मेरे देवर लक्ष्मण मेरे साथ हैं तो मुझे उस घने जंगल में भी डर किस बात की। श्रीराम जैसे भगवान भी निंदा के शिकार हुए हैं। तो हम जैसे साधारण मानव बच कैसे सकते हैं ? भगवान समान मानव को भी लोक - निंदा सहनी पड़ती है। साधारण मानव इस से बच कैसे सकते हैं ?

रामायण कथा की इस प्रकार की उदात्त विचारधारा हर तेलुगु प्रांत की माँ के मुँह से और तेलुगु प्रांत के हर घर में इसी प्रकार प्रश्नोत्तर रूप में, प्रतिध्वनित होती रहती है। यह अक्षर गीत है। शिष्ट लोग परंपरा के रूप में रामायण कथा का पारायण कर कृतार्थ हुए हैं और लोक कवि इस रामायण कथा को लोरी के रूप में गाकर चरितार्थ हुए।

''एनुगु एनुगु नल्लना
एनुगु कोम्मुलु तेल्लना
एनुगुमीदा रामुडू
एंतो चक्कनी देवुडू....''

''रामा लाली, मेघा श्याम लाली'' कहते हुए लोरी गीत गाना, बच्चे कुछ बडे हो जाएं तो श्रीराम को भाई मान कर उन का भक्ति के साथ भजन करना, फिर बच्चों में सोचने की क्षमता आने पर इस प्रकार के गाने सुनाना कि,''हाथी हाथी काला हाथी, हाथी के दांत सफेद हैं, हाथी के ऊपर राम विराजमान हैं, बहुत अच्छे भगवान हैं।'' इस प्रकार गाते हुए बच्चों के सामने श्रीराम की सुंदर छवि को दिखाना आदि संप्रदाय जनित संस्कार कार्य हैं ।

लडकियाँ खेलते समय तन्मय होकर यह गीत गाती हैं,

''सीतम्मवाकिटा सिरिमल्ले चेट्टु
सिरिमल्ले चेट्टेमो चितकबूसिंदि
चेट्टु कदलकुंडा कोम्मवंचंडि
कोम्मविरगकुंडा पूलुकोयंडी
कोसिना पूलन्नी रासी पोयंडी
अंदुलो पेदपूलु दंड गुच्चंडी
दंड तीसुकुवेल्ली सीतकिव्वंडी
दाचुको सीतम्मा रामुडंपाडु
दोड्डी गुम्ममूलोन दोंगलुन्नारू
दाचुकोकुंटेनु दोचुकुंटारू''

''सीताजी के आंगन में चमेली का पौधा है, चमेली के पौधे पर खूब सारे फूल खिले हैं। उस पौधे को हिलाए बिना, डाली को झुकाएं, डाली टूटे बिना फूलों को तोडिये, तोडे हुए फूलों के ढेर लगाइये। उनमें से बडे फूलों को चुन कर माला बनाइये। उस माला को ले जा कर सीताजी को दीजिए। हे सीता ! माला को हिफाजत से रखो, क्योंकि इसे रामजी ने भेजा है। पिछवाडे में चोर छिपे हैं, अगर छिपाओगी नहीं तो वे चुरा कर ले जायेंगे।'' इस प्रकार आंध्र के लोक कवियों ने सीताजी के आंगन में चमेली के पौधे को बोकर उस में फूलों को भी उगाया है। फिर उस पौधे को हिलाए बिना, डाली टूटे बिना अत्यंत श्रद्धा के साथ फूलों को तोडा। उन फूलों में से बडे फूलों को चुन कर उन की बडी माला बना कर - उस माला को ले जाकर भक्ति के साथ सीताजी को समर्पित भी किया। फिर उन्होंने यह दर्शाया कि वह माला उन्होंने समर्पित नहीं किया बल्कि श्रीराम ने भिजवाया है। फूलों को तोडना फिर उसकी माला बनाना ये सब स्वयं करने के बावजूद भी यह कहना कि इस माला को रामजी ने भिजवाया है, इसमें जो गौरव है, सम्मान की भावना है उसे उन्होंने जाना है। लोक कवियों की भाव - संपदा इतनी उदात्त है।

सीताजी के अंगन के समान ही लोक कवियों के अंगन में भी सीतादेवी से संबंधित चमेली के पौधे पर बहुत सारे फूल खिले हैं। कई गीत हैं जो छोटे और बडे भी, सब गीत तेलुगु प्रांत में व्यावहारिक रूप से प्रसिद्धि पा चुकी हैं। उन गीतों में से केवल बडे गीतों को ही लेकर इस पुस्तक में माला के रूप में रखकर मैं ने उनकी समीक्षा की है ।

गाँव में खेत खलिहानों के बीच मेरा बचपन बीता और घर में दादी और माँ से हर रोज पौराणिक गीतों को सुनने का मौका मिला, ये सब मेरे अंदर लोक साहित्य के प्रति प्रेम जगाने के लिए कारण बने हैं। मेरे पिताजी श्री आंड्र शेषगिरिराव द्वारा संकलित पुस्तकों में निक्षिप्त रामायण गीत, श्री कृष्णश्री द्वारा रचित स्त्रियों के रामायण गीत, मेरी दादी के द्वारा सुनाये गए गीत, और मेरी दादी के पास आनेवाली दादियों से सुन कर लिखे गए गीत आदि सब इस पुस्तक रचना में सहायक बने हैं।

वाल्मीकि रामायण कथा से भिन्न घटनाएँ, पात्र चित्रण की वैविध्यता का विवरण इस में पाया जाता हैं। सीता और श्रीराम से संबंधित सभी विषयों की जानकारी को मैं ने कथा की सभी घटनाओं और अन्य पात्रों के माध्यम से तथा पक्षियाँ, वृक्ष आदि शीर्षकों के अंतर्गत प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

अयोध्या के श्रीराम तो हमारे भाई है, और तिरछी नजरों वाली सीता हमारी भाभी हैं कहते हुए श्रीराम को भाई और सीता को भाभी मानकर प्रेम जतानेवाले इन लोक कवियों के रस भरे गीतों में व्यक्त माधुर्य को दिखाना ही मेरा प्रधान उद्देश्य है।

सीतादेवी के आंगन में खिले गीत मालाओं में से बडे फूलों से गूँथे हुए इस लेख माला को भक्ति के साथ सीता-राम को ही समर्पित कर रही हूँ। सीता-राम द्वारा धारण किये गए इस माला के भाव - सौंदर्य को आँध्र के पाठकगणों द्वारा आस्वादित कराने का अल्प प्रयास मैं ने किया है।

यह पुस्तक तिरूमल तिरूपति देवस्थानम ने प्रकाशित करने के लिए स्वीकारा है, उसके लिए उनकी सदा आभारी रहूँगी।

स्त्रियों द्वारा रचित आंध्र के लोक साहित्य के सौंदर्य को हिंदी जगत तक पहुँचाने के लिए आंध्र विश्वविद्यालय, हिंदी विभाग के विश्रांत आचार्य डॉ. के. लीलावती ने सहर्ष स्वीकार कर मेरी पुस्तक ''पौराणिक पुरंध्रुलु'' का हिंदी अनुवाद ''पौराणिक धुरंधर'' शीर्षक से अनूदित किया है। यह मेरे लिए आनंद का विषय है। डॉ. के. लीलावती ने अब तक तेलुगु साहित्य से संबंधित कई लेख, उपन्यास, कहानियाँ और कविताओं का हिंदी अनुवाद अत्यंत सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया है। अब मुझे आनंद हो रहा है कि यह पुस्तक ''पौराणिक पुरंधुलु'' भी उन्हीं के हाथों अनूदित हुई है। इस के लिए मैं उन्हें हृदयपूर्वक धन्यवाद अर्पित करती हूँ।

मैं आभारी हूँ कि इस हिंदी अनुवाद को भी श्री श्रीनिवास की कृपा से तिरूमल तिरूपति देवस्थानम् ने ही प्रकाशित करने की स्वीकृति दी है।

सदा श्री श्रीनिवास की कृपा की कामना करती हुई....

भक्ति सहित

भवदीय

मलयावासिनी

दो शब्द

लोक साहित्य चाहे किसी भी प्रांत का क्यों न हो वह उस प्रांत की सांस्कृतिक गति की निर्मलता, सहजता, एवं अनुभूति की तीव्रता को व्यक्त करता है। इस कारण, लोक साहित्य को पढने से या सुनने से आज का मानव अपने संत्रस्त जीवन में शांति का एहसास कर पाता है। क्योंकि लोक साहित्य में विशेषतः लोक गीतों में निक्षिप्त स्वच्छंदता, मिठास, सहजता, आदि गुण जो लोक साहित्य की प्रमुख विशेषताएँ हैं, उन गीतों को सुनते हुए लोग अपने गमों को अनायास ही भूल जाते हैं। अन्य भारतीय लोक साहित्यों की तरह आंध्र प्रांत में भी लोक साहित्य का अक्षय भंडार है। यहाँ तेलुगु लोक साहित्य में भी आंध्र वासियों की जन - संस्कृति का एक विलक्षण रूप पाया जाता है जो भारतीय संस्कृति का ही एक अंग है। सारी प्रादेशिक संस्कृतियाँ सहज ही जाकर अंततः उस मूल प्राण भारतीय संस्कृति में समा जाती हैं। इस पुस्तक में भारतीय संस्कृति में चार चाँद लगाने वाली आंध्र संस्कृति को व्यक्त करने में सक्षम कुछ तेलुगु के लोक गीतों का अध्ययन करते हुए उनका विश्लेषण किया गया है। आंध्र के लोक साहित्य में रामायण से संबंधित कई गीत हैं। उनमें निहित नारी पात्रों का विश्लेषण करना ही इस पुस्तक का प्रमुख उद्देश्य रहा है। इसी उद्देश्य को हिंदी जगत तक पहुँचाने के लिए मैं ने निश्चय किया है। इसके लिए मैं ने प्रो. मलायावासिनी द्वारा रचित ''पौराणिक पुरंध्रुलु'' पुस्तक को हिन्दी में अनुवाद करने के लिए चुना है। इस पुस्तक में लेखिका ने स्त्रियों के हृदय से निकली और गेय रूप धारण किये गये गीतों का विश्लेषण किया है। वैसे भी रामायण गीतों का अपनी विशेषता है। इनमें ऐसी

कई घटनाएँ हैं जो शिष्ट साहित्य में भी उपलब्ध नहीं है । रामायण कथा से संबंधित स्त्रियों के गीतों की विशेषताओं को ही अनुवाद द्वारा इस पुस्तक में वर्णित किया गया है ।

प्रो. मलायावासिनी आंध्र विश्वविद्यालय के तेलुगु विभाग में प्रोफेसर के पद पर कार्यरत रहीं । तेलुगु साहित्य के प्रति उनका प्रेम उनके द्वारा रचित पुस्तकों के आधार पर परखा जा सकता है । वे एक अच्छी वक्ता भी हैं । तेलुगु के कई साहित्यिक संस्थाओं से वे जुडी हुई हैं । उन्होंने रामायण से संबंधित कई पुस्तकें लिखीं । उनके लेख सामाजिक चेतना से अभिभूत हैं । वे कई सम्मानों से गौरवान्वित हुई हैं । लोक साहित्य के प्रति उनकी विशेष रुचि रही है । धार्मिक विषयों को अत्यंत सरल शैली में लिख कर साधारण जनता में धार्मिक विषयों के प्रति आसक्ति जगाने में वे समर्थ हैं । उनके सरल एवं सहृदय व्यक्तित्व के प्रति सभी लोग अनायास ही आकर्षित हो जाते हैं । ऐसे महान विदूषीमणी की पुस्तक ''पौराणिक पुरंध्रुलू'' को हिंदी में अनुवाद करने की अनुमति उन्होंने मुझे दी है, इसके लिए मैं सदा उनकी आभारी रहूँगी । हिंदी साहित्य में तेलुगु लोक साहित्य की कमी को महसूस कर मैं ने यह कदम उठाने का साहस किया है । मैं ने लेखिका के विचारों को यथावत हिंदी में लाने का प्रयास किया है । जब कभी मुझे तेलुगु लोक गीतों को समझने में दिक्कत होती थी तो प्रो. मलयावासिनीजी बडे प्यार से समझाकर मेरा हौसला बढाती थीं । यह सच है कि उनकी सहायता के बिना इस कार्य को मैं कभी पूरा नहीं कर पाती । केवल वे ही नहीं उनके पति प्रो. विठल मूर्ति जी भी बहुत ही आत्मीयता के साथ बातें कर

मुझे विश्वास दिलाते थे कि मैं यह कार्य कर सकती हूँ । उन दोनों के कारण ही मुझे रामायण कथा पढने का और अनुवाद करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है । इस के लिए मैं उन्हें तहे दिल से नमन करती हूँ । सदा उन दोनों की आभारी रहूँगी ।

इस कार्य को निभाने में हिन्दी विभाग के शोध - छात्रा ए.अनीता, ने भी काफी सहायता दी है, और टंकन कार्य का भार तो हमारे विभाग के छोध-छात्र जी.प्रसाद ने पूरी तरह निभाया है । इन दोनों को मैं हृदयपूर्वक आशीर्वाद देती हूँ । प्रसाद, दालय्या ने बहुत मदद की है । इन तीनों को मैं हृदय पूर्वक आशीर्वाद देती हूँ । विशेषतः मेरे पति श्री. कृष्ण मोहन जी को मैं धन्यवाद अर्पित करती हूँ, जिन्होंने पग पग पर मुझे सहायता और प्रेरणा दी है । अंत में मैं उन सभी लोगों के प्रति अपना आभार व्यक्त करना चाहती हूँ जिन्होंने प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से मेरी सहायता की है ।

सीता - राम की कृपा के बिना मैं जानती हूँ कि एक अक्षर भी मैं लिख नहीं पाती । उन्हें शत कोटि प्रणाम । सदा उनकी कृपा बनी रहे, यही मेरी प्रार्थना है ।

मैं आशा करती हूँ सभी विद्वतजन मेरे इस छोटे से प्रयास को स्वीकारेंगे ।

के. लीलावती

विषय सूची

1. श्री सीतारामजी के वैवाहिक महोत्सव की घटनाओं में सीता(सीतारामकल्याणघट्टाललो सीता)

1.1 सीता का विवाह (सीताकल्याणमु) - 1
1.2 राघव विवाह महोत्सव (राघवकल्याणमु) - 4
1.3 श्रीरामजी की नाराजगी (श्रीरामुलवारि अलक) - 13
1.4 सीता की बिदाई (सीता अप्पगिंतलु) - 17

2. सीता के खेल (सीता आटलु)

2.1 सीता - चौपड खेल (सीता वामनगुंटलु) - 25
2.2 सीता के लुका - छुपी खेल (सीता दागुडुमूतलु) - 27
2.3 सीता - इमली के बीजों का खेल (सीताऊदरगुप्पिलु) - 28
2.4 सीता - गुलाल डालने का खेल (सीतावसंतमु) - 29
3. सीता - रजस्वला (सीता समर्त) - 33
4. सीता - दरवाजे की कुंडी (सीता गडिय) - 36
5. सीता का कारावास (सीता चेर) - 42
6. सीता के निशान - सीता की मुद्रिकाएँ (सीता आनवाल्लु - सीता मुद्रिकलु) - 50
7. सीता का अग्नि प्रवेश (सीता अग्निप्रवेशमु) - 56
8. सीता - पंखा (सीता सुरटि) - 66
9. सीता के दोहद (सीता वेविल्लु) - 73
10. सीता - लंकायज्ञ (सीता - लंकायागमु) - 82

11. सीता - लक्ष्मण (सीता - लक्ष्मणुडु) - 88
12. सीता - भरत (सीता - भरतुडु) - 109
13. सीता - शत्रुघ्न (सीता - शत्रुघ्नुडु) - 113
14. सीता - हनुमान (सीता - हनुमंतुडु) - 116
15. सीता - कुश लव
    (सीता - कुशलवुलु - लवकुशुलु) - 133
16. ऊर्मिला - 166
17. माण्डवी - 182
18. श्रुतिकीर्ति - 184
19. शांता - 195
20. कौसल्या - 217
21. सुमित्रा - 230
22. कैकेयी - 242
23. मंथरा - 251
24. शूर्पणखा - 257
25. मंडोदरी - 273
26. सीता - पक्षी (सीता - पक्षुलु) - 279
27. सीता - वृक्ष (सीता - वृक्षमुलु) - 292

* * *

स्त्रियों के रामायण लोक गीत

आदिकाल से विभिन्न भाषाओं में रामायण कथा संस्कृत भाषा से अनूदित होती आ रही है । प्रारंभ में रामायण गाथा को अपने ही देशवासियों को सुनाने का प्रयास किया गया था । बाद में रामायण की कथा को वाल्मीकि रामायण के अनुकूल रचने के प्रयास हुए । यह कार्य शिक्षित वर्ग द्वारा संपन्न हुआ है ।

लेकिन लोक कवियों ने कभी भी वाल्मीकि रामायण गाथा को अनुकरण करने की चेष्टा नहीं की । वे सदा अपने प्रांत के रीति - रिवाजों के अनुकूल इस गाथा को गढने के प्रयत्न करते रहे, और रामायण गाथा के पात्रों को भी अपने प्रांत के लोगों के अनुकूल ही चित्रित करते रहे । इस प्रकार लोक कवियों ने एक स्वतंत्र शैली को अपनाया है ।

राम कथा तो भारत के सुदूर प्रांतों के कोने कोने में भी सुपरिचित है । इस परिचित गाथा को, तथा पात्रों को लोक कवियों ने अपने प्रांतों के तदनुरूप ढालने का प्रयास किया है । इस प्रकार करने के कारण यह रामायण गाथा लोगों के दिलों की गहराई तक पहुँच पायी है ।

इस प्रकार सब के दिलों तक पहुँचने से लाभदायक सिद्धि ही प्राप्त हुइ है । लोगों के द्वारा रामायण गाथा के निरंतर स्मरण से, रामायण गाथा की घटनाओं को बार बार मनन करने के कारण और पारिवारिक जीवन में लोग रामायण के पात्रों के क्रिया - कर्मों से अपने दैनंदिक

क्रिया - कर्मों की तुलना करने के कारण, उन के जीवन में एक प्रकार से उदात्तता एवं नैतिक मूल्य स्थापित होने लगे। इससे यह सिद्ध होता है कि लोगों पर शिष्ट कवियों की रचनाओं से अधिक लोक कवियों की रचनाओं का प्रभाव ही अधिक रहा है। शिष्ट कवियों की रचनाओं से अधिक लोक कवियों की रचनाएँ समाज में अधिक प्रचलित हुई, विशेषतः स्त्रियों पर इस का प्रभाव अधिक पड़ा है।

विशेषतः स्त्रियों में यह जागरूकता पैदा हो गई कि उनमें कैकेयी और कुब्जा जैसी स्त्रियों के गुण न आ जाएँ, इसलिए सदा वे अपने कर्मों को सुधारने में जुटी रहीं। वे अपने आप को बदलने में ऐसी जागरूकता दिखाने लगीं कि मुसीबतों को झेलने के क्षणों में सीता जैसी, पातिव्रत्य को निभाने में ऊर्मिला समान, ननद स्वभाव को जताने के लिए शांता जैसी बन सकें।

भले ही इनकी रचनाएँ वाल्मीकि जैसी रचनाएँ जैसी न हो, फिर भी अपने प्रांतों के संस्कार एवं सभ्यता को आत्मसात करते हुए इन लोक कवियों ने रामायण कथा में यथासाध्य परिवर्तन करते हुए जिस रामायण गाथा को रचा है उस गाथा से बच्चों में और स्त्रियों में अवश्य सुधार हुए हैं। इन लोक कवियों की रचनाओं में कुछ विषय वाल्मीकि की रचनाओं के स्तर की न हों, लेकिन कुछ घटनाओं का वर्णन इन्होंने ऐसे किया है कि यह बात कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि अगर स्वयं वाल्मीकि भी इनको पढ पाते तो वाह वाही दिए बिना नहीं रह पाते।

प्रादेशिक तत्वों के अनुकूल ढलकर बहने वाले लोक कवियों के साहित्य ने वाल्मीकि रचित रामायण के महत्व को घटाया नहीं बल्कि उसके प्रति लोगों में और भी श्रद्धा की भावनाओं को बढाने में सहायक

सिद्ध हुआ है। इतना ही नहीं उनकी बुद्धि का भी विकास हुआ है। इसके पश्चात् उन रचनाओं को पढ़ने की आसाक्ति को जगाने में भी सार्थक सिद्ध हुए।

लोक साहित्य में सभी रामायणों के पात्र अपने अपने प्रांतों के व्यक्ति ही रहे। जैसे ''सीताराम - विवाह महोत्सव'' के पात्रों ने अपने अपने प्रादेशिक परिवेश के रीति - रिवाजों को ही दर्शाया है। जैसे उदाहण के तौर पर बंग प्रदेश की वैवाहिक रीति - रिवाजों की घटनाओं के अनुसार विवाह के समय दूल्हा, दुल्हन को खोज कर लाने की एक प्रथा है। दुल्हन अपनी सखियों के संग जाकर एक अंधेरे कमरे में बैठी रहती है, तब दूल्हे को उस अँधेरे कमरे से अपनी दुल्हन को खोज कर लाना पडता है। बंग रामायण में इस रीति को दिखाया गया है। यहाँ यह वर्णित किया गया है कि रामजी जब सीता मैय्या को उस अँधेरे कमरे में खोजने गए तब उचित समय देखकर सीताजी अपने बाएँ हाथ के कंगन को खनखनाने लगीं ताकि रामजी आसानी से उन्हें ढूँढ सकें। उस खनखनाहट को सुनकर रामजी आसानी से सीताजी को पहचान पाये और उन्हें वहाँ से लाकर शादी के रस्म रिवाजों को निभाए। इस के अलावा बंग रामायण में और भी एसी घटनाएँ है जैसे कन्यादान के समय दुल्हन के पैरों के पास घी डालना, सिर पर घास के तिनके तथा चावल रखना आदि।

विवाह के उपरांत जब श्रीराम सीता सहित अयोध्या लौट रहे थे तब उनके सामने परशुराम आये और उन्होंने श्रीराम से कहा कि ''शिवजी के पुराने धनुष को तोडना कोई बडी बात नहीं है - और अब जो धनुष मैं दूँगा उसे तोड कर दिखाओ।'' रामजी ने उस चुनौती को

स्वीकार किया । इस दृश्य को देखकर बंग रामायण की सीता सोचने लगती है कि मिथिला नगर में शिव धनुष भंग कर श्रीराम ने मुझसे जिस प्रकार शादी की ऐसे ही यहाँ किसी युवती से कहीं शादी न कर बैठे ? यह सोच कर वे डरने लगीं । पराये पुरूष के वन में कई हफ्ते रहने के कारण सीताजी को रामजी ने तिरस्कृत किया था । इस संदर्भ में वाल्मीकि की सीता के संवाद बहुत ही संक्षिप्त हैं । लेकिन बंग रामायण की सीता यह सोच कर दुखित होती हैं कि खेल में ही सही कभी मैं ने छोटे लडकों को भी गोद में उठाकर नहीं खेला, ऐसी रहनेवाली मुझ पर आज यह कैसी विपत्ति आ पडी है ?

कहा जाता है कि अशोक वन में जब सीताजी ने राक्षसों के हाथ का खाना खाने से इंकार कर दिया तो स्वयं इंद्र जी स्वर्ग से खाना लेकर आये थे ।

बंग रामायण में विभीषण, रामजी से एक विचित्र प्रश्न करते हैं ''कुंभकर्ण, अतिकाय आदि बगावत कर युद्ध करते हुए मर गए और स्वर्ग लोक पा गए । आप के शरण में आकर आखिर मैं ने क्या पाया है ।'' यह कहा जाता है कि एक बार दुर्गा देवी सीता जैसी बन कर रामजी के सामने आयीं तो तुरंत रामजी ने पहचान लिया था ।

ऐसे कई अनगिनत विषय भी तेलुगु के लोक साहित्य में पाये जाते हैं । आंध्र के लोक साहित्य में रामायण से संबंधित कई गीत भी हैं ।

उन सब का विश्लेषण करते हुए, उनमें निहित स्त्री पात्रों का विश्लेषण करना ही इस ग्रंथ का मुख्य उद्देश्य है । रामायण के गीतों को तीन शीर्षकों में विभाजित किया जा सकता है । जैसे

१. रामायण गाथा की घटनाएँ

२. रामायण के पात्र

३. रामायण गाथा में निहित पशु - पक्षी आदि ।

लोक साहित्य के रामायण गाथाओं में सीताजी के जीवन की हर एक घटना को अत्यंत मनोहर ढंग से चित्रित किया गया है ।

वे घटनाएँ इस प्रकार हैं - सीताराम का वैवाहिक महोत्सव, विवाह के उपरांत सीताजी के अयोध्या के आगमन के उपरांत घटित घटनाएँ, जैसे सीता के खेल, सीता का वसंतोत्सव, सीता की रजस्वला की घटनाएँ, सीता के दरवाजे की कुंडी की घटना आदि ।

वनवास में घटित घटनाएँ कुछ - जैसे सीता जब बंदी बनाई गयीं, सीतादेवी के चिह्न, सीतादेवी की मुद्रिकाएँ, सीता के अग्नि प्रवेश से संबंधित घटनाएँ आदि ।

वनवास के पश्चात् जब सीताजी अयोध्या लौटकर आयीं, उस के बाद की कुछ घटनाएँ, जैसे सीताजी का पंखा, सीताजी के दोहद आदि ।

लोक साहित्य के कवियों ने सीताराम के जीवन की विभिन्न घटनाओं को उक्त शीर्षकों के अंतर्गत चित्रित किया है ।

* * *

1. श्री सीतारामजी के वैवाहिक महोत्सव की घटनाओं में सीता

वाल्मीकी रामायण में सीताजी के वैवाहिक घटनाओं का विशेष वर्णन न होने के कारण उस में संक्षिप्तता आ गयी है । इस रामायण गाथा में केवल राजा जनक अग्नि को साक्षी मानकर अपनी बेटी सीता का कन्यादान करना, श्रीराम का पाणिग्रहण, फिर धन और अमूल्य वस्तुओं के साथ वाहन आदि देकर राजा जनक द्वारा सीता की विदाई की घटनाएँ ही हैं ।

लेकिन लोक साहित्य में सीता - रामजी का विवाह अत्यंत भक्ति एवं श्रद्धा के साथ अनेक रीति - रिवाजों के बीच संपन्न होने के वर्णन मिलते हैं । जैसे सीताजी का विवाह, राघवजी का विवाह, श्रीरामजी का रूठना, सीताजी की विदाई, और सीताजी को ससुराल भिजवाने की घटनाओं को उक्त शीर्षकों के साथ, विशेषकर छः गीतों सहित, सीता - रामजी की वैवाहिक घटनाएँ अत्यंत रोचक ढंग से रची गयी हैं ।

1.1 सीता का विवाह

प्रस्तुत गीत में सीताजी का वर्णन इस प्रकार है । बाल्यकाल में ही सीताजी खेल खेल में ही धनुष को उठा ली थीं, जिसे देवतागण भी उठाने में असमर्थ थे । उसी समय राजा जनक ने निश्चय कर लिया था कि जो भी इस धनुष को तोडने में समर्थ होंगे उन्हीं के साथ सीताजी का विवाह संपन्न करेंगे । जिन पाद चरणों में शिलाओं को भी पवित्र करने की क्षमता है ऐसे धनुषधारी श्रीराम ने उस धनुष को तीन बार

झुकाकर अनेक ध्वनियों सहित धनुष - भंग करने में समर्थ हुए। तब राजा जनक अत्यंत प्रसन्न हो कर राजा दशरथ को आमंत्रित करते हैं। तब राजा दशरथ अपने परिजनों तथा गुरु वशिष्ट के संग वहाँ पधारते हैं। उन सब लोगों ने निश्चय किया कि विवाह के लिए मीन लग्न शुभ है। उस शुभ लग्न समाचार को पाने के बाद कौशल्या, सुमित्रा, कैकेयी महारानियों ने गणेश जी की पूजा आयोजित कर सभी बुजुर्ग सुहागिनों को हल्दी कूटने निमित्त आमंत्रित किया। इस न्यौते का वर्णन प्रस्तुत गीत में यों वर्णित है।

''पट्टूअंचु चीरातो पणति रावम्मा
मट्टेल पिल्लेला मगुवा रावम्मा
सेलंचु चीरतो चैलिय रावम्मा
नीलंचु चीरतो नेलता रावम्मा''

अर्थात् ''रेशमी साडी पहनी हुयी हे सुंदरी आजाओ, सुन्दर नूपुर पहनने वाली भामा आजाओ, सेलम की साडी पहनी ओ सखिया आ जाओ, नीले रंग की साडीवाली सुंदरांगी आजाओ।''

साडियों की फडफडाहट लिए सभी स्त्रियां आ गायीं। उनके संग नीली आँखों वाली, लम्बे बालोंवाली भी चली आयीं। उन सबने मिलकर कहा ''हे बालाएँ आजाइए, हम सब लोग मिलकर हल्दी कूटेंगे।'' फिर कूटने में जुट गयीं। जिन हाथों में भुजा बंद गहने पहनी हुयी थीं, उन्हीं हाथों से वे हल्दी कूट रही थीं, उन्हीं हाथों के साथ ''सुव्वी सुव्वन्नालारा।''[1]

1. यह एक नाटकीय टेक है, जिसे धान कूटते समय आंध्र की ग्रामीण स्त्रियाँ बड़े चाव से गाती है।

गाने की टेक के साथ वे वहाँ रखे हुए अन्य मुख्य अनाजों को भी कूटने लगीं। सभी बुजुर्ग लोगों ने मिल कर बन्दनवार बांधे। उन्होंने पवित्र कलशों को चावल के आटे से भरा। तब पैंतीस हजार देवताओं को संग लिए राजा दशरथ पधारे।

यहाँ लोक साहित्य के कवियों ने विस्तार से प्रीती भोज के विभिन्न पकवानों का वर्णन, दूल्हे के रूप में रामजी को सजाने के विभिन्न विधाओं का वर्णन किया है। रामजी के संग विवाह करने योग्य लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न भी रामजी के बाजू में खडे हुए - उस समय भाई लक्ष्मण सबको तांबूल देते रहे और भरत, शत्रुघ्न पंखा करते रहे। इस प्रकार लोक साहित्य के कवियों ने विवाह में पधारे रामजी का वर्णन किया है। लगता है शायद इस लोक कवि को रामजी के विवाह के विषय को छोड कर दूसरे भाईयों का ध्यान ही नहीं रहा है। यहाँ लोक कवियों की सोच थी कि पटाकों के बीच बरात में आये हुए रामजी के लिए जब तक तीन बार नजर न उतारा जाय तब तक वे दृष्टिदोष से मुक्त नहीं हो पायेंगे।

विवाह से पहले ही राजा दाशरथ, सीताजी के लिए कई आभूषण उपहार के रूप में भेज चुके थे। उन सब गहनों के साथ सीताजी को सजाया गया। उस समय अरुंधतीजी भेंट के रूप में अपनी साडी के आंचल से फूल निकाल कर सीताजी को देती हैं। उस समय ऐसा लगा जैसे राजा दशरथ द्वारा भिजवाये गए गहनों से भी बढकर अरूंधती जी द्वारा दिए गए फूल ही ज्यादा चमकने लगे हैं। अरूंधतीजी का सीता जी के प्रति ममता का वर्णन शिष्ट कवि भवभूति ने इस प्रकार किया

है कि ''जिस अयोध्या में सीता नहीं हैं वहाँ मैं कभी नहीं आऊँगी ।'' यहाँ इस लोक कवि ने तो विवाह के समय ही अरुंधति द्वारा दिए गए फूलों से सीताजी को सजाने का वर्णन कर सीताजी के प्रति उनकी ममता को दर्शाने का वर्णन किया है ।

ब्रह्मगाँठ बाँधना, घूँघट ओढना, गोत्र, नाम आदि बताते हुए दिए जलाना, होम संपन्न करना, पैर धोकर कन्यादान निभाना, विवाह जनेऊ डालना इन सब का वर्णन कर सुहागिनों के हाथ से मंगलसूत्र को स्पर्श करवाने के बाद उसे लोढे के साथ बंधवाना आदि घटनाओं का वर्णन है । ब्रह्मा, ईश्वर, गणेश सामने बैठकर वेद पाठ कर रहे हैं ।

चौथे दिन नागवल्ली और बली देने की प्रथाओं का वर्णन है । सातवें दिन हस्त कंकण और ब्रह्मगाँठ खोलने के वर्णन मिलते हैं । अयोध्या की सारी सुहागिनें दरवाजे की देहली के पास खडी हुई हैं । सीताजी द्वारा गृह प्रवेश करवाने का वर्णन यहाँ प्रस्तुत किया गया है ।

इस प्रकार इन लोक कवियों ने अत्यंत सूक्ष्म विषयों के प्रति भी श्रद्धा भाव के साथ वर्णन करते हुए सीतारामजी के विवाह महोत्सव का चित्रीकरण अत्यंत मनोहर ढंग से प्रस्तुत किया है ।

1.2 राघव विवाह महोत्सव

यह रचना कुछ अंश तक प्रबंध काव्य शैली में रची गयी है । सीताजी की सखियाँ श्रीराम द्वारा शिव धनुष को तोडने तथा श्रीराम के रूप सौंदर्य का वर्णन, सीताजी को सुनाती हैं । इसे सुनकर आतुरता

के साथ महल के गवाक्षों से सीताजी देखने लगती हैं । आठों दिशाओं की ओर दृष्टि पसारने पर भी श्रीरामजी के दर्शन नहीं होते ।

अंत में थककर वे वन विहार के लिए निकल पडती हैं । विरह वेदना के कारण तोते, कोयल की कूक को सह नहीं पाती हैं । उन की यह दशा देखकर सखियाँ दुखित हो जाती हैं । ''प्रसन्न राघव'' में कहा गया है ''सौमित्रेननु सेव्यता'' कहकर लिखा गया है । यहाँ सीताजी चाँदनी रात में रेत पर लेटी हुयी है और कह रही हैं,

''इंता युग्रमुतोडनु ई सूर्यरश्मी एल्ला कायगानु
इन्देला चेलुलारा इंता मत्सरमेटिके
रविरश्मि कादोयम्मा सीता इदी निंडू पुन्नमी चंद्रूडू
नन्निंता वेचेटी मन्मथुनी बट्टी वेइंतामु ।''

अर्थात्

''सूर्य क्यों इतनी प्रचंडता दिखा रहे हैं, हे
सखियाँ, उन्हें इतना घमंड क्यों ?'' तब सखियाँ कहती हैं,
''ओ सीता जी ! यह सूर्य नहीं
यह तो पूर्णिमा का चाँद है'' तब सीताजी कहती हैं -
''मुझे इतने सतानेवाले
कामदेव को पकड कर
बेडियाँ लगा दो ।''

वहाँ जनकजी ने कसम खाई कि सीताजी का विवाह उन्हीं से होगा जो धनुष भंग करने में सफल होंगे । अब सीताजी को डर लगने

लगा कि कहीं रामजी धनुष तोड न पाये तब क्या होगा ? फिर वे तो उनके पति भी नहीं बन पायेंगे । तो जल्दी से उन्होंने मिन्नतें माँगना प्रारंभ कर दिया । तेलुगु लोक गीत में इसका वर्णन है -

''.....गणनायाका
लेक्कालेनी टेंकायालु नीकिस्तु हरिविल्लु विरचिननु
हरुडू पार्वती देविकि मरियुनो गंगाभावानिकी
नवरत्नमुलतोनु पूजलू चेइस्तु हरिविल्लू विरचिननु ।''

अर्थात् ''हे गणेश जी ! अगर वे धनुष तोडने में सफल हो जाएंगे तो मैं तुम्हें अनगिनत नारियल अर्पित करूँगी । अगर वे धनुष तोडने में समर्थ होंगे तो शिव, पार्वती और गँगामैय्या की पूजा नवरत्नों से करुँगी ।'' इन मिन्नतों के साथ वे शांत नहीं हो पायीं । भवरों से, तोतों से, हंसों से, बादलों से विनती करने लगीं कि वे जाकर श्रीरामजी से प्रार्थना करें कि वे आकर धनुष तोडकर उनसे शादी करें । इस तथ्य को प्रस्तुत करनेवाला तेलुगु का लोक गीत है।

''तुम्मेदरो जेप्पवे नीवुअन्दंटु तिरुगाडुचु
हरुनी विल्लु विरिची श्रीरामचंद्रूलनु तन्नु पेल्लाडमनवे
कलिकि चिलुकरो चेप्पवे कारुण्य विभुनितोनु
हरुनी विल्लू विरचि आ रामचंद्रुलनु तन्नु पेल्लाडमनवे
राजहन्सरो चेप्पवे मी राजीवनाभुनितो
हरुनी विल्लु विरची आ रामचंद्रुनितो तन्नु पेल्लाडमनवे
नीला मेघमा चेप्पवे मी नीलावर्णुनीतोनु
हरूनी विल्लु विरची आ रामचंद्रुनीतो तन्नु पेल्लाडमनवे...।''

अर्थात् : हे भ्रमर, तुम तो इधर - उधर घूमते रहते हो । श्रीराम चन्द्रजी से कहो कि वे शिव धनुष तोडकर मुझसे शादी करें । हे तोता, उस कारूण्य भगवान श्रीरामचन्द्र से कहो कि वे शिव धनुष तोडकर मुझसे शादी करें । हे राज हंस, उस राजीव भगवान रामन्द्रजी से कहो कि वे शिव धनुष तोड कर मुझसे शादी करें । हे नील मेघ, उस नीलवर्ण वाले रामचन्द्रजी से कहो कि वे शिव धनुष तोडकर मुझ से शादी करें ।

सीताजी की दशा ऐसी हो गायी थी । इस प्रकार विवाह के पूर्व की ऐसी विरह दशा का वर्णन वाल्मीकी की रचनाओं में नहीं मिलता है । अब रामजी वहाँ राजा दशरध के दरबार में नक्षत्रों के बीच चंद्रमा जैसे चमकते हुए दिखायी दे रहे थे । रामजी ने जब देखा कि शिवजी के उस पुराने धनुष को वे आसनी से तोड सकेंगे तो उन्होंने लक्ष्मण को बुलाकर कहा कि ''हे लक्ष्मण ! जा कर देखो सीता की रुप रेखाऐं कैसी हैं ? उनके पैर, केश, कमर देखकर आओ ।''

''भोजन मोप्पाकुंटे दिनमेल्ला वृथा
आलि ओप्पाकुंटे जन्ममेल्ला वृथा ।''

अर्थात्, श्रीराम कहने लगे, ''जिस दिन भोजन में सब्जियाँ और चटनी वगैरह में स्वादिष्ट न बने हों तो केवल एक वही दिन बेकार जाएगा । लेकिन विवाह के उपरान्त पत्नी भा न जाय, यानी मन को अच्छी न लगीं, तो सारी जिंदगी ही बेकार हो जायेगी । इसलिए हे लक्ष्मण ! जाकर सीता को देखकर आओ ।'' यह कहते हुए उन्होंने बुजुर्गों के अनुभवों की बातों को भी याद दिलवाया है । प्रस्तुत लोक गीत में यह दिखाया गया है ।

''चूचिरावोई लक्ष्मण ! आ सुदति जानकी देविनी
रूपलावण्यमुलु सरिगानु इप्पूडू सीघ्रान चूचिरम्मी
.....
.....
चूचिरम्मी लक्ष्मणा आ सुन्दरी रुपमंता
कडूवेगिरमु चूची कदली रम्मानी पलिके ।''

अर्थात्, हे लक्ष्मण ! देख आओ । सद्गुणी जानकी देवी का रुप - लावण्य, वे ठीक दिखती है या नहीं ? जल्दी देखकर आओ । देख कर आओ, हे लक्ष्मण ! उस सुंदरी के रुप - सौंदर्य को । ''राम ने कहा, ''शीघ्र जाकर शीघ्र लौट आओ ।''

इस प्रकार रामजी ने उन सारी बातों का विवरण दिया जिन्हें देखने की जरुरत है । लक्ष्मण भाई के आदेशानुसार अंतःपुर गए । उस समय सीताजी नवरत्न जटित आसन पर बैठी हुई थीं । तब लक्ष्मण ने क्या देखा वह इस लोक गीत में वर्णित है ।

''ओप्पुचुनुंडगा तप्पका लक्ष्मणुडू लक्षणमुलनु चूसेनु
सोमाकलाला बोलेटी आ सीता पादपद्ममुलु चूसी
तगुननुचु संतोषचित्ताना पोंगूचु चादुरुलो केतेंचेनु
चूची वस्तिनी देवरा सुदति जानकी देविनी
हरिहरादुलू पोगडगा नलवीकादय्या आब्रह्माकैनागानी''

इस लोक गीत का सारांश यह है ''और कोई रास्ता न होने के कारण विवश होकर लक्ष्मण, सीता जी को देखने गए वहां उन्होंने सोलह

कलाओं से युक्त सीताजी के पादपद्मों को देखा तो मन संतोष से भर गया । फिर लौटकर भाई से कहने लगे, सकल गुण संपन्ना जानकीदेवी को देखकर आया हूँ । हरि, महेश और ब्रह्म भी अगर उनकी प्रशंसा करना चाहें तो भी यह उन के वश की बात नहीं हो सकती है ।'' इस प्रकार लक्ष्मण ने भाई को विवरण दिया । लक्ष्मण ने सोलह कलाओं से युक्त सीता जी के केवल पाद पद्मों को ही देखा है । यहाँ लोक कवियों ने यह वर्णन नहीं किया कि लक्ष्मण ने सीता जी की पतली कमर, बडी आँखें, काले केशो को देखा है । यह लोक कवियो की उदात्तता है । केवल सीताजी के चरणों को देखकर लक्ष्मण ने यह सिद्ध किया कि सीताजी की सुंदरता अद्वितीय है । वाल्मीकी ने वर्णन किया है कि सीताजी के चरणों के आभूषणों के सिवाय लक्ष्मण और कुछ नहीं जानते। ''नाहम जानामि केयूरे ...।'' लोक कवियों की धारणा यह है कि विवाह के पहले भी लक्ष्मण ने सीताजी के चरणों के अलावा और कुछ देखा नहीं है ।

भाई के द्वारा देख आने के बाद रामजी ने धनुष भंग किया । तब राजा जनक ने रामजी के संग लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न के साथ अपनी पुत्रियाँ ऊर्मिला, मांडवी, श्रुतकीर्ति का विवाह रचाने की अपनी राय को अयोध्या तक पहुँचाये । विवाह रचाने राजा दशरथ अपनी पत्नियाँ के संग पधारे ।

कई महान मुनीश्वर, लक्ष्मी, पार्वती, अरूँधती, अहल्या, अनसूया आदि लोग भी वहाँ उपस्थित हुए । दुल्हन द्वारा गौरी पूजा निभाना, कन्यादान, मंगलसूत्र धारण, मोतियों के साथ वधु - वर का 'तलंब्रालू'

डालना,[1] सप्तपदी, अरुँधती के दर्शन करवाना, नागवल्ली, दुल्हन को ससुराल वालों को सौंपना आदि का वर्णन यहाँ प्रस्तुत किया गया है ।

अयोध्या पहुचने के उपरांत पति - पत्नी के बीच घटी श्रृंगारपरक घटना का वर्णन यहां लोक कवि ने अत्यंत सुकोमल भाव सहित चित्रित किया है ।

अकेलेपन के क्षणों में अपनी पत्नी को अपने ही हाथों से अलंकृत करने में ग्रामीण जनता बहुत आनंद लेती है । राजाओं के अंत:पुरों में इस प्रकार अलंकृत करने के लिए विशेष दासी जनों को नियमित किया जाता है । ऐसे लोगों को सैरंध्रियां कहते हैं । अज्ञातवास के समय पांडवों की धर्म पत्नी द्रौपदी सैरंध्री बनकर विराट राजा की पत्नी के पास एक साल तक रही । लेकिन यहाँ पति स्वयं अपनी पत्नी को अलंकृत करने की एक सुंदर घटना का वर्णन है - उसी घटना को यहाँ चित्रित किया गया है -

''श्रीरामुडू स्वयमुगा सीताकु
कुरुलू नुन्नाग दुव्वुचू
अलकपंक्तुल बट्टीया कस्तूरी तिल्कम्प्पूडू दिद्दूदेनु
नातिकी विशाल नयनमुल सन्नापू काटूकले दीर्चेनु''

अर्थात् ''स्वयं श्रीरामजी, सीतादेवी के बालो में कंघी करते हुए चेहरे पर नाट्य करने वाले लटों को छूते हुए, मन में श्रृंगार भावनाओं

1. आंध्र प्रदेश में विवाह के समय मंगल सूत्र धारण के बाद हल्दी मिश्रित मोतियों से युक्त चावल को दुल्हा और दुल्हन एक दूसरे के सिर पर डालते हैं । इसे ''तलंब्रालू'' कहते हैं ।

को संजोते हुए, सीताजी के माथे पर कस्तूरी - तिलक लगाए । यह कितना मनोहर दृश्य है । इतना ही नहीं - इस विशालाक्षी की आँखों में काजल भी लगाए - फिर काजल से भरी उन आँखों में झांकते हुए खुद भी तन्मय हुए और सीताजी को भी वे तन्मय कराते रहे । ऐसे सुंदर प्रणय के क्षणों में मुग्ध होती हुई जानकी के मन में उदित शंका पर गौर करने से तथा प्रणय के क्षणों में भी निरंतर सत्य को ही अपनाने वाले श्रीरामजी द्वारा उस शंका के निवारण करने के विधान को परखने से यह विदित होता है कि लोग, लोक कवियों की उदात्त भाव संपदा के सामने सिर झुकाए बिना रह नहीं पायेंगे ।

''अंतटा ओक्कानाडू श्रीरामचंद्रुलू वेडूकतो
नव्वुतु श्रीरामचंद्रूलू अद्दम्मू नाती चूडमनेनु
चूची अद्दम्मुलोना आदेवी तनारूपू तेलियालेका
एन्ता मायालुगवलु श्रीरामचंद्रुडा परसतिनी तेतगुना
नेनु कानकुंडनु परसतिनी इन्दुलो निलिपिनावा
येकपत्निव्रतुडनी मातंड्री इच्चे मायलु येरुगाडाये
येंता मायालुगलावु श्रीरामचंद्रुडा मी किप्पुडू''

इस लोक गीत का सारंश है - ''आईने में अपने ही प्रतिबिंब को देखकर सीताजी भ्रम में पड गयी कि वह किसी अन्य स्त्री का प्रतिबिंब है । सीताजी को यह भ्रम हुआ कि श्रीरामजी ने परस्त्री को आईने में बंद कर रखा है । सीताजी इसलिए दुखित हुयीं कि रामजी को एकपत्नीव्रत माननेवाले अपने पिता का विश्वास डगमगा गया है । सीताजी आईने में अपने ही प्रतिबिंब को न पहचानने वाली नादान बालिका है ।

उनकी इस भावना को श्रीरामजी ने कैसे दूर किया है देखिए । उन्होंने यह नहीं बताया है कि आईने में जो प्रतिबिंब है वह तुम्हारा ही प्रतिबिंब है । वे दूसरा आईना लाए और सीताजी की ऊंगली पकड कर उन्हें लाकर आईने के सामने खडे हो गए ।'' फिर उन्होंने कहा - - -

''पति लेनी सतिनी जूची ओ सीता ! मदिलोना कोपिस्तिवी
पति जूपिते अलकबासुना नी किप्पुडू पद्माक्षिरो! जेप्पवे
निलुवुटद्दमु तेच्चियु श्रीरामा सीता चिटीकेना बट्टेनु''

अर्थात् - ''पति के बिना सती को देखकर भ्रमित हो गयी हो । तो फिर उस सती के पति को अगर तुम्हें दिखा दूं तो गुस्सा छोड दोगी न, यह कहकर बडे से आईने के सामने सीता की उंगली पकड कर खडे हो गए । तब सीता को तसल्ली हुई कि वे दोनो पति - पत्नी हैं । लेकिन वे यह समझ नहीं पायीं कि अखिर वे दोनो हैं कौन ? तुरंत उन दोनों के बारे में बताने के लिए श्रीरामजी से विनती करने लगीं । तब मुस्कुराते हुए श्रीरामजी ने कहा - वे तो श्रीराम और सीता हैं । क्या इस बात को जानती नहीं हो ? शरम के मारे सीता ने सिर झुका लिया । तब श्रीरामजी ने सीताजी को मनाया कि शरम क्यों ? मेरे साथ मिल कर राज - भार संभालो ।'' सीताजी की सुंदर नादानी को जताने के लिए लोक कवियों द्वारा वर्णित यह गीत एक सुंदर कल्पना है । ''सीताराम के वैवाहिक उत्सव'' घटनाओ में ''श्रीरामजी की नाराजगी ।। रामुलावारी अलुका ।।'' स्त्रियों द्वारा रचित एक मनोहर घटना है ।

1.3 श्रीरामजी की नाराजगी

'श्रीरामजी की नाराजगी' नामक गीत के अंतर्गत विवाह के बाद निभानेवाले विनोद कार्यों का वर्णन है । पहले यहाँ 'दोंगा वेलमु' नामक खेल खेला जाता है । यहाँ ''दोंगा वेलमु'' का अर्थ है - दुल्हे द्वारा किसी वस्तु का चोरी करना । फिर दुल्हन की सखियाँ उसे चोर का दूत कह कर चिढाती हैं । इस का वर्णन प्रस्तुत लोक गीत में यों चित्रित किया गया है ।

''रुषिपल्ली वीधिलो दोंगलोच्चारू
ई दोंगा नेव्वारू पट्टेवारनीरी
जनका चक्रवर्ती नगरी लोपलानू
ई दोड्डा दोंगानु बट्टूकोम्मानिरी''

अर्थात् ''रूशिपल्ली गाँव में चोर आ गया है । इस चोर को कौन पकडनेवाले हैं । इस बडे चोर को पकडने के लिए जनक महाराज के नगर में भी एलान किया गया है ।''

इस खेल के बाद श्रीरामजी ने नाराजगी दिखाना प्रारंभ किया । सीताजी को समस्त आभूषणों से अलंकृत कर रामजी के पास लाया गया । यहाँ रामजी से विनती की जाती है कि वे अपना गुस्सा छोडकर सीताजी का स्वागत करें । विनती कैसे की जा रही है वह विधि देखने लायक है ।

''गुर्रमु येक्कि यी कोम्मवच्चिनदी
गोत्र चिंतामणि लेचि रावय्या

अंदलमु येक्कि यी यतिवा वच्चिनदी
अंदमयिना पेंड्लिकोडुका लेचीरावय्या
मट्टेलु पिल्लेल्ल मगुवा वच्चिंदी
मदनकंदर्पूड लेची रावय्या
सूडिदम्मुला पेट्टी सुदति वच्चिंदी
चुक्कल्ला चंदृडा लेची रावय्या
वेल्लवुंगराल वेलदि वच्चिंदी
वेल्पुचिंतामणि लेचीरावय्या
कंकणंबुला बेट्टि कांत वच्चिंदी
कलवारि अल्लूडा लेची रावय्या
अन्निसोम्मुला बेट्टि अतिवा वच्चिंदी
आ सीतनाथुडा लेचि रावय्या!

अर्थात् ''हे गोत्र चिंतामणि ! उठकर चले आओ । घोडे पर सवार होकर, ये कामेली आयी है । हे सुंदर दूल्हे! पालकी चढ कर ये सुंदरी आयी है । सुंदर नूपुर पहन कर ये युवती आयी है, हे मदनकंदर्प! उठकर चले आओ । ये अच्छी कन्या कई सारे भेंट लेकर आयी है । हे नक्षत्रों के बीच स्थित चंद्रमा ! चले आओ । सभी उंगलियों में अंगुठियाँ पहनकर ये युवती आयी है, हे चिंतामणि ! चले आओ । कंकण पहनकर ये सुंदरी आयी है, हे धनिक घर के दामाद ! चले आओ । सभी आभूषण सहित ये युवती आयी है, हे सीतानाथ! उठकर चले आओ ।'' इस प्रकार कई रीतियों से सीता के सौंदर्य का वर्णन कर, श्रीराम को उठकर आने के लिए प्रार्थना करते हैं । लेकिन नाराजगी के कारण श्रीराम नहीं मानते । कई वस्तुओं की माँग करते हैं ।

''ससुर जनक जी तो अधिक संपन्नवाले हैं । जो कुछ भी माँगो दे देंगे । उन्होंने सभी माँगें मान ली, और श्रीरामजी से विनती की कि वे उठकर चले आयें ।'' यहाँ लोक कवियों द्वारा माँगी गयीं चीजें देखने योग्य हैं । वे हैं ''धर्म संबंधी चीजें, दो लोटे, सुगंधित चन्दन की लकडी, चन्दन लेप तैयार करने के लिए घिसने का पत्थर (चुक्कल्ल साना), चूनादान, पान के पत्ते काटने की कैंची, सोने की जंजीरों वाला कबूतरों का पिंजडा, चाँदी के डेगीचे, सुंदर बडे गमले, हीरे के पदक, धन, नक्काशी किया गया खाट, बिस्तर, कोतवाल, दास - दासियाँ, पूरब से लेकर पश्चिम तक फैली हुई दुधारी गायें, उत्तर से लेकर दक्षिण तक फैली हुई पूजा योग्य गायें, हरियाली खेत - खलिहान, और दो शाल, आदि चीजें जब तक दहेज में नहीं दिए जाएंगे तब तक श्रीराम कहते हैं कि ''मैं नहीं आऊँगा ।''

उक्त अर्थ वाला तेलुगु लोक गीत -

''धर्म सरूकुलू, रेंडू जारी चेंबुलू
मंची गंधपू चेक्का, चुक्कल्ला साना,
भमिडि सुन्नपूकाय, चिलुकलाडकत्तेरा,
बंगारू गोलुसुलतो पावुरमु पेट्टे
वेन्डी कागुलू, मंची भमिडि गोलेमुलु,
पच्चाला पतकामु, बोदाध्नालू,
पट्टेमंचामु, परूपू, भट्टलू, दासीलू,
तूरूपू पडामरला पाडावुला मंदा,
उत्तरा दक्षिणमुला धर्मावुलामंदा,

पंटाभूमुलु मरियु जोडू शालुवलू,
अरणमिस्तेगानी लेची राननेनु''

शायद पहले कभी आन्ध्र - प्रदेश में चन्दन की लकडियाँ, चन्दन लेप निकालने वाले पत्थर, चूनादान, पान के पत्ते काटने की कैंची, जुडवे शाल आदि मशहूर रहे होंगे । तभी ये चीजें दामाद की इच्छाएँ रही होंगी ।

''अल्लुनी कोरिकलू विनि
अरणम्मू लिच्चेनु अतिवा निस्तिनी
ओ सीतापति नीवु लेची रावय्या''

अर्थात् ''रामजी की इच्छाओं को सुनकर, उनसे कहा गया कि दहेज भी दिया जाएगा । बेटी को तो सौंप ही दिया । हे सीतापति अब तो उठकर आ जाओ ।''

यह कहते हुए चांदी और सोने की जंजीरें श्रीराम के गले में डाल कर खींचने लगे ।

तब श्रेष्ठ मोतियों वाले दैवी पदक माला को सीताजी ने रामजी के गले में पहनाया । तब कहा गया है कि ''इस प्रकार डालने के लिए पास आनेवाली सीताजी को देखकर रामजी शर्म के मारे झट से उठकर खडे हो गये । ''सीतादेवी के पास आने पर, शर्म से उठने वाले रामजी का दर्शन हम केवल लोक साहित्य में ही पा सकते हैं ।

''आणि मुत्याला अमरापताकम्मू आ सीता वेसेनु रामुनी मेडकु रंजिल्लुचुनू सीता दग्गारकू वस्ते सिग्गुना श्रीरामुडु दिग्गुना लेचे''

तब गुस्सा छोडकर रामजी वापस लौट आये । इस प्रकार विवाह संबंधी घटनाओं में नाराजगी दिखाने का प्रसंग अभी भी आंध्र के वैवाहिक रीति - रिवाजों में प्रचलित है । इसे ही लोक कवियों ने रामजी के साथ जोडकर उसका वर्णन कर आनंद पाया है ।

1.4 सीता की बिदाई

यहाँ विशेषतः दो गाने सीताजी की बिदाई के नाम से प्रमुख हैं । राजा जनक, सीताजी को रानी कौशल्या तथा अन्य रानियों को सौंप रहे हैं । उस संदर्भ में यहाँ लोक कवि भावावेश में यह भूल चुके कि सीताजी का जन्म किसी के गर्भ से नहीं हुआ है, इसी कारण वे कहने लगते हैं कि ''नौ महीनों तक तुम्हें अपने गर्भ में रखकर जन्म दिया है, तुम्हें पाकर जन्म धन्य हो गया है ।'' तेलुगु में इस का वर्णन यों है

''तोम्मिदी नेलालु मोसी तोलिगर्भामुनु, अम्मरो निनुगन्ना
भाग्यमेमम्मा ।''

उसके बाद सीता को रानी कौशल्या, कैकेयी, सुमित्रा को सौंपते हुए कहने लगते हैं कि ''सीता तो अभी बहुत ही छोटी है, वह घी भी नहीं बना सकती है । श्रीरामजी की पत्नी को घी बनाने की जरूरत तो है नहीं, आखिर महाराणी को घी बनाने की आवशयकता ही क्या है । लेकिन लोक कवियों की दृष्टि में तो जानकी तो साधारण घर की लडकी ही है, इसलिए उन्होंने कहा कि जानकी घी नहीं बना सकती हैं । उसी का वर्णन है,

''नेई काचानेरदु नेलतासुमी वदिना
नेर्पूतो पनुलेल्ला नेरूपावम्मा

कुडुवानेरदु चिन्ना पसिबाला सुम्मी
वेरूगा नवनिजा तानारागिन्चादु
चल्ला चेयानेरादु सखिया सुमी वदिना
मी बालालालोनु नोक्का बालागगाचूडू
बुद्धुलेरूगादु मंकू बुद्धुलेगानी
बुद्धिवाच्चिना दाका दिद्दुकोवम्मा
.....
आकालेरिगी गानम्बु पेट्टीनदाका
अडूगनेरदु नीवु अडिगी पेट्टूमु
चिन्नपिल्लनु नी चेतिकंदिस्ति
आडबोयिनचोटा अट्टेयुंडेनु
मेल्लगा नेर्पुतो पिलुववे यम्मा
कोडलु मी सोम्मु कोडुकु मी सोम्मु''

इस का अर्थ है कि ''मेरी बेटी घी भी नहीं बना सकती है, इस कारण आप ही अक्लमंदी के साथ उसे सिखाओ । वह ठीक से एक जगह बैठना भी नहीं जानती, अभी तो वह नादान बच्ची है । ठीक से माखन भी नहीं खा सकती है । वह तो डरपोक है माखन निकालना भी नहीं जानती है । अपने बच्चों के साथ इसे भी अपनी बच्ची ही समझना । अक्ल तो आई नहीं बहुत जिद्दी है । इसलिए अक्ल आने तक जरा संभालना । .... हमें ही उसकी भूख को जानकर खिलाना पडता है, वह खुद माँगेगी नहीं, आप को ही देख कर खिलाना होगा । छोटी बच्ची को आप के हाथ सौंप रहे हैं, चाहे उसे खाना खिला कर पालो या फिर

अमृत पिला कर पालो । खेलने जाती है, तो वहीं रह जाती है । होशियारी के साथ आप को ही बुलाना होगा । आपकी की ही बहु है और बेटा भी आप का है ।

इस प्रकार विदा करती हुई कहने लगती है ''आप ने तो हाथी समान बेटों को जन्म दिया हैं, बेटियों को बडा करने की थकावट को तो आप जानती नहीं हैं'' तो तुरंत रानी सुमित्रा कहती हैं, ''राजा दशरथ की पुत्री शांता है, और वह कौशल्या की लाडली भी है, भाभी । आपकी सीता और हमारी शांता साथ रहेंगी, इस बात पर विश्वास कर लो, हे कमलाक्षी ।'' यहाँ रानी सुमित्रा के वचन वैसे ही गंभीर है जैसे वाल्मीकी रचित रामायण में है ।

बिदाई के बाद सीता के आंचल में फूल, खिलौने, मोती, कंद, सोने की कटोरी, जीरा, केला फल, ''अरिसे'' (आन्ध प्रदेश का एक मीठा पकवान है जो चावल के आटे और गुढ मिलाकर उसे तेल में तल कर बनाया जाता है), डाल कर देहली पार करा कर उस रात को फूलों के गेंद के साथ खेल खिला कर सीता को फिर से समझा कर ससुराल भिजवाया जाता है । एक दूसरे गीत में अवतारों के वर्णन के साथ सीता की बिदाई की गयी है - जैसे मत्स्यावतार के स्वागत गीत से लेकर सभी अवतारों के वर्णन के साथ बिदाई को जोडा गया है - जैसे अरूँधती - वशिष्ठ को, लक्ष्मी - नारायण को, पार्वती, परमेश्वर को सौंपने के बाद - राजा दशरथ को सौंपने का वर्णन पाया जाता है । लेकिन जब शांता को सौंपने का समय आया तो महाराजा जनक के आँसू थमे नहीं । शायद सोचा होगा ननद है, पीडा दे सकती है । लेकिन शांता ने दिलासा दिलवाया कि 'जनकजी आपकी बच्ची को यहाँ पर क्या कमी है ?

शानदार सिंहासन पर राज करेगी। फिर से इन्हीं बातों को जनकजी को दुहराते हुए रघुराम उन्हें धीरज बाँधते हैं ।

निम्न गीत में सीताजी की माँ, कौशल्या को गौरवान्वित कर सीता को सौंपती है। इस घटना में समधिन के प्रति गौरव की भावना व्यक्त की गयी है ।

''सीतामहादेवी तल्ली अप्पूडूनु
वियूयापुरालू कौसल्यानु चेई पट्टी पिलची
कुर्ची पीटलु वेसी कूर्चुंडा बेट्टी

.....

.....

नी किस्ती पाललो मुंचेत्तावा
पालने मुंचेत्तु नेता मुन्चेत्तु''

अर्थात् ''सीताजी की माँ तब कौसल्या का हाथ पकडकर उन्हें तख्ते पर बिठा कर कहने लगती हैं, अब तो आप को सौंप दिया है अब दूध में नहाओ या घी में ।'' इस तरह विशेष रूप से रानी कौशल्या को सौंपने के बाद उन का दुख थम नहीं पाया। यह सोच कर दुखित होने लगी कि अब उन के घर में खिलौनों के साथ कौन खेलेंगे, और खिलौनों को खरीदने के लिए पैसों के लिए कौन तंग करेंगे, अब तडके उठ कर दोस्तों को बुला कर अट्लताद्दी [1] कौन मनाएंगे, सब को झूला झूलने

1. अट्लतद्दी के त्यौहार को आन्ध्रप्रदेश में युवातियाँ बडे चाव से मनाती हैं। जैसे उत्तर प्रदेश में करवा चौथ मनाया जाता है ठीक उसी उद्देश्य के साथ ''अटलतद्दी'' भी यहाँ मनाई जाती है ।

का न्यौता कौन देंगे, कहकर बिलख पडी - और तो और गेंडे के बीज बोकर हमारे आंगन में फूल कौन उगाएंगे, हे सीता ! कहकर रोने लगी ।''

ससुराल जाते समय सीता को देख कर उनकी माँ विनती करने लगीं कि, ''हे सुंदर नथुनोंवाली, जरा मुडकर तो देखो ।'' ये विचार तेलुगु प्रांत की माँ के हैं। यह गीत तेलुगु लोगों की है ।

* * *

2. सीता के खेल

श्रीरामजी की पत्नी बनकर सीताजी बारह सालों तक अयोध्या में अत्यंत आनन्दपूर्वक राज करती हैं। इसी विषय का जिक्र स्वयं सीताजी ने हनुमानजी से किया था। इस पुष्कर समय को सीतादेवी ने कैसे व्यतीत किया है, इस का वर्णन वाल्मीकीजी ने कहीं भी नहीं किया।

सीताजी के जीवन की हर एक घटना का वर्णन लोक साहित्य में मिलता है। सीताजी के जीवन की प्रत्येक घटना लोक कवियों के लिए काव्य वस्तु बन चुके थे। लोक कवियों ने तन्मयता से सीताजी के खेलों को, उनकी बातों को कविता का रुप दिया और उन्होंने उन्हे कंठस्थ करवाने योग्य बनाया। अशोक वन में सीताजी के शोक तप्त रुप का ही वर्णन वाल्मीकीजी ने किया है। लेकिन लोक कवियों ने सीताजी के प्रेम भरे क्षणों की प्रसन्नचित छबी को पाठकों को दिखाया है।

''अयोध्या रामन्ना अन्नय्या माकू
वालुकन्नुला सीता वदिनम्मा माकू''

अर्थात् ''अयोध्या के राम हमारे भाई है, तिरछी आखों वाली सीता हमारी भाभी है।''

सीताजी को पेड पौधों से बहुत लगाव है। बिदाई के समय सीताजी की माँ बिलख बिलख कर रोयीं कि ''अब हमारे आंगन में गेंदे के फूलों को कौन उगाएँगी ?''

लोक कवियों के वर्णन के अनुसार अयोध्या में ही सीताजी रजस्वला हुई। खेल के समय ही सीताजी रजस्वला हुई थीं। रानी

कौशल्या आनंदित होकर पंचांग दिखायीं। मुनि लोग पंचांग देखकर रजस्वला के समय के शुभ-फलों का यों वर्णन करते हैं।

''मंचिदी हस्त नक्षत्रमु
पंचमी सोमवार्मुन्नु
मंचीदैन नभिजित्तु मंची मुहूर्तमे
परम पतिव्रतै युन्डुनु
पलुवुरु पुत्रुल गनु
पट्नपु राणीवें राज्यमु पालिंचेनु रामचन्द्रा''

अर्थात् ''हस्ता नक्षत्र शुभ है, और पंचमी, सोमवार भी शुभ है। शुभ है अभिजित्त वर्ष, शुभ मुहूर्त है। परम पवित्र होंगी। कई पुत्र होंगे। हे राम, महारानी बनकर राज करेंगी।''

इस शुभ मुहूर्त को रखनेवाले लोक कवि ही थे। ऐसे शुभ मुहूर्त निकालने के पीछे उनकी सूझ - बूझ की दाद देनी पडेगी। इस शुभ अवसर पर सीताजी के ससुराल में ही यह उत्सव मनाया गया। चौथे दिन स्नान करवाया गया। फिर सुहाग रात। सीताजी को सभी आभूषणों से सुसज्जित किया गया। वशिष्ठ जी सीताजी और रामजी के साथ होम करवाते हैं।

''सतिपतुलाचे अपुडू फलदानमुलिप्पिंचिरी
अतिवलू अतिवनु आशीर्वदिंपुचु हारतुलित्तुरु''

अर्थात् ''उस समय पति - पत्नी के द्वारा फल दान दिलवाते हैं, फिर सभी सुहागिनों ने मिलकर आशीर्वाद दिया और उनकी आरती उतारी।''

आन्ध्र प्रदेश में फल दान संबंधी प्रथा को भी इन लोक कवियों ने सीता - रामजी के साथ करवाया । शय्या गृह को सजाकर पति - पत्नी को अंदर भिजवाया । सीताजी के सुहाग रात का वर्णन लोक कवियों ने अत्यंत कोमल पदावली के साथ किया ।

सीताजी को खेलों के प्रति विशेष आसक्ति है । सुहाग रात को श्रीराम जी सीताजी को चौपड खेल खेलने के लिए बुलाते हैं । तब तक शर्माती हुई बैठी सीताजी अत्यंत उत्सुकता के साथ खेलने लगी ।

सीताजी को खेलों के प्रति केवल आसक्ति ही नहीं उन खेलों को खेलने में वे निपुण भी हैं । अक्सर वे खेलों में जीतती हैं, हारती नहीं । केवल जीत कर चुप नहीं रहती हैं बल्कि जीतने के बाद तोफे देने के लिए जिद भी करती हैं ।

एक दिन खेल में जीतने के बाद सीताजी ने एक करोड धन की माँग की । तब सीताजी से रामजी कहते हैं -

''सकला राज्य वैभोगमु सती नी वाड्नुगाना
सकलमु नीदे यनुचु सती लालिंचेनु''

''हे सीता, सभी राज - वैभव का अधिकारी मैं ही जब तुम्हारा हूँ । हे सती! तब तो यह सब कुछ तुम्हारा ही तो है, कहते हुए रामजी पत्नी को सहलाने लगे ।''

केवल सहलाकर चुप नहीं हुए बल्कि कहने लगे,

''सीता नी वंटी स्त्रीलतो रात्री पगलू कूचुन्ना
आकली दप्पिका बायुनु अलसटले तोचवु''

अर्थात् ''सीताजी तुम जैसी स्त्रियों के संग खेलते समय भूख - प्यास की सुध - बुध भी नहीं होती और थकावट तो बिल्कुल नहीं होती है ।'' पाठक गणों की दशा जब ऐसी है तो प्रत्यक्ष रुप से खेलनेवाले रामजी की ऐसी दशा हो तो यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है ।

सीतादेवी के वामनगंटलु खेल, सीता के छुपा - छुपी खेल, ऊदारागुप्पिलू, नामों से सीताजी के खेलों से संबंधित कई विशेष गीत हैं । लोक कवियों ने सीताजी के जीवन में खेलों को इस प्रकार उन्नत स्थान देते हुए उन्हें गौरवान्वित किया है ।

2.1 सीता - चौपड खेल

''सीतादेवी जी के वामनगुन्टलू'' गीत में सीताजी के 'वामनागुंटलु' खेल के निमित्त श्रीरामजी ने वामनगुंटलु तख्तों को वज्रों से, मणिकों से, रत्नों से, हीरों से, तथा मोतियों से विशेष रुप से लिपवाये थे । सात हफ्तों के गहनों की तरह, नवरत्नों से बनवाए गए आभूषणों की तरह 'वामनगुंटलु' का हर एक तख्ता एक एक किस्म के बनवाये ।

सीताजी और रामजी ने खेल प्रारंभ किया । कहा जाता है कि जल्दबाजी के साथ खेलने की आतुरता के कारण रामजी के कर्ण कुंडल हिलने लगे तो सीताजी के हीरे का हार झूमने लगा । खेल चलता रहा । एक बार जानकी हार गयीं । अगली बार रामजी हारे । उस समय खेल की समाप्ति की बात कहते हुए रामजी ने सीताजी को याद दिलवाया कि उन्हें खेल के ये तख्ते अखिल ब्रह्मांड सदृश दिखते हैं ।

''अखिल ब्रह्मांड आटा पाटलू
प्रजला रक्षिंचुट पसीडी डिब्बीलु
सखिया ! नीतो आटा नेडू संबरामायेने
आटा चालु निकनु चेलिय पीटाकट्टुमी''

सीताजी जान गयीं कि खेल अखिल ब्रह्मांड समान है, इसलिए रामजी ने खेल को समाप्त नहीं किया बल्कि इसलिए समाप्त करने को कह रहे है क्योंकि हारने पर कहीं उन्हें धन देना न पडे । इस बात को जानने के बाद सीताजी ने आग्रह किया कि हारने के पैसे दें ।

''पीटाकट्टुमनी बोंकीपारिपोदुरा
आटा करवाईवेलु इव्वा लेक्कालुन्नवी
वोली गट्टाका अडँगु दाटी कदलानिव्वानु
निलुवु निलुवु मनुचु सीता आज्ञ चेसेनु''

अर्थात् ''झूठ बोल कर, खेल खत्म करने के लिए कह रहे हैं । हर एक खेल के लिए यहीं नियम है कि हार जाने पर 60 हजार रुपये देने होंगे । धन दिए बिना मैं एक कदम भी आगे बढने नहीं दूँगी कह कर सीता जी ने ठहरने की आज्ञा दी ।''

खेल में हार गए इसलिए खेल के नियमों के अनुसार पैसे भरने के लिए सीताजी ने आज्ञा दी । लेकिन रामजी वहाँ से चलने के लिए तैयार हो गए । सीताजी ने अपने दुपट्टे से उन्हें रोका । खेल हारने पर धन देते हैं, ऐसे भाग थोडे जाते हैं ? मैं जीतूं या हारुँ तुम्हारे ही तो पैसे हैं न ? तुम जीत गयी तो वे भी मेरे ही तो पैसे हैं न ? अगर कहीं भरत, लक्ष्मण ये बातें सुन लेंगे तो मजाक उडायेंगे । यह कहते हुए

श्रीराम ने बात टालने की कोशिश की । लेकिन जानकी जी टस से मस नहीं हुई । तब रामजी ने तीस हजार का मोतियों का पदक, दस ऊँगलियों के सोने की अंगूठियां, मुकुट, विवाह के समय ससुर द्वारा दिया गया पदक, दस लाख के सोने के पलंग को लेने के लिए कहा । इसके साथ उन्होंने यह भी कहा कि कौशल राज्य के साथ उन्हें भी स्वीकारें । सीतारामजी के इस खेल को देखकर कौशल्याजी के संग सभी आनंदित हुए । सीताजी ने जब अपनी बहनों को यह खबर सुनाया कि रामजी 'ओली'[1] देने के डर से भागने लगे तो भरत, शत्रुज्ञ के संग सभी उनकी हंसी उडाने लगे ।

2.2 सीता के लुका - छुपी खेल

'सीतादेवी जी के लुका छुपी खेल' गीत में शांता का चरित्र प्रधान है । सीताजी अपनी बहनों के संग मिलकर लुका - छुपी खेल खेल रही हैं । यह तय किया गया है कि अगर खेल में कोई हार जाय तो वे शांता के साथ ही रहेंगी । खेल खेलते समय खेल देखने रामजी वहाँ आते हैं । इस प्रकार खेल के बीच श्रीरामजी को देख शांताजी गुस्सा हो जाती हैं ।

''अक्का ! नी मरदल्लु आडुचुंडगा
एक्कुवैना मुद्दुचेता चूडवस्तिनी''

अर्थात् ''रामजी कहने लगे दीदी! जब आपकी सालियाँ खेल रहीं थीं तो प्यार के कारण देखने चला आ गया ।'' जीजाजी के आगमन से सालियाँ चली गयीं तो शाँताजी ने सीता और रामजी को ही खेलने

1. 'ओली' का अर्थ है जब कोई बाजी में हार जाते हैं तो हारने वाले जीतने वाले को धन देते हैं ।

के लिए कहा । खेल के बीच शांताजी ने चुपके से आँखों से इशारा कर, सीताजी को जितवा भी दिया । हारे हुए रामजी से सीताजी धन की माँग करती है । तब रामजी को गुस्सा आ जाता है । गुस्सेवाले रामजी से सीताजी कहती हैं -

''आडनेला तमरु मातो ? वोडनेटिकी ?
वोडिना धनमुलडग कोपमेटीकी ?''

अर्थात् - ''आप हमारे साथ खेले क्यों ? खेल कर हारे क्यों ? हार कर धन माँगने से आखिर गुस्सा क्यों ?''

2.3 सीता - इमली के बीजों का खेल

''सीतादेवी - ऊदरगुप्पीलु'' नामक खेल में सीताजी ही हार जाती हैं । जब सीताजी खेलते हुए हारीं उस समय खेल में हर एक बार रामजी रत्नों से, हीरों से, वज्रों से, नील मणियों से, इस प्रकार नव रत्नों के साथ खेले ।

इस प्रकार उनसे संबंधित विशेष गीतों के अलावा, उनके इन खेलों में एक गीत ''सीतादेवी - ऊदरगुप्पी'' के नाम से प्रसिद्धि पा चुकी है । खेलों से सीतादेवी का लगाव काफी ज्यादा था । खेलों में पडकर कभी वे खाना भी भूल जाती थीं ।

वनवास के बाद भी आंगन में चौपड खेलते समय लक्ष्मण और सीताजी एक ओर, श्रीरामजी, शांताजी एक ओर रह कर खेला करते थे।

''कुश - लव के युध्द'' गीत में कुश - लव के जन्म के बाद भी सीताजी के द्वारा चौपड खेल खेलने की घटनाओं का वर्णन लोक कवियों ने किया है । अयोध्या में रहकर सीताजी खूब खेला करती थीं ।

वनवास में अपने कुटीर के आंगन में चौपड खेल खेलते समय ही उन्होंने माया हिरण को देखा था । कहा जाता है कि उस समय भी सीताजी ने रामजी से यही कहा कि ''हे राजा, मुझे खेलने के लिए वह हिरण लाकर दीजिए ।''

राज्याभिषेक के बाद भी जब वे चौपड खेल रही थीं, उस समय मायावेश में शूर्पणखा का प्रवेश हुआ था ।

मुनि पत्नियों के साथ ''वामनगुंटलु'' खेलते वक्त ही उन्हें लव के बेहोश होने की खबर मिली । लोक कवियों ने सीताजी को निरंतर खेलों के प्रति आसक्त नारी के रूप में वर्णित किया है ।

2.4 सीता - गुलाल डालने का खेल

गुलाल डालने की प्रथा कभी एक जमाने में श्रृंगार रस की देवता की आराधना के लिए होती थी । लोक कवियों ने उस प्रक्रिया का वर्णन सीताजी और रामजी के संग दिखाकर इस प्रथा को निरूपित किया है । एक प्रकार से गुलाल छिडकने की प्रक्रिया भी खेलों के अंतर्गत ही आती है । यह एक श्रृंगार परक खेल है ।

सीताजी अपनी बहनों के संग गुडियों के खेल में मग्न हो गयी थीं । तब श्रीरामजी दरबार के कार्यों से मुक्त हो कर रंभा आदि अप्सरसाओं के नृत्य का आनन्द ले रहे थे । तभी वहाँ आई हुयी सीताजी सोने के

दरवाजे की ओट में खडी होकर उस नृत्य को देखने लगीं। अचानक रामजी ने सीताजी को देखा। शर्मिंदगी के मारे झट से सीताजी वहाँ से निकल गयीं। नृत्य देख कर आनंदित होने वाली सीताजी उन्हें देखकर डर से चली गयीं, तो तुरंत श्रीरामजी ने उन्हें बुलाने को आदेश दिया। लेकिन सीताजी ने यह कहते हुए इंकार कर दिया कि वह सास की आड में रहने वाली स्त्री है। इतने में श्रीरामजी वहाँ पधारे, तो सीताजी की बहनों ने दीदी को इशारा किया। तब उन्होंने सीताजी की चोटी को मोतियों से, हीरों से, वहाँ के सोने के खंभे से जकडते हुए बाँध दिया। सीताजी शर्म के मारे सिर झुकाए खडी हो गयीं, तब रामजी ने कहा -

''इवन्नी बूटका लिंदीवराक्षी
विल्लु विरुवा मेमू वच्चिना नाडु
विरहतापम्मुलू मेमु येरगानिवे''

अर्थात् ''यह शर्मिंदगी सब झूठ है, जब हम धनुष तोडने आये थे, तब उस समय की तुम्हारी विरह वेदना को क्या हम नहीं जानते।'' इस प्रकार रामजी के कहने पर पद्माक्षी के हाथ कांपने लगे। तब नीलवर्ण वाले ने सीताजी की चोटी की गाँठ खोल दी तब सीताजी ने बाकी सब गाँठों को स्वयं खोल लिया। तब रामजी उन्हें शय्या गृह ले जाकर उनके डर को दूर करते हुए उनकी सेवाएँ करने लगे।

''मुत्याला वीवना मुरवैरी विसरे
कर्पूर तांबूलं कांताकन्दिचे
कनकमेडललोनु करूणाकरूलु''

अर्थात् ''उस सोने के महल में रामजी मोतियों के पंखे के साथ सीताजी को पंखा देते रहे। फिर कर्पूर तांबूल उस सुंदरी को दिया।''

इस प्रकार जानकी जी की सेवाएँ करते हुए श्रीराम ने फूलों का गेंद सीताजी पर फेंका। फूलों का गेंद लगते ही वह सुकुमारी मूर्छित हो गयी। बेहोश हुई पत्नी को देखते ही डर कर रामजी उन्हें अपनी जाँघों पर लिटा कर सेवा करने लगे। इतने में कौशल्याजी वहाँ बहू को लेने आयीं क्योंकि खेलों मे पडकर अक्सर सीताजी खाना खाना भूल जाती थीं। कौशल्याजी के संग सीताजी जाकर खाना खाकर कर्पूर तांबूल लेकर श्रीरामजी के बारे में सोचने लगीं।

रामजी को देखने की इच्छा से वे अंत:पुर में मोतियों के पंडालों में, रत्नों के बरामदे में, मनिकों के आंगन में, हीरों के बरामदे में, उन्हें ढूँढती रहीं। कहीं भी रामजी दिखायी नहीं दिए। ऊँची अट्टालिकाओं पर ढूँढी। ध्यान मंडप में जगत - पालक श्रीराम आँखें बंद कर ध्यान मग्न दिखायी दिए। उन्हें देखने के बाद वह सती दबे पैरों से चलने लगीं ताकि उनके पैरों की घुँघरूओं की आवाज श्रीराम को सुनाई न पडे। उसके बाद सीताजी ने सोने के लोटे से गुलाल श्रीराम पर छिडकी। जैसे ही रामजी ने आँखें खोलीं, वह पिंजडे के तोते जैसी भाग गयीं। भागती भागती जाकर अपनी सासू माँ से लिपट गयीं। उनकी दिल की धडकनें तेज हो गयीं थीं। उनकी घबराहट को देखकर कौशल्याजी ने सीताजी से पूछा, ''क्या तुम्हारे संग खेलने वाले कोई तुम्हें मारने आ रहे हैं, जो इस तरह तुम भागती आ गई।'' सीताजी जवाब दे ही रही थीं, इतने में श्रीराम वहाँ डेगीचे भर गुलाल बनवा कर उसमें कुंकुम, मुश्क, कस्तूरी घोलकर ले आए, उस घोल को उन्होंने तीन बार गाय पर छिडका, उस

के बाद उस गुलाल को लेकर सीताजी के पास आए। वह बहू तो सासु माँ की आड में छिपी हुई थीं। सीताजी सामने नहीं आ रहीं थीं। तब रामजी ने कहा ''माँ ! हमारे ऊपर गुलाल छिडक कर नादान बनकर यहाँ आकर छुप गयीं हैं, उन्हें भेजो।'' कौशल्याजी ने भेजने से मना कर दिया। इतने में वहाँ से गुजरने वाली रानी सुमित्रा को गुलाल छिडकने के इस विनोद को देखने की इच्छा हुई। इस कारण उन्होंने सीताजी को अपने अंतःपुर ले जाने की इच्छा जाहिर की। जैसे ही सीताजी सामने आयीं झट से रामजी ने सामने आकर उन पर गुलाल छिडक दिया। इतने में राजा दशरथ राजकाज निबटाकर आए और यहाँ गुलाल खेल विनोद को देखकर उन्होंने भी सोने के कलषों में गुलाल बनवाया। मोतियों के पंडालों में सोने के लोटे से गुलाल भरकर रामजी ने सीताजी को दिया, तो सीताजी ने रामजी पर उंडेल दिया। फिर दशरथजी के देखते ही रामजी ने गुलाल सीताजी पर डाला। वहीं सोने के खंभों के पीछे खडे हुए भरत और शत्रुज्ञ ने देखा कि भाई और भाभी के इस खेल में गुलाल को छिडकने के बजाय उसे उंडेलते हुए देखकर वे भी आनंदित हो गए।

केवल यही एक घटना है जिसमें दशरथजी भी अंतःपुर के विनोद में भाग लेकर आनंदित होते हैं। इसी एक घटना में दशरथजी लोक गीतों में दिखाई देते हैं। अधिकांश लोकगीत सीतारामजी के वनवास के बाद की कहानी से संबंधित हैं। उस समय तक दशरथजी जीवित नहीं थे। वनवास के पहले के गीतों में केवल इसी गीत में दशरथजी ने भाग लिया था।

* * *

3. सीता - रजस्वला

जनकजी की बेटी अपने ससुराल में रजस्वला हुयी थीं। अयोध्या में जब सीताजी अपनी सखियों के संग खेल रहीं थीं, तब रजस्वला हुयी थीं। सास कौशल्या को जब इस विषय की जानकारी मिली तो उन्होंने ब्राह्मणों को पंचांग देखने के लिए कहा। वे लोग पंचाँग देखकर सुनाने लगे कि ''प्रतिपदा तिथि में होती तो स्त्री सुखी होगी। द्वितीया में होती तो बुद्धिमती होती, तृतीय में होती तो अच्छी सृष्टि कर्ता होती, चतुर्थी में होती तो समस्याओं से घिरी रहती, पंचमी में होती तो परम पतिव्रता होती...'' इस प्रकार सभी तिथियों के फल बताए। इसके बाद दिनों के फल भी बताते हुए कहने लगे कि,

''आदिवारम्बयिते अतिवा रोगिष्टि
सोमवारंबयिते परमपतिव्रता
मंगलवारमयिते मगुवकू चिंता
बुधवारमयिते बुद्धिशाली यगुनु
गुरुवारमयिते गुरुडू संपदलू
शुक्रवारमयिते सुदति सुखपडुनू
शनिवारमयिते सती पेदरालू''

अर्थात् ''अगर इतवार के दिन हुयी होती तो वह स्त्री रोगग्रस्त होती है, सोमवार के दिन होती तो परम पतिव्रता होती है, मंगलवार के दिन होती तो चिंताग्रस्त होती, बुधवार को होती तो बुद्धिमान होती है, गुरुवार के दिन होती तो अधिक संतानवती होती है, शुक्रवार के दिन

होती तो वह स्त्री सुखी होती, शनिवार के दिन होती है तो वह स्त्री गरीब होगी ।'' इस प्रकार पंचांग के विषयों की विशेषताओं को उन्होंने सुनाया ।

जानकी जी पंचमी तिथि सोमवार के दिन हस्ता नक्षत्र के शुभ लग्न में रजस्वला हुई थीं । पंचमी एवं सोमवार दोनों में ही पतिव्रता के लक्षण पाये जाते हैं । सीताजी को हल्दी के लेप से स्नान करवा कर रेशमी साडी पहनाया गया फिर सभी सुहागिनी स्त्रियाँ गाना गाती हुई तिल, गुड, नारियल, मिलाकर उस मिश्रण बडे चाव से वे कूटने लगीं । चौथे दिन स्नान करवा कर सुहाग रात की प्रथा को भी निभाया गया ।

रामजी के शयन गृह को कौशल्या ने बडे उत्साह के साथ अलंकृत किया । फल प्रदान कार्य संपन्न होने के बाद, जब पुत्र और बहू प्रणाम करने आये तो कौशल्या ने बहू को आशीर्वाद दिया कि उन्हें पोते दें । इतना ही नहीं उन्होंने बहू को चेतावनी भी दी कि ''हे ! नारी मणी, यह बातें तुम कभी किसी से न कहना कि तुम्हारे पति तुम से प्यार करते हैं'' इस प्रकार उन्होंने अच्छी सलाहें भी दी ।

सीताजी और रामजी चौपड खेल खेलने लगे । सीताजी जीत गयीं । फिर उन्होंने रामजी से कहा कि उन्हें करोड धन राशी दें । तब रामजी ने सीताजी को यह कहते हुए बहलाने की कोशिश की कि समस्त राज वैभव के साथ जब मैं ही तुम्हारा हूँ, तो यह सब तुम्हारा ही तो है । फिर आगे उन्होंने कहा ''सीता ! तुम जैसी स्त्री के संग दिन रात भी खेलें तो भी भूख, प्यास और थकान की सुध ही नहीं होती है ।'' सीतादेवी जैसी पतिव्रता स्त्री की कहानियों के साथ जब पाठकगण हों तो उन्हें भी भूख, थकान की सुध ही नहीं होती है ।

सीताजी की रजस्वला के गीतों के कारण स्त्रियां रजस्वला से संबंधित कई विषयों से अवगत हो जाती हैं । लोक कवि ने इस विषय को काव्य वस्तु के रुप में स्वीकार कर यह प्रयोजन पाया है । शिष्ट साहित्य में रजस्वला का विस्तार से वर्णन नहीं हुआ है । तेलुगु कवयित्री मुद्धुपलनी कृत ''राधिका स्वांतनमु'' में उन्होंने इलादेवी के रजस्वला और सुहाग रात का वर्णन किया है, लेकिन वहाँ जिस प्रयोजन को दिखाया है, वह इससे भिन्न है । लोक कवियों के रजस्वला के गीत, विनोद के साथ साथ ज्ञानवर्धक भी होते हैं ।

तेलुगु के एक और लोक गीत में यह वर्णित किया गया है कि सीताजी का रजस्वला उत्सव ससुराल में नहीं बल्कि मायके में ही मनाया गया है । लेकिन यह उत्सव अयोध्या में ही सही बैठता है क्योंकि विवाह के बाद वे तो अयोध्या ही पहुँची हैं न !

* * *

4. सीता - दरवाजे की कुंडी

दरवाजे की ओट में खडे होकर गानेवाले कई गीत तेलुगु साहित्य में रचे गए हैं। बाहर खडा प्रिय दरवाजा बंद कर बैठने वाली सुंदरी से फुसला कर दरवाजा खोलने के लिए विवश करता है। इस प्रकार का इतिवृत्त ही इन गीतों की विशेषता है। आगे इसी शैली को प्रबंध काव्य के कवियों ने भी अपनाया है। तेलुगु साहित्य में गोगुलपाटी कूर्मनाथ कवि कृत ''लक्ष्मीनारायणनीयमु'', तथा चाटु पद्य [1] मणिमंजरी में ''चेन्नरायाधिपा'' आदि इसके उदाहरण स्वरूप लिए जा सकते हैं।

इन गीतों में प्रायः हम यह देखते हैं कि दरवाजे की कुंडी खोलनेवाला अक्सर नायक ही होता है। लेकिन एक लोक कवि की रचना में यह देखा गया है कि सीताजी ही कुंडी खोलने के लिए विनती करती हैं।

एक रात जुही के फूलों से सुसज्जित शय्या पर लेटकर थके मांदे श्रीराम, सीताजी के आगमन की राह देख रहे थे। उस रात सीताजी को आने में देरी हो गयी थी। इससे कौशल्याजी के पुत्र को गुस्सा आ गया, और उन्होंने कमरे के अंदर से कुंडी लगा दिया।

1. संस्कृत में चाटु पद्य का अर्थ है अत्यंत सुंदर पद्य। चाटु पद्य अक्सर आशु पद्य ही होते हैं। लेकिन जिन पद्यों में चमत्कार, और सुंदर अभिव्यकित हो वे सदा के लिए याद रह जाते हैं। इनके रचनाकारों की सूचना अक्सर कहीं नहीं मिलती है। आज जो चाटु पद्य मिल रहे हैं वे सभी जनता में व्याप्त पद्य ही हैं जिन्हें संकलित किया गया है।

ससुर और तीनों साँसों की सेवा कर, गुलाल - जल में स्नान कर, तैयार होकर, सुगंधित पान हाथ में पकडकर, नूपुरों की ध्वनि और हिलते हुए गले में हार के साथ सीताजी चलती आयीं। उस ध्वनि को सुनते ही श्रीराम को दरवाजा खोल देना चाहिए, है न ! सीतादेवी ने जान लिया कि दरवाजा अंदर से बंद है, इस कारण वे प्रार्थना करने लगीं कि,

''गडिया आलस्यमैना गडिया बेट्टीतीरि,
तप्पुलू पट्टाका तलुपु तीयंडी''

अर्थात् ''एक घडी क्या देरी हुई आपने दरवाजा बंद कर दिया, मेरी गलतियों को न गिन कर दरवाजा खोलिए।''

आगे फिर वे इस प्रकार प्रश्न भी करती हैं कि,

''ओंटीगा ओ निद्रा ओ रामचन्द्रा नीलवर्ण ननु बासी निद्रेदुलु पट्टे ?''

अर्थात् ''ओ ! रामजी, हे नील वर्ण वाले, मेरे बगैर आखिर आप अकेले सो कैसे पाये ?'' रामजी ने उनकी विनती पर ध्यान ही नहीं दिया। उनके प्रश्नों का उत्तर उन्होंने ऐसा दिया,

''नाकेमी ओंटीगा लेदे नालिनाक्षी सीता
अलदीन गंधंबु अदि तोडू नाकु
परचिना पारिजातंबुलन्नी तोडू
वेलिगेटी कानुदिव्वेलवी तोडू।''

अर्थात् ''हे कमलाक्षी सीता ! मैं कोई अकेला नहीं हूँ। मुझ पर लेपा गया चन्दन मेरे साथ है, यहाँ फैले हुए पारिजात फूल मेरे साथ

हैं, यहाँ के सारे जलते हुए दिए मेरे साथ हैं ।'' इस प्रकार पुरूष अहंकार से रामजी ने जब कहा कि उन्हें अकेलापन कुछ सता नहीं रहा है, तब सीताजी ने कहा,

''ओंटोंटी चिनुकुना ओल्लेल्ला तडिसे
परिमालंबुलू जार पैकोंगु तडिसे
ओ रामचन्द्रा ! तियूयंडी गडिया ।''

अर्थात् ''पसीने की एक एक बूँद से सारा बदन भीगता जा रहा है, सुगन्धित लेप फिसलता जा रहा है, पूरा आंचल भीग गया है, हे ! रामचन्द्रजी, अब तो दरवाजा खोल दीजिए ।'' सीताजी का मतलब यह था कि उन्हें पसीना छूट रहा है, इत्रों की सुगंध खतम होती जा रही है, आंसुओं की धारा से साडी भीगती जा रही है, हे ! रामजी ! अब तो दरवाजा खोलिए । तब रामजी ने कहा ''इतनी देर लगा दी, अब दरवाजा नहीं खोलूँगा ।'' तब विवश होकर सीताजी नूपुरों की ध्वनि और गले में हिलते हुए हारों के संग सास के पास चली गयीं । सीताजी की आहट पाकर कौशल्याजी ने दरवाजा खोला । तब दशरथजी का प्रश्न था कि ''इस वक्त दरवाजा क्यों खोल रही हो ?'' तब कौशल्याजी ने छोटा सा बहाना बनाया कि सुमित्रा को पान के पत्ते देना भूला गयीं, इसलिए दे कर चली आऊँगी । तब दशरथजी ने कहा ''इतनी जल्दी सुमित्रा अपने कमरे में चली भी गयीं क्या । उसे भी यहाँ बुला लो न ।''

अक्सर यह देखा जाता है कि कई घरों में सुसर की जानकारी के बिना सास बहुओं का काम कर देती हैं । सीताजी के आने की खबर

कौशल्या ने राजा दशरथजी को नहीं दी । बल्कि झूठा बहाना भी बनाया कि वह स्वयं सुमित्रा के पास जा रही हैं । यह एक बहाना है कि कहीं दशरथजी भी साथ न चलें ।

कौशल्याजी बहू को लेकर सोने के कमरे के पास आकर बोली,

''भूदेवी अल्लूडा ! इदि बुद्धी कादु
पोददु कानीवेळा सीता नंपुदुरा ?
बुद्धि लेदा नीकू ओ रामचन्द्रा !''

अर्थात् ''भूदेवी के दामाद ! यह अच्छी बात नहीं है । इतनी रात में सीता को भेज दिया ? हे रामचन्द्र ! तुम्हें अक्ल नहीं है ।''

माँ की झिडकी खाकर नींद से उठने का बहाना बनाते हुए रामजी ने कहा ''फूलों की शय्या पर लेटा था, झट से नींद आ गयी, जरा जोर से पुकारती तो क्या मैं दरवाजा नहीं खोलता ।''

पति की झूठी बातों को सीताजी ने सुना ।

रामजी ने एक छोटा सा झूठ कहा । कहीं यह झूठ पकडी न जाय इस कारण सीताजी ने अपनी सास से कहा कि ''जो कुछ भी वे कहें मुझे तो सुनना ही पडेगा, आप जाईये । ससुरजी आप का इन्तजार कर रहे होंगे ।'' सास अगर यहाँ कुछ देर और रहेंगी, तो बात बढ सकती है, इसी कारण सीताजी ने उन्हें भेज दिया । बहू के गुणों पर मन ही मन प्रशंसा करती हुई कौशल्याजी वहाँ से चली गयीं । इसी बीच रामजी ने दरवाजा खोला तो सीताजी जल्दी से अंदर चली गयीं । अंदर निश्चल रूप से दीप जल रहा था ।

श्रीरामजी ने दरवाजा तो खोल दिया, लेकिन अभी उनका गुस्सा ठंडा नहीं हुआ । कहने लगे ''मुलायम बिस्तर बिछा हुआ पलंग वहाँ है, वहाँ सो जाओ ! मैं यहाँ इस रत्न जटित कंबल पर लेट जाऊँगा'' यह कहकर रामजी नीचे लेट गए । तब सीताजी ने कहा,

''पट्टेमंचमेला परुपेला नाकु
प्राणेशा ! मीरू लेनी पानुपदियेला।''

अर्थात् ''मुलायम बिस्तर और पलंग आखिर मेरे किस काम के ? हे प्राणेश्वर ! आप के बिना वह बिस्तर भी क्या बिस्तर है ?''

तब रामजी ने एक फूलों का गुच्छा ठीक सीताजी के वक्षस्थल पर फेंका । फूलों के गुच्छों की चोट से वह कोमली बेहोश हो गयी । तब रामजी का गुस्सा ठंडा पड गया और उल्टा उन पर दया भी आई । ''मुझ से भूल हो गयी'' इस प्रकार के अमृत वचन कहते हुए उनके संग पलंग पर लेट गए । उस के बाद का विषय है,

''मल्लेलू परचिना पानुपूपैना
अलकतो आदेवी अटू मोमुलाये
निब्बरामदिलेका निलुवजालानु
सीता अलुका तीर्ची संतोषपरिचे।''

अर्थात् ''चमेली के फूलों से सुसज्जित शय्या पर वह देवी उस ओर मुड कर लेट गयी तो इधर रामजी का मन बेचैन हो उठा, फिर सीताजी के गुस्से को ठंडा कर प्रसन्न हो गए ।''

इस छोटे से गीत की एक फलश्रुति भी है, ''सीताम्मा गडीयलू पाडिना, विन्ना एप्पूडू दम्पतुलु एडाबायूकुंदुरू''

अर्थात् ''सीताम्मा की कुंडी गीत को अगर कोई भी दंपत्ति गाये या सुने तो वे दंपत्ति जीवन में कभी भी जुदा नहीं होंगे ।''

सीतारामजी के वैवाहिक जीवन में घटित एक मधुर क्षण से संबंधित यह एक मधुर गीत है । अनुभवी लोग कहते हैं, पति - पत्नी के गुस्से उतनी ही देर टिके रहते हैं जितनी देर आईने पर एक मूँग का दाना टिका रहता है । पूज्य दंपत्ति सीतारामजी के इस एकान्त क्षणों को मनन करते हुए इस लौकिक जगत में साधारण दंपत्तियों के हृदय सदा ही सुसंस्कारवान होंगे ।

* * *

5. सीता का कारावास

लोक गीतों में अत्यंत लोकप्रिय संवादों से युक्त लोक गीत है 'सीताजी का कारावास ।' नाटकीय संवाद शैली का निर्वाह इस में अत्यंत सुंदर ढंग से प्रस्तुत हुआ है । केवल संवाद ही नहीं बल्कि भाव वैचित्र्य की अभिव्यक्ति भी इसमें सुंदर रूप से अभिव्यक्त हुई है ।

रावण द्वारा बंदी बनाए जाने पर भी सीताजी ने उनकी निंदा की । सम्मान देकर ही सीताजी ने संवाद जारी रखा । लेकिन अब सीताजी का क्रोध अपनी सीमा पार कर गया था । रावण ने सीताजी से कहा कि तुम्हें बंदी बनाने की खबर पाकर जनकजी प्रसन्न हुए ।'' यहाँ जनकजी शब्द का अर्थ जनक महाराज को दृष्टि में रखकर ही किया गया है । सीताजी ने भी पिताजी के अर्थ को ही ग्रहण कर जवाब दिया । सीताजी ने कहा कि ''इस खबर को अगर मेरे पिताजी सुनते तो, हे भाई ! सिर कटवाने की आज्ञा देते । हे भाई ! शायद तुम्हारे पिताजी होते तो यह खबर सुनकर खुश हो जाते होंगे, लेकिन मेरे पिताजी सुनते तो एक सिर नहीं, कई सिरों को काटने की आज्ञा देते ।'' उनके साथ नीच व्यवहार करने वालों के साथ भी सीता जी ने 'भाई' कहकर संबोधित किया । इस प्रकार उन्होंने उनकी दुष्ट बुद्धि को संवारने की कोशिश की । 'भाई' कहकर पुकारने के बाद कोई भी व्यक्ति सामने खडी किसी भी स्त्री के प्रति कलुषित भावना के साथ आखिर कैसे देख सकता है ? सीताजी ने जब 'भाई' कहकर संबोधित किया तो रावण को गुस्सा आ गया ।

''अन्ना अन्नानियनेवु आ भ्रमलू मानु
नी मीदि मोहमुना निनु देस्ती चेरलू ।''

अर्थात् ''भाई भाई कहकर कोई भ्रम में मत रहना, केवल तुम पर मोह होने के कारण ही मैं ने तुम्हें बंदी बनाया है ।''

'भाई' कहकर प्यार से सीताजी के संबोधन करने पर भी रावण की नीच सोच बदली नहीं । लाज छोडकर कहने लगे कि उन्हें उन पर मोह हो गया है । तब सीताजी ने झट से कहा,

''ओकरी भामनु नीवु ओनगोरी तेस्ते
गोर्रे वले नी गोंतु कोसुरा यमुडू''

अर्थात् ''किसी और की पत्नी पर मोहित होकर अगर तुम लाओगे तो यमराज तुम्हारा गला बकरी के गले के समान काट डालेंगे ।''

परस्त्री पर मोहित होने पर यमराज बकरी के गले की तरह काट डालेंगे, कहने पर भी रावण क्या डर जाएंगे ? इसी बात को उसने यों कहा,

''यमुडू यमुडू अनुचु नीवेला वेरपिन्चेवु
यमुडू मा लंकलो चेरलावुचुन्नाडू''

अर्थात् ''यमराज, यमराज कहकर डराने की कोशिश क्यों कर रही हो ? यमराज तो हमारी लंका में बंदी बने हुए है'' धीरता से रावण ने कहा । तब धैर्य के साथ सीताजी ने प्रत्युत्तर दिया,

''इटूवंटी चेरालान्नी विरचि तुनकलू चेयूया
चक्रधरूडोच्चेनु क्षणमु तालन्ना''

अर्थात् ''इस प्रकार के सभी कारागरों को तोड कर टुकडे टुकडे करनेवाले चक्रधर आयेंगे, जरा एक क्षण तो ठहर जाओ भाई ।''

फिर रावण ने आस दिलाने की कोशिश की कि ''हर समय चिंतित क्यों रहती हो ? सीता तुम्हें हमारी लंका में राज करने का मौका दूँगा ।'' तब सीताजी ने जवाब दिया

''अन्नरो मी लंका मा केटीकि
मक्कुवातो मा वदिना मंडोदरी एलु''

अर्थात् ''आपकी लंका से हमें क्या मतलब है ? इस पर हमारी भाभी मंडोदरी प्यार से राज करेंगी ।'' कितना सुंदर जवाब है । लोक कवियों के विचारों से निकले हुए शब्द हैं ये । लोक कवियों ने ''यहाँ हमारी भाभी मंडोदरी राज करेंगी'', कहकर मंडोदरी को भाभी के रूप में और रावण को भाई के रुप में स्वीकार कर जवाब देनेवाली सीताजी के संस्कारों को दर्शित करवाया है । इस बात को सुनने के बाद रावण को हल्दी, कुंकुम देकर पति के घर सीताजी को बिदा करना चाहिए था । लेकिन काम से प्रेरित उस व्यक्ति को ये शब्द कांटे के समान चुभने लगे ।

रावण ने सीताजी से बहुत मिन्नतें कीं, और कई रिश्वतें भी देने का वादा भी किया ताकि सीताजी आंख उठा कर देखें, उससे बातें करें । उसने सीधा प्रश्न भी किया कि ''आखिर जब तुम रामजी के संग वनवास के लिए चली ही आई, तब तुम्हें इस लंका राज्य में आने के लिए आपत्ति कैसी ?'' अब सीताजी रावण की ढिटाई को सह नहीं पायीं । लंका में कदम रखूँगी - मगर कब ?

''वच्चेनु श्रीरामुडु चोच्चेनु लंका
पदितललु नरुकंगा अपुडू चूसेमु''

अर्थात् ''जब श्रीरामजी लंका में घुस कर दस सिरों का खंडन करेंगे तब देखेंगे ।'' सीताजी ने कहा जब रामजी आकर तुम्हारे सरों को काट कर तुम्हें मार डालेंगे, उसके बाद अवश्य मैं लंका में आऊँगी । कितना आत्म विश्वास है !

लोक कवियों की जानकी होने के कारण ही इस प्रकार बोल सकी । जानकी की इन बातों को सुन कर केवल पाठकगण ही नहीं बल्कि यमराज को कारावास में बंदी बनाये जाने वाले रावण भी आश्चर्य चकित हुए । इस विषय के बारे में उन्होंने सीताजी से ही पूछताछ की ।

''वेरवके नातोनु इटुलु माटलाडा
दिक्केव्वरे नीकू ई वनमुलोना ।''

अर्थात् ''ऐसी बातें करते हुए तुम्हें डर नहीं लगता ? इस वन में आखिर तुम्हारे रक्षक कौन हैं ?''

तब सीताजी ने जवाब दिया,

''दिक्कु मा रामुलु जगदीश्वरुडु वच्चु
घल्लु निमिशमुलूगानु गडुचुनोयन्ना ।''

अर्थात् ''हे भाई ! हमारे रक्षक हैं हमारे रामजी ! वे जगदीश्वर आयेंगे, तब घडियां भी मिनिटों समान कट जायेंगी ।''

कहा जा रहा है कि श्रीरामजी के आने के बाद घडियां भी मिनिटों की तरह कट जाएंगी । यहाँ भी रावण को भाई कह कर संबोधित करना वे नहीं भूलीं । श्रीरामजी ही मेरे रक्षक हैं कहने वाली सीताजी से रावण ने कहा,

''लक्षा कुमारूलु मरी लक्षा सैन्यमुलु
ना कन्टे नी विभुडू बलमु गलवाडा
इटटी सहवासम्मु एट्टलु एडबायेदवु
पग येला रामुनिकी तपसंटे चालु
चेरपोयिनादन्नि चेई पटटुना वाडू
रामुकेदुरुगा निलिची रणमंदु युध्दमुना
ओडीन्ची रामुन्नी तेस्ती नीकी चेरलू ।''

अर्थात् ''एक लाख पुत्र हैं और एक लाखों की सेना मेरे पास है, मुझ जैसे बलवान से ज्यादा बलवान है क्या तुम्हारा पति ? मुझ जैसे साहस वीर का साथ क्यों छोडना चाहती हो ? आखिर दुश्मनी क्यों, राम को बस केवल तपस्या से प्यार है । क्या सोच रही हो, बंदी बनाकर लायी गयी तुम जैसी स्त्री का हाथ वह थामेगा ? राम के सामने खडे होकर रण भूमि में युद्ध कर, राम को हरा कर तुम्हें कारावास में बंदी बनाया ।''

सबसे पहले रावण ने अपनी संपत्ति दिखायी । फिर उसके बाद समझाया कि राम तप के अलावा विलासी जीवन दे नहीं सकता । अंत में डरा दिया कि ''बंदी बना कर ले आने वाली स्त्री का हाथ वह कभी थामेगा नहीं । इसलिए मुझे स्वीकारो ।'' आगे कहा कि ''युद्ध भूमि में राम को हराकर मैं तुम्हें यहाँ ले आया ।'' क्या सीताजी नहीं जानती कि सीताजी को रावण कैसे लाये ? झट सीताजी ने जवाब देकर उसका मुँह बंद कर दिया ।

''दोंगा कुक्का वले चोच्ची तेच्चीतिवि''

अर्थात् ''सीताजी ने कहा कि ''चोर कुत्ते की तरह घुसकर मुझे लाये ।''

थोडी देर तक 'भाई' कह कर सीताजी ने उसे सम्मान दिया । उस गौरव को वह नहीं निभा सका । उसने झूठ कहा कि उसने राम पर विजय पाया । तब सीताजी अपने क्रोध को काबू में रख नहीं पायीं । उन्होंने कहा ''चोरी करने वाले कुत्ते के समान घुस कर मुझे ले आये ।'' कुत्ता कहने पर ही अर्थ निकल आता है, उसके ऊपर ''चोर'' का विशेषण देना तो 'छी' कहकर किसी को दुत्कारना ही है । फिर बंदी बनाई गयी तुम जैसी स्त्री को क्या वे अपनाएंगे ?'' इस बात का यह जवाब है,

''अग्नि मीदनु ईगलू वालुना यन्ना''

अर्थात् ''भाई ! कहीं आग पर मक्खियाँ बैठ पाएंगी ?''

''आग जैसी स्त्री हूँ मैं, तुम जैसी मक्खियाँ मेरे पास भटक भी नहीं पायेंगे ।'' यह सीताजी का समाधान था । अभी भी उनका क्रोध कम नहीं हुआ, उन्होंने कहा,

''चींबोतु लेन्नीऐना एनुगु तो सरियगुना
कुक्कालेन्नीअयिनानु करचुना सिम्हमु
सिम्हमु पिल्लालू, कोंग कलुसौना
घल्लू निमिशमुलूगानू गडचुनो यन्ना ।''

''चींटियाँ चाहे जितनी भी क्यों न हो क्या वे सब मिलकर हाथी की बराबरी कर पायेंगे ? कुत्ते चाहे जितने अधिक क्यों न हो, क्या वे सिंह को काट सकेंगे ? कभी भी क्या बगुले, सिंह के पिल्लों को छोटा समझ

सकेंगे ? हे भाई ! इन सब को पकड कर बाहर फैंक देंगे । हे भाई ! घडियां मिनिटों के समान कट जाएंगी ।''

चाहे तुम्हारे पास लाखों की सेना भी क्यों न हो मेरे राम की बराबरी नहीं कर पायेंगे । भाई, भाई कहकर पुकारने के बावजूद भी उसमें परिवर्तन आने के बजाय कामेच्छा बढती गयी । उसने कहा,

''नी रूपु चूचिते ने निलवजालनु
पोंदका ओ धडीया पोनिव्वाननेनु ।''

अर्थात् ''तुम्हारे रूप सौंदर्य को देखकर मैं अपने आप को रोक नहीं पा रहा हूँ, एक घडी ही सही तुम्हें पायें बिना जाने नहीं दूँगा ।''

इन बातों को सुनकर सीताजी घबरा गयीं । दुःख बढता गया । यह कहकर रोती गयीं ''हे भगवान ! ऐसे दुष्ट को कैसे भूल गए ? क्या अब मैं राम को जी भर कर देख पाऊँगी ? क्या इस कारावास से कभी मुझे मुक्ति मिल पाएगी ?'' फिर जिस दिन से उस माया मृग को उन्होंने देखा उस दिन से आज तक की बातों को याद कर दुखित होने लगी । कोई मेरी खबर रामजी तक पहुँचा पायेंगे ? यह सोच कर वे शोक मग्न हो गयीं ।

इतने में मुद्रिका लेकर हनुमानजी पधारे । उन्होंने समाचार सुनाया कि रामजी अपनी सेना के साथ आकर सीताजी को ले जायेंगे । सीताजी को धीरज दिलवाया कि ''जानकी माता ! समस्त सृष्टि के पालन कर्ता के रहते हुए आप को दुखित नहीं होना चाहिए । ''फिर भी सीताजी को धीरज नहीं हुआ । यह कहते हुए दुखित होने लगीं कि ''सीता, कहकर क्या वे मुझे मेरा नाम लेकर पुकारेंगे ? फिर से मैं अपने श्रीरामजी को देख पाऊँगी ? वे वैदेही कहकर मुझे पुकारेंगे ?

अपने वैकुंठ निवासी को क्या मैं फिर से देख पाऊँगी ?'' 'सीता' कहकर जी भर कर क्या श्रीरामजी उन्हें बुलायेंगे ?' कहकर दुखित होने वाली सीताजी फिर दुखित होकर कहने लगी कि ''लक्ष्मणजी जब इस रास्ते में आयेंगे तो क्या मैं अपने लाडले देवर को देख पाऊँगी ?'' सीताजी ने लक्ष्मण को 'लाडला' कहा है । कवयित्री मोल्ला ने लक्ष्मण जी को ''सुनहले रंग वाले लक्ष्मण'' कहकर संबोधित किया तो लोक कवियों ने रंग को सुनहला नहीं कहा बल्कि उनके शील को भी स्वर्णमय मानकर वर्णित किया है।

सीताजी यह भूल नहीं पायीं कि आज उसकी इस दुर्दशा का कारण कैकेयी ही हैं । यह सहज है कि कष्टों से बढकर कष्ट के कारणों को ज्यादा अहमियत दी जाती है । उन्होंने सोचा ''कैकेयी माँ के कारण आज यह सब कुछ हुआ है ।''

सीताजी के इस दुख भरे गीत में लोक कवियों का बडप्पन इसी में झलकता है जब मुसीबतों में घिरी हुई सीताजी को, वे इस गीत के द्वारा उन मुसीबतों से उबारते हैं ।

''वशिष्ठ महामुनुलू वच्चीरी
अप्पूडू वैदेही पटटमु कटटीरी''

अर्थात् ''वशिष्ठ जैसे महान मुनि पधारे, तब उन सब ने मिलकर वैदेही को महाराणी बनाया । इस तरह उन्होंने इस गीत को समाप्त किया । इस प्रकार लोक कवियों ने कष्टों से घिरी सीताजी को पार करवाकर महारानी बनाया है ।

* * *

6. सीता के निशान - सीता की मुद्रिकाएँ

वाल्मीकी रामायण में काकासुर संवाद सीतारामजी की उदात्तता को उजागर करने के लिए वर्णित किया गया है । वहाँ केवल एक ही पहचान का वर्णन है । लेकिन लोक कवियों ने कई तरह के निशानों की कल्पना की है । जब हनुमानजी ने रामजी से पूछा कि ''सीताजी को क्या पहचान दिखाकर उन्हें विश्वास दिलाऊँगा, और उन्हें मैं खुद उन्हें कैसे पहचानूँगा ?'' तब रामजी द्वारा बताए गए पहचान ही ''सीतादेवी के पहचान माने जाते है ।'' जब हनुमानजी ने पूछा कि,

''श्रीकांता रूपंबू माकु एरिगिंची
अतिव मेच्चेटटुलु आनवालिम्मी''

अर्थात् ''कांता के रूप को हमें बताइये और ऐसी कुछ मुद्रिकाएँ दीजिए ताकि मैं उस स्त्री का विश्वास पात्र बन पाऊं ।''

ऐसे प्रश्न करनेवाले हनुमानजी को रामजी ने सीताजी को पहचानने निमित्त विवरण दिये । सीताजी को पहचानने के लिए उनके द्वारा दी गयी पहली पहचान ही काफी है ।

''एप्पुडू श्रीरामा यनि तलचुचुंडू''

अर्थात् ''सदा ही 'श्रीराम' नाम का स्मरण करती रहती है ।'' श्रीरामजी का यह दृढ़ विश्वास है कि सीताजी निरंतर उन्हीं के विचारों में तल्लीन रहेंगी । अब भौतिक रूप से सीतादेवी के पहचान हैं -

''तलंटू आडके आडीनट्लुंडू
पेट्टक काटुक पेट्टिनट्लुंडु
अलदुक परिमलमु अलदीनट्लुंडू
दिद्दका तिलकम्मु दिद्दिनट्लुंडू''

अर्थात् उनका भौतिक रूप ऐसा है ''बाल धोए बिना ही ऐसा लगे कि वे जैसे धोए हुए बाल हों, काजल लगाए बिना ही लगाने की तरह, इत्र लगाए बिना ही लगाने जैसा, कुंकुम रखे बिना ही रखने की तरह, वे दिखती हैं ।''

ये सभी पहचान सीता जी को अनसूयाजी के द्वारा मिले हुए वर हैं ।

''पायेनी शृंगारमु, मायनी कुडता, कंदनी भूषणमुलु कांता ता निच्चे।''

अर्थात् ''न मिटने वाला श्रृंगार, मलिन न होने वाले वस्त्र, खराब न होने वाले आभूषण सब कुछ स्वयं अनसूयाजी ने सीतादेवी को दिए ।''

इस प्रकार अनसूयाजी द्वारा दिए गए वरों के प्रसंग को भी सीतादेवी की पहचान के रूप में रामजी ने बताया ।

विवाह के पहले ही सीताजी को देखने श्रीराम का आना, सुहाग रात में मुहर को उछालना, आईने में सीताजी स्वयं अपने प्रतिबिंब को देखकर यह भ्रम कर बैठना कि शायद रामजी परस्त्री के प्रति आकर्षित हो गए हैं, पानी में अपनी ही परछाई देखकर चंद्रमा समझ बैठने की भूल करना, प्रणय क्रोध में एक बार जब सीताजी, रामजी से रूठकर मुँह मोड कर बैठी हुई थीं, तब रामजी अचानक छींके, तो सीताजी यह कह कर

मजाक करने लगीं कि ''गोविन्द चिरायु हों'' तथा काकासुर कथा आदि यहाँ, सीतादेवी को पहचानने के लिए बताए गए प्रसंग हैं ।

लोक कवियों ने सीतादेवी को मुग्धा जताने के लिए इस प्रकार के वर्णनों को चित्रित किया है - जैसे सीतादेवी का आईने से भी अनभिज्ञ रहना, पानी में प्रतिबिंब को भी पहचान न सकना, आदि । लेकिन सीताजी को इतनी नादान भी हम समझ नहीं सकते । इन लोक कवियों ने अक्सर ऐसे विचारों को व्यक्त किया जिसे महान शिष्ट कवि भी कभी कल्पना नहीं कर पाते थे । लेकिन यहाँ इन गीतों में उन कवियों के भाव हल्के लगने लगे हैं । बाकी गीतों के साथ जब इन गीतों की तुलना की जाती है तो रसास्वादन करने वालों के लिए गीतों का यह भाग उतना रूचिकर नहीं लगेगा ।

अब सीताजी की मुद्रिकाएं । वस्तु के रूप में रामजी द्वारा भिजवायी गयी ये मुद्रिकाएं ही सीतादेवी की पहचान बन गए हैं । इससे भी अधिक इस मुद्रिका पर राम का नाम अंकित है । इसे लानेवाले हनुमान और उसे पाकर प्रशंसा करनेवाली सीताजी, दोनों ही धन्य हैं । श्रीराम का मोहर पाते ही सीताजी को असीम प्रसन्नता हुई । उन्हें लगा जैसे उन्होंने श्रीराम को ही पा लिया है । उन्होंने उसी मुद्रा को देखते हुए अपनी पूरी गाथा सुनाई । तब उनकी दशा ऐसी थी जैसे चेतन और अचेतन के बीच भेद को भी जाना नहीं जा सकता ।

''विनवे मुद्रिका नाटी विन्तलु'' अर्थात् ''सुनो हे मुद्रिका ! उन दिनों की अचरज की बातें, कहती हुई पुरानी यादों को वे उस मुद्रिका को सुनाने लगीं । शिंशुपा वृक्ष के नीचे बैठी सीतादेवी के सामने उस वृक्ष

के ऊपर बैठे हुए हनुमान द्वारा इस मुद्रिका को गिराए जाने का चित्रण इस गीत में वर्णित किया गया है । श्रीराम नाम से अंकित इस मुद्रिका को पाते ही सीताजी बेहोश हो गयी । प्रसन्न होने के कारण ही सीतादेवी बेहोश हो गयी इसलिए उन्हें जल्दी ही होश आ गया था । कुछ ही देर में संभल कर उस मुद्रिका को ही एक व्यक्ति के रूप में मानकर, जिस प्रकार रामजी को गौरव दिया करती थीं उसी प्रकार उस मुद्रिका को भी गौरव देकर बोलने वाली सीताजी के ये शब्द इस गीत में प्रस्तुत हैं ।

''अरुदूग मिमु जूडा
अद्भुतंबाए नेडू''
सुदिनमु कदा नेडू चूचिनानम्मा नेडु
तन पति पंपिनारा नीवे ता वच्चिनावा?

अर्थात् ''सीतादेवी प्रश्न करने लगीं कि विरले ही आप के दर्शन होते हैं । आज तो अद्‌भुत ही हो गया है । आज तो सुदिन है जो मैं आज यह सब कुछ देख पाई । क्या आप को मेरे पति ने भेजा है या आप स्वयं आ गयी हैं ।'' उस के बाद अपने विवाह संबंधी विषय, राज्याभिषेक के भंग होने के विषय, वनावास संबंधी विषय, तथा माया मृग, लक्ष्मण का दूषण, रावण का भिक्षा माँगने आना, जटायु युद्ध, लंका में रावण के सेवकों के अत्याचार, आदि सभी विषयों को विस्तार के साथ सीतादेवी उस मुद्रिका को सुनाती गयी । इन तथ्यों के कारण हनुमानजी को सीतादेवी को पहचानने में आसानी हो गयी । इन सारे विषायों को सुनने के पश्चात हनुमानजी पेड से उतर कर आये, फिर

रामजी का समाचार सुनाने लगे। सीताजी ने बताया कि रावण ने उन्हें केवल एक महीने तक ही महौलत दी है। आगे लक्ष्मणजी को यह बात विशेष रूप से बताने के लिए कहा कि उन्हें दूषित करने का फल वे भुगत रही हैं। जानकी द्वारा दिए गए सिरोभूषण को लेकर हनुमानजी ने पहले लंका को जलाया, फिर रामजी के पास जाकर सीताजी की खबर सुनाये।

''इहा ओक नेला सुम्मा ! इच्चे सुम्मा
अनी पल्केनु भामा अर्कवंशाब्धीसोमा ।''

अर्थात् हनुमानजी सीतादेवी की बातें श्रीराम को सुनाने लगे कि ''हे अर्कवंश के राजा ! उस युवती ने सुनाया कि अब एक महीना ही बचा है, यही महौलत सीतादेवी को रावण ने दी है। यह कहते हुए उन्होंने आप को यह सिरोभूषण देने के लिए कहा है।'' उस सिरोमणि को देखते ही रामजी बेहोश हो गए। एक दूसरे के आभूषणों के दर्शन मात्र से ही इस प्रकार दोनों का बेहोश हो जाना उन दोनों के पवित्र प्रेम को दर्शाता है।

तब श्रीराम सौमित्री से यह कहते हुए दुखित होने लगे कि ''कब मैं उस राक्षस का संहार कर सकूँगा ? और कब सीता को देख पाऊँगा ?'' श्रीरामजी की दुःख की तीव्रता को कम करने के उपाय केवल लक्ष्मण को ही मालूम है। इस कारण झट से उन्होंने कहा,

''जनानाथा ! विनु दसकंठुनी रेपे संहरिंची
तोडी तेस्तुवु वैदेहिनी संसयामेला

कूडीयुन्दुवु वैदेहिनी''

अर्थात् ''हे प्रजा के नायक ! सुनिए। कल ही जाकर आप उस दस सिर वाले रावण का संहार करेंगे। फिर वैदेही को साथ ले आएँगे। शक क्यों कर रहे है ? वैदेही के साथ आप रहेंगे।'' लक्ष्मण की बातें सुनकर श्रीराम को धीरज मिला। श्रीराम को धैर्य दिलाना केवल लक्ष्मण को ही आता है। तुरंत श्रीराम कर्तव्योन्मुख हुए और सुग्रीव आदि को चेतावनी देकर, विभीषण को शरण देकर, रावण का संहार कर, धरणी पुत्री को साथ लिए पुष्पक विमान में अयोध्या पहुँचे। ये ही सीताजी की मुद्रिकाएँ हैं।

एक फलश्रुति है कि इस ''सीता मुद्रिका का दर्शन'' नामक गीत को पढने वालों को, लिखने वालों को श्रीराम राज्य - भोग, धन - धान्य, पुत्र आदि देंगे।

* * *

7. सीता का अग्नि प्रवेश

इस गीत का प्रारंभ तब होता है जब सीतादेवी और श्रीराम चौपड़ खेल खेल रहे थे। उसी समय वहाँ माया हिरण का आगमन होता है, उस हिरण की सुंदरता से मुग्ध होकर सीतादेवी, श्रीराम से उस हिरण को लाने की विनती करती हैं। उस हिरण को देखते ही श्रीराम मना करते हुए कहते हैं कि ''हे सीता ! वह हिरण नहीं है, यह तो रावण की माया है।'' लेकिन सीताजी मानती नहीं हैं कि यह कोई दानवों की माया है।

''ब्रह्मेट्लु जेसेनो बंगारू लेडी
आडुकोंदु इम्मु ओ अवनिनाथा !''

अर्थात् सीताजी ने कहा ''हे भूमि के रक्षक ! न जाने ब्रह्मा ने सोने के हिरण की सृष्टि कैसे की है ? मैं उसके साथ खेलना चाहती हूँ, लाकर दीजिए।''

सीताजी की बातों को टाल न सकने के कारण श्रीराम बाण और तीर लेकर निकल पडे। उसके बाद की कहानी है उस हिरण का मरते हुए ''हा ! लक्ष्मण ! कहकह कर चीखना, उसके बाद सीताजी का लक्ष्मण को डांटना, उसके बाद भाई के लिए निकलते हुए लक्ष्मण द्वारा सीतादेवी के हिफाजत के लिए रेखाओं का खींचना'' ये सब यथातथ वर्णित हैं। रावण संहार के बाद श्रीराम लंका से सीताजी को लाने के लिए विभीषण से कहते हैं। तब विभीषण यह तय नहीं कर पाते कि सीताजी को सज - सजा कर लाया जाय या जैसी हैं वैसे ही लाया जाय। फिर श्रीराम से वे पूछते हैं कि ''आज जैसी है वैसे ही ले आऊं ? या फिर

पहले जैसी थीं वैसे ले आऊं ? ।।'' तब श्रीराम ने विभीषण से पूछा कि ''अब सीताजी कैसी हैं ? तब विभीषण ने कहा,

''कारेनु कन्नीरू कट्टिनवी जडलु
मासिन वस्त्रमुलु मरि मुरिकि तोल्लु
हृदयमुन मोलिचिंदि ओक वेदुरूमोलक''

अर्थात् ''निरंतर आँखों से अश्रु धाराएँ बहती रहती हैं, सिर पर जटाएं बन गयी है, मैले कुचले वस्त्र हैं, हृदय पत्थर सा हो गया है।''

इस प्रकार कहने पर श्रीराम ने कहा कि ''उनकी पत्नी को वैसे ही ले आएं जैसे वे पहले थीं।''

तब विभीषण की पत्नी अत्यंत सावधानी से सीताजी को स्नान करवाती हैं। फिर रेशमी साडियां, सुंदर ब्लाउज और आभूषण उन्हें देती हैं। आभूषण पहन कर सीताजी आईने के सामने खडी हो कर कहने लगीं।

''राराजु तन्निंक नम्मडनि पल्के
नाकु आभरणालु येल इच्चितिरी
देवरा नम्मिंचवच्चुनो लेदो !
रतनाल सोम्मुलु विडिपिंचु ननेनु''

अर्थात् ''राजा अब तो मुझ पर विश्वास करेंगे नहीं, आखिर आपने मुझे ये आभूषण दिए क्यों ? श्रीराम को विश्वास दिला पाऊंगी या नहीं ? रत्नों के ये आभूषण निकाल दूँगी।'' तब विभीषण ने मना किया। सर्वालन्कृत सीताजी को न जाने क्यों संदेह हुआ ? न जाने क्यों यह सोच कर चिंतित हुई कि श्रीराम को कैसे विश्वास दिला पाएगी ?

दिव्य रथ पर आकर जब सीताजी, श्रीराम के चरणों पर गिर कर प्रणाम करती हैं, तो श्रीराम अपने पैरों से उन्हें हटा कर पूरब की ओर मुड कर खडे हो गए, तब सीताजी भी जाकर उनके सामने खडी हो गयीं तो श्रीराम उत्तर दिशा की ओर मुड़ कर खडे हो गए । कई बार ऐसे हुआ, तब श्रीराम क्रोधित हो कर कहने लगे,

''क्षेममा कुशलमा इंदीवराक्षी
आ पाप रावणुनी वसमुलो नीवु
वसियिंचीयुंटिवा वैदेही नीवु''

अर्थात् ''हे इन्दिराक्षी ! कुशल हो । हे वैदेही ! तुम उस पापी रावण के वश में रहकर आ रही हो ?'' इस प्रकार श्रीराम के कहने पर वे मूर्छित हो गयी । मूर्छित पत्नी को छोडकर श्रीराम ने अपना रथ आगे बढा दिया । होश में आकर सीतादेवी मिन्नतें करने लगीं, ''हे श्रीराम ! मत जाओ, तुम्हारे भाईयों की कसम ।'' फिर भी श्रीराम रूके नहीं । सीताजी ने कहा, ''मेरी कसम ।'' तब जाकर रथ रूक गया । सीतादेवी श्रीराम के सामने खडी होकर कहने लगीं कि उनकी कोई गलती नहीं है । लेकिन श्रीराम, लक्ष्मण से कहने लगे कि ''दूसरों का जूठन उन्हें नहीं चाहिए । वे कहने लगे कि वे राज - काज छोडकर भीख मांगने को भी तैयार हैं, लेकिन इस स्त्री को वे अपना नहीं सकेंगे ।'' तब सीताजी यह कहते हुए उन्हें विश्वास दिलाने की कोशिश की,

''आरू नेललु चेरलोन नेनुंटि गानि
आ पाप रावणुनि ने जूडलेदु''

अर्थात् ''मैं वहाँ छः मास कारागार में अवश्य रही, फिर भी मैं ने उस पापी रावण को नहीं देखा ।''

लेकिन श्रीराम ने जवाब नहीं दिया । लक्ष्मण को बुला कर कहने लगे कि ''लक्ष्मण की कसम खाकर सच बोलो ।'' यह सुनने के बाद सीताजी के गुस्से की सीमा नहीं रही । उन्होंने सीधा प्रश्न किया,

''इदेमी चोद्यंबु यिनकुलाधीशा !
मरदलुतो सत्यालु चेयुदुरा भुविनि
आडजन्ममु बुट्टि अज्ञानिनैति
गुर्राललोनयिन पुट्टनैति''

अर्थात् ''हे ईश्वाक वंश के राजा ! ये क्या बात हुई ? इस धरती पर क्या कहीं देवरों को प्रमाण मान कर सच की स्थापना अब तक क्या किसी ने की है । स्त्री जन्म पाकर अज्ञानी हो गयी । काश मैं घोडों के बीच जन्म लेती ?'' कहती हुई वे दुखित होने लगी । तब अग्नि - कुंड तैयार करने के लिए श्रीराम ने वानरों को आज्ञा दी । मिनिटों में वानर सेना ने इमली, जामुन, बेल, नीम, कटहल, नारियल, आदि पेडों को उखाडा और अग्नि तैयार कर सीतादेवी से कहने लगे ''सीतादेवी, अग्निन - कुंड में प्रवेश कीजिए । उस परिस्थिति में भी सीताजी बिना घबराहट की खडी हो गयी ।

''अनि इट्लु वानरूलु भूसुतनु बिल्व
तोलकरि मेरूपुवले ताकदलचि वच्चे''

अर्थात् ''इस प्रकार वानरों द्वारा भूपुत्री को बुलाने पर वे ऐसी आभा के साथ चली आयी जैसे पहली वर्षा में चमकनेवाली बिजली हों ।''

इस प्रकार पहली वर्षा में चकाचौंध करने वाली बिजली समान सीतादेवी की आभा को देखकर देवर लक्ष्मण थर थर कांपने लगे ।

उस समय की श्रीराम की दशा का वर्णन लोक कवियों ने नहीं किया है । लक्ष्मण तो थर थर काँप उठे । भाभी के प्रति उस देवर के भक्ति - भाव को कवि ने ताड लिया । थर थर कांपने वाले देवर से सीतादेवी ने जो बातें की उन बातों से लक्ष्मण का शील और सीतादेवी का आत्मविश्वास व्यक्त होता है ।

''लक्ष्मणुनि वणकुलु आ वदिनजूचि
चिंतिंचुतू बल्के श्री महालक्ष्मी
हडलुकुमि लक्ष्मण! जडुपेलनिपुडु
मिम्मन्न माटलु अनुभवबमय्ये
चेसिन पापम्मु वंडिन चद्दी
कुडवक पोवय्य कोंतकालमुनकु
अग्नि जोच्चि नेनुवोडितिनैना
नेल मूडु वर्षालु कुरव वेन्नटिकि''

अर्थात् ''लक्ष्मण को कांपते हुए भाभी ने देखा । चिंतित होती हुई महालक्ष्मी कहने लगीं, हे लक्ष्मण, घबराओ मत । आखिर अब डर किस लिए ? मैं ने जो बातें आप को सुनायीं उनका अनुभव हो गया है । किये हुए सभी पाप कार्य पके भोजन समान होते हैं । कुछ दिनों के बाद ही सही उसका बुरा असर होता ही है । अग्नि प्रवेश कर अगर मैं हार जाऊं तो यह निश्चय समझो कि महीने में तीन बार कभी वर्षा नहीं

होगी । हे लक्ष्मण, मैं तो श्रीराम की पत्नी ही नहीं रहूँगी । और न ही मैं जनक जी की पुत्री ही कहला सकूँगी ।''

अंतरिक्ष में ब्रह्मा, महेश, विष्णु, दशरथ आदि पितृ देवतायें, इंद्र, आदि देवतायें सोम और तीन शक्तियां आदि खडे होकर चिंतित होने लगे कि सीतादेवी अपमानित की गयी हैं । धरती थर थर कांपने लगी ।

सीतादेवी उस अग्नि - कुंड के सामने खडी होकर तीन बार प्रदक्षिणा कर अंजुली भर मोतियों को उस कुंड में डाल दीं । उसके बाद सबसे पहले श्रीराम को हृदयपूर्वक नमन करती हुई कहने लगीं कि ''हजार जन्मों में भी गोविंद ही मेरे पति हों, और लाख जन्मों में भी लक्ष्मण ही मेरे देवर हों । '' यह कहकर वे उस अग्नि - कुंड में ऐसी चली गयीं जैसे वे किसी सरोवर में जा रही हों ।

''कणकणल निप्पुलू कुंकम्मुलाये
परिचुन्न निप्पुलू पन्नीरूलाये
दापिन निप्पुलू चंदनंबाये
मंडेटि निप्पुलू वडगल्लु आये
चिलुकलू कोवेललु हंसलु गुमिग
सीतकु जोडुगा कोलनाडु चुंडे
ओक चक्रवाकमु ओक भेरूंडपक्षी
सीतकु तोडुगा कोलनाडु चुंडे
सिंहासनमुमीद सीत गूर्चुडे
श्रीरामुनितो सीता भाषिंपतोडगे
जयिस्ती श्रीराम जयिस्तीनग्नि

राघवुल तम्मुडा जयिस्तिनग्नि
लक्ष्मण देवरा जयिस्तिनग्नि
अनि यिट्लु पलिकेटि पल्कुलु विनि
अन्नतो लक्षमणडु हडलुचु पल्के''

अर्थात् ''अग्नि कण तुरंत कुंकुम में बदल गए, वहाँ व्याप्त आग इत्तर में बदल गया, नीचे पडी हुई आग, चन्दन सा बन गया, सुलगता हुआ आग ओले में बदल गया। उस सरोवर में तोते, कोयल, हंस इकट्ठे होकर सीतादेवी के साथ खेलने लगे। एक चकोर पक्षी और एक गरूड पक्षी सीतादेवी के संग उस सरोवर में खेलने लगे। सीतादेवी सिंहासन पर बैठ गयीं और श्रीराम के संग बातचीत करने लगीं। ''हे श्रीराम ! मैं ने अग्नि पर विजय पा लिया है। हे दशरथ के पुत्र ! मैं ने अग्नि पर विजय पा लिया है। हे राघव के भाई ! मैं ने अग्नि पर विजय पा लिया है। लक्ष्मण भाई की ओर देखते हुए सोचने लगे तथा सीताजी के द्वारा बार बार कहने पर भी कि वे जीत गयी हैं, फिर भी श्रीराम चुप ही रहे। उनकी यह चुप्पी का कारण निश्चेष्टता है, या अनादर की भावना है, मालूम नहीं हो रहा था।'' लक्ष्मण ने डरते हुए ही अपने भाई से कहा,

''इदि येमी चोद्यमो अन्नराघवुडा
मंटलो मा वदिने माट्लाडुतुंदि''

अर्थात् ''हे भाई राघव ! न जाने यह कैसी अचरज की बात है, मेरी भाभी आग में रहकर भी बातें कर रही हैं।'' इस प्रकार आश्चर्य चकित होकर कहने पर श्रीराम ने उत्तर दिया,

''अटुलनकु लक्ष्मण्ण अटुलनकुमय्या
आडवारिकि गलवु अग्निमंत्रमुलु
अलिकेरू तुडिचेरू मुग्गु पेट्टेरू
मंडेटि मंटलु मारूमसि लेरू
कागेटि येसरयिन कलियदीसेरू
अनि अट्लु पलिकेडु श्रीरामुलकुनु''

अर्थात् ''ऐसा मत कहो, हे भाई लक्ष्मण, ऐसा मत कहो, स्त्रियों के पास अग्नि मंत्र होते हैं। वे लेप सकती हैं, पोंछ सकती हैं, रंगोलियाँ सजा सकती हैं, सुलगती आग में चल भी सकती हैं। उबलते हुए अदहन् में हाथ डाल कर हिला भी सकती हैं।'' इस प्रकार श्रीराम ने उत्तर दिया।

यहाँ श्रीराम की बातों में उदात्तता का लोप हो गया है। उन्होंने स्त्री जाति पर व्यंग्य कसा है। श्रीराम की बातों से केवल पाठकगण ही नहीं स्वयं अग्नि देवता भी क्रोधित हुए।

''अग्निहोत्रुनकपुडु अहंकारमोच्चि
आकाशमंतटा पेरिगेने अग्नि
अंतलो भूदेवी अनि वेग वच्चि
सीतनु येत्तुकोनि तोडलपैनुंचि
कोम्मलकु निंतिंत तेगुवगुन चेप्पुमा
कोमलि मा सीत कोंडिक गादा''

''सीतयु श्रीरामुतोगूड कुंटे
यिंकुनु जलनिधुलु यिदि निजमु सुम्मि

सीतयु श्रीरामुलोप्पु विनकुंटे
घरमीद पंटलु पंडवेन्नटिकि''

अर्थात् ''अग्नि देवता अत्यंत क्रोधित हुए तथा अग्नि ज्वालाएँ आसमान पर छा गयी। इतने में भूदेवी अत्यंत तेजी से वहाँ आयी और सीताजी को उठाकर अपनी जांघ पर बिठाकर सीताजी से कहने लगीं कि ''स्त्रियों को इतना साहस दिखाना उचित है क्या ? हमारी सीता तो पवित्र है।'' आगे अग्नि देवता ने कहा, ''अगर सीताजी श्रीराम के साथ नहीं रहेंगी तो यह निश्चय है कि भूमि पर पानी के स्रोत सूख जायेंगे। अगर सीताजी श्रीराम के संग न रहेंगी तो इस धरती पर फसल नहीं उगेंगे।'' स्वयं अग्निदेव ने यह बातें कही। भूदेवी ने भी सीताजी के साहस को देख कर सीताजी को फटकारा कि स्त्री होकर इतनी जुर्रत दिखाना क्या ठीक है ? इतने में दशरथ जी ने भी कहा कि सीता पतिव्रता नारी है। फिर श्रीराम को सीख भी दी कि वे तुरंत सीता को अपनाएँ। आगे उन्होंने यह भी बताया कि अगर वे सीताजी को अपनाने के लिए तैयार नहीं हैं तो उनके लिए तो परलोक में स्थान नहीं मिलेगा। सीताजी की निंदा न करने के लिए भी कहा।

''सीतनु रावणुडु चेरनुंचुमोदलु
नरकवासमुनंदु मेमुंटिमय्या
दुष्टरावणु नीवु द्रुंचिनदि मोदलु
सुरलु मेमंदिगा सुखमु गंटिमि
भूलोकमातनु पुरूषोत्तमुडा
चेकोंटिवा माकु क्षेमंबु सुम्मा''

अर्थात् ''दशरथ जी ने कहा कि जब से सीता, रावण के कारावास में बंदी बनाई गयी तब से वे सब लोग नरक में जी रहे हैं। दुष्ट रावण का वध जब तुम्हारे हाथों हुआ तब से देवताओं के संग वे लोग भी सुख पा रहे हैं। हे पुरूषोत्तम ! अगर तुम ने सीताजी को अपना लिया तो समझो हम सब कुशल - मंगल रहेंगे।'' यह कहते हुए दशरथ जी ने अपनी और सीताजी के बीच के संबंधों के बारे में सविस्तार से बताया। ठीक उसी समय आकाशवाणी सुनाई दी कि सीता पतिव्रता है। फिर फूलों की वर्षा हुई। तब भूदेवी, सीताजी को ले आकर श्रीराम के जांघों पर बिठायीं। इस प्रकार सीताराम को मिलाकर दशरथ जी और भूदेवी अन्तर्धान हो गए। तब सीता और रामजी आनन्दपूर्वक अयोध्या आ गए।

इस प्रकार अग्नि - प्रवेश, अग्नि देवता का आग्रह, दशरथजी की बातें, भूदेवी द्वारा सीताजी को श्रीराम को सौंपना आदि सभी लोक कवियों की ही कल्पना है। इस प्रकार सीताजी के अग्नि - प्रवेश की घटना को अत्यंत महान घटना के रूप में इन लोक कवियों ने ढाला है।

* * *

8. सीता - पंखा

तेलुगु भाषा का ठेठ शब्द है सुरटी । सूरा का अर्थ है हवा और बवंडर, अर्थात् जिससे हवा आती है, उसे सूरटी कहा जाता है । आंध्र प्रदेश के सत्यवेडू जिले में ''सुराटीपूरा'' नामक एक गाँव है । इस नाम के पीछे एक कारण है । उस गाँव के मँदिर में पार्वती - परमेश्वर की एक मूर्ति है जिसमें पार्वती, परमेश्वर को पंखा करती दिखती हैं ।

किसी को पंखा करना, एक प्रकार से यह कार्य सेवा धर्मों के अंतर्गत आता है । चाहे कोई जितनी भी ऊँचे ओहदे में हो, वे किसी के प्रति अपना अनुराग जताना चाहे या फिर किसी के प्रति सम्मान जताने के लिए, पंखा करते हैं । यह आदर की भावना को सूचित करता है । तेलुगु साहित्य में ''पांडूरंगा महात्यम'' में यह लिखा गया है कि निगम शर्मा की पत्नी निगम शर्मा की बहन को सोने के पंखे से पंखा करती है । इसी प्रकार ''पारिजातापहरणमु'' काव्य में सत्यभामा के गुस्से को कम करने के उद्देश्य से श्रीकृष्ण, सत्या की सखी से पंखा लेकर स्वयं ही पंखा करते हैं । यह सेवा एक प्रकार से अनुराग से प्रेरित सेवा है ।

एक लोक कवि ने सीता और सीता की बहनों द्वारा शांता को पंखा करने की एक घटना की कल्पना कर वनवास के बाद अयोध्या में घटित प्रीति - भोज के उत्सव का वर्णन एक गीत में किया है । उस प्रीति - भोज में पहले पुरुष लोग खाना खाकर उठते हैं । उस के बाद स्त्रियां बैठती हैं । यहाँ लोक कवि बडे चमत्कार के साथ प्रीति - भोज में आह्वानित लोगों का वर्णन करते हैं । कौन कहाँ बैठे है उसका वर्णन है । श्रीराम द्वारा दिए गए खाने के ठौर को लेकर अपनी थाली के साथ

हनुमान का अतसी पेड पर चढ कर बैठ जाना, और उस प्रीति - भोज के बीच हुए हास - परिहासों का वर्णन लोक कवि ने इस गीत में वर्णित किया है ।

आंध्र प्रदेश के घरों में विवाह आदि शुभ कार्यों में प्रीति - भोज संपन्न करते समय जिस प्रकार का सौंदर्य वहाँ दिखायी देता है उस सौंदर्य का वर्णन इस गीत में वर्णित है । उस प्रीति - भोज के सारे पकवान तेलुगु प्रांत के ही है ।

यह गीत नाट्य से प्रारंभ होता है । उसके बाद स्नान आदि कार्यक्रम । इसके पश्चात प्रीति - भोज । इस उत्सव में ब्रह्मा, इंद्र, जनक, वशिष्ठ, ऋष्यश्रृंग, सुग्रीव आदि कई लोगों का आगमन होता है ।

परोसे गए हैं, कई तरह के खीर, जैसे सेम्या का खीर, साबूदाना खीर आदि । पका हुआ सुगंधित चावल, करेले के बडिए, कटहल की सब्जी, घर की गाय की घी, और भी कई पकवान परोसने के बाद भरत आपोसन करते हैं । श्रीराम, भरत से यह कहते हुए अपने संग जबरदस्ती से खाने के लिए बिठाते हैं कि तुम ने भी तो चौदह सालों तक ठीक से खाना नहीं खाया होगा अब हमारे संग बैठ जाओ । तब भरत भी बैठ जाते हैं । शत्रुघ्न, कौशल्या, सुमित्रा, कैकेयी परोसने के लिए तैयार हो जाते हैं । केले और कटहल के फल जब परोसे जा रहे थे तब श्रीराम अपने जीजाजी ऋष्यश्रृंग से परिहास करने लगते हैं कि उन्हें तो जंगल में उगे हुए सहिचन के फल चाहिए । फिर वे हनुमानजी को बुलाकर पूछते हैं कि ''इस प्रकार मेरा इस राज्य शासन करना तुम्हें सही लग रहा है न ।'' उस पर हनुमानजी जवाब देते हैं कि,

''मेडबलिमि तलप कोम्मुलवाडिकाक
सीतेश्वर ! माकु येक्कडिदि बलिमि
मीरू कलूगग माकु सकल कार्यमुलु''

अर्थात् ''हे सीतेश्वर ! हमारे पास इतनी ताकत कहाँ ? ताकत उन के पास होती है जिन के पास अधिकार का बल हो । आप है तो हमारे सभी कार्य संपन्न हो जायेंगे ।'' कहते हुए वे अपनी थाली लेकर अतसी पेड पर चढ गए ।

इस प्रकार पुरुषों का प्रीति - भोज समाप्त होते ही स्त्रियों का प्रीति भोज प्रारंभ हो गया । इस गीत की रोचक घटना का प्रारंभ यहीं से शुरु होता है ।

उस उत्सव में पार्वती, अरुंधती, देव कन्याएँ, ऋषि पत्नियाँ, चन्द्रदेव की पत्नी रोहिणी, सूर्यदेव की पत्नी उषा आदि कई लोग आये । सभी को बैठने के लिए सोने के आसन सजाए गए थे । शांता को रत्न जटित आसन पर बिठा कर स्वयं सीतादेवी मोतियों के आसन पर बैठ गयीं । मालवी, उर्मिला, श्रुतकीर्ति, आकर सीतादेवी की बगल में बैठ गयीं । माताएँ, रिश्तेदार आदि लोग सीतादेवी और शांता के इर्द गिर्द बैठ गयीं ।

''बंगारू चेंबुलतो गंगाजलमुलु
अप्पडम्मुलु वडियम्मुलु मंचि
ओप्पईन वरूगुलतो वूरूबिंडि
पालतिम्मनमुले बूरगुम्मल्लु
कीलुकुडकलनेयू मीगडापेरूगु
पालिंड्लुगदल वड्डिंडतुरंगनलू''

अर्थात् ''सोने के लोटे गंगा - जल से भरे हैं, पापड, वडिए, सूखे साग के साथ वडिए, दूध के पकवान, पूर्ण भक्ष्य, घी, मलाईदार दही, इन सब पकवानों को युवतियां मटकती हुई परोसने लगीं ।''

भोजन के समय वहाँ आई हुई सुहागिनों से शांता कहने लगीं कि

''रामुपट्णमु निमित्यार्थ भावमुन
चूडगलिगेनु सुदतुलारा ! मिम्मनेनु''

अर्थात् ''हे सुदतियाँ! श्रीराम के नगर में उन के आगमन के निमित्त मुझे आप लोगों से मिलने का मौका मिला है ।'' यह सुनकर गिरिजा ने उत्तर दिया कि, ''शांताजी, आपके आने से ऋष्यश्रृंग भी आये हैं । उनके आने से श्रीराम का जन्म हुआ है । इस कारण इन सब के लिए मूल कारक आप ही हैं ।'' शांता को हंसी आई । ऐसी प्रशंसा से दूर रहने के लिए वे चतुरता से ऊर्मिला से सरस संवाद करने लगी । वे कहने लगीं कि

''संतुष्टिगा कुडिचि सरयुनदि नील्लु
वांछतो ताग वे वच्चे लक्ष्मणुडु
निर्विचारमु निद्र लेदु ई रात्रि
सरसमाडवले सौमित्रितोनु''

अर्थात् ''हे ऊर्मिला ! लक्ष्मण आ गए हैं, आज संतुष्ट होकर सरयू नदी का पानी जी भर कर पीलो । आज रात तो वैसे भी सो नहीं सकोगी, क्योंकि लक्ष्मण के साथ दिल्लगी जो करनी है ।'' इस प्रकार गंभीर मुद्रा में शांता कहने लगीं । उर्मिला तो यह सुनकर चुप हो गयीं लेकिन सीतादेवी अपनी बहन की तरफदारी करते हुए भाभी से कहने

लगीं, ''हमारे भाई ऋष्यश्रृंग तो इतने नादान हैं कि वे तो स्त्रियों के रूप से भी अनभिज्ञ थे, ऐसे ऋष्यश्रृंग को मोह में डालने वाली मुग्धा हैं आप ।'' तुम्हारे बाद ही ऐसी बुद्धि तो भाभियों की है, यह कहकर भोजन समाप्त कर श्रुतकीर्ति के हाथ का सहारा लेती हुई उठकर हाथ धो लीं । उनके साथ ही सभी स्त्रियों ने उठकर हाथ धो लिया ।

महल में रत्न जटित दरी पर सभी सुहागिनें बैठ गयीं । तब शांता सभी सुहागिनों के बालों में देवता पुष्प गूँथने लगीं। ऊर्मिला सभी को कस्तूरी तिलक लगाई । भरत पत्नी ने सभी सुहागिनों को चंदन लगाया ।

इस बीच सुर राज सती ने सीताजी की थकान को दूर करने के लिए उन्हें पंखा करना शुरु किया । फिर सीताजी ने उस पंखे को लेकर सुर राज सती को कर्पूर तांबुल दिया । उसके बाद सीतादेवी ने उस पंखे को श्रुतकीर्ति के हाथ में देकर उनसे कहा कि वे शांताजी को पंखा करें । श्रुतकीर्ति ऐसे पंखा करने लगीं जिससे सीतादेवी और शांता को भी हवा लगे । मालवी सीतादेवी के पैर दबाने लगीं । ऊर्मिला पान के पत्ते देने लगीं ।

''कोलुविच्चेटि सुतुलु कोलिचेटि सतुलु
सरसमाडेटि सतुलु सौभाग्यवतुलु
कोम्मलु तुरिमिना कोप्पुललोनु
विरुलु विकसिंचिना परिमळमुतावि''

अर्थात् ''सम्मान देनेवाली युवतियाँ और सम्मान पानेवाली युवतियाँ, प्यार करनेवाली सतियाँ तो सौभाग्यवती स्त्रियाँ हैं । जिन स्त्रियों ने बालों में फूल गूँथे उन फूलों से सुगंध चारों ओर फैल गया है ।''

सीतादेवी का अंतःपुर कितना शोभायमान है । यहाँ लोक कवि ने श्रीराम के राज दरबार के साथ जोड कर उस सौंदर्य की दार्शनिक छवि की एक झलक को दिखाया ।

''कुप्पलुग राक्षसाकप्पलनु म्रिंगि
ओप्पुचुन्ना कालसर्पम्मुवलेनु
रामुडने मंत्रवेदिक चिक्किभमिडि
मेननेडि पेट्टेलो मेलगुचूनुंडे''

अर्थात् ''श्रीराम रूपी टोनहा के हाथ सोना रूपी भ्रमर बंदी होकर पेटी में ऐसे घूम रहा है जैसे कई मेंढक रूपी राक्षसों को निगल कर खडा काल सर्प ।'' सीतादेवी की दरबार की झलक भले ही लोक कवियों को दार्शनिक आभास दिलायी हो लेकिन दशरथ की पत्नियों के लिए तो वह हर्षदायक रहा ।

जिस दरबार में सीताजी विराजमान है उसे सबसे पहले रानी सुमित्रा ने देखा । खुशी के मारे उन्होंने इस दृश्य को कौशल्याजी को बुला कर दिखाया । फिर कौशल्याजी की प्रशंसा करने लगी कि शांता जैसी बेटी और सीता जैसी बहू पाकर सारे व्रतों का फल उन्होंने पा लिया है । सुमित्रा जी की सहृदयता को कौशल्याजी ने पहचान लिया । तब खुशी से फूलती हुई कहने लगीं,

''चल्लनि चूपुल सौमित्रिगन्न
चेल्लेल निनु बोलगलरे ? चेल्लेल्लु''

अर्थात् ''प्यार बरसाने वाले सौमित्री को जन्म देनेवाली तुम जैसी बहन की बराबरी क्या कोई और बहिनें कर सकती हैं क्या ?'' ऐसे वातावरण को देखकर कैकेयी दुखित होने लगीं । तीनों माताएं उस समय शत्रुघ्न के साथ बैठकर खाना खायीं ।

उसके पश्चात का प्रस्तावित विषय है, श्रीराम का ऋष्यश्रृंग के साथ दिल्लगी करना । ऋष्यश्रृंग की सींग को लेकर श्रीराम ने उन्हें बैल कहा । उसी बैल ने सीतादेवी की अग्नि - परीक्षा को दृष्टि में रखकर श्रीराम को नरपशु कहकर पुकारा । इतना कहकर वे चुप नहीं हुए आगे श्रीराम को, भरत को, सौमित्री को भी बैल कहकर अंत में लाडले शत्रुघ्न को बैलों का भाई कहकर परिहास करने लगे । यह सुन कर श्रीराम हंस कर चुप रहे । श्रीराम को हंसते देखकर लक्ष्मण हंस पडे । फिर भरत को हंसते देख सारी प्रजा हंसने लगी । इस आनंद में पाठक गण भी भाग ले रहे हैं । इस गीत के सभी पात्र रामायण के ही पात्र हैं । लेकिन इस गीत का माहौल तेलुगु प्रांत से संबंधित है । सारे पकवान, परोसने का क्रम, सुहागिनों के उत्सव की रीति, ननद की आजमाईश, भाभी और सालियों के हास - परिहास, जीजाजी और बहनोई का हंसी - मजाक, ये सभी वर्णन तेलुगु प्रांत के ही हैं । पूरे गीत में आंध्र - गृहों के रीति - रिवाज ही प्रतिबिंबित हुए हैं ।

* * *

9. सीता के दोहद

आंध्र की स्त्रियों द्वारा बडे चाव से गाये जाने वाले रामायण के गीतों में सीतादेवी के दोहद से संबंधित दो गीत प्रमुख हैं । ''सीतादेवी का पंखा'' गीत के पूर्व, जिन गीतों की समीक्षा की गयी है, वे सब गीत सीतादेवी के गार्हस्थ्य जीवन के प्रारंभिक दिनों के तथा वनवास के समय के हैं । सीतादेवी की सुरटी, सीतादेवी के दोहद आदि गीत उनके उत्तरार्ध जीवन से संबंधित हैं ।

इन दोहद गीतों में से एक गीत तो अत्यंत साधारण गीत है । दोहद का होना तो गर्भवती स्त्रियों के लिए मामूली विषय है । इस कारण यह एक परंपरा सी बन गयी है कि उस समय गर्भवती स्त्रियाँ असाधारण चीज की भी इच्छा प्रकट करें तो उसे पूरा किया जाता है । श्रीराम के मन में सीतादेवी के प्रति प्यार को जताने के लिए लोक कवियों ने यहाँ इस प्रकार का वर्णन किया है कि सीतादेवी ऐसे विरले चीजों की माँग करती हैं और उन्हें श्रीराम बहुत ही आसानी से पूरा करते हैं । गर्भवती सीतादेवी को दोहद के समय गाय या भैंस के पेवस को छोड बाघ के पेवस को खाने का मन करता है ।

''पुट्टमीद बोनोग्गि पुलिनि पडगोट्टी
मोदुगाकुलु तेच्ची दोन्नेलु कुट्टी
दोन्नेलो आ पालु पितिके रामन्न
एरूपिडकलु तेच्ची दायनु वेसी
एंडलो पुलि जुन्नु वंडे रामन्न

वंडिन आ जुन्नु पल्लेन बेट्टी
पुच्चुको पुलि जुन्नु पुच्चुकोमनेनु''

अर्थात् ''श्रीराम ने बिल के ऊपर कटघरा रखा, बाघ को गिरा कर पलाश के पत्तों के दोने सी, और उन दोनों में बाघ का दूध दुहा। फिर सूर्य के ताप में श्रीराम ने उस दूध को उपलों पर गरम किया, और पेवस पकाया। फिर उस पेवस को थाली में परोस कर सीतादेवी के सामने रखकर उन्हें खाने के लिए कहा।''

फिर और एक बार सीतादेवी ने अपने मन की इच्छा प्रकट की कि ''बीच जंगल में स्थित टेक वृक्ष पर लगे हुए मधुमक्खी के छत्ते की शहद को खाने का मन हो रहा है। ''श्रीराम ने ऐसे ही लाकर दिया। इस प्रकार सीतादेवी की अनोखी इच्छाओ की माँग सुनकर कौशल्याजी कहने लगीं कि ''हमने अपने जमाने में ऐसे समय पर अधपके इमली, खट्टा छाछ, आम फल, आदि की ही माँगें की हैं।''

''ई सीता बूसट्लु मेमेरुगमम्मा
पुलि जुन्नु मनसौटा बुद्देरुगम्मा
जुंटितेने मनसौटा जूडलेदम्मा''

अर्थात् ''सीतादेवी की ऐसी अनोखी इच्छाएं हमने तो नहीं सुनीं। कहती हैं कि उन्हें बाघ का पेवस खाने की इच्छा हो रही है, यह बात तो हमारी बुध्दि के बाहर है, मधुमक्खी के छत्ते से निकली हुई शहद खाने की इच्छा हो रही है, ऐसे तो हमने कहीं नहीं देखा है।'' कहती हुई वे आश्चर्यचकित हो गयीं।

अब दूसरा गीत है, जो बहुत ही सुंदर है। गीत के प्रारंभ में ही यह दिखया गया है कि सीतादेवी दोहद के कारण कमजोर पड गयीं हैं।

''तलवाल्वी कुडि चेय्यी तलक्रिंद नुंची
पान्पुमीद पवलिंचे पद्मायताक्षी''

अर्थात् ''पद्म नयनी सिर झुकाकर अपना दायाँ हाथ सिर के नीचे रखकर शय्या पर लेट गयीं हैं।'' गर्भवती सीतादेवी को मीठे आम फल और कोमल इमली के पत्ते आदि खाने का मन कर रहा है। इस प्रकार की इच्छाएं बढती जाने के कारण वे बहुत दुबली पडती जा रहीं है। कंठा, करघनी, बाजूबंद आदि आभूषण ढीले पड गए। जब उनकी ऐसी दशा थी उस समय श्रीराम उनसे मिलने आये। ध्यान से उन्हें देखने लगे। उनकी यह दशा देखकर वे भयभीत हो गए। उन के मन में ''रण - भीति'' होने लगी। यहाँ 'रण' शब्द का शब्दार्थ लें तो रण का अर्थ युद्ध होता है। लेकिन यहाँ रण का अर्थ ''बहुत'' के रुप में लेना होगा। अर्थात् बहुत भयभीत होकर श्रीराम ने सीतादेवी से इस प्रकार पूछा,

''कारडवी तिरिगावु कष्टपड्डावु
आनाडु यी रीति वडलुंडलेदु
येंडलोने येंडी वानने तडिसी
आनाडु यी रीति वडिलुंडलेदु
पंडुटाकुलवले पालिवुन्नावु
पारिटाकुलवले पव्वलिंचावु
एमेमी जनकसुता ! नीवुन्न विधमु ?''

अर्थात् ''हे जनक सुता ! यह तुम्हारी क्या दशा हो गयी है ? घने जंगलों में घूम कर कष्ट सही, उन दिनों में भी तुम्हारी ऐसी हालत नहीं हुई। धूप में तपती रही, बारीश में भीगीं, उन दिनों में भी तुम्हारी हालत ऐसी नहीं थीं, आज तुम पके हुए पत्ते जैसी सूखी पड गयी हो, धरती पर गिरी पत्ते जैसी लेटी हुई हो।'' आखिर सीतादेवी इन प्रश्नों का जवाब क्या दे सकती हैं ? श्रीराम को भी कुछ सूझ नहीं रहा था। रामजी ने सोचा इस विषय की जानकारी लक्ष्मण को देना चाहिए। रोज की बात होती तो वे लक्ष्मण को खबर भिजवाते। लेकिन आज वे चिंतित हैं, इसलिए वे स्वयं लक्ष्मण से मिलने निकल पडे।

''अन्ना ! मी वदिनेंतो वडलियुन्नदि
नाचेतिदोक्कटी मिद्ददेदुंगरमु
मुनिचेत दोडगोच्चु श्री लक्ष्मण्ण !''

श्रीराम जाकर लक्ष्मण से कहने लगे कि ''हे भाई ! आपकी भाभी बहुत ही कमजोर हो गयी हैं। मेरी उंगली की अंगूठी अब उनके हाथ में कंगन के रूप में पहना सकते हैं।''

दोहद के कारण सीतादेवी कमजोर हो गयीं। यहाँ वर्णित किया जा रहा है कि श्रीराम की अंगूठी को अब कंगन के रूप में सीतादेवी के हाथों में पहनाया जा सकता है। लक्ष्मणजी को सारी परिस्थिति अवगत हो गयी। वे जान गए कि सीतादेवी गर्भवती हैं। फिर भी वे तुरंत इस विषय के बारे में उन्होंने श्रीराम से कुछ नहीं कहा हैं। वे अपने भाई से यह कहते हुए निकल पडे कि पहले वे जाकर उन्हें देख आयेंगे। आये हुए देवर को देख कर सीतादेवी ने अतिथि सत्कार किये। फिर

लक्ष्मण ने प्रार्थना की ''माँ ! अब हम चलते हैं, आज्ञा दीजिए।'' सीतादेवी सोचने लगीं कि पति आये और उस की दशा देखकर ''लक्ष्मण से कहूँगा'' कहकर निकल पडे। भाई के भय को दूर कर सकने का सामर्थ्य रखनेवाले तो केवल उनके छोटे भाई लक्ष्मण ही हैं। इस कारण वे कहने लगीं कि ''जल्दी से अपने भाई के पास जाइये।'' तुरंत लक्ष्मण अपने भाई के पास पहुँच गए। उन्होंने प्रत्यक्ष रूप से श्रीराम को यह नहीं बताया कि सीतादेवी गर्भवती हैं। इस शुभ समाचार का संकेत उन्होंने आधुनिक ढंग से पेश किया।

''मीकंटे घनुलु पुट्टनुन्नारु
मीरेलु राज्यंबु लेलनुन्नारु
मीयोक्क सिंहासनमु येक्कनुन्नारु
मीचेती आयुधम् पट्टनुन्नारु''

अर्थात् ''आप से भी महान व्यक्ति जन्म लेने वाले हैं। आप के राज्य पर राज करने वाले आ रहे हैं। आप के सिंहासन पर आसीन होने वाले आ रहे हैं। आप के हाथ के शस्त्र उठाने वाले हैं।'' संस्कार से भरे भाई के वाक्य सुनकर श्रीराम ऐसे आनंदित हुए जैसे वे नक्षत्र मंडल पर चल रहे हैं। यह बातें सीतादेवी के गर्भवती होने की शुरुआत के दिनों की हैं। इस गीत में ही गर्भवती के आगे के दिनों की बाते भी वर्णित है। अचानक एक दिन चुपचाप श्रीराम वहाँ आये।

''पादालु चप्पुडु पणती विनकुंड
पान्पुमीद कोच्चिरी पद्मनाभुलु''

अर्थात् ''पैरों की आहट भी पत्नी को लगे बिना श्रीराम शय्या पर आकर बैठ गए ।'' उस समय सीतादेवी अपनी सखियों के साथ चौपड खेल खेल रही थीं ।

''अदादुगा वच्चिन रामुनी चूची
कूर्चुन्न दासीलु निल्चुंडीरंता''

अर्थात् ''वहाँ आये श्रीराम को देखकर बैठी हुई दासियाँ उठ खडी हो गयी ।'' तब श्रीराम ने समयानुकूल जवाब दिया कि

''आडवले ओडवले गेल्चवले गानी
आट विडची मीरु लेव पनि लेदु''

अर्थात् ''खेलना है, हारना है, जीतना है, लेकिन इस तरह खेल के बीच उठाना ठीक नहीं है ।'' फिर दासियाँ उठ गयीं । सीताजी तब पूर्ण गर्भवती थीं । इस कारण वे दासियों की तरह जल्दी से उठ कर खडी नहीं हो पायीं ।

''उत्तरम दक्षिणम चूचे नादेवी
तूरुपु पडमरा चूचे नादेवी
आडेटी सोगटालु अटु पारवेसी
पान्पुमीदकोच्चेनु पद्मायताक्षी''

अर्थात् ''वे उत्तर और दक्षिण दिशा की ओर देखने लगीं, फिर पूरब और पश्चिम की ओर देखने लगीं । फिर एक ओर चौपड खेल फेंक कर कमलाक्षी शय्या पर आ गयीं ।''

चुपचाप आकर माहौल को बदलने वाले श्रीराम, प्राकृत पुरुष बन कर कहने लगे,

''नी सुतुलु नीवूनु पैन पव्वलिस्ते
पादालकिंदने ने पव्वलिस्तु''

अर्थात् ''तुम और तुम्हारे बेटे ऊपर सो जाओ, मैं तो पैरों के पास सो जाऊँगा ।'' सीतादेवी एकांत में चतुरता दिखाती हुई कहने लगीं,

''राजाधीराजुलकु विन्नपमय्या !
राजुलल्लुल्लकु विन्नपमय्या
आ माटा मीरेल आज्ञचेसारू ?
मामीद दयवुंची मम्मु रक्षिंचु
दंडंबु दंडंबु मीकु रघुराम !

अर्थात् ''राजाओं के भी राजा ! आप से एक प्रार्थना है, राजाओं के दामाद ! आप से एक विनती है, ऐसी बात की आज्ञा आपने कैसे दे दी ? हम पर कृपा कर हमारी रक्षा कीजिए । प्रणाम, प्रणाम, हे रघुराम ।'

साध्वी सीतादेवी ने इस प्रकार साधु वचन कहे । सीतादेवी ने यह याद दिलाया कि श्रीराम तो राजाओं के राजा हैं, राजा के दामाद हैं । श्रीराम सागर चक्रवर्ती के वारिस हैं । वे स्वयं निमी च्रकवर्ती के वारिस हैं । इसी कारण वे पतिव्रता नारी सौम्यता से, धीरे से ऐसी बातें कह पाई । उन्होंने कहा कि उन्हें तो केवल श्रीराम की कृपा ही काफी है ।

जिस प्रकार रामायण के गीतों में सीतादेवी के दोहद गीत है वैसे ही भागवत के गीतों में रूक्मिणी देवी के दोहद नामक एक गीत है । इन

गीतों में नामों की समानता है लेकिन रुक्मिणी देवी के दोहद का गीत, सीतादेवी के दोहद गीत से भिन्न है । इस गीत में पुरुष पात्रों का प्रवेश ही नहीं है । इसमें गौरी, सरस्वती, अरुंधती आदि लोग दोहद के कारण कमजोर पडी रूक्मिणी के लिए तिल का पाउडर, सोंठ से मिश्रित खट्टे दही का चावल, नींबू का रस, हिंग का छोंक दिया गया चावल लाते हैं । पेट में बच्चे का जिक्र करते हैं । कई हिफाजतों के बारे में कहते हैं, जन्म लेने वाले बच्चे के नामकरण के बारे में सोचते हैं । अगर कंदर्प नाम रखा जाय तो हो सकता है वह कहीं बुरे काम न कर बैठे । मन्मथ का नाम रखेंगे तो वह लडकियों के पीछे भाग सकता है । इस तरह नामों के पीछे किए गए बहसों के साथ गीत की समाप्ति होती है ।

चौदह सालों तक वनवास के क्लेशों को सहन कर बाद में सीतादेवी महारानी बनती है । उस समय भी सीतादेवी अपने दोहद के समय के गीतों में पत्ते और फलों की बातों का जिक्र ही अधिक करती हैं । ऐसे वर्णनों के पीछे लोक कवियों की जागरूकता और उनकी विज्ञता, प्रशंसनीय मानी जा सकती है ।

''उत्तरम् दक्षिणम् चूचेनादेवी
तूरुपु पडमर चूचेनादेवी

अर्थात् ''उत्तर और दक्षिण दिशओं की ओर वह देवी देखने लगती है फिर पूरब और पश्चिम दिशाओं की ओर देखने लगती हैं''

यह गीत पढते समय
प्राच्य दिशा :

सालायनमो ...
... ...
दक्षिणायदिशाहा :
प्रतीच्या दिसाहो :
उदीच्य दिशाहो :
... ...

तब अथर्वण वेदोक्ति स्मृति पटल को छू जाती है ।

यह गीत ''संपूर्ण सृष्टि के पालन कर्ता हैं श्रीरामचंद्र'' से प्रारंभ होता है । संपूर्ण सृष्टि के पालक श्रीरामचंद्र अपने पुत्रों के लिए साधारण पुरुष बनकर कितने तडपते हुए दिखते हैं । अगर ऐसी तडप न होती तो जगत में अलगाव बढ सकता हैं । है न !

सीतादेवी के पक्ष में गानेवाले इन गीतों के अलावा ''लंका यज्ञ'', ''गुह - भरत का अग्नि प्रवेश'' आदि कुछ गीत इस कथा की घटनाओं के अंतर्गत अवश्य स्पर्श करने लायक हैं । 'लंका - यज्ञ' में से कुछ विचित्र घटनाओं का तो विवरण देना ही होगा ।

* * *

10. सीता - लंकायज्ञ

इस गीत में सीता, ऊर्मिला, मंडोदरी, कैकस के पात्र अत्यंत रोचकता से वर्णित हैं ।

लंकायज्ञ नामक इस गीत श्रीराम आदि लोगों के वनवास जाने के समय से लेकर रावण संहार तक की कथा वर्णित है । इस में वाल्मीकी रचित रामायण कथा की रीति से भिन्न एक और कथा - रीति अपनायी गयी है ।

श्रीराम के साथ वनवास जाने की इच्छा जब लक्ष्मण ने प्रकट की तब श्रीराम ने कहा कि ''पहले जाकर अपनी माँ की अनुमति लेकर आओ ।'' माँ की अनुमति लेकर जब लक्ष्मण आए तब श्रीराम ने कहा कि अब तुम्हारी पत्नी ऊर्मिला से भी कहकर आओ । इस प्रकार की विचारधारा प्रशंसनीय हैं ! जब लक्ष्मण ऊर्मिला के महल में आए उस समय ऊर्मिला जालरी तालाब में नहा रही थी । पति को देखकर सामने आयी । लक्ष्मण ने सारी बाते सुनायी । तब ऊर्मिला ने कहा कि वह भी उनके साथ चलेगी । तब लक्ष्मण ने कहा कि ''जिस मार्ग पर जीजाजी चलते हैं उस मार्ग पर जाना मना है ।'' यह कहते हुए उन्होंने सुपारी, पान के पत्ते और चूना लाकर ऊर्मिला के हाथों में डाले उसके बाद, उनके चारों ओर उन्होंने सात रेखाएँ खींची ।'' तब ऊर्मिला ने उनके वापिस आने तक एक व्रत रखा । नींद और भोजन त्याग कर शय्या पर जडवत लेटी रही ।

सीताजी और लक्ष्मण के संग श्रीराम वनवास चले गये । उस जंगल में सीताजी ने कहा कि ''इस प्रकार अकेले कैसे जिएँगे ? मेरे

लिए सखियाँ ले आइए ।'' तब श्रीराम ने जवाब दिया कि ''मैं इस जंगल में सखियां कहाँ से लाऊँ ?'' आगे उन्होंने कहा ''इसे अयोध्या समझ रखी हो क्या ?'' सीताजी ने उत्तर दिया कि ''अगर आप नहीं ला सकते हैं तो मेरे पिता जी समुद्र हैं । उनके यहाँ मैं बचपन में मूँगा से लेप किये गये चौपड खेला करती थी, उसे मंगवाइए । तब श्रीराम ने कौओं को बुलाकर पत्र लिखकर उन के पैरों में बांधा । तब वे कौए समुंदर के पासे जाकर चौपड खेल ले आये । सीता और श्रीराम आनंदित होकर उससे खेलने लगे । उस चौपड की पेटी को उन्होंने आज्ञा दी कि वे जहाँ कहीं भी खडे हो, या बैठे हों उनके पास उसे आना चाहिए । उस चौपड का स्वरूप कैसा होता है यह कोई नहीं जानते ।

जब सीतादेवी और रामजी के लिए लक्ष्मण खाने निमित्त कंदमूल फल लाकर देते थे तो वे उसमें से एक भी फल लक्ष्मण को नहीं देते थे । जब श्रीराम मायामृग के पीछे भाग रहे थे तो उन्होंने लक्ष्मण से कहा कि ''यह मृग असुर मृग है । अगर मैं बुलाऊँ तो भी तुम मत आना ।'' यहाँ लोक कवि ऐसा वर्णन करते हैं जैसे इस विषय की जानकारी श्रीराम को पहले से ही है । सीतादेवी का अपहरण करने के लिए रावण एक गरीब ब्राह्मण के वेश में आते हैं । जब रावण, सीताजी को ले जा रहे थे तब सीताजी दुःखित होती हुई कहती हैं कि ''तीन सौ व्रत मैं ने रखे । विष्णु कांता का व्रत रखा ।'' इस प्रकार की विचारधारा केवल आंध्र के लोक कवियों की ही हो सकती है । किस व्रत का यह फल उन्हें मिल रहा है, कह कर दुःखित होनेवाली सीताजी आंध्र की सुहागिन हैं । इस गीत में जटायु को 'वैनतेय' की संज्ञा दी गयी है । रावण के साथ युद्ध कर आखिरी सांस लेनेवाले इस पक्षी को सीताजी आशीर्वाद देती है ।

''बोंदुलो प्राणालु बोकुंडावुंडुमनी जानकी दीविंचेनु
श्रीरामचंद्रुलकु वेगमे चेप्पुमनि जानकी ता बलिकेनु''

अर्थात् ''जानकीजी ने आशीर्वाद दिया कि तुमहारे शरीर में प्राण रहें। सीताजी ने कहा कि श्रीराम चंद्र को मेरी खबर जल्दी देना।''

सीताजी ने विभीषण की पुत्री से अपनी दुःख भरी गाथा सुनायी। सीताजी ने कहा कि उन्होंने अपने आभूषणों को सुग्रीव पर्वत पर डाल दिया है। वे चिंतित इसलिए हैं कि वे आभूषण श्रीराम और लक्ष्मण तक पहुँते हैं या नहीं, यह खबर उन्हें नहीं मिली। फिर जटायु के प्राणों की भी उन्होंने रक्षा की है, लेकिन इस के बारे में भी उन्हें कुछ पता नहीं लगा। शिष्ट साहित्य में यह नहीं लिखा गया है कि सीताजी सुग्रीव के नाम से परिचित हैं। लेकिन इस गीत में वर्णित किया गया है कि सीताजी इस विषय को जानती है।

हनुमानजी ने उस वन में से एक फल तोडने की माँग की। तब सीताजी ने कहा कि वे सब फल विषयमय हैं। फिर एक फल तोडने की इजाजत देती है। जब रावण ने आज्ञा दी कि हनुमानजी की पूँछ को आग लगाने के लिए सीताजी की साडी फाड कर लाया जाय तब हनुमानजी ने अपनी पूँछ ही छोटी कर डाली।

''सीता चीरायनी रावणुडू तलाचतीते, चिवुकुना तोका
मुडिचे।''

रावण को सीख देने के संदर्भ में जब विभीषण ने रावण से प्रश्न किया ''क्या इस बात को आप भूल चुके हैं कि ''बचपन में ही यह बात बतायी गयी थी कि सीताजी के जन्म लेते ही लँका का विनाश प्रारंभ हो जाएगा।'' लेकिन इस बात का जिक्र तो रामायण कथा के रचने के बाद

प्रचलित हुआ था। इस कारण रामायण के पात्रों को तो इस बात की जानकारी हो ही नहीं सकती। लेकिन लोक कवि ऐसी बातों पर ध्यान ही नहीं देते। चौदह सालों तक शयनित ऊर्मिला लक्ष्मण से कहती हैं ''परस्त्री की चाह रखने पर ही न, इंद्र का शरीर क्षीण पड़ गया है। यह कहकर फिर बात को आगे बढाती हुई कहती है ''पराई स्त्री को चाहने के कारण ही न रावण समूल नाश हो गए।'' लगता है आगे पीछे की बातों पर लोक कवियों ने नजरअंदाज कर दी है।

लंका यज्ञ, लंका सारथी, गीतों की विशेषताओं में मंडोदरी के स्वप्न को गिना जा सकता है। यह वृत्तांत वाल्मीकी रामायण में त्रिजटा के स्वप्न के रूप में वर्णित किया गया है, उसी को लोक कवियों ने इस प्रकार ढाला है।

जब श्रीरामजी युद्ध की तैयारी में थे उसी समय लंका में मंडोदरी ने एक स्वप्न देखा। जब मंडोदरी ने कहा कि मैं ने एक स्वप्न देखा है तो रावण ने उत्साह से पूछा कि स्वप्न में क्या देखा है ?

''रघुरामुनी बलमुनणतुननी गँटीवा रमणिदक्कागंटीवा
पगाराजुला तललु पगला कला गंटीवा पणती दक्का गंटीवा
मातृवंशमुवारु अणगिरनी गंटीवा मगुवा दक्का गंटीवा
अर्कवंशमुवारु अणगिरनी गंटीवा अतिवा दक्का गंटीवा।''

अर्थात् ''हे रमणी ! क्या ऐसा स्वप्न देखा है कि रामजी के बल को मैं हरा चुका हूँ, क्या सीता मेरे वश हो गयीं ? हे कोमली ! क्या ये स्वप्न देखा कि दुश्मनों के सर फट चुके हैं ? हे सुन्दरांगी ! क्या ये सपना देखा है कि मातृवंश के लोग सभी दब गए हैं ? या ये सपना देखा कि सूर्य वंश के लोग सभी मिट चुके हैं ?''

लेकिन उनका सपना वह नहीं था । उनका सपना था ''घर के सामने का एक मंजिला घर ढह चुका है, हाथ के कंगन टूट गए हैं, मोतियों का नथ टूट चुका है, मंगल सूत्र फिसल चुके हैं ।'' इतना ही नहीं, उन्होंने जवाब दिया ''आप को मार कर विभीषण को राज सौंप दिया गया है।'' कहकर बिलख पडी ।

'लंका सारथी' गीत में यह वर्णित किया गया है कि मंडोदरी ने सीताजी को अंतःपुर बुलवाया, फिर रावण की जबरदस्ती की वजह से वे सीताजी के पैरों पर गिर कर रो पडीं ।

जब इस सोच में रामजी विचारमग्न थे कि कौन ऐसे निष्ठावान व्यक्ति हो सकता है जिसने चौदह सालों तक नींद और अन्न - पान त्याग दिया हो, क्योंकि वही इंद्रजीत को मारने में सक्षम सिद्ध होगा । तब झट से लक्ष्मण ने जवाब दिया कि ''मैं ही ऐसा निष्ठावान व्यक्ति हूँ, मैं ने चौदह सालों तक नींद और अन्न - पान त्याग दिया है ।'' तब रामजी ने लक्ष्मण से पूछा ''लक्ष्मण ! उन दिनों मेरे द्वारा दिए गए केले लाकर दिखाओ'', तो तुरंत लक्ष्मण अपने जांघ को चीर कर अमृतभांड दिखाये । तब रामजी ने लक्ष्मण को आदेश दिया कि वे इन्द्रजीत से युद्ध करने के लिए तैयार हो जाएँ ।

रावण से युद्ध करते समय रामजी ने कई बार रावण का वध किया लेकिन हर बार रावण के सिर जुडते गए तब थक कर उन्होंने विभीषण से प्रश्न किया कि,

''एमोयि मीयन्न केन्नी मायलु
गलवो एप्पटीकी चावलेदु''

अर्थात् ''अरे ! तुम्हारे भाई तो बडे मायावी है, मरते ही नहीं हैं ।''

तब चुपके से विभीषण ने बताया कि ''देवताओं को मारकर अमृत भांड लाकर उन्होंने उसे अपनी नाभी में छुपा रखा है ।'' यहाँ रामजी द्वारा इस प्रकार प्रश्न करना, और विभीषण द्वारा रहस्य को बहिर्गत करना उदात्त नहीं लगता है ।

विभीषण का भाई से मार खाकर माँ के पास चले जाना आदि विषय रँगनाथ रामायण से लिए गए है । वे यहाँ पर प्रस्तुत किये गये हैं ।

'लंका सारथी' गीत में जब विभीषण ने कहा कि वे रामजी की सेवा में लगे रहेंगे तब माँ कैकस उन्हें धैर्य दिलाती हुई कहती है कि ''उन्हें कहीं भी जाने की जरूरत नहीं हैं । उन्हें यहाँ उनका हिस्सा दिलवाया जाएगा ।'' इसी गात में जब इंन्द्रजीत विभीषण पर माया शक्ति का प्रयोग करते हैं तब विभीषण लक्ष्मण के पीछे छुप जाते हैं, तब उस शक्ति के छू जाने के कारण लक्ष्मण बेहोश हो जाते हैं । लेकिन वाल्मीकी रामायण में विभीषण को इस प्रकार कुटिल मनस्तत्व वाले के रूप में वर्णित नहीं किया गया है ।

शायद लंका में घटित सभी विषयों को लोक कवियों ने एक यज्ञ के रूप में ग्रहण किया इसी के कारण इस गीत का नाम 'लंका यज्ञ' रखा होगा । इसी प्रकार 'लंका सारथी' गीत में लंका को ही सारथी मानकर कथा को आगे बढाया गया है, इस कारण इस गीत का नाम 'लंका सारथी' रखा होगा ।

* * *

11. सीता - लक्ष्मण

वनवास के समय देवर लक्ष्मण ने बहुत ही हिफाजत से सीता माई और श्रीरामचंद्र की रक्षा की । इसी कारण लोक कवियों ने वर्णित किया है कि उनकी इस भ्रातृ भक्ति को देखकर ही प्रेम में मग्न राम जी उनके वश में हो गए । लक्ष्मण जी ने अपनी भाभी पर इस प्रकार की भक्ति को कुछ अधिक मात्रा में ही दिखाया है ।

रामजी के पीछे - पीछे सीता और लक्ष्मण छाया की तरह रहे उनके उस समय के बर्ताव का वर्णन वाल्मीकी ने भी किया है, लेकिन इन लोक - कवियों ने तो लक्ष्मण की भातृ - सेवा को और भी अधिक मनोरंजक रूप में वर्णित किया है ।

सीता और रामजी पर्ण-कुटीर में जब विश्राम कर रहे थे तब लक्ष्मण जी नींद की एक झपकी भी न लेते हुए उनकी सेवा में मग्न रहे । इस विषय को 'ऋषियों के आश्रम' गीत में इस प्रकार वर्णित किया गया है ।

''श्रीरामुडु सीतचेलगि निद्रिंच
सर्वाभूतंबुलु सद्दु गाकुंडा
वलेनंचु शासिंचि वरलु लक्ष्मणुडु
भातृभक्तिकि नितडु परमैनवाडु''

अर्थात् ''भाई - भाभी के नींद में कोई रूकावट न हो इसके लिए लक्ष्मण ने संपूर्ण जगत को मौन रहने की आज्ञा दी । इस प्रकार की भातृ-भक्ति के कारण वे श्रेष्ठ बन गये ।'' कालिदास ने अपने काव्य

'कुमारसंभव' में जिस प्रकार वर्णित किया है कि शिव की तपस्या कहीं भंग न हो इसलिए नंदीश्वर, सभी जंतुओं को शाँत रहने का आदेश देते हैं, ठीक उसी प्रकार भातृ - सेवा में तल्लीन लक्ष्मण ने भी यहाँ इसी प्रकार किया है ।

वनवास में ही नहीं, अंतःपुर में भी लक्ष्मण के पात्र को लोक - कवियों ने वर्णित किया है । 'लक्ष्मणजी की हँसी' नामक गीत को तो लोक कवियों ने अत्यंत मधुर काव्य के रूप में चित्रित किया है । 'राघव - कल्याण', 'उर्मिला देवी की नींद', 'सीतादेवी की नाराजगी' इन गीतों में लक्ष्मणजी प्रधान पात्र के रूप में उभर कर आते हैं। 'कुश - लव की युगल कथा' गीत में लक्ष्मणजी का पात्र करूण रस संबंधी होने के कारण अत्यंत लोकप्रिय बन गया है ।

वाल्मीकी रामायण में यह कहीं नहीं वर्णित किया गया है कि रामजी ने सीता के सौंदर्य से मुग्ध होकर धनुष - भंग किया है । कुछ संस्कृत नाटक 'महावीर चरित्र'।।महावीर का इतिहास।। 'प्रसन्न राघव', 'बाल रामायण', 'जानकी - परिणय' आदि में यह वर्णित किया गया है कि धनुष - भंग के पहले ही सीता देवी को श्रीराम जी ने देखा है । 'राघव - कल्याण' गीत में धनुष - भंग से पहले ही राम अपने भाई लक्ष्मण को बुलाकर सीता देवी को देख आने का आदेश देते हैं । इस प्रकार करने के लिए एक कारण भी बताते हैं कि अगर भोजन अच्छा न मिला तो सारा दिन बेकार हो जाता है, पत्नी अच्छी न मिली तो पूरा जन्म ही बेकार हो जाता है । सीता देवी की कमर कितनी पतली है, केशों के कालेपन का वर्णन, आंखों का वर्णन, चरण छोटे हैं कि नहीं,

इन सभी विषयों को विशेष रूप से देखने के लिए रामजी आदेश देते हैं । लक्ष्मण जी अंतःपुर जाकर नवरत्न जटित आसन पर बैठी हुई सीतादेवी के छोटे - छोट चरणों को देखकर ही लौटते हैं । लक्ष्मणजी का चरित्र इतना उदात्त है । विवाह से पहले भी कुमारी जानकी को उन्होंने पूरी तरह से देखा नहीं था । उनके चरण मात्र ही उन्होंने दर्शित किये और वे कहते हैं कि उनके सौंदर्य का वर्णन हरिहर भी कहने में असमर्थ होंगे। इसी विषय को उन्होंने अपने भाई के सामने भी प्रस्तावित किया । इस प्रकार के निर्णय पर वे पहुँच चुके थे कि पाद चरणों की उंगलियों को देखकर स्त्री के गृहस्थ जीवन के बारे में ज्योतिश शास्त्र के पंडित ही बतला सकते हैं । तो फिर क्या लक्ष्मण जी इस प्रकार के शास्त्रज्ञ हो सकते हैं ?

'सीताजी की नाराजगी' नामक गीत, लोक कवियों के कोमल भाव वैचित्र्य को दर्शाने वाला गीत है ।

'व्यायाम से लौटनेवाले श्रीराम के पसीने को पोंछने में विलंब करनेवाली सीताजी के ऊपर श्रीरामजी नाराज हो गये और गुस्से में फूलों के गुच्छे से मारा तो वे मूर्छित हो गई । होश तो आ गया लेकिन नाराजगी दूर नहीं हुई । उस नाराजगी में उन्होंने अपने पाले हुए तोते को भी पास आने नहीं दिया । फिर वह तोता रामजी के पास चली गयी । फिर रामजी ने कहा इसमें मेरा कोई दोष नहीं है वापस चली जाओ । तो तोते को यह समझ में नहीं आया कि दोनों की नाराजगी को कैसे दूर किया जाय, और उन दोनों को कैसे मिलाया जाय ? अचानक उस तोते को लक्ष्मण की याद आई । तब वह शिकार पर गये हुए लक्ष्मण जी का रास्ता देखने लगी । लक्ष्मण को देखते ही तोते ने कहा

''मी वदिन जानकी मिंचलकनुंडे
मीयन्न राघवुडु मिंचलकनुंडे
वारि यलकलु दीर्च नेव्वारिकि तगदु
बुद्धिशालिवि नीवु बुद्धि नूहिंचि
वीलैनतेरगुना चाल योचिंचि
अलकदीर्पगा दगु''

अर्थात् ''आपकी भाभी जानकी बहुत ही गुस्से में है । आपके भाई राघव जी बहुत गुस्से में हैं, उन दोनों की नाराजगी को दूर करने की ताकत किसी में नहीं है । तुम काफी समझदार हो अपनी बुद्धि के द्वारा सोच - समझकर उन दोनों की नाराजगी को दूर करो ।'' यह कहते हुए नाराजगी दूर करने का भार तोते ने लक्ष्मण पर डाल दिया । तब लक्ष्मण ने कहा

''वा रालुमोगुल्लकु वादमैनादा
ईरूगुपोरुगुवारू यिंतुलंदरूनु
सीतम्म अलकलु दीर्चलेरैरा
ना वालनगादम्मा ना वशमु गादु''

अर्थात् ''यह पति - पत्नी के बीच का मामला है । क्या आस - पडोस की स्त्रियाँ सीताजी की नाराजगी दूर नहीं कर सकी हैं ? यह मेरे बस की बात नहीं है ।'' तोते ने बहुत ही मिन्नते कीं और यह भी कहा कि तुम ना नहीं कह सकते हो । तब लक्ष्मण ने कहा तुम जाकर सीताजी से यह कहो कि रघुराम कुछ कमजोर पड गये हैं तो स्वयं सीता जी तुमसे मिन्नतें करेंगी । तब तुम सीताजी को साथ लेकर रामजी के

पास चले जाना । तब तक मैं रामजी की नाराजगी को दूर करने का प्रयास करूँगा । सीता जी की नाराजगी को दूर करने का यही एक सही उपाय है । यह उपाय केवल लक्ष्मण जी ही जानते हैं । लक्ष्मण जी ने किस ढंग से रामजी की नाराजगी को दूर किया है - इस गीत में वर्णित नहीं किया है । तोते के साथ जब सीताजी, रामजी को देखने आई उस समय वे लक्ष्मण के संग बातचीत में मग्न थे । जैसे ही श्रीराम ने अपनी स्त्री को देखा तो वहाँ से जाने लगे तब सीताजी ने झट से कहा -

''ने मूर्चपडि मेनु नेमेरूगकुंडा
अलसियुन्न युपचारमु चेया
सिग्गुपडि पलुकाडा चेल्लकनु वच्चि
पडुकुंटिननि तप्पुबट्टगानेमि ?''

अर्थात् ''मैं जब बेहोश थी तब मुझे सांत्वना देने के बजाय वहाँ से चले गये और मुझ पर इल्जाम लगा रहे हैं कि मैं ने आप की सेवा नहीं की, और मैं लेट गई । इसका क्या अर्थ है ?'' उसका समाधान लक्ष्मण देते हैं कि -

''मा यन्ना युपचारमहिमनेरुगवुगा
मायन्ना भूलोक मांत्रिकुंडनेनु''

अर्थात् ''मेरे भाई तो इस भूलोक में जादूगर समान है यहीं से उन्होंने आपको सांत्वना पहुँचाई है ।'' तब सीताजी शर्मिंदगी के मारे सिर झुकाये बैठी रहीं तो राम जी हँस पडे । उस दंपत्ति को देखकर तोता भी जोर - जोर से हँसने लगी । उस तोते की हँसी को सुनकर सीताजी को गुस्सा आया और तोते को डांटने लगी कि तुमने झूठ क्यों कहा कि

रामजी कमजोर पड गये हैं । तो बीच में ही लक्ष्मणजी ने टोक कर कहा ''क्षमा कीजिए । उसने यूँ ही कह दिया । आपका अपना तोता है हर समय आपके ही पक्ष में रहेगी ।'' लोक कवियों ने यह जताया है कि अंत:पुर में पति - पत्नी की नाराजगी को दूर करने में लक्ष्मणजी समर्थ हैं । इस प्रकार इन गीतों में लक्ष्मण जी के पात्र के महत्व को स्पष्ट किया गया है ।

सीता - रामजी के प्रति लक्ष्मण के मन में भय और भक्ति दोनों थे । इसके साथ उनके प्रति आत्मीयता भी है । वनवास के समय

''तलगन्नराल्लन्नि तोलगद्रोयुचुनु
पईगलराल्लन्नि पारद्रोक्कुचुनु
पड्डराल्लनेरि बागु चेयुचुनु
सन्नपुराल्लनु चदुनु चेयुचुनु
लक्ष्मणस्वामि मुंदर सागुचुंडि''

अर्थात् ''वनवास जाते समय लक्ष्मण जी रास्ते में जितने भी पत्थर आते गये उन्हें हटाते हुए रास्ता साफ करने लगे । कुछ पत्थरों को पैरों से दबाते हुए, बारीक पत्थरों को समतल करते हुए आगे बढते गये ।'' 'ऋषियों के आश्रम' गीत में उक्त वर्णन पाया जाता है ।

सीता राम और लक्ष्मण चलते जा रहे थे । एक दिन अंधेरा हो गया था

''रविपरुवेत्तंगा रमणुडु गूडा
कडुवडि नडचेनु कांततो गूडा

अडुगडुगुनकु सीता यडुगुलु गाचि
लक्ष्मणुडु चालग विचारिंचे''

अर्थात् ''सूरज की गति के साथ श्रीराम जी भी जल्दी - जल्दी अपनी पत्नी के साथ चलने लगे। सीताजी धीरे - धीरे एक - एक कदम आगे बढा रही थीं तो सीता जी के पाद चरणों के दर्द का आभास कर लक्ष्मण जी चिंतित होने लगे। उस माँ के चरण के दर्द को ताडकर उस देवर का मन कितना व्यथित हुआ होगा ?''

'लंका यज्ञ' नामक गीत में रामजी की आज्ञा पाकर लक्ष्मण जी वनवास चलने के लिए तैयार हुए थे। जाते समय उर्मिला से कहने आये और प्यार से उनके हाथों में पान के पत्ते और सुपारी डाले। इतना ही नहीं लक्ष्मण जी ने उनके चारों ओर सात रेखाएँ भी खींचीं। वनवास में भी जब उन्हें सीता जी को अकेले छोड कर जाना पडा तो उस पर्ण - कुटी के चारों ओर भी उन्होंने सात रेखाएँ खींची। इसी प्रकार अपनी पत्नी को अंतःपुर में छोडकर जाते वक्त भी उन्होंने सात रेखाएँ खींची। इतनी सावधानी वे बरतते थे। अंतः पुर में उर्मिला ने अपने पति द्वारा खींची गयी रेखाओं को कभी पार नहीं किया, लेकिन सीता जी अपने देवर द्वारा खींची गई रेखाओं को पार कर उसका फल भी वे भुगत चुकी। 'लंका यज्ञ' गीत में जब रामजी ने इच्छा जाहिर की कि इंद्रजीत को मारने के लिए ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता है जो चौदह सालों तक खान - पान और नींद त्याग चुके हों। तब लक्ष्मण जी ने कहा कि ''मैं ने त्याग दिया है और मैं जाकर संहार करुँगा।'' तब रामजी आश्चर्य हुए और उन्होंने प्रश्न किया ''मैंने तुम्हें बहुत पहले केले फल दिए थे खाए नहीं क्या ?'' तब लक्ष्मण जी ने अपने जाँघ को चीर कर

केलों को निकाल कर उन्हें दिखाया। इस प्रकार लक्ष्मण के व्रत - नियम की दाद देनी पडेगी।

'उर्मिला की नींद' नामक गीत में लक्ष्मणजी का चरित्र अत्यंत उदात्त रहा है। भातृ सेवा में निमग्न लक्ष्मण को शायद पत्नी की याद ही नहीं आई है या फिर रामजी की आज्ञा मिली कि नहीं, नहीं मालूम लेकिन वनवास की पूर्ति होने के बाद जब आयोध्या में सभी लोग पधारे तब भी वे उर्मिला के पास नहीं गए। श्रीराम ने इस विषय पर उतना ध्यान नहीं दिया लेकिन सीता जी को अपनी छोटी बहन की याद आई। उन्होंने अपने पति से कहा कि ''जब हम वनवास जाने के लिए तैयार हुए तो हमारे लाडले देवर के साथ उर्मिला भी चलने के लिए तैयार हुई थी लेकिन लक्ष्मण जी ने उन्हें मना किया और वे अकेले चल पडे। उस दिन से वह नारी उस शैय्या पर ही आँखे मूँदे लेटी हुई हैं। कम से कम अब अपने भाई को आज्ञा देकर उनकी पत्नी के पास भेजिए।'' इन बातों को सुनकर रामजी अत्यंत आश्चर्य चकित हुए। तुरंत लक्ष्मण जी को बुलाकर कहा ''जल्दी से अपनी प्रिय पत्नी के पास जाओ और प्यार से उसके दुःख को दूर करो।'' अत्यंत आदर के साथ सेवा करनेवाले देवर की स्थितिगतियों पर सीताजी हर समय ध्यान रखती थीं।

सीता - रामजी के संग खेलों में भाग लेने का भाग्य लक्ष्मण जी को मिला था। 'कुश-लव की युगल कथा' में लक्ष्मणजी, सीता - रामजी के संग मिलकर चौपड खेल रहे थे। यहीं से इस कहानी में इस पात्र का प्रारंभ होता है। शांता - राघव एक ओर और सीता देवी और लक्ष्मण एक ओर मिलकर खेल खेल रहे थे। उस खेल में सीता देवी के संग

लक्ष्मण भी जीते । इस प्रकार खेलों और गीतों में आनंदमग्न सीता - राम को दूर करने की जिद शूर्पणखा ने पकडी । रावण के चित्रपट में प्राण फूँक कर सीतादेवी के गार्हस्थ्य जीवन को नाश कर डाली । श्रीरामजी को शक हो गया था कि रावणजी के प्रति सीताजी आकृष्ट हैं, इस कारण उन्होंने लक्ष्मण को आज्ञा दी कि वे सीतादेवी को ले जाकर संहार कर आयें ।

शिष्ट साहित्य में सीता को छोडने की बात तो वर्णित है लेकिन कहीं भी उनके प्राणों को हरने की बात नहीं मिलती । सीताजी को वनवास ले जाने वाले, यहाँ और वहाँ भी लक्ष्मण ही हैं लेकिन अबकी बार जब लक्ष्मण, सीताजी को जंगल की ओर ले जाने लगे तो इतने कठोर हो गये कि रास्ते में पडी हुई पत्थरों को भी हटाया नहीं । पहले जब श्रीराम जी के साथ सीता जी भी वनवास के लिए चली थीं तब ''रास्ते में पत्थरों को हटाते हुए, काँटों को चुनते हुए, रास्ते को सपाट करते हुए कई प्रकार से उन्होंने उन की सेवाएँ की थीं । लेकिन अब सीताजी सोचने लगीं -

''पति नन्नडवुला चंपबंपिते
क्लेशपु तोवलु तीसेनु इतडु
एंत निर्दयुडे ई लक्ष्मणुडु''

अर्थात् ''पति मुझे जंगल में संहार करने के लिए भिजवा रहे हैं तो ये भी मेरे रास्ते को कंटीले बनाते जा रहे है । कितने निर्दयी हैं ये लक्ष्मण ! ''जब सीता जी ने ही लक्ष्मण जी को निर्दय कहा तो इस बात को इंकार कौन कर पायेंगे । यह कहना ही पडेगा इस घटना में लक्ष्मण जी के

पात्र का महत्व कुछ घट गया है । सीताजी की हालत कैसी है, इस पर भी देवर जी का ध्यान नहीं गया । कारण क्या है, क्या दुखी हैं या दिगभ्रमित हो गए हैं, कवि ने इस पर अपने विचार व्यक्त नहीं किये । लगातार चलनेवाले लक्ष्मणजी को बुलाकर सीतादेवी ने कहा -''अब मैं और दूर नहीं चल पाउँगी ।'' तब लक्ष्मण ने भाई की आज्ञा के अनुरूप सीताजी के वध के लिए उसी स्थल को चुन लिया । लेकिन जैसे ही उन्होंने खड्ग ऊपर उठाया तो वह खड्ग फूलमाला में परिवर्तित हो गया । तभी भूदेवी, लक्ष्मण से प्रश्न करने लगीं कि ''जानकी का आखिर अपराध क्या है ।'' यह प्रश्न श्रीराम से करना था यहाँ तो लक्ष्मण केवल सेवक मात्र हैं । केवल राजा की आज्ञा का पालन करने वाले ही हैं । भूदेवी द्वारा किये गये प्रश्न का समाधान सीताजी ने दिया । बीती हुई बातों को सीतादेवी ने बताया । लक्ष्मण जी मौन रहे । समय बीतता चला गया लेकिन उन्हें खड्ग उठाने का ख्याल ही नहीं रहा । वे ऐसे खडे हुए जैसे उन्हें उनके वध करने की कोई सोच ही नहीं है । उस दशा में लक्ष्मण जी को देखकर सीताजी कहती हैं -

''लक्ष्मणुडा नन्नु चंपकपोते
लक्ष्मणा नी वेंटाने वेल्लिवत्तुनु
इद्दरि संदुना युद्धमु पेडुदु
अन्नकु आनवालेमनि पलिके''

अर्थात् ''लक्ष्मण जी अभी आपने मुझे नहीं मारा तो आप के संग मैं भी चल पडूँगी और आप दोनों के बीच युद्ध होगा । भाई को क्या सबूत दिखायेंगे ।'' तब लक्ष्मण जी ने जवाब दिया -

''वाविकि वदिनवु वरसकु तल्लिवि नीवु
माकु सेलविपुडु वियूयवे अम्मा''

अर्थात् ''हे माँ। रिश्तों के अनुसार तो आप मेरी भाभी है लेकिन आप तो मेरी माँ है। अब यहाँ से निकलने के लिए मुझे आज्ञा दीजिए।'' इस प्रकार सीताजी के प्रति उनके दिल में जो मातृभाव है उसे व्यक्त करते हुए वहाँ से चलने की अनुमति माँगी। शायद माँ शब्द सुनते ही सीताजी को ख्याल आया होगा कि वे गर्भवती हैं।

''मी अन्ना राघवुलकु येडुनेलला गर्भिणियनि चेप्पु
मरचिपोकुमी लक्ष्मणा नीवु माटलुमुंदरा पुट्टुनु सुम्मि''

अर्थात् ''हे लक्ष्मण भूलना मत। मैं सात महीने की गर्भवती हूँ। आप के भाई को यह बतलाना न भूल जाना। अगर भूल गये तो कई अफवाहें उठ सकती हैं।'' इस प्रकार सीताजी ने अनुभवपूर्ण बातें कहीं। लक्ष्मण जी ने जैसे ही सुना कि उनकी भाभी गर्भवती हैं उनकी आँखों से अश्रुधारा बहने लगी। लेकिन कर्तव्य का पालन तो करना ही पडेगा इसलिए उन्हें ''हरी ऋषि' नामक गाँव का पता देकर चल पडे। रास्ते में उन्होंने भागते हुए खरगोश को मारा, अपने खड्ग पर उसका खून लगाया और फिर अयोध्या में प्रवेश किया।

जैसे ही लक्ष्मण जी पहुँचे कौशल्या सहित सभी माताओं के संग रामजी ने भी कई प्रश्न किये। जैसे ही लक्ष्मण जी ने कहा कि मैंने उनका संहार कर दिया है तो रामजी चिंतित हुए ''मेरे क्रोध से भी अधिक है तुम्हारा क्रोध। उसी क्रोध में तुम जानकी का वध करके आए ?'' जब लक्ष्मण जी ने कहा कि सीताजी का संहार किये हुए सात दिन हो गये।

तब श्रीराम ने श्राद्ध - कर्म करने की ठान ली। लक्ष्मण जी से कहा कि चावल - दाल जो सीताजी को बहुत ही प्रिय हैं वे ले आयें। और फिर लक्ष्मण को बुलाकर कहा कि मुनि - स्त्रियों के प्रति सीताजी का प्रेम अत्यधिक रहा। इस कारण उन्हें भी न्यौता देने के लिए उन्हें मुनियों के आश्रम भेजा। उत्साह के साथ लक्ष्मण मुनियों के गाँव गये। वहाँ देवर को देख सीताजी भी आगे आईं। तब लक्ष्मण जी ने भाभी के चरणों पर गिरकर प्रणाम किया।''

''पादमुलपइ मरिदिनि येत्ति
दीर्घायुवनि दीविंचे तानु
पुत्र पौत्रवंतुडवु गम्मनि
चाल दीवेनलु दीविंचिनदि''

अर्थात् ''चरणों पर गिरने वाले देवर को उठाकर उन्हें आशीर्वाद देने लगी कि वे दीर्घायु हों और पुत्र - पौत्रों के साथ जीवन यापन करें। इस प्रकार के कई आशीर्वाद दिए।''

इस प्रकार लोक कवियों ने भाभी - देवर के बीच के आदर प्रेम का वर्णन अत्यंत रोचक ढंग से किया है।

जब देवर ने विनती की कि उनके संग मुनि - पत्नियों को भेजें, तब सीताजी ने अपने देवर से पूछा कि ''मेरे क्रिया - कर्मों के वास्ते ही न ?'' ''हाँ'' कहने के लिए लक्ष्मण जी का मन नहीं हुआ। तो उन्होंने झूठ कह दिया कि पाप - परिहार के निमित्त और मुनि - स्त्रियों को कामेश्वरी देवी का प्रतीक मानकर ही इन सुहागिनों को बुला रहा हूँ।'' फिर सीताजी ने

कहा कि ''मैं जानती हूँ मेरे क्रिया - कर्म के लिए ही उन्हें बुला रहे हो।'' इस बार लक्ष्मणजी मना नहीं कर पाए। सामने खडी भाभी से कैसे कहा जा सकता है कि आप के ही क्रिया - कर्म के निमित्त मैं यहाँ पर आया हूँ।'' बेचारे लक्ष्मण का मन कितना व्यथित हुआ होगा।

फिर मुनि - स्त्रियों को साथ लेकर लौट आये। लक्ष्मण जी पास रहकर सभी पकवानों को बनवाये। रामजी ने हर एक पकवान सीताजी की पसंद के अनुसार बनाने की आज्ञा दी। उस समय लक्ष्मण जी की मानसिक दशा कैसी हुई होगी।

जब लक्ष्मण श्रीराम के पैर दबा रहे थे उस समय रामजी, सीता के गुणों को बार - बार याद कर लक्ष्मण को सुनाते रहें। श्रीराम के चरणों की सेवा करने का भाग्य लक्ष्मण को मिला लेकिन भाई के असली दुःख को जानने के बाद भी चुप रहना, यहाँ पर लक्ष्मण कितने गंभीर एवं दृढता से रहे होंगे, इसकी कल्पना नहीं की जा सकती। जरा सी भी बात निकल जाये तो कहानी ही नहीं है। आधी रात तक रामजी के पैरों को दबाने वाले भाई को देख तब रामजी ने उन्हें अंतःपुर की स्त्रियों को सांत्वना देने के लिए भिजवा दिया। जब लक्ष्मणजी अंतःपुर पहुँचे तब उर्मिला उनके सामने आकर खडी हो गई। उस समय उर्मिला की बातें सुनकर लक्ष्मण ही नहीं बल्कि पाठकगण भी आश्चर्यचकित हुए बिना नहीं रह सकते। आखिर लक्ष्मण जी भी कर क्या सकते हैं ? उन्होंने तो केवल श्रीराम की आज्ञा का पालन किया है। लेकिन इसी कारण उनकी पत्नी उनसे रूठ गई। इसी रूठेपन से वह ऐसी बातें कह गई जो सभी के दिलों को झकझोरती हैं।

''नीदे अर्कुनिवंशंबयिते, नीदे क्षत्रियधर्मंबयिते
नीचेतिदि चापंबयिते, अन्नकु तप्पनि तम्मुंडयिते
अक्कनु चंपिना आयुधमुन्ना नन्नु जंपुमी दशरथतनया''

अर्थात् ''अगर आप सूर्यवंशी हों, आपका धर्म क्षत्रिय धर्म है, आपके हाथ में तलवार हो, आप सच ही आज्ञाकारी बडे भाई के छोटे भाई हों तो जिस शस्त्र से आपने मेरी दीदी का संहार किया, उसी शस्त्र से, हे दशरथ पुत्र ! मेरा भी संहार कीजिए।'' पत्नी के इस प्रकार की बगावत को पति ने एक वाक्य के साथ शांत कर दिया। उन्होंने कहा कि ''मैं ने सीता जी का संहार नहीं किया है और न हीं ये सब उनके क्रिया - कर्म हैं।'' अपनी पत्नी को उन्होंने विश्वास दिलाया कि अभी सीताजी वाल्मीकी के आश्रम में हैं। उर्मिला की आनंद की सीमा ही न रही। तब उर्मिला से विदा लेते हुए लक्ष्मण शांता जी के पास पहुँचे। दीदी ने भी यही बात कही कि तुम सच में मेरे छोटे भाई हो तो जिस तलवार से तुमने सीता का संहार किया है उसी से उन्हें भी मारने की विनती की। वहाँ भी वे इस सच को उगल डालते हैं। फिर वे कहते हैं कि इस बात का जिक्र माँ से न करें। जिस रहस्य को उन्होंने छिपाकर रखा उस रहस्य को भरत ने बाद में जान लिया कि सीताजी ने कुश - लव को जन्म दिया। तब भरत जी आकर शांता दीदी से कहने लगे कि ये सब लक्ष्मण की चाल हैं। शांता डर गयी कि कहीं कैकेयी के पुत्र जाकर सीता के पुत्रों को न देख लिया हों। इसी बात को वे लक्ष्मण को सुनाती हैं। तब लक्ष्मण जी उन्हें आश्वासन देते हैं कि मुझ में और भरत में कोई अंतर नहीं हैं।

जब ग्यारहवें दिन प्रसवनी सीताजी का स्नान होने वाला था तब लक्ष्मण, भरत को साथ लेकर मुनि आश्रम पहुँचते हैं । बच्चों की रूप - रेखाएँ देखकर वे दोनों बहुत ही आनंदित हो जाते हैं । भाभी को देखकर दोनों ने प्रणाम किया तो भाभी ने उन्हें आशीष दिया । फिर वही भाभी, लक्ष्मण का मजाक उडानें लगीं कि भरत को साथ लाये, कहीं वे उन्हें मारने तो नहीं आये । इन बातों को सुनकर भरत की आँखे भर जाती हैं । भाभी जी की बातें सुनकर सौमित्री मुस्कुराये । वन में दावत समाप्त कर पुण्यजल को लेकर अयोध्या जब पहुँचे तो रामजी ने प्रश्न किया कि ये सब क्या है ? तब लक्ष्मण जी ने अपने कर्म का समर्थन करते हुए कहा कि कहीं गृह में कोई बुरी घटना न घटे इसलिए पुण्य जल छिडकने लाया हूँ ।

यहाँ सीता जी के पुत्र बडे हुए । युद्ध के लिए आये हुए आपने चाचाजी को उन दोनों ने भक्ति सहित प्रणाम किया । प्रणाम करनेवाले पुत्रों को गोद लेकर आशीर्वाद देते हुए उन्होंने उन्हें अपने हृदय से लगाया । उस समय लक्ष्मण जी की आँखें भर आई । तब लक्ष्मण जी से उन बालकों ने प्रश्न किया कि - ''क्या आप रिश्तों के कारण हमें देखने आये या फिर अपनी भाभी को वापिस ले जाने के लिए आए हैं ? किस काम के वास्ते आये हैं ?''

कुश - लव ने युद्ध में लक्ष्मण जी को हराकर शीघ्र ही उस विषय को बताने माँ के पास गये । सीताजी डर गईं । वे अपने पुत्रों को ही डांटने लगीं कि उन्होंने अपनी चाची के दिल में शोक भर दिया है । तब

लक्ष्मण के प्रति कही गयी सीताजी की दिल की बातें सत्य सम्मत भी है और अत्यंत रोचक भी हैं ।

''अनेक यिडुमुलु बडि लक्ष्मणुडु,
अडवुललो मम्मु रक्षिंचे,
येदुवंटि लक्ष्मणु नेलवेस्तिरि,
अज्ञानुलु मीवले येव्वरु कलरु,
येंत सज्ञानुडु सौमित्रंटे,
मीरु गर्भमुना कलिगियुंडगा,
चंपक विडिचिना चतुरुंडतडु,
मनपई प्रेमनु मरि कलवाडु''

अर्थात् ''वनवास के समय कई कष्टों का सामना करते हुए लक्ष्मण ने हमारी रक्षा की । ऐसे लक्ष्मण को आपने नीचे गिरा दिया ? आपके जैसे मंद बुद्धि वाले इस संसार में कोई नहीं होंगे । कितना सुज्ञानी है सौमित्री । जब आप दोनों मेरे गर्भ में थे, मुझे संहार किये बिना उन्होंने छोड दिया । वे इतने अकलमंद हैं । हम पर सदा ही उनका आदर युक्त प्रेम रहा है ।'' ऐसे कहती हुई वे रो पडीं । यहाँ सीताजी ने अपने देवर को संबोधित किया ''कितने सुज्ञानी है सौमित्री ।'' इसे कौन नकार सकता है । फिर आगे कहती हैं कितने चतुर हैं जो हमें संहार किये बिना छोड दिया ।'' चतुर तो हैं ही क्योंकि आज जितनी भी समस्याएँ उठ रही हैं, जितनी भी विषम परिस्थितियाँ खडी हो रही हैं उन सबका उचित समाधान देते हुए अब तक उस रहस्य को श्रीराम से छुपा कर रख पाये । गर्भवती सीता जी को मारने के लिए श्रीरामजी तो मान गए लेकिन लक्ष्मण के हाथ नहीं उठे ।

ऐसे लक्ष्मण जी के लिए सीताजी ने गंगा - स्नान किया । दशरथ के पुत्रों को तथा रामजी के पुत्रों को किसी प्रकार का दोष न लगने की कामना भी की । फिर मिन्नत माँगी कि वे 'गाय की घी के साथ अखण्ड दीप जलायेंगी ।'' इस प्रकार उस भाभी और देवर के बीच की आत्मीयता अवर्णनीय है ।

वहाँ पर श्रीराम ने लक्ष्मण की बेहोशी की खबर सुनी । इन्द्रजीत को मारनेवाले सौमित्री, कैसे बेहोश हो गये । राम को चक्कर आने लगा । लक्ष्मण बेहोश पडे हों और प्रकृति शांत हो, यह कैसे हो सकता है । इस प्रकार आश्चर्यचकित होकर चिंतामग्न हो गये । तब ऋष्यश्रृंग मुनि आकर कहते हैं कि वे मरे नहीं हैं केवल मूर्छित हुए हैं। युद्ध के लिए तैयार हो जाओ । युद्ध - भूमि में जाकर रामजी अपने भाई को देखकर रोने लगते हैं । ''ऐसे भाई कहीं हो सकते हैं ?'' कहते हुए उनके गुणों को बार - बार मनन कर चिंतामग्न हो गए । कहने लगे खान - पान, नींद सब कुछ त्यागकर उन्होंने हमारी सेवा की है । जब जानकी हम से बिछुड गईं तो उन्होंने ही हमें धैर्य और स्थैर्य दिया है । आगे कहते हैं कि - ''सीता को अग्नि प्रवेश की आज्ञा जब हमने दी तो कितनी बार मुझसे तर्क करते हुए कहने लगे कि यह सही नहीं है ।'' यहाँ इस वाक्य के द्वारा लक्ष्मण का शील व्यक्त होता है ।

''भूमि - पुत्री सीता जी पर शक ? अग्नि को भी पवित्र बनाने में समर्थ सीताजी के लिए अग्नि - परीक्षा ?'' यह गलत है कहकर मना करने वाले सहृदयी हैं लक्ष्मण । लक्ष्मण जब बेहोश हुए तब राम ने सोचा

''अश्वं पट्टुकु पोरगनेला ?
बालुरतो रण कय्यमुलेला,

लक्ष्मणुडु गूलिना वेनुका अयोध्या येला,
राज्यंबेला ? यज्ञमुलेला, यागमुलेला ?''

अर्थात् ''अश्व को लेकर बच्चों के साथ युद्ध क्यों करूँ ? जिस अयोध्या में लक्ष्मण नहीं है वह अयोध्या ही क्या है ? राज्य क्यों ? यज्ञ, याग आदि क्यों ।'' सौमित्री के बेहोश होने के बाद केवल रामजी को ही नहीं बल्कि पाठकगण को भी लगता है अब ये कहानी क्यों ? ऐसे महान चरित्रवान है लक्ष्मण ।

लव - कुश के संग जब श्रीरामजी से युद्ध किया उसके बाद श्रीराम ने उन बच्चों से पूछा कि ''आपके माँ - बाप कौन हैं ?'' तब लक्ष्मण बच्चों को प्यार से पास बुलाकर मुस्कुराते हुए कहते हैं - ''हे बच्चों । अब डरने का वक्त नहीं है जब इतनी बार पूछ रहें हैं तो आप चुप क्यों हैं ?'' इस प्रकार उन्होंने उन बच्चों को उत्तेजित किया ।

एक बार श्रीराम युद्ध - क्षेत्र में बालकों को मारने के लिए तत्पर हुए तब लक्ष्मण जल्दी से आकर उनसे प्रार्थना करने लगे कि छोटे बच्चों को मारना उचित नहीं है । इस प्रकार वे सीताजी के पुत्रों के रक्षक सिद्ध हुए हैं । सीताजी के ही नहीं सीताजी के पुत्रों के भी वे रक्षक हैं । अंत में श्रीराम को पता चल जाता है कि लव - कुश सीताजी के पुत्र हैं । तब श्रीराम को दुःख होता है कि अपने ही पुत्र इस घने जंगल में इतनी समस्याओं से जूझ रहे हैं । तब लक्ष्मण आकर उन्हें सांत्वना देते हुए कहने लगे कि ''आपने भी तो जंगल में जीवन बिताया है कि नहीं ? अभी क्यों दुखित हो रहे हैं ?'' तब श्रीराम, लक्ष्मण से कहते हैं -

''अवुनु लक्ष्मणा अवुनु यनुचु
संतोषिंचिरि श्रीराघवुलु
वनमुलो मा जानकिनुंचि
जेप्पवईतिवि तम्मुडा नातो
येंदुकु युद्धंबंटिवि गानी
येरिगिंचवईतिवि लक्ष्मणा नातो''

अर्थात् ''हाँ - हाँ कहते हुए श्रीराम जी खुश हुए। इस बन में हमारी जानकी हैं। हे भाई ! इस बात को मुझसे क्यों छुपाया। हे लक्ष्मण ! तुमने युद्ध करने से मना तो किया लेकिन कारण क्या है, यह नहीं बताया।'' कहते हुए आश्चर्यमग्न हो गये। मगर लक्ष्मण ने इस बात को बतला दिया होता तो लक्ष्मण ने आज्ञा का पालन नहीं किया सोचकर न जाने उन्हें कौन सी सजा देते, और सीतादेवी को और क्या - क्या सहना पडता। इसी कारण लक्ष्मण ने धीरता से इस रहस्य को छुपाये रखा। लक्ष्मण सदा ही सीताजी की रक्षा में तत्पर रहा करते हैं।

वाल्मीकि के आश्रम में भोजन किया। सीता और राम को अकेले में बात करने के लिए मौका दिलवाया। तब श्रीरामजी अत्यंत आनंदित होकर अयोध्या के लिए रवाना होते हुए कुश - लव को बुला भेजा। इस आह्वान को ग्रहण करते हुए कुश - लव ने प्रश्न किया कि ''जब हम माँ के गर्भ में थे तब हमें तो मारने का आदेश दिया गया था तो अब क्यों बुला रहे हैं ? हम नहीं आयेंगे ?'' वहाँ के सभी लोगों ने उन बच्चों को समझाने की कोशिश की लेकिन वे नहीं माने। तब श्रीराम चिंताग्रस्त होकर कहने लगे कि ''मैं इन बच्चों को छोडकर अयोध्या नहीं जा पाऊँगा। यही इसी जंगल में रहूँगा, वरना यहीं प्राण त्याग दूँगा।'

श्रीरामजी की दशा देखकर लक्ष्मण बालकों के पास आये और उन्हें गोद में बिठाकर मुस्कुराते हुए कहने लगे -

''मिम्मुला गूलवेसिना वेनुका
येंदुकु राज्यंबनि पलिकितिरी
पूर्वजन्म पुण्यफलमुचेता
ब्रतिकितिमि मिम्मु चूचुटकु
अदिमूर्ति यौ रामुनिचे
अंदरमु प्राणं विडिचेदमु
विडनाडी मम्मुला नंदरिनि
वोंटिगनुंडुटा कोरिका गलदा ?''

अर्थात् ''जब आप ने यहीं रह जाने के लिए निश्चय कर लिया है, तो रामजी दुखी हुए कि अब मैं इस राज्य को लेकर क्या करुँगा। पूर्व - जन्म के कर्म फल के कारण हम सब जीवित हुए केवल आपको ही देखने के लिए। श्रीराम के संग हम सब भी प्राण त्याग देंगे। क्या आप दोनों हम सबके चले जाने के बाद अकेले रहने की इच्छा रखते हैं ?'' इस प्रकार बातें करने की निपुणता को और कही देख सकते हैं ? इस प्रकार लक्ष्मण के द्वारा सत्य की जानकारी पाकर बच्चे भी कुछ कह नहीं पाये।

लक्ष्मणजी के प्रति बालकों के मन में जो आदर की भावना है उसकी कल्पना नहीं की जा सकती। इस प्रकार सम्मानित व्यक्ति की बातें भी अनुपम हैं। लक्ष्मणजी की बातों का जवाब वे नहीं दे पाये। उस दिन लक्ष्मणजी ने सीता का संहार ही नहीं किया बल्कि आज भी अगर वे बीच में न आते तो लव - कुश का अयोध्या में आना नामुमकिन

था । लक्ष्मणजी के प्रति उन बालकों में जो भक्ति भाव है वह निम्नांकित वाक्यों द्वारा व्यक्त होता है । बच्चों ने कहा - ''हमें प्राण देने वाले, हमारे प्राणों की प्रतिष्ठा करने वाले, आपकी बातों का खंडन हम नहीं कर पायेंगे । हम लोग अयोध्या आयेंगे ।'' उनकी बातों को सुनकर वहाँ सभी लोग आश्चर्यचकित हो गये । देवता गण और गुरुवरों के कथनों से भी बढकर लक्ष्मणजी के कथन यहाँ अत्यंत उदात्त रहे । जितने लोग भी वहाँ पधारे हुए थे, सभी ने श्रीरामजी से विदाई माँगी और चलने के लिए तैयार हो गये ।

यहाँ इस संदर्भ में देवतागण ही नहीं बल्कि गुरुओं ने भी वाल्मीकि की बातों पर गौरव नहीं दिया । यहाँ पर सम्मान दिया है तो केवल लक्ष्मणजी की बातों पर ही चाहे रामायण कथा किसी के द्वारा भी रचित क्यों न हो वहाँ पर लक्ष्मणजी की बातें सदा ही सम्मानयोग्य मानी जाती हैं ।

जानकी के संग रामजी जिस नाव पर चढे उसे स्वयं लक्ष्मण ने ही चलाया था । वाल्मीकि तथा अन्य कवियों के रामायण गाथाओं में श्रीराम के जीवन - नाव को चलाने वाले सौमित्री ही हैं । लोक कवियों द्वारा रचित सीतारामजी की कथा में उनके जीवन रूपी नाव को केवल अलंकार के रूप में न लेकर यथार्थ रूप से भी चलाने वाले लक्ष्मणजी ही हैं । सीता लक्ष्मणजी का यह रिश्ता इस संसार में भाभी - देवर के पवित्र संबंध को सूचित करता है । वे सचमुच आदर्श व्यक्ति ही हैं ।

* * *

12. सीता - भरत

भरत जी को ही सबसे पहले जानकारी प्राप्त हुई कि वाल्मीकी के आश्रम में सीताजी ने लव - कुश को जन्म दिया है । भरतजी का लगाव शांताजी के प्रति अधिक ही है । जिस दिन लवणासुर का वध होने वाला था उसी रात सीतादेवी ने लव - कुश को जन्म दिया । इन सारी बातों की जानकारी भरत को हुई थी । रामजी के आदेशानुसार जब सीता माई निर्वासित की जा रही थी तब लक्ष्मण को आदेश दिया गया था कि सीताजी को मार दिया जाय । अब सीताजी का कुशल - मँगल समाचार जब भरत को मिला तो वे बहुत ही आनंदित हुए कि लक्ष्मणजी ने सीताजी को नहीं मारा और इस बात को उन्होंने उनसे छुपा कर भी रखा है । इस खबर को पाते ही वे नदी के किनारे जाकर दान - दक्षिणा दे आए ।

''ताने स्नानंबुलू ग्रक्कुना जेसे
गोदानंबुलु भूदानंबुलु
सालिग्राममुलू सममुग जेसे
कन्यादानमुलू गजदानम्मुलू
अश्वदानमुलू स्वर्णदानमुलु
शय्यादानम्मुलू क्षणामुलो जेसे
पंचादारलू मुनुलकु निच्चेनु
अयोध्यकू ग्रक्कुना जनुदेंचेनु''

अर्थात् ''स्वयं नदी में स्नान कर गोदान,भूदान और सालग्राम आदि कार्य ठीक से संपन्न किये । फिर कन्यादान, गजदान, अश्व दान, स्वर्ण

दान, शय्या दान आदि कार्य क्षणों में निबटाये। फिर मुनियों को शक्कर देकर तुरंत अयोध्या लौट गए।''

श्रीराम को पुत्र - संतान हुआ है। इस विषय की जानकारी सबसे पहले भरत को मिली। कहा गया है कि उत्साहित होकर भरत ने क्षणों में कई दान किये। अयोध्या लौटते ही दीदी के नगर की ओर चल पडे। पत्नी मांडवी से भी पहले शांता बहन की याद आना तो यही सूचित करता है कि उन्हें बहन से कितना लगाव है। जाते ही उन्होंने अपनी बहन से पूछा कि,

''अक्करो मेलोक्काटी चेप्पेदनु
एमी कटनमु निच्चेद्वनिनाडू''

अर्थात् ''दीदी, मैं एक अच्छी खबर सुनाऊँगा, आप मुझे क्या तोफा देंगी।'' तब शाँताजी ने प्यार से प्रश्न किया ''सकल सुगुणों से संपन्न मालविका को ही मैं ने दिया है न ? और क्या दूँ।'' यह प्रश्न सुनते ही आनंदित होकर कहने लगे कि, लक्ष्मण ने जानकी माँ को नहीं मारा, अब वे पुत्रों को जन्म देकर प्रसन्न भी हैं। शांता जी ने सोचा कि ऐसी खबर सुनानेवाले भाई को कुछ भी दें, फिर भी वे ऋण मुक्त नहीं हो पाएंगी। तोफे के रुप में तो कुछ भी नहीं दिया उल्टा उदास हो मुँह लटका कर वहाँ से लक्ष्मण के पास चल पडीं। फिर डर कर बोलने लगीं,

''कैका कोडुकु भरतुडु नेडू
जूची वच्चेरा तम्मुड यनि''

अर्थात् ''कैकेयी के पुत्र भरत, आज जाकर सीताजी को देख आये, हे भाई !'' जब तक लक्ष्मण ने यह तसल्ली नहीं दी कि उनमें और भरत में कोई भेद - भाव नहीं है उन्हें सांत्वना नहीं मिली। जब शांताजी ही भरत को कैकेयी का पुत्र सोच कर शक कर बैठी तो फिर औरों के शंकित होने में आश्चर्य ही क्या है ?

शांताजी ही नहीं स्वयं सीताजी ने भी इस बात को लेकर भरत का मजाक किया था। सीताजी के लिए भले ही यह मजाक था लेकिन भरतजी को काफी ठेस पहुँची, जिस कारण उनकी आँखों से अंसुओं की धारा बहने लगी।

प्रसव के दस दिन बाद सीताजी को स्नान करवाया गया। उस समय सीताजी के देवर लक्ष्मण, भरत दोनों भाई मुनि आश्रम पहँचे। जब दोनों भाईयों ने नमस्कार किया तो सीताजी ने उन्हें आशीर्वाद दिया। फिर सीता जी लक्ष्मण जी से मजाक करने लगीं कि क्या वे यह खबर रामजी को सुनाकर भरत के संग यहाँ उन्हें मारने के लिए आये हैं ?'' इस बात को सुनते ही भरत की आँखों में आंसू आ गये। थोडी देर बाद उन्होंने पूरा समाचार सुनाया।

''पलुकुलू विनि भरतुडू तानु
कन्नुला जलमुलु ग्रक्कुना देच्चे
इक्कडनुन्ना चंदमुनंता
रामुकू चेप्पा लेदनी बलिके
रामुकु चेप्पी ननु तीसुका
चंपक रालेदू वदिनारो यनेनु''

अर्थात् ''ये बातें सुनकर भरत की आँखें आँसुओं से भर गयी। उन्होंने कहा कि यहाँ की किसी भी बात का जिक्र हम ने रामजी से नहीं किया। हे भाभी ! रामजी को समाचार देकर आपको मारने के लिए मुझे साथ लेकर लक्ष्मण नहीं आये।''

फिर वहाँ का समाचार सुनाते हुए लवणासुर के वध आदि विषयों का जिक्र भी किया। आगे उन्होंने कहा, ''केवल दीदी को ही यह खुश खबरी दी है, किसी और को नहीं मालूम है।'' इन बातों को सुनकर जानकी जी प्रसन्न हो गयीं। सीताजी के प्रति और सीताजी के संतान के प्रति भरत जी, विशेष आदरपूर्ण लगाव रखते हैं।

* * *

13. सीता - शत्रुघ्न

''लक्ष्मणजी की हंसी'' नामक गीत में कुछ हद तक शत्रुघ्न के पात्र को महत्व दिया गया है। कई दिनों से सालियों को न देखने के कारण श्रीराम को उन्हें देखने की इच्छा हुई। एक बार शत्रुघ्न से रामजी ने जब पूछा कि शांता जी को पंखा कौन करती हैं, और चंदन कौन लगाती हैं, तो उन्होंने जवाब दिया कि उर्मिला और मांडवी। जब श्रीराम ने उनकी पत्नी के बारे पूछा तो शत्रुघ्न मुस्कुराकर रह गए। शत्रुघ्न की पत्नी को देखकर रामजी ने कहा,

''मुंदु नीवु चेसिना फलामेमोगानी
इंता चक्कानी देवी सतिकलुगुटकु''

अर्थात् ''न जाने तुमने क्या क्या पुण्य कार्य किये कि उनके फलस्वरूप एसी देवी, पत्नी के रूप में तुम्हें मिलीं।'' इस प्रकार भाई की प्रशंसा करते हुए उन्होंने आगे कहा, तुम्हारी भाभी तो शक्ल से बिल्कुल कुरुप है। इन बातों को सुनकर शत्रुघ्न ने कहा,

''अलागु ननारादु अन्न राघवुलु
आदीलक्ष्मी सीता आ लोकामाता
इदी मुहुर्तमु वेलाये एमी माटलु''

अर्थात् ''हे मेरे भाई राघवजी, ऐसे मत कहिए। सीताजी तो इस लोक की महालक्ष्मी हैं। ऐसे शुभ मुहूर्त में आप कैसी बात कर रहे हैं ?''

इस प्रकार भक्ति भाव रखने वाले शत्रुघ्न, एक संदर्भ में अपनी भाभी का मजाक उडाते हैं। सीताजी अपनी बहनों को देवरों को सौंपी। शत्रुघ्न

को श्रुतकीर्ति सौंप कर सीताजी ने कहा, अब से हमारे लिए देवर, भाई सब कुछ आप ही हैं। हम लोग तो बिन भाई की कन्याएं हैं। तीन बहनों के बाद अबला श्रुतकीर्ति का जन्म हुआ। अगर वह ऐसी वैसी कुछ बातें कह भी दें तो बुरा मत मानना।

''अगर कभी तांबूल देते समय कभी श्रुतकीर्ति चुप रह जाय तो यह मत सोचना कि वह घमंडी है। कभी अगर दो चार बातें ज्यादा ही कह दे तो ये मत समझना कि वह ढीठ है।''

तब बीच में टोकते हुए शत्रुघ्न ने उत्तर दिया -

''मुग्धलू गारटो मीरु जानकी
मी वेनुका चेल्लेल्लू मुग्धले गारा
कुरुलुगूडनी मुंदु कुंकट्लू कुरुचा
पतितोनु अडवुलाकु येगिनादानावु
मायामृग्मुनु बट्टी तेम्मान्नादानावु
मुग्धलु कारटो मीरु जानकी
मी वेनुका चेल्लेल्लू मुग्धलु गारा ?''

अर्थात् ''हे जानकीजी ! आप क्या मुग्धा नहीं है ? आपके पीछे आपकी बहनें मुग्धाएँ नहीं हैं क्या ? आप पति के संग वनवास गयी हैं। वहाँ माया मृग की मांग भी की है। आप मुग्धा नहीं तो और क्या है ? और आप के पीछे आपकी बहनें मुग्धाएँ नहीं हैं तो और क्या?''

इस प्रकार की बातें सुनकर सीताजी शर्माती हुई सिर झुका लीं। सिर झुकाई बैठी बहु को देख कौशल्याजी ने शत्रुघ्न को फटकारते हुए कहा,

''मुग्गुरु वेनुकनु नुंडेटी वीडु
मूडू माटले आडु तप्पुलेरुगाडू
गांडरपु पलुकुलु पलुका नेटीकि
अनी इट्लु जानकी नी आडनेटीकि।''

अर्थात् ''तीन भाईयों के पीछे पैदा हुआ है। कभी तीन बातें भी नहीं कहीं, और न कभी कोई गलती ही की। जानकी से बात क्यों कर रहा है ? और इस तरह जानकी से बातें क्यों कर रहा है ?''

तब शत्रुघ्न ने अपनी गलती पहचानी और भाभी को प्रणाम किया। देवरों के साथ सीताजी का स्नेह ही ऐसा था।

* * *

14. सीता - हनुमान

राम भक्ति रूपी साम्राज्य का पालन करने वाले हैं भक्त सम्राट हनुमान। रामायण की कथा में आधे भाग तक हनुमान जी का प्रस्ताव ही नहीं होता। राम - कथा जब अत्यंत रोचक रूप से घट रही थी तब सीता जी को खोजने वाले श्रीराम और लक्ष्मण के पास आकर हनुमान उन दोनों को राजा सुग्रीव के पास ले गये और उनके बीच मैत्री बढाने में दोहदकारी हुए। इस प्रकार किष्किंधा कांड से उनका आगमन हुआ है और वे राम कथा के लिए सूत्रधारी बन गए।

सुंदर - कांड की विशेषता केवल इस सुंदर के साथ ही जुडी हुई है। सुंदर शब्द को लेकर, सुंदर कांड की विशेषताओं के बारे में भी कई दार्शनिक बातें विशेष रीति से व्यक्त हुई हैं। इन सबके साथ, लोक कवि कुछ घटनाओं के प्रति विशेष रूप से आकर्षित हुए। जैसे रावण के दरबार में हनुमान के संवाद और लंका को जलाने की रीति आदि।

'सीता देवी की पहचान', 'लक्ष्मण जी की हँसी', 'सीता का पंखा', 'लंका - यज्ञ', 'संक्षिप्त रामायण', 'सेतु - महत्व' आदि गीतों में हनुमान जी के पात्र को अत्यंत आकर्षक ढंग से चित्रित किया गया है। सीता जी की खोज में निकलनेवाले श्रीराम से वे कहते हैं -

''श्रीकांत रूपम्मु माकु येरिगिंचि
अतिव मेच्चेटट्टु आनवालिम्मु !

अर्थात् ''उस देवी के रूप - सौंदर्य के लक्षणों को हमें बताइए फिर उस स्त्री के विश्वास पात्र बनने योग्य कोई निशानी हमें दीजिए।'' इस

प्रकार राम जी से पूछकर सीताजी की रूपरेखा की जानकारी पाये। लंका में जब इस वानर को सीता जी ने देखा तब सीता जी ने प्रश्न किया - ''हे भाई ! पहले कभी आयोध्या में तुम नहीं आए यहाँ तक कैसे पहुँच गए ?'' तब उनका जवाब था।

''वालि सुग्रीवुलकु मेनल्लुडनु नेनु वल्लभुल बंटुनम्मा
आ वायुसुतुडनु हनुमंतु ना पेरु सीतम्मा नम्मवम्मा''

अर्थात् ''मैं वाली और सुग्रीव का भतीजा हूँ। मैं रामजी का सेवक हूँ। वायु देव का पुत्र हूँ। मेरा नाम हनुमान है। हे सीता माई ! विश्वास कीजिए।'' इस प्रकार सीताजी के विश्वास योग्य बातें उन्होंने कहीं। उन्होंने जिस प्रकार अपने विचारों की अभिव्यक्ति की उससे सीताजी को बहुत सांत्वना मिली, वह इस कथन से सिद्ध होता है कि सीताजी ने भी अपनी समस्याओं को किस प्रकार हनुमानजी को सुनाया था। सीताजी हनुमानजी से कहती हैं - ''हे भाई ! शरीर में प्राण कई दिन तक टिक नहीं पायेंगे। इस बात को श्रीराम तक पहुँचाना। इसके आगे कहती हैं कि -

''दिनदिन गंडालु देय्यालतो पोरु हनुमन्ना चेप्पवय्या
रामुन्नी बासी ने पडरानवस्थलु पडिति नसुरचेतनु
चेप्परादो यन्न चेल्लेला यंटेनु चेड्डमाटलु पुट्टुनु।''

अर्थात् ''अब तो हर दिन समस्याएँ ही समस्याएँ हैं। इन राक्षसों की हिंसायें सह रही हूँ। हनुमान जी इसे जरूर सुनाइएगा। रामजी से बिछुडकर मैंने इन राक्षसों के द्वारा कई मुसीबतें झेलीं। नहीं बता सकती

कि यहाँ बहन भी कहूँ तो गलत अर्थ निकालते हैं ।'' ''सीता देवी की पहचान'' नामक गीत में सीताजी हनुमान से उक्त बातें कहती हैं ।

सीता के विरह में रामजी के संगी - साथी लक्ष्मण जी हैं । लेकिन रावण के कारावास में भयंकर राक्षसों के बीच बंदी बनाई गई सीता के लिए अपना कहने के लिए कोई नहीं है । वे खुद अपनी पीडा को स्वयं सह रही है । हनुमान के सामने अब उन्हें आराम और शांति मिलने लगी । विरहिणी शोक मग्न सीता को अपार धैर्य दिलाने वाले तो वानर रूप में रहने वाले ये हनुमानजी ही हैं । सच बात तो यह है कि सीताजी के दुख को राम लक्ष्मण केवल कल्पना कर पाए । लेकिन हनुमान ने प्रत्यक्ष रूप से देखा है । ठीक समय पर सीताजी के दुःख का निवारण करने वाले पुण्य पुरुष यही हैं ।

सीतादेवी और हनुमान के लिए यह भले ही पहला परिचय है, फिर भी बहुत ही आत्मीयता के साथ उनके बीच बात-चीत चली । यहाँ हनुमान ने कहा कि उन्हें भूख लग रही है । इस कारण अशोक वन के पेडों से एक फल तोडने की इजाजत माँगी । तब सीता जी ने जवाब दिया -

''पट्टी तेच्चिनवान्नी पंड्लु मनकेटिकि पदिलान वेल्लमन्ना
ओक्क पंडु नाकु सेलविच्चितेगानी वेल्लने जानकी''

अर्थात् ''बंदी बनानेवाले व्यक्ति के फलों से हमें क्या लेना - देना । आराम से यहाँ से चले जाओ ।'' तब हनुमान ने कहा - ''हे जानकी मैया ! जब तक एक फल तोडने की आज्ञा आप नहीं देंगी तब तक मैं यहाँ से नहीं लौटूँगा ।'' ये कहते हुए एक फल तोडने चल पडे । यह घटना

ऐसी दिखती है जैसे हनुमान जी ने आगे अपने पराक्रम को दिखाने के लिए ही शायद इस पद्धति को उन्होंने अपनाया होगा ।

लंका में राक्षसगण हनुमान के वीर पराक्रम को देखकर रावण को बताने गये । उस संदर्भ में वे कहते हैं -

''अदी कोती कादया अलिविगादेव्वनिकि अहंकार पुरुषुडेमो
अवतार पुरुषुडो अतडेव्वडोगानी अलविगा देवव्वरिकिनि''

अर्थात् ''ये वानर कोई साधारण वानर नहीं हो सकता है । ऐसा लग रहा है ये कोई अहंकारी पुरुष है या यह कोई अवतारी पुरुष भी हो सकता है ।'' यह बताते हुए उनके पराक्रम को याद कर डरने लगे । जब इंद्रजीत अपने ब्रह्मास्त्र से हनुमानजी को बंदी बनाकर लंका - राज के दरबार में ले गये तब हनुमानजी रावण के रूप को देखकर सोचने लगे - ''अहो क्या रूप है ! क्या धैर्य !'' इस प्रकार रावण के ठाठ - बाट को देखकर आश्चर्य चकित होने का वर्णन वाल्मीकी कृत रामायण में चित्रित है । लेकिन लोक - कवियों ने इस प्रकार वर्णित नहीं किया । वे लिखते हैं कि हनुमान ने रावण के सिंहासन से भी ऊँचा आसन अपने पूँछ से बनाकर उस पर बैठ गये । इसका वर्णन है -

''घनमुख्युलु कोल्वगा कोल्चुपै कूर्चुन्न घनुनिमुंदर निडिरि देवा
घनवालमुनु जुट्टी गद्देगा गूर्चुंडी घनशौर्यमुन नुंटिवा देवा !

अर्थात् ''बडे - बडे लोगों के दरबार में बैठे हुए लोगों के सामने एक पराक्रमी राजा बैठे हुए थे । उनके सामने अपनी पूँछ से ही आसन बनाकर उस पर बैठकर अपने वीर पराक्रम को दिखाने वाले हैं ये वीर महान हनुमान ।''

इस प्रकार हनुमान ने स्वयं रामजी से इस बात की चर्चा की। यहाँ लोक कवि जिन पर अपना आदर प्रेम जताते हैं, उस प्रकार के हनुमान को रावण के आसन से भी ऊँचे आसन पर बिठाने वाले महोन्नत व्यक्ति हैं ये लोक - कवि ।

''लंका - सारथी'' गीत में रावण - हनुमान के संवाद अत्यंत नाटकीय शैली में रचित हैं। यहाँ पर रावण - हनुमान के संवाद अत्यंत सुंदर एवं नाटकीय शैली में वर्णित है। यहाँ पदों की जो अभिव्यकित हुई है, वह लोक - कवियों के महान सशक्त अभिव्यक्ति पक्ष को सूचित करता है -

''येडेडु समुद्रालु एकमईपारगा एलागु वस्तिवोरी
नीकेडु समुद्रमुलु नाकेडु कालुवलु निजमनुचु वस्तिरो
येडु समुद्रमुललो मकरी निनु म्रिंगक रानिच्चेरा
एडु समुद्रमुललो मकरुलु नीवु ना वेलु वंचग लेरुरा
दक्षिणपु यी लंका दानवुलके गानी तरमटर यितरुलकुनु
निन्नुनू नी लंका निमुषालमात्रमुनलोन निर्मूलनमुग जेतुनु
एदिरिंचि नातोनु यिंत माटलु बलुक येराजु बंदुरोरी
कृत त्रेता, द्वापरा कलियुगमु लेलेटी गुरु रामु बंदुरोरी
नी राजु कोलवुलो नीपाटी बंट्लु येपाटी कद्दु चेप्परा
नावंटी बंट्लुनु नीवंटी तृणमुलु कोटानुकोटीरोरी

... ...
... ...

बलमयिन यी लंका भस्मंबु चेसी निनु पट्टुकोनी पोदुरोरी
रावणुडा ! निनु जंपी लंका भूतमुलकु रणविंदु चेयिंतुनू''

अर्थात् रावण ने पूछा कि ''सात - सात समुद्र पार कर कैसे आ गये। तब हनुमान का उत्तर है - ''आपके लिए ये सात समुद्र हो सकते हैं। मेरे लिए ये सचमुच सात नालियों के बराबर है।'' तब रावण का जवाब है - ''सात समुद्रों के मगरमच्छों ने क्या तुम्हें निगल नहीं डाला !'' तो हनुमान का उत्तर है - ''सात समुद्र के मगरमच्छ और तुम भी, कम से कम मेरी ऊँगली भी मरोड नहीं सकते !'' रावण ने कहा, दक्षिण की ये लंका तो केवल राक्षसों का ही है दूसरों के लिए नहीं।'' हनुमान का उत्तर है ''तुम्हें और तुम्हारी लंका को एक मिनट में ही मैं नाश कर सकता हूँ।'' रावण ने पूछा, ''मेरे सामने इस प्रकार जबान लडानेवाले हे सेवक ! तुम्हारे राजा कौन हैं ?'' हनुमान का जवाब है, ''सत्युग, त्रेतायुग द्वापर युग और कलियुगों का पालन करनेवाले गुरु रामजी का सेवक हूँ मैं।'' रावण ने प्रश्न किया, ''तुम्हारे राजा के दरबार में तुम्हारे जैसे सेवक कितने हैं ?'' हनुमान ने जवाब दिया ''तुम जैसे घास के तिनके को हरानेवाले और मेरे जैसे सेवक वहाँ करोड लोग हैं ।

\- - -
\- - -

''इस महान लंका राज्य को भस्म कर तुम्हें बंदी बनाने आया हूँ।'' ''हे रावण ! तुम्हें मारकर लंका में स्थित भूतगणों को दावत देने आया हूँ।''

वास्तव में रावण को मारने का सामर्थ्य रखनेवाले तो हनुमान ही हैं। इसी बात को उन्होंने सीताजी से विनयपूर्वक सुनाया। लेकिन श्रीराम की आज्ञा के बिना वे इस काम को कर नहीं पा रहे हैं। अपने शक्ति - प्रदर्शन के लिए श्रीराम की आज्ञा की जरूरत है। यह उनकी पद्धति है। उनकी स्वामी - भक्ति इतनी उदात्त है। रावण को उन्होंने कई बार समझाया कि इस प्रकार सीता जी को ले आना सही नहीं है। उन्होंने कहा - ''सीताजी को इस प्रकार लाना कोई नीति कार्य नहीं है। कहने को राजा हो फिर इस प्रकार की चोरी क्यों करते हो।'' यह कहते हुए उन्होंने रावण को सीख भी दी कि सीताजी को रामजी तक पहुँचाकर वे स्वयं श्रीराम की शरण में चले जायें।

हनुमान की कार्य - कुशलता को व्यक्त करने के लिए लोक - कवियों ने एक घटना की सृष्टि की। हनुमान की वाग्विदग्धता, कार्य निर्वाहण की कुशलता को देख मुग्ध होकर रावण ने कहा -

''मारु राज्यमनका मावद्द कोन्नाल्लु कोलिचि निलिचे युंडुमा
राज्यंबुलो सगमु राज्यमिच्चेद नीकु नम्मि ना चेंत नुंडु''

अर्थात् ''पराया राज्य न मानकर हमारे दरबार में कुछ दिन रहो। तुम पर विश्वास होने के बाद इस राज्य का आधा भाग अवश्य दूँगा। हमारे पास रहो!''

यमराज को बंदी बनाने बाले रावण जैसे राजा के मुँह से यह सुनना कि ''आधा राज्य दूँगा। तुम हमारे दरबार में रह जाओं!'' इससे बलवान हनुमानजी की प्रज्ञा यहाँ दर्शित होती है। इसी कारण लोक कवियों ने रामजी के द्वारा कहलवाया कि ''तुम हमारे आत्म बंधु हो।''

हनुमान के प्रति राम के मन में व्यक्त प्रेम तथा आत्म बंधुत्व की भावना को लोक - कवि समय - समय पर वर्णित करते ही आये हैं। ''सेतु महत्व'' गीत में भोजन के समय रामजी ने हनुमान को बुलाकर जिन विचारों को व्यक्त किया और उन्हें सुनकर हनुमान के समाधान भी अत्यंत रमणीय बने हैं।

''हस्तंबु जापियी हनुमंतु बिल्चि
धीरुडवु सुगुणगंभीरुडवु नीवु
पुत्रुडवु मित्रुडवु सौमित्रि कंटे
जलराशि कट्टिंची लंका साधिंचि
रावणुन्नी जंपी राम देस्तिवी
नी ऋणमु येन्नटिकि तीर्चंगलेनु
कोरी न पोत्तुना कुडवरम्म नग -
इट्लानतित्तुरा यिनकुलाधीशा !
वानर बलगमुलो ने नेंतवाड
मी पादसेवकुडा मीपाली बंटु
वनचरुला नेलेटी मनुजपतिगलडा ?
मा पूर्वपुण्यमु मा पूजफलमु
नेटिकि पंडेनू कन्नुला जूडा !''

अर्थात् ''अपने हाथ को बढाकर हनुमान को पास बुलाकर श्रीराम ने कहा ''तुम तो धीर हो, सुगुणों से युक्त हो, सौमित्री से भी बढकर तुम मेरे पुत्र समान हो और मित्र समान हो। पुल बनाकर लंका पर विजय पाकर, रावण का वध कर, सीताजी को अयोध्या तक ले आये। मैं

किसी भी प्रकार, तुम्हारा ऋण चुका नहीं पाऊँगा । तुम मेरे साथ बैठकर खाना खाओ ।'' तब हनुमान ने कहा, ''इक्ष्वाक् वंशी ! इस प्रकार मेरी प्रशंसा क्यों कर रहे हैं ! इतने वानरों के बीच में तो मैं नगण्य हूँ । आपके चरणों का सेवक हूँ । आपका सेवक हूँ । आप जैसे राजा, वानरों का पालन करनेवाले राजा कहाँ मिलेंगे ? ये हमारे पूर्व - जन्मों का सुकृत फल है, हमारा पूजा फल है । जो आज हमें मिला है !''

जब लक्ष्मण इँद्रजित के साथ युद्ध कर रहे थे उस समय हनुमान ने अपने शरीर को इतना ऊँचा विस्तृत किया कि उनका शरीर संपूर्ण आकाश पर फैल गया । यह लोक - कवियों का वर्णन है । जब रण - भूमि में सौमित्री बेहोश हो गए तब संजीवनी पर्वत को उखाडकर लानेवाले वीर हनुमान ! सौमित्रि के प्राणों की रक्षा करनेवाले भी यहीं है । इसलिए संजीवनी पर्वत को ढोनेवाले उन हाथों को सुमित्रा जी ने हीरे के कंगन प्यार से पहनाये । कौशल्या जी ने सोने के पायल दिए । वाल्मीकी जी ने कहीं भी रामजी के परिवार के साथ हनुमान के सन्निहित संबंधों का वर्णन नहीं किया ।

लेकिन लोक - कवियों ने श्रीराम के परिवार के साथ हनुमान के सह - संबंधों को संवादों के जरिए अत्यंत प्रेम सहित ग्रंथस्थ किया है । चाहे कोई भी विषय क्यों न हो उस पर प्रश्न करने के लिए कभी भी हनुमानजी हिचकिचाते नहीं हैं । वनवास के पश्चात रामजी तथा अन्य जन, सभी माताओं को प्रणाम कर रहे थे उस समय हनुमान ने पूछा - ''इनमें से किस माँ ने रामजी को वनवास जाने की आज्ञा दी है ?'' तब लक्ष्मण जी ने आँखों से कैकेयी जी की ओर इशारा किया । तब

हनुमानजी ने कहा - ''हे माँ ! उस समय श्रीराम अकेले थे इसलिए तुमने जाने की आज्ञा दी है । अब हम इतने लोग साथ है सावधान रहो !''

''गुह - भरत का अग्नि प्रवेश'' नामक गीत में राम अपनी वानर सेना के साथ राक्षस राजा के संग सीता - लक्ष्मण जी को लेकर नंदीग्राम पहुँचे । उनके आगमन का समाचार सुनकर उनके जीजाजी ऋष्यश्रृंग नंदीग्राम पधारे । कई सालों के बाद सीता - रामजी के दर्शन पाकर मुनि का मन द्रवित हो गया । वनवास के समय उनके द्वारा झेले गये कष्टों को सुनकर वे सहानुभूति भी जताने लगे । ''जनक की पुत्री जो कभी धूप में भी नहीं चली । इस प्रकार के कष्टों को सह चुकी हैं । चलो अब तो सारी मुसीबतें भी कट चुकी हैं'' कहते हुए उन्हें सांत्वना देने लगे । अब तक सीता - राम - लक्ष्मण यही तीनों एक दूसरे को सांत्वना देते रहे, लेकिन उन्हें अब तक कभी भी स्वजनों के सामने अपने कष्टों को सुनाने का अवसर नहीं आया । ऋष्यश्रृंग मुनि बुजुर्ग है, सज्जन हैं । सहानुभूति वाक्य जता रहे हैं । कालिदास का कहना है कि स्वजनों के समक्ष दुःख की तीव्रता अपनी सीमा पार कर बहने लगती है । ऋष्यश्रृंग मुनि के समक्ष सीता - राम - लक्ष्मण की यही दशा हो गयी । उस परिस्थिति को देखकर हनुमान कहते हैं -

''एंदरैना मुनुलु येतेंचिरि गानी
एडिपिंचेटी मुनिनि येक्कडा चूडा''

अर्थात् ''कितने मुनियों का आगमन हुआ है लेकिन इस प्रकार रुलाने वाले मुनि का दर्शन अब तक नहीं हुआ ।'' ऋष्यश्रृंग को हनुमान ने नाम दिया कि ये मुनि रुलाने वाले मुनि हैं । हनुमान की बातें सुनकर

मधुर मुस्कान के साथ सीताजी अपने गले की माला को उतार कर हनुमान को देती हैं । दुःखमय वातावरण के बीच अपनी वाक्चतुरता के कारण सीताजी को हनुमान जी हंसा पाये ।

रामजी का परिवार, हनुमान जी को अपने ही परिवार का सदस्य मानने लगे । यह लोक - कवियों की भावना है । ''लक्ष्मण जी की हंसी'' गीत में भोजन के समय हनुमानजी को बुलाना परिवार के सदस्य भूल गये । उन्हें गुस्सा आ गया । गुस्से के साथ वहाँ से आ गये तब रामजी ने कहा - ''तुम हमारे घर के सदस्य हो इसलिए नहीं बुलाया ।'' ''हे उत्तम पुरुष ! अब आ जाओ और मेरे साथ बैठो ।'' लेकिन हनुमानजी का गुस्सा कम नहीं हुआ । तब रामजी ने फिर कहा - ''हे हनुमान ! तुम्हारे ही कारण तो मैं आज अपने भाइयों के संग बैठकर खाना खा पा रहा हूँ ।'' हनुमान के बिना लक्ष्मणजी की बेहोशी दूर हो पायेगी कि नहीं, नहीं मालूम । हनुमानजी समय पर न आते तो भरत अग्नि प्रवेश कर बैठते । समय पर पहुँच कर श्रीराम के आगमन की खबर सुनाकर उनके प्रयत्न को रोक पाए । आज राम के लिए यह भाग्य दिला पाये कि अपने भाईयों के संग बैठकर खाना खा सके !'' इतनी बार मिन्नतें करने पर भी उनके साथ बैठकर खाना खाने वे नहीं आये । जैसे ही हनुमान ने देखा कि श्रीराम ने खाने को छुआ है तो झट अपनी थाली लेकर अतसी के पेड पर चढ गए । फिर राघव ने कई बार प्रार्थनाएँ कीं तब तोते जैसे उडते हुए राम के हाथ पर आकर कूद पडे ।

रामजी के घर हनुमानजी अन्य वानरों के साथ मिल कर प्रीति - भोज करने का वर्णन और उस समय 'उस्ति' सब्जी का वर्णन, यहाँ स्मरण करने

योग्य है । अन्य वानर कतार में खाने के लिए बैठ गये । उनकी थालियों में 'उस्ति'[1] की सब्जी परोसी गई । एक वानर ने जब अपनी थाली में सब्जी को दबाया तो वह ऊपर उछल पडा तो वह वानर भी यह कहते हुए उछलने लगा कि मैं तुम से ऊँचा उछल सकता हूँ । इस प्रकार एक से बढकर एक उछलते हुए उस अयोध्या नगर में इन वानरों ने अपने स्वभाव को दिखाया । सब से पीछे हनुमान उछलने लगे तो रामजी ने उन्हें पकडकर उसके जोश को दबाते हुए कहा कि - ''समुद्र को लांघकर आनेवाले चतुर तो तुम्हीं हो ना ! तुम्हारी शक्ति को क्या मैं नहीं जानता ? धीरज धरो !'' इस प्रकार उनके जोश पर उन्होंने लगाम लगाया ।

इस प्रकार लौकिक विषयों में ही नहीं भक्तिपरक विषयों में भी लोक - कवियों की दृष्टि में हनुमान जी ही महान हैं ।

राज्याभिषेक के समय रामजी ने सीताजी को रत्नों के हार और मोतियों के हार देकर कहा कि इन हारों को हनुमान तथा अन्य वानरों को दो । वे मुस्कुराती हुई एक हार निकालकर वायुपुत्र के गले में डाल दी । तब वह वीर वानर एक पेड पर चढकर पत्थर से उस हार को तोडकर देखने लगे । उसमें उन्हें श्रीरामजी का नाम नहीं दिखाई दिया तो रामजी के पास जाकर कहने लगे कि रामजी का नाम जहाँ नहीं है उस प्रकार के हार से मुझे क्या लेना देना और ये पतक भी मेरे किस काम की है ?'' यह कहते हुए वे रामजी के चरण पकडकर बैठ गए । उस समय करुणा समुद्र रूपी श्रीराम ने हनुमानजी को उठाया और

1. यह नींबू जैसा होता है, स्वाद में खट्टा और तीखा होता है । इसके अंदर कई सारे छोटे - छोटे बीज रहते हैं ।

उनके कानों में उन्होंने तारक मंत्र सुनाया। हनुमान की इच्छा है कि इस संपूर्ण जगत के सभी पदार्थों में राम नाम अंकित हो। उनका विचार है कि जिस वस्तु में राम नाम अंकित नहीं है वे सब बेकार हैं। राम से बढकर राम नाम ही महत्वपूर्ण है। यह हनुमान का प्रगाढ विश्वास है।

यहाँ पर उस समय का वर्णन है जब सेतु का निर्माण हो रहा था। सारे वानर बडे - बडे पत्थर ला रहे थे तो वहाँ बैठकर हनुमान श्रद्धा के साथ सभी पत्थरों पर 'रामनाम' तराशते जा रहे थे। इतने में श्रीराम वहाँ पर आये। उन्होंने भी सोचा कि इस पुल निर्माण के समय वे भी दो - चार पत्थरों को देकर उनकी सहायता करेंगे। इसी विचार से उन्होंने एक पत्थर उठाया। तब हनुमान ने उस पत्थर को उठाने से मना किया। तब राम ने पूछा - ''क्यों ?'' तब हनुमान ने उत्तर दिया - ''अभी तक मैं ने उस पत्थर पर 'रामनाम' नहीं तराशा है। इस कारण वह पानी पर नहीं तैरेगा।'' तब श्रीराम ने पूछा - ''राम तो मैं ही हूँ। जब मैं स्वयं डालूँ तो क्यों नहीं तैरेगा ?'' तब हनुमान ने झट से कहा - ''श्रीराम होने के बावजूद भी उस पत्थर पर अगर 'रामनाम' अंकित न हो तो वह पानी की सतह पर नहीं आयेगा।'' फिर भी श्रीराम ने पत्थर को डालकर देखा तब वह पत्थर पानी में डूब गया था। तब श्रीराम ने जाना कि उनसे भी महत्वपूर्ण उनका नाम है। उस भक्त के प्रगाढ विश्वास को देखकर परमात्मा आनंदमग्न हो गये। हनुमान को उपहार रूप में हार देना और उसमें हनुमान द्वारा 'रामनाम' के लिए खोजना, आदि तथ्यों को कई गीतों में प्रस्तावित किया गया है।

जब हनुमान की पूँछ को आग लगाने के लिए कपडे बांधने लगे, इस संदर्भ में हनुमान अपनी पूँछ को बढ़ाते गये। उस समय रावण ने

सीता की साडी लाकर पूँछ पर बाँधने की आज्ञा दी तो हनुमान ने अपनी पूँछ को बहुत ही छोटा कर दिया। वे इतने उदात्त स्वभाव वाले हैं। भरत को देखकर, उन के पास आकर कहने लगे कि - ''इनके समान कोई भक्त हो ही नहीं सकते।'' इस प्रकार वे एक महान आलोचक भी हैं।

संजीवनी पर्वत लाने जब वे जाने लगे तब रास्ते में उन्हें कालनेमी राक्षस, मकरी और मुनियों द्वारा दिये गये विष - जल से मुक्ति पाने में उन्हें कई कष्ट झेलने पडे। उस पर्वत पर संजीवनी बूटी को पाने के लिए जब वहाँ के पत्थरों से उन्होंने प्रश्न किया तो पत्थरों ने कोई समाधान नहीं दिया। तब उन्होंने सोचा कि ''पूछने पर भी क्या ये पत्थर कुछ जान सकते हैं ? क्या ये पत्थर पिघल सकते हैं ?'' इस कारण सबको जुटाकर पूरे संजीवनी पर्वत को ही उठा लाये। सूर्योदय होने से पहले ही संजीवनी पर्वत को लाकर सौमित्री के प्राणों की रक्षा की।

सही समय पर कार्य निपटाने वाले हनुमान जी, एक बार काशी से शिवलिंग को लाने में देरी कर दी। तब रामजी ने वहाँ रामेश्वरम में बालू से शिवलिंग बनाकर उस शिवलिंग की स्थापना की। उसी समय शिवलिंग को लेकर हनुमान पधारे तब रामजी ने कहा - ''इस शिवलिंग की भी प्रतिष्ठा करुँगा। यह घटना 'सेतु महत्व' नामक गीत में वर्णित है।

''हनुमंतु लिंगंबु नर्चिंचिगानी
रामलिंगनी जूड नरहंबुलेदु
तीर्थफलमु लेदू त्रिलोकमुलनु''

वहाँ पर श्रीराम ने अपनी आज्ञा सुनाई कि - ''हनुमान द्वारा लाये गये शिवलिंग के दर्शन किये बिना मेरे द्वारा प्रतिष्ठित शिवलिंग को देखना मना है और तीनों लोकों में भी यात्रा फल नहीं मिलेगा ।'' इस प्रकार हनुमान को सांत्वना देने लगे । जिस प्रकार काशी जानेवाले यात्री काल - भैरव के दर्शन किए बिना विश्वनाथ के दर्शन नहीं करते हैं उसी प्रकार रामेश्वर जानेवाले यात्री भी हनुमान द्वारा लाये गये शिवलिंग के दर्शन किये बिना राम द्वारा प्रतिष्ठित शिवलिंग के दर्शन नहीं करते । इस प्रकार का नियम प्राचीन समय से अब तक चलता आ रहा है । हनुमान जी के प्रति सीताराम के मन में अपार प्यार है और हृदय में सम्मान है । वे उन्हें आत्मबंधु, जीव रक्षक कहकर प्यार से संबोधित कर तृप्त हुए हैं । सीता के मन में हनुमान के प्रति अपार गौरव की भावना और कृतज्ञता की भावना है । इसे जताने के लिए लोक - कवियों ने आईने से संबंधित एक घटना का वर्णन किया है ।

राज्याभिषेक के समय श्रीरामजी को राजा सुग्रीव ने भक्ति के साथ मणिकों की एक माला तोफे के रूप में दिया । रामजी ने उस हार को अपनी रानी को देकर कहा कि जिसके द्वारा तुम्हारी रक्षा हुई उन्हें यह हार सौंप दें । तब सीताजी ने कहा,

''ना यात्मबंधुडा ! जीवरक्षकुडा
मायन्ना हनुमंतु रम्मनुचु बिलिचे !

अर्थात् ''मेरे आत्मबंधु, मेरे रक्षक, मेरे भाई हनुमान कहकर उन्हें बुलाया ।'' सीता माई ने हनुमान को पुत्रवात्सल्य से 'मेरे भाई हनुमान !' कहकर संबोधित किया । लंका में प्रवेश कर सीता माई के प्राणों की रक्षा करनेवाले आत्मबंधु हनुमान ही तो हैं ।

हनुमान के कारण ही सीता मैया को वानर जाति से प्रेम हो गया था । कुश - लव जब युद्ध कर रहे थे तो उस युद्ध में हनुमान बेहोश हो गये तब उन बालकों ने सोचा कि माँ के लिए तो ये वानर अत्यंत प्रीतिपात्र है इसलिए इन्हें माँ के पास ले चलते हैं । इस प्रकार वे हनुमान को अपनी माँ के पास ले गये । हनुमान को देखते ही सीताजी ने अपने पुत्रों को डांटा - ''मेरे प्राण रक्षक को इस प्रकार बेहोश कर दिया तुम लोगों ने !'' कहकर दुखित होने लगी ।

अयोध्या नगर के सभी लोग, अंतःपुर की स्त्रियाँ सभी हनुमान के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करने वाले ही हैं । सभी लोग उनकी प्रशंसा करने वाले ही हैं । चाहे जो भी प्रशंसा करें, फिर भी मधुर मुस्कान लिए हनुमान वहाँ से चले जाते हैं ।

लक्ष्मणजी को जब होश आया तब रामजी ने अपने भाई से कहा कि ''डरो मत लक्ष्मण ! वायुपुत्र ने अत्यंत तेजी के साथ हमारे सारे दुःख दूर कर दिए हैं ।'' यह कहते हुए हनुमान की ओर मुडकर कहने लगे कि

''दूषकुलनंदरिनी खंडिंच बुट्टीन दोड्डवाडवु नीवया
अन दक्षिणपु तट्टु दानवुलु वच्चीरनी हनुमंतु कदलीपोये''

अर्थात् ''हमारा अत्यंत हित चाहने वाले तुम्हीं तो हो ! तब हनुमान ने हाथ - जोडकर प्रणाम किया और दक्षिण दिशा की ओर चल पडे ।'' रामजी की प्रशंसा को सुनते हुए वे वहाँ खडे नहीं हो पाये । इसी कारण हाथ जोडकर प्रणाम कर विनयपूर्वक वे वहाँ से चले गये । लोक साहित्य में इस प्रकार की घटनाएँ एक नहीं, कई हैं ।

हनुमान पात्र के चित्रीकरण में आंध्र के लोक - कवियों की चतुरता को ही नहीं बल्कि तेलुगु भाषा के महत्व को भी देखा जा सकता है। आंध्र लोक - कवियों की रचनाओ में श्रीराम 'भाई राम' बन गये। लक्ष्मण 'भाई लक्ष्मण' बन गये। हनुमान भी 'भाई हनुमान' बन गये। यहाँ एक और विशेषता है ''हनुमान्ना'' अर्थात् भाई हनुमान कह कर लोक - कवियों ने कई बार प्रस्तावित किया। अयोध्या आने से पहले वनवास के समय लंका और नंदीग्राम जाने के संदर्भ में भी हनुमान को भाई हनुमान कहकर ही संबोधित किया गया है। अंतःपुर की स्त्रियों को नगर भिजवाने के लिए आदेश देते हुए भी रामजी ने कहा - ''हे भाई हनुमान ! आओ ! जल्दी से आओ। जल्दी से कौशल्या नगर की ओर चल पडो ! ''हे भाई'' कहते हुए ही उन्हें संबोधित किया है।

आंध्र के लोक कवियों ने 'भाई' तेलुगु शब्द को हनुमान शब्द के पीछे लगाकर हनुमान को अपने निकटतम रिश्तेदार के रूप में माना और उस भावना को भाई संबोधन द्वारा व्यक्त किया है। तेलुगु भाषा के महत्व को व्यक्त करने में उनकी चतुरता की सराहना जितनी भी की जाये कम ही है। सीता देवी का कोई भाई नहीं है, उस कमी को हनुमान ने मिटा दिया। उनके लिए वे आत्मबंधु बन गये। प्राण - रक्षक भी सिद्ध हुए।

* * *

15. सीता - कुश लव

वाल्मीकीजी ने रामायण की कथा केवल श्रीराम की प्रशंसा करने के लिए ही रचा है। श्रीराम का शील निरूपण ही वाल्मीकीजी का मुख्य उद्देश्य रहा है। श्रीराम के प्रति जितनी सावधानी उन्होंने बरती उतनी सावधानी अन्य पात्रों के प्रति नहीं दिखायी। शिष्ट साहित्य के सभी कवियों के लिए श्रीराम आदर्श नायक हैं। इस प्रकार उनकी यही मान्यता रही कि उनका काव्य सदा ही उस नायक का आश्रय पाये। परन्तु लोक कवियों की दृष्टि रामजी पर नहीं हैं। उन्हें पहले सीताजी के प्रति प्रेम है। उनके बाद ही रामजी आते हैं। सब से अधिक उनका प्यार कुश - लव पर है। उन्होंने कुश, लव के प्रति अधिक प्यार जताया। जितना स्नेह उन्होंने अपने दिलों में कुश - लव को दिया उतना स्नेह श्रीराम के प्रति नहीं दिया। पूरे दिल से उन्होंने कुश - लव से प्यार किया। उन्होंने तो कुश - लव का पक्ष लेकर रामजी को धिक्कारने में भी पीछे नहीं रहे। श्रीराम ने सीताजी का परित्याग किया, इस कारण उन के ऊपर जो गुस्सा था उसे उन्होंने कुश - लव के द्वारा पूरा किया।

वाल्मीकी के आश्रम में सीताजी ने एक पुत्र को जन्म दिया। वाल्मीकी ने उस बच्चे का नाम लव रख। एक दिन सीताजी उस बच्चे को झूला में सुला कर, मुनियों को सौंप कर अपनी सखियों के संग खेलने चली गयीं। अचानक उन्हें अपने बेटे की याद आई, तुरंत जा कर अपने बेटे को अपने साथ लिवा लायीं। आश्रम में जब मुनियों ने अपना तप समाप्त कर झूले में देखा तो उन्हें वहाँ बच्चा दिखाई नहीं

दिया । तब जल्दी से उन्होंने एक कुश लिया और उसमें मंत्र फूंककर एक बच्चे की सृष्टि कर उसे झूले में डाल दिया । जब सीताजी लौटी तो झूले में एक बच्चा और अपनी गोद में एक बच्चे को देखा । तब मुनियों ने सारा वृत्तांत सुना कर सीताजी से प्रार्थना की कि दूसरे बच्चे को भी वे स्वीकार कर अपना लें । इस प्रकार सीताजी ने एक बच्चे को जन्म देकर, दो बच्चों की माँ बन गयीं । बाल्मीकी रामायण में सीताजी को जुडवे होने की बात वर्णित है ।

वाल्मीकी के यहाँ लव - कुश ने छः शास्त्रों को, चार वेदों को, अट्ठारह पुराणों को, चतुरार्थ, एवं काव्यों को अत्यंत श्रद्धा के साथ पढा । कहा जाता है कि ''उन्होंने वहाँ घास, तिनके आदि बटोरते हुए, रामायण कथाओं को पढते हुए वे उस वन में विनयपूर्वक रहे ।'' फल आदि खरीदकर अपनी माँ से कहते थे ''माँ इन्हें खाईये ।'' उनकी दशा देख सीताजी दुखित हो जाती थीं । सीताजी के दुःख को निवारण करने का प्रयत्न मुनि कान्ताएँ करती थीं । उस दशा में कुश - लव को उनकी माँ कोई अंतः पुर की स्त्री जैसी नजर आती थीं । सच्चाई क्या है, वे नहीं जानते । अपनी माँ से कई बार पूछा लेकिन उन्होंने नहीं बताया - तब दोनों भाईयों ने अंदाजा लगाया कि,

''राजा सतीलागुन्नदि चूडा अक्कडनेमो नेरमु जेसिते
चंप बंपिति रति साहसमुननी देवीकी नेरमु लेक युंडगा
काचिरि काबोलु ई मुनुलु इद्दरे बालुरमु पुडितिमि मनमु
....
ऊरक चेप्परू आडवारलु उग्रमु चेसिते मेलनी पलिके''

अर्थात् ''महारानी जैसी दिख रही हैं । वहाँ इन से कोई गलती हुई होगी । इस कारण इन्हें मारने के लिए यहाँ भेज दिया होगा । यहाँ इन मुनियों ने पहचान लिया होगा कि इनसे कोई गलती नहीं हुई है, तभी उन्होंने इन्हें बचाया होगा । तभी हम दोनों बालकों का जन्म हुआ होगा । स्त्रियों के साथ सख्ती बरतने से वे सच उगलती हैं, इस बात को बडों ने यूँ ही नहीं कहा है ।''

इस प्रकार माँ के साथ रहने वाली स्त्रियों से, वे सख्ती से पेश आये । तो वे स्त्रियाँ इधर उधर भाग गई । उसके बाद उन्होंने अपनी माँ से सच बोलने के लिए विवश किया । तब उनकी माँ ने अपने मायके के बारे में, ससुराल के बारे में, सास, ससुर, माँ - बाप के बारे में बता दिया । सारी बातें सुनकर बच्चे खीज उठे । फिर बच्चों ने प्रश्न किया ''इतने दादा, और नाना लोगों के बीच आखिर हमारे पिता कौन हैं ।'' फिर जान गए कि उनके पिता श्रीराम हैं । चाचाजी और चाचीजी लोगों के बारे में भी जानकारी प्राप्त की । फिर सीता और रामजी के जन्म संबंधी तथा अन्य विषयों की जानकारी प्राप्त करने की इच्छा भी जाहिर की । सीताजी बडे उत्साह के साथ बोलने लगीं कि किस प्रकार रामजी ने धनुष भंग किया फिर किस तरह उनके पिताजी ने उनका विवाह रामजी के साथ करवाया है । इस विषय को सुनकर दोनों बालक जोर से हंस पडे । वे कहने लगे केवल शिव धनुष को भंग करने से ही जनकजी ने आपका हाथ रामजी के हाथ में सौंप दिए । उन्होंने उत्सुकता जाहिर की कि आगे क्या हुआ है । फिर प्रश्न किया कि वनवास क्यों गए । तब कैकेयी की बात सीताजी ने सुनाई, तो बच्चों ने दशरथजी की निंदा करते हुए कहा,

''आडदानी पंतमु चेल्लिंची
तनयुल नडवुलकंपिंचि
येंत कीर्तिवाडे दशरथुडु
सिग्गुमालिन वाडे दशरथुडु''

अर्थात् ''स्त्री की जिद को पूरा करने के लिए पुत्रों को वन भेज दिया। कितने यशस्वी हैं दशरथ। कितने बेशर्म है दशरथ ?'' सीताजी के अग्नि प्रवेश की खबर सुनकर वे अपने पिताजी को भी दूषित करने लगे। आगे माँ को धीरज बाँधते हुए उन्होंने कहा,

''निन्नु राघवुलानु गूर्चेदा सुम्मा
नम्मुकुंडुमी अम्मरो अनिरी''

अर्थात् ''हम आपको और राघवजी को मिलाकर ही रहेंगे। हे माँ ! हमारी बात पर विश्वास कीजिए।'' माँ को इस प्रकार धीरज दिलवानेवाले साहसी वीर हैं ये बालक।

''कुश - लव युद्ध'' नामक गीत में श्रीराम के सपने में ये दोनों बालक अपनी माँ के साथ दिखाई दिए। मायावी रावण की चालें जानने के बाद भी सीताजी को वध करने के लिए भेज दिया ? सीताजी पर शक कैसे कर पाए ? आपकी माताओं के तप फल के कारण आप अयोध्या राज पर शासन कर रहे हैं। कोई तप आदि न करने के कारण हमें हमारी माँ ने जन्म दिया है। इसी कारण हम वन को ही गृह मान कर जी रहे हैं। आपके पुत्र हैं, आपके धन तथा आपके ऋण के कर्ता भी तो हम ही हैं।'' इस सपने को देखकर रामजी अचरज में पड

गए। फिर वे स्वप्न की शाँति निमित्त अश्व मेध यज्ञ करने के लिए तैयार हो गए। उस यज्ञ के लिए वाल्मीकी को न्यौता मिला तो उनके संग लव - कुश भी चल पडे। सीताजी ने बच्चों को रोकने के लिए काफी कोशिश की। माँ को यही डर सताने लगा कि उनके पुत्रों के साथ अयोध्या में कहीं कुछ बुरा न हो जाय। लेकिन वे बालक वाल्मीकीजी की आज्ञा पाकर अयोध्या चल पडे।

यज्ञ कुटी में जब सभी मुनिगण विराजमान थे, तब वाल्मीकीजी ने लव - कुश को आँखों से इशारा किया। दोनों भाई कुछ देर तक सोचते रहे फिर रामायण कथा का गान प्रारंभ किया। कुश रामायण कथा सुनाने लगे तो लव उसके अर्थ को बताने लगे। उनके वाक् चातुर्य को सुनकर श्रीराम सोचने लगे कि ये साधारण बालक नहीं हो सकते, वे अवश्य क्षत्रिय वंश के होंगे। इतना ही नहीं उन्हें लगा कि उनकी रूप रेखाएँ भी जानी पहचानी सी है,

''रूपुरेखलू मम्मुल बोलु
देहच्छाया जानकि बोलु,
बहुपराक्रममु भरतुनु बोलु,
चक्कदनमुन जनकुन्नि बोलु,
चूपुलु सुमित्रनु बोलु,
सन्नपु माटलु शांत बोलु,
चेक्कुलु मन श्रुतकीर्तिनी बोलु,
उग्रमु चाल ऊर्मिला बोलु,
माटलयिन मरि मांडवि बोलु''

अर्थात् ''रूप रेखाएँ तो हमारी जैसी दिख रहीं हैं, देह का रंग तो जानकी जैसा है, भरत समान पराक्रमी लग रहे हैं, जनक समान सुंदर हैं, सुमित्रा की जैसी आँखें हैं। शांता जैसी मृदु भाषी हैं। श्रुतकीर्ति समान कपोल वाले हैं। ऊर्मिला समान उग्र स्वभाव वाले हैं। बातें बिल्कुल मांडवी जैसे करते हैं।''

इस तरह श्रीरामजी ने विचार कर उनके बारे में जानने के लिए उन्होंने वाल्मीकीजी से पूछताछ की। रामजी द्वारा प्रश्न किये जाने पर वाल्मीकी ने केवल इतना ही बताया कि उन बच्चों का जन्म उनके आश्रम में हुआ है। तब वे बालक वहाँ की परिस्थिति को जानकर वहाँ से चल पडे।

''इक्कडुंड मनकिरुवु गादनुचु
ग्रक्कुन लेचिरि बालुरू गनुक
पच्चलु चेक्किन पावलु तोडिगि
बंगारू बेत्तमु चेत बट्टुकोनि
अन्नरो अतिवेगंबुन रम्मनुचु
यप्पटि तम निजपल्लेकु जनिरि''

अर्थात् ''अब हमारा यहाँ रहना ठीक नहीं है। यह सोचकर वे बालक जल्दी से उठकर खडे हो गए। मरकत रत्न जटित खडाऊँ पहनकर सोने की छडी हाथ में लेकर कहने लगे ''भाई जल्दी से निकलो।'' कहते हुए अपने निजी गाँव की ओर चल पडे। यह जताने के लिए यह एक उदाहरण काफी है कि ये बच्चे समय के अनुसार चलने में माहिर हैं। यहाँ लोक कवियों ने वर्णन किया है कि रामायण की कथा को अपने

बगल में रखकर लाने वाले ये बच्चे वापस जाते समय मरकत रत्नों से तराशे हुए खडाऊँ पहन कर लौटे। यहाँ इन बच्चों के प्रति कवि के मन का स्नेह व्यक्त होता है। वे आश्रम पहुँच कर खेलने लगे। तब कुश फल लाने गए तो लव ने यज्ञ के अश्व को देखा। उस अश्व के माथे पर रामजी के नाम को देखते ही वह क्रोधित हो गया। ''क्या कौशल्या ने साहसी पुत्रों को जन्म दिया तो ये क्या सोच रहे हैं कि सीताजी जी ने चोरों को जन्म दिया है, उनका वंश अगर सूर्य वंश है तो हमारा भी विप्र वंश है।'' ऐसा सोचते हुए उसने उस अश्व को जबरदस्ती से पकडकर अपने वस्त्र से एक केले के पेड के साथ बाँध दिया और फिर खेल में मग्न हो गया। मुनि बालकों ने उसे समझाते हुए कहा कि ''उस अश्व को छोड दो, ये सब तुम्हें क्यों ?'' एक तो वह क्षत्रिय है और ऊपर से वाल्मीकीजी से शिक्षा प्राप्त कर चुका है। इस कारण उसने तीखे स्वर में जवाब दिया ''डर कर अश्व को छोडने के बजाय बिना डर के प्राण त्यागना अच्छा है। मरूँगा तो उनके हाथों मरूँगा। अगर बन गया तो अयोध्या पर राज करूँगा। मगर यूँ ही इस अश्व को नहीं छोडूँगा। आज भी वे आ जायें तो जीत मेरी ही होगी। हार गया तो मर जाऊँगा, तुम लोग चले जाओ।'' आखिर शौर्य और पराक्रम तो उन के घर की संपत्ति ही तो है न।

बालक इसी ताक में था कि कौन इस अश्व के लिए आयेंगे। इतने में रामजी की सेना ने लव को घेर कर अश्व को छोडने के लिए कहा। तब लव ने उन्हें चुनौती देते हुए कहा, ''क्या वन की बातों से अनभिज्ञ होकर आपके राजा अयोध्या पर शासन कर पायेंगे ? जब तक मेरे शरीर में प्राण रहेंगे तब तक अश्व को नहीं छोडूँगा और युद्ध

करता रहूँगा । भले ही सूर्य, चंद्र और तारे अपनी गति बदल दें, चाहे स्वर्ग के देवतागण ही क्यों न आ जायें, शत्रुगण के कारण यहाँ अंधेरा ही क्यों न छा जाए, मैं यूँ ही अश्व को छोडने वाला नहीं हूँ । जिस प्रकार सांप, गाय के बछडे के चारों ओर भंवर जैसा घूमता रहता है उसी प्रकार लव भी घूमते हुए उस अक्षौहिणी सेना के बल को धिक्कारने लगा । लव ने उस सेना से कहा कि ''कम से कम अब तो आप अपने राजा का स्मरण करते हुए मुझसे माफी माँगिये ।'' ''राम के दूत प्राणों की कभी भी आस नहीं रखते हैं'', कहने वाले राम की सेना से लव ने कहा, ''सूर्य वंश के राम कौन हैं । हाँ, नाम तो बहुत कमाया । स्वयं अपनी पत्नी को अपने ही भाई के हाथों वध करने की आज्ञा देनेवाले व्यक्ति के आप सब सेवक हैं ।'' इस प्रकार कहकर उनकी अवहेलना भी की । उस समय श्रीराम की सेना वापिस लौटी और फिर उन्होंने राजा को सारा वृत्तांत सुनाया । उन्होंने यह भी कहा कि बालकों की रूप - रेखएँ आप, सौमित्री, जानकी तथा भरत से मिलती जुलती हैं ।

तब शत्रुघ्न युद्ध के लिए आये, और अश्व को छोडने के लिए कहा । तो बालक ने उत्तर दिया कि जाकर अपने भाई को बता दो, हम अश्व नहीं छोडेंगे । आगे यह भी कहा कि ''हरे भरे फसल को अगर पशु नाश कर रहे हों तो क्या कहीं बछडे किनारे बैठे देखते रहेंगे । इस काम को इतना आसान समझ रखा है क्या कि जैसे ''बडे भाई ने अपनी पत्नी को तो जंगल भेज दिया, अब सब भाई मिलकर अयोध्या पर राज करने लगे ।'' यहाँ शत्रुओं के शत्रुत्व को समाधान देने आये शत्रुघ्न का जवाब सुनकर बालक द्वारा उसकी हंसी उडाने वाली घटना, अत्यंत हृदय रंजक बन चुकी है । क्या तुम ही शत्रुघ्न हो । तुम्हारे हाथों कितने

शत्रुओं का नाशा हुआ । तुम्हें मारे बिना नहीं रहेंगे ।'' बालक की बातें सुनकर शत्रुघ्न को अच्छा लगा । और उन्होंने बालक से पूछा कि ''तुम्हारे माँ - बाप कौन हैं।'' तो बालक लव ने उत्तर दिया ''जब तुम्हारे साथ रिश्ता जोडेंगे तब बताऊँगा ।'' लव तो अभी बच्चा है, लेकिन यहाँ लोक कवियों ने लव द्वारा बडी बातें कहलवायी हैं । जब शत्रुघ्न ने कहा ''तुम तो बच्चे हो, तुम्हारे संग युद्ध कैसे करूँगा ।'' तब बालक ने जवाब दिया ''छोटा बच्चा मत समझना, हम तो पैनी छुरी समान हैं ।''

युद्ध प्रारंभ हो गया । नारायण शस्त्र के प्रभाव से लव बेहोश हो गया । तब लव को शत्रुघ्न अयोध्या ले गए । वहाँ कुश ने आकर जब अंगूठी से जल छिडका तो लव बच गया था । बचने के बाद लव मंथरा को मारकर कहने लगा कि ''मैं ने वंश की परंपरा निभायी ।'' यहाँ उस घटना की याद आती है जब बालक राम ने ताटकी नामक राक्षसी का संहार किया था ।

दोनों भाई अश्व को खोजकर पकडकर ले गये । ले जाते हुए वे पूछने लगे कि ''इस शहर में राजा नहीं हैं क्या । अगर वे यहाँ हैं तो क्या हमारे साथ युद्ध करने नहीं आयेंगे ? अगर राजा होते तो युद्ध करने आना था लेकिन वे एक कोने में छुपकर क्यों बैठे हैं । इस प्रकार विधवा की तरह एक कोने में छुपकर बैठने के पीछे का कारण क्या हैं ?'' फिर उन्होंने कहा, मन्थरा तो मर गयी, अब उसके श्राद्ध - कर्म कीजिए ।'' इस प्रकार रामजी पर बरसते हुए कैकेयी के नगर में जाकर वहाँ चिल्लाने लगे तो उस नगर की प्रजा अत्यंत आश्चर्यचकित हो गई । वे लोग एक दूसरे के कानों में फुसफुसाने लगे कि ''ये तो मुनि स्त्रियों के बालक हैं । हम अगर कुछ बोलने लग जाएँ तो ये लोग हमें शाप दे सकते हैं ।''

दोनों भाईयों ने अश्व को लाकर फिर उसी केले के पेड से बाँध दिया ।

शत्रुघ्न को जैसे ही पता चला कि अयोध्या में मंथरा को मार कर लव अश्व को लेकर चला गया तो वे फिर मुनियों के गाँव पहुँचे । दोनों बाल वीर भाईयों ने शत्रुघ्न के संग युद्ध कर शत्रुघ्न को गिरा दिया । तब इस विषय को एक सेवक ने रामजी को जाकर सुनाया । तब रामजी ने भरत को युद्ध करने के लिए भेज दिया । युद्ध के लिए आनेवाले भरत को देखकर लव कुश कहने लगे,

''अन्ननु वदिननु अडवुलकंपि
येन्नग राज्यंबेलिनवाडु
यितडे भरतुंडनगनु
पतिनि जंपिचिन कइक सुतुडितडेरा
नंदिग्राममुलो वुन्न चंदमु
पावालु तोडुक्कोकुंडानु
पावालु गुत्तगोन्नट्टी
प्रतापमूर्ति यितडे नोरी''

अर्थात् ''भरत तो ये ही हैं, जिसने अपने भाई और भाभी को जंगल भिजवाकर आराम से राज्य भार संभाला । पति को मारनेवाली कैकेयी का पुत्र है । नंदिग्रम की बात ही देखो, यह ऐसा व्यक्ति है जिसने ऐसा जताया है मानो खडाऊ पहने बिना ही जैसे खडाऊ पर अपना आधिपत्य पा लिया है ।'' भरत क्रोधित होकर कहने लगे कि ''हे बालक ! यह कैसा परिहास है'' तो तुरंत वे ईट का जवाब पत्थर समान देते हुए कहने लगे,

''गर्भिणी स्त्रीनी चंपिंचिनवारमु गामु
वरमडिगि पतिनि चंपिन सतुलमु गामु''

अर्थात् ''हमने तो किसी भी गर्भिणी स्त्री को मारा नहीं, और न ही हम ऐसे सती ही हैं जिसने वर माँग कर पति को मार दिया है ।''

शत्रुघ्न की स्थिति को देख भरत अत्यंत दुखी हुए । उन्हें देखकर लव - कुश हंसते हुए कहने लगे ''युद्ध में अगर कोई हार जाय तो क्या कोई इस तरह दुखित होते हैं ।'' उनका बचपनापन ही ऐसा है । प्रारंभ में भरत ने बालकों से विनती की कि ''हम तुम्हें इस अश्व के बदले पैंसठ करोड अश्व देंगे, अब इस अश्व को छोड दो ।'' फिर कहने लगे कि ''हमारे यज्ञ स्थल पर आकर विविध पकवान स्वीकारो ।'' अश्व को लौटाने के लिए वे कई प्रकार की मिन्नतें करने लगे ।

इन बातों को सुनकर लव - कुश ने जवाब में माता कैकेयी को भी नहीं छोडा । तब भरत कहने लगे कि ''माताओं को बीच में लाना ठीक नहीं हैं ।'' लेकिन वे अनसुनी कर उल्टा प्रश्न करने लग गए कि ''तुम्हारी माँ का नाम लेने में आखिर गलत क्या है ? भाई की पत्नी को जंगल भेज कर तुम लोग स्वादिष्ट भोजन का आनंद ले सकते हो, लेकिन ऐसा हमें नहीं चाहिए ।''

भरत के संग युद्ध कर उन्हें भी हरा कर बेहोश कर दिया । उसके बाद श्रीराम ने लक्ष्मण को युद्ध करने भेज दिया । लोक कवियों के लव - कुश के मन में लक्ष्मण के प्रति गौरव की भावना है । उनके प्रति कृतज्ञता की भावना है क्योंकि उनकी माता को वध किये बिना उन्होंने छोड दिया

है । युद्ध के लिए आये लक्ष्मण को देख कर पहले प्रणाम किया फिर उनकी शरण माँगी ।

लक्ष्मण ने भी उनसे प्यार कर अश्व को लौटाने के लिए कहा । लेकिन उन दोनों ने जवाब दिया,

''वेरची यश्वं विडुचुटकंटे
वेरवक प्राणम विडुचुट मेलु
चस्ते हरिचे चावगवलेनु
उंटे अयोध्या एलगवलेनु''

अर्थात् ''डर कर अश्व को लौटा देने से तो अच्छा बिना डर के प्राण त्यागना अच्छा होता है । मरना ही है तो हरि के हाथों मरना उचित है, या फिर जीना हो तो अयोध्या पर राज करना ही चाहिए ।''

अब लक्ष्मण दुविधा में पड गए । एक ओर भाई हैं - तो दूसरी ओर बच्चे हैं । लक्ष्मण यह कह कर चुप हो गए कि ''सब को तो तुम दोनों ने हरा ही दिया अब मुझे भी हरा दो ।'' तब बच्चों को बुरा लगा, उन्होंने कहा ''आप को हराने के बाद हमें फिर यह अयोध्या राज की जरूरत ही क्या है ? अश्व के लिए इतने युद्ध ही क्यों ?'' लक्ष्मण ने सोचा कि शास्त्रों में यही कहा गया है कि ''पुत्र के हाथों मारे गए तो स्वर्ग की प्राप्ति होगी ।'' इस कारण युद्ध किये बिना चुप - चाप रह कर हार गया । वहाँ की सेना में लव - कुश ने हनुमान को देखा तो उनके मन में ख्याल आ गया कि उनकी माँ को वानरों से ज्यादा लगाव है, इसलिए हनुमान को अपनी पीठ पर लादकर माँ के पास ले गये ।

लक्ष्मण को हरा कर बेहोश कराने के कारण सीताजी ने दोनों भाईयों को खरी खोटी सुनाई । उसके बाद श्रीराम स्वयं युद्ध करने आये । युद्ध करने से पहले अंगद को भेजा । अंगद का नाम सुनते ही उन दोनों ने उसकी हँसी उडाई कि ''क्यों तुम बिना अंगों वाले हो ? अश्व को पकडने का समय अच्छा है जो हम तुम्हें देख पाये, तुम्हारी बात ही अलग है, तुम्हारे पिता को मारने के बावजूद भी अपने मन में तामस भावनाएँ न रखकर राम के शरण में चले गए । उन्होंने तो गर्भवती स्त्री को मारा है ।'' इस प्रकार की बातें सुनने के बाद अंगद विवश होकर श्रीराम के पास जाकर उनसे सारी बातें सुनाता है ।

इस बार युद्ध करने श्रीराम ने सुग्रीव को भेजा । बालकों ने उनसे प्रश्न किया कि ''वे कौन हैं ?'' उन्होंने जवाब दिया कि वे इंद्र के पुत्र हैं तब बालकों ने फिर व्यंग्य किया कि ''हनुमान आपका ही सेवक हैं न ? अरे आप और आपके राजा को ही ऐसी बातें जचती हैं । अरे भाई को मार कर किष्किन्धा पर राज कर रहे हो ?'' सुग्रीव इन बातों को सुनकर शर्म के मारे सिर झुका कर चला जाता है ।

अब विभीषण की बारी आई । रामजी ने विभीषण को दीर्घायु का आशीर्वाद देते हुए युद्ध करने यह कहते हुए भेजा कि ''जब तक सूरज और चाँद रहेंगे तब तक तुम्हारे पास मृत्यु नहीं आएगी ।'' तब बालकों ने उन पर भी व्यंग्य बाण कसा कि ''राम को लंका का रहस्य बताकर, भाई को मरवा कर लंका राज्य पर अपना अधिकार जता चुके हो । रामजी के सहारे भाई को मरवा कर लंका नगर पर राज कर रहे हो । एक राजा वे है जो अपने छोटे भाई के साथ अपनी पत्नी को मरवा कर अयोध्या पर राज कर रहे हैं। उस राजा को और ऐसे सेवकों की दाद

देनी चाहिए । अब तुम मार खाए बिना अपना रास्ता नापो ।'' फिर भी विभीषण ने कहा कि ''श्रीराम तो विष्णु के अवतार हैं'', तो बालकों ने प्रश्न किया ''तो फिर महालक्ष्मी को दिखाओ ।'' यह सुनकर विभीषण, रामजी के पास लौट गए । विभीषण को देखकर श्रीराम ने आश्चर्य से पूछा ''ब्राह्मण बालकों को देख डर कर वापिस आ गये ? तुम्हारी वीरता कहाँ गयी ?'' तब विभीषण ने जवाब दिया कि ''वे बच्चे नहीं हैं, परब्रह्म से भी अधिक महान हैं ।''

तब श्रीराम ने सुमंत्र को दूत के तौर पर भिजवाये । तब भाई ने क्रोध में आकर कहा, ''सीताजी को जंगल छोडते समय रथ के सारथी बनकर आनेवाले पापी तुम्हीं हो न ? अब तो तुम्हारे प्राण लिए बिना नहीं छोडूँगा ।'' तब छोटे भाई ने कहा कि ''यह दूत तो नीतिवान है, विनयी है, ऐसे दूत को मारना धर्म विरूद्ध है ।'' अश्व को छोडने के लिए दूत के द्वारा कहे गए शब्द उनके कानों में नहीं पडे । आगे उन बालकों ने कहा कि ''क्या तुम्हारे राजा कंगन पहन कर कोने में छुपे बैठे हैं ? युद्ध करने आने के लिए कहिये ।'' यूँ ही हम अश्व छोडेंगे नहीं, जो जीत जाय उसी की अयोध्या होगी । युद्ध करने के लिए हम ललकार रहे हैं । युध्द के लिए चले आओ । तब सुमंत्र जाकर श्रीराम से कहते हैं कि ''अब तो आपको युद्ध करना ही होगा ।''

तब श्रीराम अपने भाईयों को बिस्तर पर लिटाकर युद्ध करने चल पडे । श्रीराम को आते देख छोटे भाई कुश ने कहा कि ''हे भाई ! माता - पिता तो देव स्वरूप माने जाते हैं, उनके साथ युद्ध करना सही नहीं है, चलो जाकर प्रणम करते हैं ।'' तब बडे भाई लव ने कहा ''उस समय माँ को

ले जाकर जंगल में मरवाने की आज्ञा इन्होंने ही दी है न ! ब्रह्मांड समान अग्नि कणों में माँ को जलाया है न ।'' फिर दोनों ने निश्चय किया कि वे लोग चक्रधर को प्रणाम नहीं करेंगे ।

बालकों को देखकर श्रीराम मोहित हो गए । उन दोनों को ही एकटक नजर से देखने वाले श्रीराम को देखकर बालक आपस में बातचीत करने लगे ''पेड की आड में वाली का वध करनेवाले, सेना के साथ मिलकर पुल का निर्माण करने वाले, रावण का आयु रहस्य जानकर उनका वध करने वाले, पत्नी को जंगल भिजवाने वाले, छोटे भाई के द्वारा पत्नी को मारने की आज्ञा देनेवाले, राघव तो यही हैं ।''

बच्चों के मुँह ऐसी बडी बडी बातें सुनकर श्रीराम आश्चर्यचकित होकर उनसे पूछा कि ''आपके गुरू कौन हैं, आप किस वंश के हैं ?'' तब बच्चों ने जवाब दिया कि हमारे गुरू वाल्मीकीजी हैं, और आपको हमारे वंश से क्या लेना है, हम यहाँ रिश्ते जोडने नहीं आये, बल्कि युद्ध करने आये हैं ।''

तब श्रीराम ने कहा कि मैं आप के साथ युद्ध नहीं करूँगा, आप लोग अश्व को छोड दीजिए । फिर बालकों ने ढिठाई से उत्तर दिया कि ''चाहे शिव भी आकर क्यों न खडे हो जायें तब भी हम अश्व को नहीं छोडेंगे, जाकर अपने बाप से कहिये ।'' तब श्रीराम ने कहा

''जपमु तपमुलु चेयुट गादु,
जामुकोक स्नानमु चेयुट गादु,
दर्भासनमुलु वेयुट गादु
जारी चेंबुलु पट्टुट गादु,

पलुमारु भुजिंचुट गादु,
ब्राह्मणबाललु येमेरूगुदुरू
क्षत्रियधर्मम् एरूगरू मीरू''

अर्थात् ''यह युद्ध है, कोई जप करना नहीं है, और न ही एक एक पहर में स्नान करना। यह ना तो दर्भासन लगाना है, और न ही लोटे पकड कर जाना, और न ही कई बार भोजन करना है। आप तो बाल ब्राह्मण हैं, क्षत्रिय धर्म आप क्या जानेंगे।'' तब तुरंत बालकों ने प्रश्न किया ''क्या पेड की आड में रहकर किसी को मारना, सेना की सहायता से पुल बांधना, प्राण रहस्य को जान कर वध करना, पत्नी को जंगल भिजवाकर भाई के सहारे मरवाना, ये सब क्या क्षत्रिय धर्म हैं ?'' देवर के संग अपनी माँ को मरवाने की बात से ही उन बच्चों को इतना गुस्सा आया। जब भी मौका मिलता था उस विषय को ही वे सामने लाते थे।

बच्चों ने पूछा ''आपका नाम क्या है महाराज ?'' रामजी ने बताया श्रीराघव है। रघुपति याने कौन हैं ? रामजी ने कहा ''मैं ही हूँ।'' क्या आपके सहस्र नाम हैं क्या ? शत नामधारी हैं क्या। इन सब बातों को छोड दीजिए। उन्होंने आगे कहा ''यह क्यों नहीं कहते कि पत्नी को मरवाने वाला व्यक्ति मैं ही हूँ।'' रामजी ने गुस्से से कहा, ''क्या समझ रखा है मैं महाविष्णु का अवतार हूँ।'' तो बच्चों ने पूछा ''तो फिर महालक्ष्मी कहाँ हैं ? अगर महालक्ष्मीजी को दिखायेंगे तो हम भी अश्व को छोड देंगे।'' शार्मिंदे होकर श्रीराम ने सिर झुका लिया। थोडी देर के बाद श्रीराम ने कहा कि ''यज्ञाश्व को छोडने की रीति हमारे दादा - परदादाओं से चली आ रही है।'' फिर श्रीराम उनसे विनती करने लगे कि ''यह अश्व छोड दे ताकि हमें यज्ञ - फल की प्राप्ति मिल सके।''

''आप राजा है, इसलिए आप कुछ भी करें, चल जाता है। आखिर सोने की सीता के साथ यज्ञ कैसा ? हे राघव ! जब आपने पतिव्रता सीता को त्याग दिया वह फल ही आप के लिए काफी है। दस हवनों को करने का फल हो, या फिर हो सकता है, गर्भवती स्त्री को मारने का ही फल हो, शत यज्ञों को सुसंपन्न करने का फल हो सकता है, इतने फल काफी हैं आप के लिए। आप कह रहे हैं युद्ध किये बिना हम अश्व को छोड दें - क्या आप सूर्य वंशज के नहीं है ? क्या आप में वीरता की कमी है ?'' यह कहते हुए वे दोनों, फिर से भाई के द्वारा सीताजी को मरवाने की बात को लेकर खरी खोटी सुनाने लगे। यह लोक कवियों का हृदय है। श्रीरामजी पर जो गुस्सा है उसे इन दोनों बच्चों के द्वारा उन्होंने इस प्रकार जताया है। उनकी वागविदग्धता अद्‌भुत् है -

''तम्मुनिचे चंपिंचडमेमी
सतिनेरमु चाल चेसिते
पति ता चंपगवलेने गानि
पतिकड चच्चुट सतुलके धर्ममु
सतुलनु चंपुट पतुलकु धर्ममु
मरुदुलु जंपुट धर्ममु गलदा
मानाभिमानम् लेवा नीकु
अर्धरात्रमुन केलीगृहमुन
सतितो सभाषिंचिनमाट
यनुजुडिकी येरिगिंतुर येवरईना
अनुग्रहमु एला आगिंदी

अयोध्या अंता राज्यमुंडग
अडवीलोनिकि पंपिंचडमेमी
तम्मुनिचे जंपिंचडमेमी
नीवे चंपग रादा यनिरि
भूपतिवि गनुक नीकु चेल्लुनु
मावंटिवाल्लकु चेल्लदु सुम्मी''

अर्थात् ''अगर पत्नी ने कोई गलती की हो तो पति को स्वयं मारना चाहिए, भाई के साथ क्यों मरवाना ? ये लोक रीति है कि पति के घर ही पत्नी का मरना उचित है, पत्नियों को मारने का अधिकार पति लोगों को है, लेकिन देवरों से मरवाना, यह कहाँ का धर्म है ? मान - अभिमान जैसी बातें आप को माइने रखती हैं या नहीं ? आधी रात आपके शय्यागृह में होने वाली बातों को क्या कोई औरों के सामने बताते हैं ? आप का प्रेम अचानक घट कैसा गया ? अयोध्या राज्य इतना विशाल है फिर आप को इन्हें जंगल भिजवाने की जरूरत क्यों हुई ? आप खुद ही मार सकते हैं, फिर आपने छोटे भाई के हाथों मरवाया क्यों ? आप राजा हैं इस कारण आप कुछ भी करें वे सब जायज हैं, ये सब हमारे बस की बातें नहीं हैं ।''

इतना कहकर वे चुप नहीं हुए, आगे कैकेयी और दशरथ पर भी व्यंग्य बाण छोडने लगे ? शायद आपके बचपन में राजा दशरथ ने हाथों में चूडियां पहनकर आपकी परवरिश की होगी तभी युद्ध करने से पीछे हठ रहे हैं ।

तब श्रीराम क्रोधित होकर कहने लगे कि ''मेरे तीर का निशाना अचूक है, अपने माता - पिता का स्मरण कर युद्ध के लिए तैयार हो जाओ ।'' तो फिर बच्चों ने जवाब दिया ''हमारे पिताजी तो याद करने लायक व्यक्ति नहीं हैं, युद्ध प्रारंभ कीजिए ।'' वे दो जोडे भ्रमरों के समान गूँजते रहे कि ''हे राम बाण ! हमारी ओर मत आना ।'' कहा जाता है कि उस समय कुश के द्वारा प्रयोग किया ब्रह्मास्त्र जाकर श्रीराम की बाँहों में लगा था । जब कुश ने ब्रह्मास्त्र का प्रयोग किया था उसी समय नगाडे बजे थे । लव ने श्रीराम के आग्नेयास्त्र पर वरूणास्त्र का प्रयोग किया । श्रीराम ने अहंकार से ग्रसित होकर ब्रह्मास्त्र का प्रयोग किया । तब लव और कुश ने कहा ''हे राम बाण ! पास मत आना, पास मत आना, उनकी सेना का संहार कर लेना ।'' तब वह बाण लव - कुश की ओर आना तो दूर उल्टा उस ने रामजी की सेना को समूल नष्ट कर दिया । उस समय एक ओर श्रीराम का तेजस्व घट गया था तथा दूसरी ओर हाथ में हाथ डालकर बडे गर्व के साथ साथ दोनों बालक खडे हो गए । इन्हें देखकर देवतागण हंसने लगे ।

श्रीराम अवाक् होकर खडे हो गए फिर क्रोधित हुए । फिर उनकी बातें सुनकर मोहित हो गए । उनसे कहने लगे ''आप दोनों हमारे साथ चलिए, आप लोगों को बेटों की तरह रखेंगे ।'' बालकों ने जवाब दिया ''हमने जो राज्य जीता है वह हमारे लिए काफी है, हम किसी की दया नहीं चाहते हैं । हमें बालकों की तरह मत देखिए ।'' आखिर अंत में रामजी ने बाण उन पर छोड दिया । तब बालकों ने कहा ''अगर हमारी माता सीतादेवी पतिव्रता हैं तो हे बाण ! हमारी ओर मत आना । श्रीराम का बाण तो कभी व्यर्थ नहीं जाता है न ! पुत्रों पर वार किया गया बाण

अपनी महिमा के कारण मुडकर श्रीराम को ही लगा और वे पृथ्वी पर गिर पडे ।

बेहोश पडे हुए श्रीराम को देख बालक सोचने लगे ''जब इन का जन्म हुआ तब शायद इनकी माँ सोई होंगी ।'' वे दोनों बालक श्रीराम की सेना में से हनुमान, और जांबवंत को अपने पीठ पर लाद कर माँ के पास जाकर कहने लगे ''जब इनके राजा युद्ध कर रहे थे तो ये दोनों बेहोश होकर गिर पडे ।'' तुरंत सीतादेवी ने कहा ''आप दोनों बालक हैं इस कारण इन्होंने आप दोनों की रक्षा की ।'' तब बालकों ने जवाब दिया ''हमने ही हनुमान को हराया है ।'' तब सीतादेवी संदेह में पड गयी कि श्रीराम के रहते हुए हनुमान कैसे धराशायी हुए । तब बालकों ने धीरे से श्रीराम के धराशयी होने की खबर भी सुनाई ।

सीतादेवी बेहोश हो गयीं । बेहोशी से उठने के बाद कहने लगी कि ''मेरी हालत ऐसी हो गयी जैसे मैं ने सांप को दूध पिला कर पाला है । अब तुम दोनों की निंदा करने से क्या फायदा ? तुम दोनों तो पिता की हत्या करने वाले पुत्र निकले ।'' यह कहकर वे वाल्मीकीजी के पास जाकर उन्हें सारी बातें सुनाई । सीतादेवी की बातें सुनकर वाल्मीकीजी हंस पडे और फिर सीतादेवी से कहने लगे ''हे जानकी ! सुनों, ये पुत्र तो जगत में ख्याति फैलाने में समर्थ हैं, अत्यंत तेजस्वी हैं । राजपुत्र तो धैर्य और पारक्रम का कभी विस्मरण नहीं करते ।'' फिर उन्होंने आश्वासन दिया कि श्रीराम को खतरा नहीं है ।

युद्ध में श्रीराम के पक्ष में शिव, ब्रह्मा, इंद्र खडे हुए और बालकों के पक्ष में उनकी पत्नियाँ खडी हो गयीं । पत्नियों ने पतियों से गुस्से से

पूछा कि ''आप लोगों ने बच्चों का वध करने के लिए ही निश्चय कर लिया ?'' पार्वतीजी अपने साथ गणेश और कुमारस्वामी को लेकर आयीं । सरस्वतीजी अपने संग नारद और तुम्बुर को ले आयीं ।

पार्वतीजी ने बच्चों को बुलाकर कहा ''डरो मत, पहले धरती माँ की प्रार्थना करो ।'' ब्रह्मा आदि की पत्नियाँ इस प्रकार पतियों के विरोधी पक्ष में खडी होकर युद्ध करने लगीं । उन्होंने पतियों को हित वचन भी सुनाया कि ''इस प्रकार बालकों को मारना उचित नहीं है ।'' पार्वतीजी ने यह प्रतिज्ञा भी की कि ''अगर बालकों की जिद पूरी न हुई तो वे अपने प्राण भी त्याग देंगी ।''

तब हरि और ब्रह्मा आदि देवतागणों ने विचार विमर्श किया और फिर श्रीराम को समझाया कि ''धरती की सहायता बालकों के पक्ष है, शक्ति की सहायता भी बालकों के ही पक्ष में है । अब आप का बालकों के ऊपर विजय पाना असंभव है । इसलिए युद्ध करना छोड दीजिए ।

उस समय सरस्वतीजी ने बालकों से यह कहलवाया कि ''अगर राजा हमें प्रणाम करेंगे तो हम भी राजा को प्रणाम करेंगे और अश्व भी छोड देंगे ।''

श्रीराम दरबार में थे, तब हरि, ब्रह्मा आदि देवतागण यह सोच कर प्रसन्न होने लगे कि लव - कुश ने अश्व को बंदी बनाकर रखने के कारण ही उन्हें श्रीराम के दरबार को देखने का सुअवसर मिला है । लव और कुश श्रीराम के रूप सैंदर्य को देख आशचर्यचकित हुए । फिर सोचने लगे कि अगर लक्ष्मीजी भी साथ होती तो वे और भी सुंदर दिखते । आगे सोचा कि इतने दिनों तक सीतादेवी इनसे बिछुडकर कैसे जीवित

रह पाईं ? फिर बाद में चिंतित हुए कि ''पत्नियों को पति से बिछुडकर रहने के बजाय प्राणों को त्याग देना ही उचित है । ऐसी दशा में अपने पति को देखे बिना जीवित रहने में आखिर जीवन का अर्थ ही क्या है ?'' फिर भी वे अपनी बात पर अडे रहे कि अगर श्रीराम उन्हें प्रणाम करेंगे तो वे भी अश्व लौटाने के लिए तैयार होंगे ।

सभा में आसीन सभी ने समझाया कि ''रामजी से प्रणाम करने की माँग करना सही नहीं है । ''सूर्य से पूछो, वे तो कर्म साक्षी हैं !'' इन बातों को सुनकर सीताजी के पुत्र हंसते हुए कहने लगे कि ''श्रीराम तो सूर्य वंशी हैं न, इस कारण वंश के प्रति प्रेम तो होगा ही । सूर्य के वचनों पर विश्वास नहीं किया जा सकता है ।'' चन्द्रमा से पूछने के लिए कहने पर बालकों ने जवाब दिया ''चंद्रमा को राहू, केतु के संदर्भ में विष्णु की सहायता मिली है । इसलिए चंद्रमा की बातों पर भी विश्वास नहीं किया जा सकता है ।'' तो उन्होंने कहा कि ''तब तो इंद्र से पूछो ।'' बालकों ने उत्तर दिया कि ''समुद्र मंथन के समय विष्णु ने सारा अमृत इंद्र को दे दिया है, इस कारण इंद्र की बातों पर भी विश्वास नहीं किया जा सकता है'' आगे उन्होंने कहा कि ''चूँकि वाल्मीकीजी ने विष्णु की प्रशंसा करते हुए काव्य की रचना की है, इसलिए उन पर भी विश्वास नहीं किया जा सकता है ।'' तब ऋष्यश्रृंग से पूछने के लिए कहने पर बालकों ने जवाब दिया सात समुन्दर के बीच स्थित जंगल में रहने वाले व्यक्ति को लाकर शांताजी से उनकी शादी करवा दिया । तो जाहिर है वे उनके ही पक्ष में बोले बिना नहीं रहेंगे । इसलिए हम स्वीकार नहीं करेंगे । ब्रह्मा तो विष्णु की नाभी से निकली कमल से जन्में हैं, शिव तो त्रिमूर्तियों में से एक हैं, लक्ष्मण तो भाई की आज्ञा को मानने वाले

हैं, इस कारण उनकी बातों पर विश्वास नहीं किया जा सकता है । दृढ निश्चय के साथ उन्होंने कहा कि अब तो जब तक श्रीराम प्रणाम नहीं करेंगे अश्व को छोडने का सवाला ही नहीं उठता है ।

श्रीरामजी ने विवश होकर कहा कि ''हम इतने सारे लोग हैं युद्ध करके जीत लेंगे ।'' तब पार्वतीजी ने गुस्से से कहा ''अगर आप लोग प्रणाम करने में शर्मिंदगी महसूस करते हैं तो अब से यह अश्वमेध यज्ञ बंदकर, बालकों के हाथों सौंप दीजिए और आप लोग इस जंगल में वास कीजिए ।'' उस समय लक्ष्मण ने कहा कि हम युद्ध कर बालकों पर विजय नहीं पा सकते हैं । क्योंकि शक्ति की सहायता बालकों के पक्ष है, सरस्वती की सहायता बालकों के पक्ष है, लक्ष्मी की सहायता बालकों के पक्ष है, मुनियों की सहायता बालकों के पक्ष है, इस कारण युद्ध न करना ही उचित है । इतने में श्रीराम बच्चों को पास बिठा कर कहने लगे कि ''आप दोनों देखने में इतने प्यारे लग रहे है । न जाने आप जैसे बच्चों को पाने के लिए आप के माता - पिता ने कितनी तपस्याएँ की हैं ? हमें बताइये ''वे हैं कौन ?'' तब लव - कुश ने केवल यही कहा कि हमें जन्म देने के लिए हमारी माँ ने न तो कोई तपस्याएँ ही की हैं और न ही कोई व्रत ही रखे । वनवास में रह कर हमें जन्म दिया है ।'' श्रीराम ने लव - कुश को अयोध्या आने के लिए कहा ।

तब लक्ष्मण बच्चों के पास आये और कहने लगे डरने की कोई जरूरत नहीं है, जाकर अपने माता - पिता के बारे में बता दो । लेकिन उन्होंने जवाब दिया कि ''मत्स्यावतार हमारे पिताजी हैं, महालक्ष्मी सीतामाई हमारी माता हैं, कहते हुए क्रम से अवतारों का परिचय देने लगे । फिर श्रीराम युद्ध के लिए तैयार हो गये । लक्ष्मण तब श्रीराम

के पैरों पडकर बच्चों की रक्षा करने के लिए प्रार्थना करने लगे । सारे महर्षियो ने मिलकर कहा कि आप कुल गुरू को स्मरण करते हुए बालकों को प्रणाम कर सकते हैं । श्रीराम उसके लिए तैयार हो गए । ''कौसल्या के चरण कमलों की वंदना करता हूँ'' यह कहते हुए वे उनके चरणों में गिर पडे । उस समय लक्ष्मण के द्वारा किये गए इशारों के अनुसार कुश अवैर लव जाकर अश्व को ले आये, फिर श्रीराम के चरणों में गिर कर शरण माँगी । तब फिर से श्रीराम ने उनसे पूछा कि ''आपके माता - पिता कौन हैं ?'' तो उन्होंने गुस्से के साथ जवाब दिया,

''वेरू चेसी मरी मीरडुगनेला
वेई विधमुला चेप्पगनेला
मरि सीता अतिक्लेशंबुलु पडुतु
मम्मुल सीतकने कानललोनु
अक्षर विद्यलु गुणमंत्रमुलु
वनमुलो वाल्मीकुलु चेप्पे''

अर्थात् ''अलग कर के फिर आप क्यों पूछ रहे हैं ? हजार बार क्या समझाएं ? सीतादेवी अत्यंत कष्टों को सहती हुई हमें इस जंगल में जन्म दिया । सारी शिक्षा और गुण - पूर्ण मंत्र सभी कुछ हमें जंगलों में ही वाल्मीकीजी ने सिखाया ।''

कहा जाता है कि बालकों के इन तीखे वचनों को सुनकर शिव, ब्रह्मा भी आश्चर्यचकित हो गए ।

श्रीराम भी आश्चर्यचकित हुए लेकिन पुत्र वात्सल्य वश होकर उन्होंने बालकों को पास बुलाया । वे बालक भी उडते हुए हंसों के

समान हरि के जांघों पर आकर बैठ गए । आनन्दमग्न पिता और पुत्र दोनों की आँखों से आंसुओं की अविरल धारा बहने लग । जनक भुजा की शीतल छाया बच्चों को मिली । पुत्र कामेष्ठी याग के अनंतर पुत्र की प्राप्ति से जो सुख मिलता है उसी प्रकार का सुख पुत्रों के आलिंगन से रामजी को भी प्राप्त हुआ । तब श्रीराम ने वाल्मीकीजी से सीताजी को दिखाने के लिए प्रार्थना की । वाल्मीकीजी उसके लिए तैयार होने लगे । तब तक श्रीराम की गोद में बैठे बालकों को लगा कि उनकी माँ बहुत ही नादान है, कहीं दादाजी के संग आ न जाय । यह विचार मन में उठते ही अति शीघ्रता से श्रीराम की गोद से कूद कर ''ऋषिपल्ले'' (मुनियों का गाँव) पहुँचे । वहाँ ये बालक यह देख कर आश्चर्यचकित हुए क्योंकि उनकी माँ आनंदित होकर सजा संवरकर आ रही हैं । आश्चर्य से उन्होंने अपनी माँ से कहा ''कितनी नादान हो माँ, तुम से आखिर कहें तो क्या कहें ? वे पुराने राम नही हैं क्या माँ ! जिन्होंने कठोरता से तुम गर्भवती हो, इस की भी परवाह न कर तुम्हें मरवाने की आज्ञा देते हुए तुम्हें जंगल भेज दिया है ? उस के पहले भी प्रचंड अग्नि ज्वालाओं में जाने के लिए विवश कर चुके ? हम जानते हैं कि माता - पिता दैवी स्वरूप होते हैं, उनकी बातों का खंडन करना ठीक नहीं है । फिर भी तुम ही पहले आगे जाकर मिन्नतें करोगी तो कोई बडप्पन नहीं है । ठीक है श्रीराम, राजा दशरथ के पुत्र हैं तो क्या तुम कोई ग्वाले की बेटी हो क्या ? जब तक रामजी न आयें, और अपनी गलितियों को स्वीकार न करें तब तक तुम बातें मत करना । आखिर तुम में कमी किस बात की है ?'' यह कह कर उन्होंने अपनी माँ को अंदर भेज दिया ।

अब तक कुछ हद तक कुश - लव के पात्रों का चित्रीकरण उचित ही था । लेकिन वाल्मीकीजी के पास पहुँच कर जिस प्रकार की बातें उन्होंने की हैं वे औचित्यपूर्ण नहीं लगती हैं । वे वाल्मीकीजी के पास जा कर प्रश्न करने लगे कि ''आप तो सर्वज्ञ हैं, आपने यह धर्म कैसे भुला दिया कि बेटी को ससुराल भिजवाते समय पति - पत्नी के बीच के अनुकूल गार्हस्थ्य जीवन, और पारस्परिक प्रेम को दृष्टि में रखा जाता है ?'' उस बात को सुनकर वाल्मीकीजी हंसते हुए कहने लगे कि श्रीराम तो यहाँ नहीं आयेंगे । उन्होंने कहा कि उन्हें सफल दुधारी गायों की घी, और रत्न जटित दिए चाहिए । कुश - लव ने जवाब दिया कि ''अगर लक्ष्मीदेवी को चाहते हैं तो वे खुद आएँगे, वरना जाने दीजिए । इतने दिनों तक आपने हमारी देखभाल की है, क्या आगे नहीं कर पायेंगे ? अयोध्या जीत कर हम आप को कई गाँव उपहार में देंगे ।'' श्रीरामजी ने उस समय ''मुनिपल्ले'' जाने से मना कर दिया यह कहते हुए कि जब तक यज्ञ समाप्त नहीं होगा तब तक वहाँ कोई नहीं जायेंगे । यह सुनने के बाद बालकों को गुस्सा आ गया, उन्होंने प्रश्न किया कि ''तो फिर यहाँ तक कैसे पहुँचे ।'' अश्व को लेकर ''मुनिपल्ले'' जाते हुए उन्होंने कहा कि अश्व को ले जाना हो तो वहाँ पर आ कर ले जाओ ।

तब श्रीरामजी और कई बुजुर्ग लोगों ने विचार - विमर्श कर लक्ष्मण को बालकों को ले आने के लिए कहा । लक्ष्मण ने बालकों को बुला कर उनसे कहा कि अब आप दोनों श्रीरामजी का स्वागत कीजिए । तब दोनों बालकों ने श्रीराम का यश - गान करते हुए श्रीराम के लिए स्वागत गीत गाने लगे । उनके स्वागत गीत सुन कर वहाँ उपस्थित सारे जन और मुनि गण आश्चर्य चकित हो गए । फिर उन्होंने विनयपूर्वक यह

कहते हुए प्रणाम किया कि आप लोग हमारे पिता हैं हम आपके पुत्र हैं, हमसे अगर कोई भूल चूक हो गयी हो तो हमें क्षमा कीजिए । कुश - लव दोनों ही समय की नब्ज को जान कर चलने वाले हैं । शिव और ब्रह्म आदि लोगों के साथ मिल कर तब श्रीराम ''ऋषिपल्ले'' की ओर चल पडे ।

भोजन के समय श्रीरामजी ने अरूंधतिजी से कहा कि वे जाकर सीताजी को भोजन के लिए ले आयें । अरूंधतिजी बालकों के डर से कहने लगीं ''हे राघव! क्या अभी भी बच्चे हो क्या ? सीताजी तो अब बच्चों की माँ हैं । अब तो लव को अपने पास बिठा कर भोजन कर लो ।''

खेद के साथ श्रीराम ने भोजन प्रारंभ किया । काफी समय बीतने पर भी न तो सीताजी की आहट सुनाई दी और न ही सीताजी के बारे में कोई जानकारी ही मिल पाई । तब बालकों को पुचकारते हुए उन्होंने पूछा ''जानकीजी कहाँ हैं ? आपको जन्म देनेवाली आपकी माँ कहाँ हैं ?'' बालक तो पिताजी से भी बढ कर हैं । उन्होंने उत्तर दिया ''हम माँ को नहीं जानते ।'' फिर श्रीराम ने प्रश्न किया फिर आपको किसने पाला है ? इस के उत्तर में वे यह कह कर चुप हो गए कि वाल्मीकीजी ने हमें पाला है । इस तरह उन बालकों द्वारा अपने पिताजी से किये गये हास परिहास सुंदर एवं औचित्यपूर्ण बन पडे हैं ।

भोजन के बाद फिर एक बार श्रीराम ने वाल्मीकी और अरूंधति से मिन्नतें कीं । वाल्मीकी ने सीतादेवी को दिखाने की अनुमति दी । तब श्रीराम ने बालकों से पूछा कि ''कम से कम अब तो सीता को दिखायेंगे न ?'' प्रत्युत्तर में बालकों ने कहा ''आपकी इच्छा हमें मान्य है ।''

आदिकवि के शिक्षण में बालकों ने समयानुकूल संवाद करना सीखा है । पिताजी को छोड वे अपनी माँ को देखने चले । वहाँ वे संपूर्ण आभूषणों से सुशोभित जानकीजी को देख कर अत्यंत आश्चर्य चकित हो कर अपने आप से कहने लगे ''इतने दिनों से माँ को देख रहे हैं लेकिन कभी भी इतनी अद्‌भुत दिखाई नहीं दीं । महाविष्णु के बिना यहाँ अंधकार में रहीं, महाविष्णु के आने के बाद महालक्ष्मी के मुख कमल को तो देखो, इतनी कलाओं से युक्त हमारी जानकीजी के माथे पर न जाने ब्रह्मा ने जंगल में रहने के लिए कैसे लिख दिया ?'' लव की ये बातें सुन कर कुश ने कहा ''जंगल में रहने पर भी क्या कमी है माँ के लिए, ब्रह्मा और रूद्र ने प्रशंसा नहीं की क्या ?'' यह कहते हुए सीताजी की कीर्ति को स्पष्ट करने लगा ।

यहाँ लोक कवि दिखाना चाहते हैं कि अब ये बालक दूध पीते बच्चे नहीं हैं बल्कि अच्छे बुरे को पहचानने की क्षमता इनमें है । दूध पीती उम्र हो तो इनकी बातें औचित्यपूर्ण नहीं होती । उसके बाद दूध पीते हुए उन्होंने अपनी माँ से कहा ''आप रामजी से बातें मत कीजिए ।'' इस प्रकार ''बात मत कीजिए'' कहने वाले कुश और लव के रूप में यहाँ लोक कवि ही बोल रहे हैं । सीताजी ने कहा जब पति बुलाएं तो बात न करना तो कोई पतिव्रता धर्म नहीं होता है । तब उन्होंने कहा ''अगर रामजी के प्रति इतना प्यार है तो पहले से कह देतीं । दादाजी के संग आपको भिजवा देते । हम क्यों बदनाम होते ? आपको क्या हम कुछ कहने लायक थोडे हैं ? रामजी यहाँ क्यों आये ? हम ने भी इतनी जिद क्यों पकडी ? अगर हम से दूर रहना चाहती हैं तो ठीक है बात कीजिये रामजी से । हम पर आपकी थोडी सी भी दया हो तो हम जैसा

कहें वैसा कीजिए । माँ ! जब तक रामजी आकर मनाएंगे नहीं और आपकी शरण नहीं मांगेंगे तब तक कृपया बात मत करना ।'' बिना किसी झिझक के बालकों ने ये बातें कहीं । दूध पीते बच्चों के मुँह से ऐसी गंभीर बातें निकलने की कोई संभावना तो नहीं है । फिर भी यहाँ कुश और लव के माध्यम से लोक कवि अपने हृदयगत विचारों को व्यक्त कर रहे हैं ।

रामजी को सीताजी न दिखायीं दें इस तरह उन दोनों के बीच महीन पर्दा लटकाकर दोनों के लिए आसन तैयार किये । सीताजी को न देख सकने के कारण रामजी ने सीताजी से अपने विचार यों प्रकट किये ''अगर तुम नहीं बोलोगी तो मैं सन्यास ग्रहण करूँगा ।'' उस समय सीताजी ने अपने बेटों से कहा ''पति के मनाने के बावजूद भी अगर पत्नियाँ नहीं मानेंगी तो उल्टा उन्हें ही पाप लगेगा ।'' तब बालक भी छटपटाने लगे और तब उन्होंने कहा ''अब भी बात न करो तो - महालक्ष्मी के आने के बाद भी, सच ही पाप लगेगा ।'' तब जाकर सीताजी अपने पति से मिलने गयीं । माँ को भी अपनी ही बातें बनवाने में समर्थ हैं, ये बालक ।

सीताजी से तब रामजी ने आनंदित होकर कहा ''हमारे ये छोटे बच्चे यज्ञ के अश्व को पकड कर हमें कितना तंग किया ।'' बालकों ने जो भी खरी खोटी उन्हें सुना चुके उन सब को वे बडे प्यार से मधुर काव्य की तरह सीताजी को सुनाने लगे । सीताजी ने विस्तार से सुनाया कि उनके जंगल आने के कारणों को बालकों के पूछने पर किस प्रकार उन्हें बता चुकी थीं ।

श्रीराम ने कहा कि तुम ने उनकी परवरिश ही ऐसे की है । तो सीताजी ने भी सुनाया कि वे अपने पिता पर गए हैं । रामजी ने कहा कि बच्चे किसी पर भी क्यों न गए हों अब उनकी बातें बडा चढा कर मत कहो । तो सीताजी ने चतुरता से जवाब दिया कि अब मुझे क्या कहना है जो कुछ होना था वह युद्ध में प्रकट हो ही गया है ।

रामजी जानते हैं कि वे अगर कुश अैर लव को बुलायेंगे तो वे नहीं आयेंगे इस कारण उन्होंने सीताजी को बुलाने के लिए कहा । सीताजी ने आवाज दी तो नींद से जागे बालक डर गए कि कहीं उन के पिता ने माँ को कुछ किया तो नहीं । भाग कर देखा तो वहाँ पति - पत्नी खुश थे तब कुश ने कहा हमारा वहाँ जाना ठीक नहीं होगा । लव ने कहा हमें तो माँ ने आवाज दी है चलो चलेंगे, तो कुश ने जवाब दिया कि माँ ने नहीं बुलाया है शायद तुम ने सपना देखा होगा । काफी बहस करने के बाद दोनों सीतारामजी के पास आ गये । तब श्रीरामजी ने पुत्रों के आलिंगन का सुख जी भरकर अनुभव किया ।

सुबह हुई रामजी ने अयोध्या जाने की तैयारी की । सब लोग तैयार हुए थे । तब कुश और लव ने बताया कि वे लोग अयोध्या नहीं जायेंगे । उन्होंने कहा ''जब हम माँ के गर्भ में थे तो हमें मारने के प्रयत्न किये थे न ! तो अब हमें क्यों बुला रहे हैं ? किसी के समझाने पर भी हम जाने के लिए तैयार नहीं होंगे । सीतादेवी पुत्रों को अपने पास बुलाकर कहने लगी कि ''पिताजी से ऐसा भी क्या जिद्दीपन है ? अब मैं पति के संग न जाऊं तो लोग नहीं मानेंगे । मेरे पीछे आपकी देखभाल कौन करेंगे, चलिए ।''

बालकों ने जवाब दिया कि ''पुत्रों को छोड कर रहना कठिन तो है ही, लेकिन पतियों के साथ रहना ही पत्नियों का धर्म है, इसलिए तुम रामजी के साथ चली जाओ, हम नहीं आयेंगे ।'' सीताजी का जाना अनिवार्य हो गया था । तब वे श्रीराम के पास गयीं । ब्रह्मा, रूद्र, सचीदेवी, पार्वती तथा वशिष्ट आदि मुनियों द्वारा समझाने पर भी दोनों बालकों ने अपना जिद नहीं छोडा । श्रीराम कहने लगे कि ''मैं प्राण छोडने के लिए तैयार हूँ लेकिन बालकों के बिना मैं अयोध्या नहीं जाऊँगा ।'' ऐसी विषम परिस्थिति में लक्ष्मणजी बच्चों को मनाने गए । वे कहने लगे कि ''अगर आप दोनों नहीं चलेंगे तो हम सब लोग प्राण त्याग देंगे ।'' हम सबके चले जाने के बाद आप लोग अकेले रहना चाहते हैं ? भगवान की कृपा से आज हम सब लोग मिल पाये हैं, अगर आप ऐसी हरकत करेंगे तो ऐसा ही फल मिलेगा । आप दोनों की अगर यही इच्छा है तो ठीक है, कहकर लक्ष्मणजी चुप हो गए । तब लव - कुश ने जवाब दिया ''आप तो हमारे जीवन दाता हैं, हमारे प्राणों की रक्षा की है, हम आप की बातों को नकार नहीं सकते । जैसे आप कहेंगे वैसा ही हम करेंगे'' कहकर उन्होंने लक्ष्मण की बातों को इतना गौरव दिया । उनके प्राणों की रक्षा करने वाले लक्ष्मण ही हैं इस कारण उन के मन में लक्ष्मण के प्रति गौरव की भावना अपार है । ये लोक कवि बुराई का खंडन जितनी तीव्रता से करने में समर्थ हैं, वैसे ही अच्छाई का सम्मान भी उतनी ही प्यार से जताने में समर्थक भी हैं । ऐसे लोक कवियों के हृदय में सृष्टित ये बालक, सीताजी के पुत्र हैं ।

अयोध्या पहुँचने पर वहाँ इन्हें देखने आये हुए भीड को बेंत से हटाने का प्रयत्न जब लव करने लगे तब लक्ष्मण ने उसे टोकते हुए कहा

कि वे लोग तो तुम लोगों को प्यार से देखने आये हैं, उन्हें सोने के सिक्के देकर विदा करो। प्यार से देखने आये हुए लोगों के प्रति हिंसा जताना ठीक नहीं है'', कहकर उन्हें सीख दी। चाचाजी की बातें तो उन्हें वेद तुल्य हैं।

अंतःपुर की सभी स्त्रियों को देखकर बालकों ने पूछा ''माँ! इन सब स्त्रियों में वे दादी कौन हैं जिन्होंने आप को जंगल भिजवाया हैं ?'' इतना कहकर वे चुप नहीं हुए। उन्होंने हंसते हुए कहा कि ''उन दिनों में तो भेज दिया है, आज भिजवा कर तो दिखाएँ, धरणी पुत्री को अगर किसी ने कुछ कहा तो हम उनका सिर काट देंगे। उन दिनों में तो सीताजी के लिए कोई रक्षक नहीं है इसलिए हँसते हुए वनवास भिजवा दिया।''

सीतादेवी ने उन्हें गुस्से से देखा। शांताजी ने उन्हें समझाया कि उन पर क्रोधित क्यों होती हो, कर्म का फल ही ऐसा होता है।

लोक साहित्य में लव - कुश की वाक्चतुरता अनुपम है। उन की बातें सीधे, हृदय को छूने वाले नुकीले बाणों के समान तो हैं साथ ही साथ वे वाक्चतुर भी हैं। उस नैपुण्य को तो लोक कवियों ने उनके बचपन से ही दर्शाया है।

वाल्मीकीजी ने उन्हें बाण प्रयोग सिखाया है तो लोक कवियों ने उन्हें वाक्चातुर्य में माहिर बनाया। लव - कुश और सीताजी के प्रति उनके मन में अपार गौरव है। इनकी ही ओट में रहकर, उन्होंने श्रीराम की जी भर कर निंदा की है।

उनकी इच्छा है कि माँ को मरवाने के लिए भिजवाने वाले पिता की बातों को वे कभी न सुनें। उनकी ये अभिलाषा भी है प्राणों की रक्षा करनेवाले चाचाजी की बातों को गौरव दिया जाय। लोक कवियों द्वारा विशेष रूप से अत्यंत प्रेम पूर्वक ढाली गयी मूर्तियां है लव - कुश।

वाल्मीकी की रचनाओं में राम - लक्ष्मण की तरह लोक काव्यों में लव - कुश की जोडी भी कभी न छूटने वाले अपूर्व सहोदर समान हैं। सीता मैया के जीवन में आनंद भरने वाले पुत्र हैं लव - कुश।

* * *

16. ऊर्मिला

महाराजा जनक की औरस पुत्रिका है उर्मिला। लक्ष्मणजी की पत्नी उर्मिला के बारे में वाल्मीकी कृत रामायण में इतना ही कहा गया है। रामायण कथा रामजी की कथा ही है इस कारण इसमें सालियों से संबंधित विषय ना भी हों तो इसमें कोई दोष नहीं है। पाठकगण इतनी कल्पना तो कर ही सकते हैं जब सीता - राम वनवास गये थे तब मालवी, श्रुतकीर्ति अपने - अपने पतियों के साथ सासों के संग ही रही होगी। लेकिन भ्रातृसेवा में निमग्न लक्ष्मणजी, सीता-रामजी के साथ ही वनवास गये। जाते समय उन्होंने अपनी माँ से अनुमति माँगी। तब रानी सुमित्रा महारानी की तरह आशीर्वाद देती हुई उन्हें विदा भी की। यह कोई ऐसा सफर नहीं है कि काम निबटा कर दो घडी के अनंतर वापस लौट सके। यह सफर तो चौदह साल की दीर्घ यात्रा है। इसके लिए लक्ष्मण जी को चाहिए था कि उर्मिला से भी कुछ कहकर जाए। जिस प्रकार माता से आज्ञा माँगी उसी प्रकार पत्नी से भी माँगना आवश्यक है ना ! हो सकता है महाकाव्य रचना के दुरंधर वाल्मीकी की दृष्टि रामजी के प्रति ही थी और वे शायद उर्मिला को भूल गये होंगे। यह अश्चर्यजनक विषय है कि मंगलसूत्र पहनानेवाले लक्ष्मणजी अपनी पत्नी को ही भूल जाये। भाई की सेवा ने ही अपनी पत्नी को भुला दिया है। ठीक है ऐसा ही सोचेंगे। दीदी- जीजाजी और पति वनवास चले गये हैं, यह विषय कम से कम बाद में भी सही उर्मिला को पता लगना ही था न ! इस दशा में उनकी मानसिक स्थिति का वर्णन करना बहुत ही आवश्यक भी है ना। लेकिन यहाँ वाल्मीकी जी, पति लक्ष्मण तथा पाठकगण भी उर्मिला को अपनी हालत पर छोडकर भूल ही गए है।

परंतु आंध्र के लोक कवियों ने ऐसा नहीं होने दिया। सहानुभूति जताने में उनकी बराबरी करनेवाले कोई नहीं है।

जिस प्रकार उन्होंने उर्मिला के चरित्र को दिखाया है, उसके प्रति आंध्रेतर आलोचक भी आकर्षित हो गये।''लक्ष्मणजी की हँसी'', ''उर्मिला देवी की नींद'' नामक गीतों को श्री देवेन्द्र सत्यार्थी ने अंग्रेजी में अनूदित भी किया है। उस संदर्भ में उनके द्वारा कहे गये आलोचनात्मक वाक्य इस प्रकार हैं -

'Lakshmana's Laughter' is significant Telugu ballad. The only Telugu ballad that challenges comparison with this is Urmila's sleep... Lakshmana is an ideal brother and Urmila is an ideal wife.

Lakshmana and Urmila are ideal characters. The Andhra woman is proud of them. It may be noted that Rabindranath Tagore in one of his early essays in Prachin Sahitya strongly blamed the poet Valmiki, for showing indifference towards Urmila and the contemporary Hindi poet Maithilisaran Gupta, taking his cue from Tagore wrote saket a new Ramayana, laying stress on Lakshmana and Urmila in place of Rama and Sita. The Andhra Ballads are more remarkable in this light...the interest is maintained by an unstudied poetry. "Meet my People".

उर्मिला देवी के बारे में श्री विक्रमदेव वर्मा ने इस प्रकार कहा है - ''कथावस्तु के पात्रों को उचित रूप से वर्णित करने वाले वाल्मीकी जी, साध्वी शिरोमणि उर्मिला को उपेक्षित करना अत्यंत दुःखदायी विषय है।

उर्मिला सद्‌गुण संपन्ना सीतादेवी से किसी भी प्रकार से कम नहीं है । वे जनकराज की पुत्री हैं और दशरथ जी की बहू हैं । अद्वितीय पराक्रमी, भातृभक्त लक्ष्मण स्वामी की सह - धर्मिणी हैं । ऐसी नवयौवना, नई - नवेली बहू ने सोचा कि दीदी के वनवास के दुःख से बढकर पति - विरह अत्यंत अधिक दुःखदायी है । इस कारण अपने पति के साथ ना जाने की विवशता में भी पति की आज्ञा को ही शिरोधार्य माना । ऐसा कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं कि समस्त भोगों से युक्त उस राजमहल में अपनी देवरानियों के संग अपनी विरह वेदना को सहते रहना कोई साधारण विषय नहीं है, ऐन्द्रिक संयम तथा उनका आत्म - विश्वास अत्यंत श्रेष्ठ है । इस प्रकार की साध्वी नारी न जाने किस कारण वाल्मीकीजी की दृष्टि से दूर हो गईं । इससे बढकर अत्यंत दुःखदायी विषय है कि इनके चारित्रिक वर्णन करने में अग्रज महाकवि कालिदास की दृष्टि से भी, कवि भवभूति की दृष्टि से भी और अन्य कवियों की दृष्टि से भी वे दूर रहीं ।

केवल वाल्मीकी, कालिदास, भवभूति आदि संस्कृत कवि ही नहीं बल्कि भास्कर, गोपीनाथ आदि आन्ध्र कवियों ने भी अपने काव्य में उर्मिलादेवी के चरित्र को जिस प्रकार दिखाना था उस प्रकार दिखाया नहीं है । फिर भी तेलुगु के लोक - कवियों ने उर्मिला जी के संपूर्ण वृत्तांत को अत्यंत रोचक ढंग से वर्णित किया है ।

लोक कवियों के रामायण कथा के अनुसार जब से उर्मिला के पति लक्ष्मण अपने भाई श्रीराम के संग वनवास जाकर, फिर, वहाँ से अयोध्या वापिस आने तक, उर्मिला सभी कामों को छोडकर दीर्घ निद्रा में ही समय बिता चुकी है । और वहाँ वन में भी लक्ष्मण इतने दिनों

तक नींद से दूर ही रहें । उर्मिला को बताकर, लक्ष्मण जब रामजी के संग वनवास के लिए रवाना हुए उस समय का वर्णन 'लंकायज्ञ' नामक गीत में इस प्रकार वर्णित किया गया हैं -

''मुंदर श्रीरामुडु वेनुकनु लक्ष्मण्ण
वनमुलकु पयनमयिरी
तनवेनुक तम्मुन्नी ता तिरिगि चूची
'ओ तम्मुडा ! यनि पिलिचेनु
ओप्पुगा नी भार्या ऊर्मिलतो पोयी
ओकमारु चेप्पीरम्मी

... ...

अप्पुडु लक्ष्मण्णा अतिवेगिरमुगा
अतिव नगरिकि वच्चेनु
ओप्पुगा ऊर्मिला जालरिगुंटलो
जलकमुलाडुचुंडे
पतिनि चूची तानु एदुरुगा वच्चेनु
मुंदरा निलचुंडेनु

... ...

पेद्ददानवु नीवु यो बुद्धिशालिरो
यिंतिरो विनुमानेनु
मा यन्ना मा वदिने पदुनालुगूयेंड्‌लु
वनप्रवेशमानेनु
वारिवेंटनु नेनु कोलुवने पोतानु
वनितरो ! विनुमानेनु

'मिम्मुबासी नेनु येट्लु तालुदूनु
मीवेंट वत्तुननेनु
निलुववु प्राणामु निजमु सुमी ना माट
नम्मु मुम्माटिकीनी'
'बावा नडिचिन मार्गान नडुवरादंदुरु
येलागु वेगिंतुनु ?
बावमाटाध्वनी भूमि पई विनरादु
येलागु वेगिंतुनु ?
कांतरो ! नीविंत सोकिंचनेटिकी
नाकु वेल्लकतीरदु
पच्चनी पोकलू तेल्लनी आकुलु
गालिंचिना सुन्नमु
पट्टुमनी ऊर्मिला दोसिट बोसेनु
एडुगिरुले व्रासेनु
अप्पुडु लक्ष्मण्णा अतिवनु चूचुचु
अन्न वद्दकु वेल्लेनु

... ...

... ...

अप्पुडु ऊर्मिला वारु वच्चिनदाक
नोकव्रतमु पट्टुंडेनु
आहारमुमानी आदेवी पान्पुना
पवलिंचि तानुंडेनु
वीपुना नेमलिपुरी कसुपुले मोलचेनु

नेत्तिन वेदुरुकोम्मुलु
गेड्डाना गेदंगिगूडुलु पेट्टेनु
चंक वेदुरुबोदेलू
गुंडेल्लमीदने गूल्लुबुट्टेनु
ओडलेल्ला पुट्टबट्टे
अंतट ऊर्मिला वारु वच्चुदाक
नोकमानुययि युंडे नचट !

अर्थात् ''आगे - आगे श्रीराम पीछे पीछे लक्ष्मण वनवास के लिए चल पडे । अपने पीछे चलने वाले भाई को देखकर रामजी ने कहा - हे भाई ! अपनी पत्नी उर्मिला को एक बार प्यार से समझाकर मेरे साथ चलो । भाई की आज्ञा पाकर, लक्ष्मण अत्यंत शीघ्र गति से अपनी पत्नी के महल पहुँचे । उस समय उर्मिला सरोवर में स्नान कर रही थीं । पति को देखते ही उनके सामने आकर खडी हो गई । तो लक्ष्मण ने समझाया, तुम तो ज्ञानी हो, बुद्धिमति हो हे नारी ! मेरी बात गौर से सुनो । मेरे भाई और भाभी चौदह साल तक वनवास जा रहे हैं उनकी सेवा करने मैं भी जा रहा हूँ ।'' तब उर्मिला ने कहा - ''आपको छोडकर में कैसे रहूँगी । मैं भी आपके साथ आऊँगी । मेरी बातों को सच मानिये आपके बिना मेरे पाँव टिक नहीं पायेंगे ।'' तब लक्ष्मणजी का उत्तर था कि '' कहते हैं जिस मार्ग पर जीजाजी चलते हैं उस मार्ग पर सालियों का चलना मना है । जीजाजी की बातों की आवाज तक सुनना मना है, ऐसी स्थिति में मैं कैसे ले जाऊँगा ? हे कांतामणि ! तुम इतनी दु:खित क्यों हो । मुझे तो जाना ही पडेगा ।'' यह कहते हुए उर्मिला के हाथों सुपारी, पत्ते और चूना लाकर डाले फिर ऊर्मिला के चारों ओर

सात रेखाएँ खींची । तब लक्ष्मण जी अपनी पत्नी को देखते हुए भाई के पास पहुँचे ।'' उस समय उर्मिला ने उनके लौट आने तक एक व्रत रखा । खाना - पीना छोडकर वह देवी उसी बिस्तर पर सोती रहीं । पीठ पर घाव हुए, सिर पर बाल बाँस समान खडे हो गए और हृदय पर चिडियों ने घोसलें भी बना लिये । इस प्रकार उनके आने तक उर्मिला एक काष्ठ की तरह पडी रही ।'' चौदह सालों तक वे उसी प्रकार काठ की तरह ही लेटी रही थीं । उसके बाद के वृत्तांत को ''उर्मिला देवी की नींद'' नामक गीत में इस प्रकार वर्णित किया गया है-

अयोध्या लौटने के पश्चात भाभी के सिफारिश से भाई की आज्ञा जब मिली, तब लक्ष्मण उर्मिला के पास आये । यह मिलन उस पति - पत्नी के लिए लंबी विरह के बाद प्राप्त हुआ है । लक्ष्मण शयन गृह में पहुँचे । बिस्तर पर उर्मिला को देखा । छूते हुए उनकी साडी ठीक की । उनके शरीर पर ठंडा पानी छिडका । फिर उस बिस्तर पर बैठकर बातचीत प्रारंभ किया । उनकी वाणी अमृत धारा के समान थी और उन्होंने प्रार्थना की कि उनकी आत्मा को शांत करें । उर्मिला तब तक अपने आपको भुलाकर सोई हुई थी, थोडा सा होश अया । होश आने के बाद वह कंपित होने लगी । आनेवाले लक्ष्मण हैं इसकी खबर उन्हे नहीं हुई । इस कारण उन्होंने प्रश्न किया - ''आप कौन हैं ? कैसे आना हुआ ? उच्च वंश के लिए कलंक लग गया है । उच्च वंश में जन्म लेकर भी मैं इस कलंक के लिए कारणभूत हुई । फिर दुःखित होकर कहने लगी - ''आप की कोई बहन नहीं है ? मेरी जैसी माँ नहीं है ! आपने इतना अकार्य किया है इसके बाद मेरी दीदी और जीजाजी इस दुनिया में आपको जीने नहीं देंगे ।'' इतना कहकर वे चुप नहीं हुई । ''मेरी दीदी के देवर ने अगर यह जान

लिया तो आपके प्राणों की खैरियत नहीं है ।'' अपने पति को दीदी के देवर के रूप में संबोधित करना उनके उच्च चरित्र को उद्घाटित करता है । उर्मिला की बातें सचमुच सुंदर, मोतियों की माला के समान हैं । इसे सुनने के बाद लक्ष्मण ने अपनी पहचान उर्मिला को दी कि वे श्रीरामजी के भाई है । जनक महाराज के दामाद हैं, सीताजी के देवर है और तुम्हारा नाम उर्मिला हैं । जबसे मैं तुमसे बिछडा खान - पान और निद्रा से दूर रहा । अगर अभी भी तुमने मुझे नहीं पहचाना तो अपनी ही तलवार से मैं अपना गला काट लूँगा । झट उर्मिला को होश आया । घबराती हुई वे उठ खडी हुई। जब वे जान गईं कि आये हुए व्यक्ति उसी के प्राणवल्लभ हैं । तब उनके प्राणों में तेज उत्पन्न हुआ । यह जानने के पश्चात् अपने पति के चरणों पर झुककर ऊर्मिला ने प्रणाम किया । तब लक्ष्मणजी ने अपने हाथों से उन्हें उठाकर अपने दिल से लगाया । चौदह सालों तक उनसे बिछुडकर रहे । इस दुःख को अब उर्मिला सह नहीं पाई । लक्ष्मण के प्रति अत्यंत क्रोधित हुई । झट उर्मिला ने कहा -

''मा तंड्री जनकराजु मिम्मुनम्मी मरचिकल्याणमिच्चे
मानवंतुडल्लुडनुचु तेलियका मदिनि यिप्पोंगीचुंडी
चित्तमोक दिक्कुनुंची समयमुन चिन्नबुत्तरु यिंतुला''

अर्थात् ''मेरे पिता राजा जनकजी ने आप पर विश्वास रखा और हमारा विवाह आप से संपन्न किया । वे इसलिए खुश हुए कि आप अत्यंत मानवतावादी व्यक्ति हैं । लेकिन आपने मुझे इस तरह उपेक्षित किया है ।'' यहाँ उर्मिला अपने पिता की नादानी पर चिंतित होती है कि राजा जनक अपने दामाद को एक मानवतावादी समझकर खुश हो रहे हैं । लेकिन लक्ष्मण को इन बातों से काफी ठेस पहुँचा फिर भी उनको

लगा कि उनकी पत्नी दुःख के कारण ही ऐसा बोल रही है। इस कारण उन्होंने जवाब दिया -

''तरुणी पदुनालुगेड्लु निनु विडिचि धरियिस्तिने प्राणमु
आहारनिद्रलुनु येरुगने अतिव ! नीमीदयान
पुण्यपुरुषुल स्त्रीलनु यडबासी पूर्वजन्ममुन मनमु
येन्नेन्नी युगमुलईना यिदि मनकु अनुभविंचक तीरदु''

अर्थात् ''हे तरुणी। चौदह सालों तक मैं ने तुम्हारे विरह में प्राणों को बचाए रखा है। हे नारी ! तुम्हारी कसम। मैं तो खान - पान, नींद सब कुछ छोड चुका। शायद पूर्वजन्म मैं हमने किसी पुण्य पुरुष और उन की स्त्री को दूर किया होगा। चाहे कितने ही युग बीत जायें इसका फल हमें भुगतना ही पडेगा।''

पति - पत्नी के इस दुःख को देखकर कौशल्या जी वहाँ आई और उन दोनों को उठाकर, स्नान करवाकर, आभूषणों से अलंकृत कर उन्हें स्वयं खाना खिलाई। इन दंपतियों के लिए चौदह सालों के पश्चात भोजन करने का यही पहला अवसर था। इन चौदह सालों में उर्मिला ने खाना तो त्याग दिया लेकिन सोती ही रहीं। यहाँ लक्ष्मणजी ने न तो खाना खाया न सोये। इतने संयमशील दंपतियों के लिए उस लंबे विरह के अनंतर, उस मिलन के उस सुआवसर पर लक्ष्मण ने प्यार से उर्मिला की चोटी में चंपा, चमेली के फूल गुँथे। शैय्या पर फूलों की महक - कमरे में चम्पा - फूलों की सुगंध के साथ, और वहाँ सुपारी - पान और चूने सहित तांबूल भी विराजित हैं। शैय्या पर बैठकर लक्ष्मणजी ने उर्मिला के बालों को खोलकर बहुत ही हिफाजत से चोटी बनाई - चंपा, चमेली

के फूलों को उन बालों में गूँथा। जिस प्रकार का भाग्य किसी प्रबंध काव्य की कन्या को भी मिलना असंभव था, उस प्रकार का भाग्य उर्मिला ने पाया है। इस प्रकार के श्रृंगार वैभव के बीच उर्मिला ने जो पहला प्रश्न अपने पति से किया वह ना अपने से संबंधित है, ना समय से संबंधित है, ना ही लक्ष्मणजी से संबंधित है। उनका प्रश्न था - ''सिंह रूपी पराक्रमी जैसे आप जब साथ है तो सीताजी किस प्रकार बंदी बनायी गयी ?'' सीताजी तो जनक जी की गोद ली हुई बेटी है। उर्मिला जनकजी की औरस पुत्री हैं फिर भी दोनों बहनों की प्यार की सीमा अपार है। उर्मिला के पास आत्मार्थ जैसी कोई विषय ही नहीं है। इसलिए इस संदर्भ में श्री विक्रमदेव वर्मा का कथन सही लगता है कि ''निस्वार्थ बुद्धि के साथ जो भी रामायण गाथा पढेंगे वे लोग यह कहे बिना नहीं रह पायेंगे कि सीतादेवी के चरित्र से बढकर उर्मिला देवी का चरित्र ही महान है।'' फिर भी यहाँ एक भ्रम उत्पन्न होता है। श्री वर्माजी ने आरंभ में यही कहा है कि उर्मिला की जितनी प्रशंसा होनी चाहिए थी उतनी नहीं हो पायी। सीतादेवी से बढकर उर्मिला देवी की महानता अधिक है इस कथन के पीछे वाल्मीकी रचित रामायण के अलावा 'लंका यज्ञ', 'उर्मिला देवी की निद्रा' नामक गीतों में ही इस कथन के आधार मिल सकते हैं।

उर्मिला देवी के संबंध में एक और गीत है वह है 'लक्ष्मण की हँसी।' इस गीत में एक अत्यंत रोचक घटना है। सालियों की जानकारी के बिना, दूर से राम उन्हें देख रहे थे। इससे पहले रामजी ने मुनियों से उन्हें देखने की आज्ञा पाई और सीता की अनुमति भी ली। यहाँ राम का प्रश्न था -

''सभलोनु वुन्न महामुनुल जूची
मरदल्ला जूडवच्चुना यनि तानु बलिके''

अर्थात् ''सभा में उपस्थित महामुनियों को देखकर उनसे उन्होंने प्रश्न किया कि ''क्या मैं अपनी सालियों को देख सकता हूँ ।'' तब मुनियों का उत्तर था -

तरुणलकल्लानु तमरु बडकुंडा
तरणुलनु चूडवच्चु तप्पेमी लेदु''

''तरुणियों की नजरों से बचकर आप उन तरुणियों को देख सकते हैं उसमें कोई गलती नहीं है ।'' तब राम ने सीता से पूछा कि ''सालियों को किस प्रकार दिखाओगी'' तो प्रति उत्तर में सीता ने आश्चर्यचकित होकर पूछा -

''राणीवासस्त्रीलनु राजु चूचुटकु
इटुवंटि कोरिकलु ने चूडलेदु''

''राजमहल की स्त्रियों को देखने की राजा की इस प्रकार की इच्छा को तो मैंने कभी सुना ही नहीं है ।'' तब रामजी ने कहा -

''अतिवरो अंदुकू अड्डाडबोकु
पेद्दलु महामुनुलु ओप्पुकुन्नारु''

'हे सुंदरी! बीच में अडचन मत डालो । सभा में उपस्थित महामुनियों ने ही अनुमति दी है । यह कहते हुए उन्होंने मिन्नतें कीं । तब सीता ने मान लिया । पीछे से तब शत्रुघ्न ने रामजी को उनकी सालियों को दिखाया ।

''गवाक्षमार्गान कनुदृष्टि युंची
रेप्प वेयकनु कनुविप्पे मोहमुन
अट्टे तोलकरी मेरुपु हंसनडकलदी
पुत्तडी नडबोम्मा लेडीवले चूपु
शांतकु चंदनम् बूयुचुन्नदी
आ देवी येव्वरु ? शत्रुघ्न ! अनेनु
... ...
सौमित्री भार्य ऊर्मिला अनेनु''

अर्थात् ''हे शत्रुघ्न खिडकी से झाँकते हुए देखने से इतनी सुंदर स्त्री, हंस की चाल चलनेवाली, सुनहरे खिलौने जैसी, हिरणियों जैसी दृष्टि वाली जो स्त्री जो शांता जी को चंदन लगा रही हैं वे कौन हैं ?'' - पूछने पर उन्होंने कहा वो तो सौमित्री की पत्नी उर्मिला हैं ।' लक्ष्मणजी के समान उर्मिला भी गौरवर्णी हैं ।

इसी प्रकार उर्मिला की प्रस्तावना फिर ''कुश - लव की युग्ल कथा' में आती है । श्रुतकीर्ति की तरह उर्मिला में किसी की बातों का अपनी वाक्पटुता से खंडन करने की क्षमता नहीं है । वे दीदी के प्रति प्यार के कारण श्रीराम की सभा में जाकर खंभे की आड में खडी होकर पहले अवतार - पुरुष राम की प्रशंसा कर बाद में दीदी की रक्षा करने के लिए कहकर वहाँ से हट जाती हैं ।

सभा में खंभे की आड में खडी उर्मिला अपनी दीदी को सहांरकर आये हुए लक्ष्मणजी के सामने खडी होकर पूछने लगी कि जिस तलवार से दीदी का संहार आपने किया उसी से, उसे भी मारने के लिए कहती

हैं ।'' जब तक लक्ष्मणजी ने उस सच्चाई को बताया नहीं कि उन्होंने सीता जी का संहार नहीं किया, तब तक उन्होंने अपने पति को आगे बढने नहीं दिया । सीताजी के प्रति उस छोटी बहन का प्यार ही ऐसा है । यहाँ लोक - कवियों का कथन है कि दीदी के प्रति प्यार ही नहीं दीदी के संतान के प्रति भी उर्मिला के मन में अपार प्रेम है । जब उर्मिला मायके में थीं तब जिन खिलौनों के साथ वे खेला करती थीं उन खिलौनों को वे अपने साथ ससुराल ले आईं । इस प्रकार इतनी हिफाजत से उन खिलौनों को ले आने वाली उर्मिला के खिलौने व्यर्थ नहीं हुए। जैसे ही उन्हें पता चला कि मुनि आश्रम में सीताजी के पुत्र हुए हैं । उस समय अपने पास के खिलौनों को लक्ष्मण के द्वारा उन तक पहुँचायीं । क्योंकि नये खिलौनों को बनवाने से अंतःपुर में किसी को भी शंका हो सकती है, लेकिन ये खिलौने तो उनके अपने बचपन के हैं । इसलिए चुपचाप उन्हें निकालकर भिजवा दिया । इस प्रकार वस्तुओं के प्रति उर्मिला की हिफाजत तथा दीदी के बच्चों के प्रति उसके मन का प्यार इन सब को जताने के लिए ये खिलौने उदाहरणस्वरूप सिद्ध होते हैं । मुनि आश्रम में सीताजी अपने पुत्रों को लोरी सुनाती हुई गाती हैं ...

''उंगरमुले गोनुचु वुय्याल गोनुचु
ऊर्मिला पिनतल्ली वच्चे नेडवकु''

अर्थात् ''अंगूठियाँ भी आयेंगी, झूले भी आयेंगे । मौसी उर्मिला आने तक रोना मत ।'' केवल खिलौने ही नहीं, अंगूठी जैसे आभूषण, झूले - जैसे साधारण चीज भी उर्मिला ला सकती है । इस प्रकार सीताजी के विचार 'कुश - लव का झूला' नामक गीत में व्यक्त हुए हैं ।

सीता - रामजी के पुनः मिलन के पश्चात् लक्ष्मण और उर्मिला के मध्य संवादों के जरिये उर्मिला की स्पष्टवादिता व्यक्त होती है । श्रीराम ने सीता को संहार करने की आज्ञा जब लक्ष्मण को दी उस आज्ञा का उल्लंघन कर रामजी को बताये बिना लक्ष्मणजी ने सीता के प्राणों की रक्षा की । उसके लिए रामजी लक्ष्मण की प्रशंसा कर आशीष देकर उर्मिला के पास भेजते हैं । यहाँ उर्मिला और लक्ष्मणजी के बीच के संवाद इस प्रकार हैं -

''केलीगृहमुनकु चनुदेंचेनु यिपुडु
ऊर्मिला वच्चे लक्ष्मणु सन्निधिकी

... ...

वच्चिन सतिनि चूची यिपुडु
सरसमुलाडुतु संतोषमुग
कलकल नव्वुतु यिट्लनी पलिके
अक्कनु चूस्तिव यतिवरो नीवु
तनयुल जूस्तिवा तरुणिरो यनेनु''

अर्थात् ''केलिगृह में जब लक्ष्मण जी पहुँचे तब उर्मिला उनके पास आई । पत्नी को देखकर अत्यंत प्रसन्नचित होकर प्यार से कहने लगे । हे सुंदरी ! दीदी को देख आईं ! हे तरुणी ! पुत्रों को देख आई ! ''तब उर्मिला ने जवाब दिया -

''चूस्तिमी मी कृपजाल गलिगुंडग
कलिसितिमि मेमंदरमनेनु''

अर्थात् ''आपकी कृपा से देख पायी। हम सब पुनः मिल पायी।'' फिर भी शायद उर्मिला को उन दोनों भाईयों पर विश्वास नहीं हुआ। झट उन्होंने कहा -

''अडलगरादु मीवेंट नप्पुडु
चंपनुन्नदी दिक्केव्वरु माकु''

अर्थात् ''आप पर कैसे विश्वास करें कि आप हमारा संहार नहीं करेंगे। हमारे कौन रक्षक हैं।'' तब लक्ष्मण ने कहा -

''दिक्कु येक्कड गलदनी दलिचेदवा
यन्नदम्मुलू मेमुंडगनु''

''हम सब भाई हैं फिर भी पूछ रही हो रक्षक कौन हैं।'' तो उर्मिला ने जवाब दिया -

''नम्मरादु मीयन्नदम्मुला
नव्वुतुनु चंपिंचे राघवुलु
अनि यूर्मिला बलिकिन पलुकुलकु
चिरुनव्वु नव्वेनु लक्ष्मणुडु''

अर्थात् ''आप भाईयों पर विश्वास नहीं किया जा सकता। हँसते - हँसते राघवजी संहार करवा सकते हैं। उर्मिला की इन बातों को सुनकर लक्ष्मण भी मुस्कुराएँ।'' ''हँसते हुए राघवजी संहार करवा सकते हैं।'' यह कथन आन्ध्र कवि तिकन्ना के कथन के अनुरूप है कि ''धर्मराज मेत्तति फुली कपटपूर्ण बाघ के समान हैं।'' दोनों भाईयों के प्रति उर्मिला के व्यंग्य बाणों को सुनकर लक्ष्मणजी मुस्कुराकर रह गये। ऐसे स्वभाव वाले लक्ष्मण सच्चे सहृदयी हैं। पत्नी की बातों पर नाराज न होने वाले सहृदयी हैं। अत्यंत प्यार के साथ चोटी बनाने वाले प्रेमी हैं लक्ष्मण।

उन सद्दंपतियों के बीच की समरसता ही ऐसी है। इसी कारण वनवास जाते समय लक्ष्मणजी, उर्मिला के चारों ओर सात रेखाएँ खींच पाए। उन रेखाओं को कभी उर्मिला ने पार भी नहीं किया। पति की बातें ही नहीं, पति द्वारा खींची गई रेखाओं को भी पार न करनेवाली पतिव्रता नारी है, उर्मिला। वनवास में सीताजी को अकेले छोडते हुए लक्ष्मण ने पर्णकुटी के पास सात - रेखाएँ खींची, लेकिन सीता जी ने उस पर ध्यान नहीं दिया। ध्यान न देने के कारण उसके फल को भी सीताजी ने अनुभव किया, यह अलग बात है। तभी तो कहा जा सकता है कि सीताजी से बढकर उर्मिला ही उत्तम स्त्री है। सीताजी के लिए तो केवल दस महीनों का ही कारावास रहा है लेकिन उर्मिला के लिए तो उनके शयनगृह में चौदह साल की बेहोशी की अवस्था ही उनके लिए कारावास था।

जब लक्ष्मणजी ने कहा कि यह हमारी रीति है कि जीजाजी के चले मार्ग पर सालियों को नहीं चलना है। जीजाजी की बातों को भी सुनना मना है तो पति की बातों का आदर कर लक्ष्मणजी के जाते ही उसी शयन गृह में रहने की उन्होंने ठान ली। वे पति की बातों का खंडन न करनेवाली पतिव्रता नारी है। उनके उदात्त गुण ही ऐसे हैं। जाते समय पति सुपारी, पान, चूना के साथ आशीर्वाद देकर गये। चौदह साल के अनंतर जब पति का आगमन हुआ तब सास ने भी सुपारी, पान, चूना उन्हें देते हुए आशीर्वाद दिया। इस प्रकार उर्मिला बेमिसाल की पतिव्रता हैं।

* * *

17. माण्डवी

'माणडवी' शब्द के लिए मालवी शब्द का भी प्रयोग किया जाता है। ये भरतजी की पत्नी हैं। राजा कुशध्वज की पुत्रियाँ हैं माण्डवी और श्रुतिकीर्ति। वे दोनों क्रमशः भरत और शत्रुघ्न की पत्नियाँ बनीं। भरत - शत्रुघ्न दोनों अलग - अलग माताओं के पुत्र होने के कारण वह विवाह, शास्त्र सम्मत माना गया है।

लक्ष्मणजी की पत्नी उर्मिला लोक कवियों को अत्यंत आकर्षित कर पाई। शत्रुघ्न की पत्नी श्रुतिकीर्ति भी कुछ हद तक आकर्षित कर सकीं। ऐसे उदाहरण नहीं मिलते कि उर्मिला और श्रुतिकीर्ति के समान माण्डवी भी आकर्षित कर पाई।

चौदह साल वनवास के पश्चात जिस प्रकार कहा गया है कि पंचमी के दिन राम का आगमन होगा ऐसा ना होने के कारण भरत और गुह दोनों अग्नि प्रवेश के लिए तैयार हो गए, इस का वर्णन एक गीत में वर्णित हुआ है। उस संदर्भ में गुह की पत्नी भी पति के संग सती होने के लिए तैयार हो गई। उसी समय माँ कौशल्या भरत के पास आकर उसे पुनः विचार करने को कहती हैं। लेकिन माण्डवी नहीं आई। शायद यहाँ लोक - कवियों की यह भावना हो सकती है कि माण्डवी बहुत ही शर्मीली औरत है।

''चिगुरुटाकुल बोलु चिन्नपादमुलु
अट्टे तोलकरिमेरुपु हंसनडकलदी
शांतम्मकुनु सुरटी विसरुचुन्नदी
आदेवी येव्वरो।''

''लक्ष्मणजी की हँसी'' नामक गीत में राम, शत्रुघ्न से प्रश्न करते हैं, कोमल पत्तियों के समान चरणों वाली, बिजली के प्रकाश समान हंस

की चाल वाली वह देवी कौन हैं, जो शांताजी को पंखा कर रही है। तब शत्रुघ्न कहते हैं कि वे भरत की पत्नी हैं।

उसी गीत में माण्डवी को आशीर्वाद देती हुई सीताजी के वचन इस प्रकार हैं -

''मालवी नीवेंत बुद्धिशालिवी
भरतुनिवंटी पतिगलुगुटकु
नीवु चेसिन पूर्वपुण्यमे तल्ली
अतिपराक्रमशाली अम्मा ! नी विभुडु
मनसुलो मरिजाणसुमि अतडु
भरतुनि चित्तान गुरुतेरिगि तिरुगु''

अर्थात् ''माण्डवी तुम कितनी बुद्धिशाली हो, तुम्हारे पूर्वजन्म का पुण्य फल है कि तुमने भरत जैसा पति पाया। तुम्हारे पति तो अत्यंत पराक्रमशाली हैं। मन में और कुछ मत सोचो बस केवल भरत के हृदय को जानकर चलती रहो।''

रावण के चित्रपट के कारण जो युद्ध छिडा उस समय समझौता कराने के लिए आगे बढने के समय भी वे हिचकिचाती रहीं। समझौता कराने जब वे राज - सभा में गई तब भी वे एक सोने के खंभे के पीछे खडी होकर ही बातचीत करती रहीं। किसी के सामने आकर नहीं बोल पाई। पान के पत्तों जैसे हाथों को जोडकर केवल यह कहकर आगे चली गई कि सीता जी की रक्षा करना। माण्डवी और श्रुतिकीर्ति के स्वभावों में बहुत अंतर है। माण्डवी, श्रुतिकीर्ति के समान तर्कशील और साहसी नहीं हैं। बहनें होती हुई भी उन दोनों बहनों में इतना अंतर है।

* * *

18. श्रुतिकीर्ति

सीतादेवी की छोटी बहन कुशध्वज की लाडली बेटी - दशरथ जी के छोटे बेटे शत्रुघ्न की पत्नी है श्रुतिकीर्ति । वाल्मीकी रचित रामायण में श्रुतिकीर्ति के बारे में हमें केवल इतनी ही जानकारी मिलती है, लेकिन लोक साहित्य में उनसे संबंधित अनेक विषयों की जानकारी मिलती हैं । 'लक्ष्मणजी की हँसी', 'कुश - लव की युगल - कथा' आदि गीतों में उनसे संबंधित विषय अनेक पाये जाते हैं ।

'लक्ष्मणजी की हँसी' नामक गीत में जब श्रीराम वनवास खत्म कर अयोध्या लौटे, उस समय राज्याभिषेक के संदर्भ में सारे बंधुजन इकट्ठे हुए, तब श्रुतिकीर्ति की बात आती है

सालियों की जानकारी के बिना चुपके से जब श्रीराम उन्हें देखते हैं उसके पीछे भी कारण है ।

''विवाहमुलय्येटिनाडु वीरु चिन्नवारु बालले सुम्मी
ई वेनुक पदुनालुगेंड्लु अडवुललो तिरिगेव्वरोमरी गुर्तेरुगरैरी
वीरिकिनि वारिकिनि तगुनो लेदो जूडवलेननि तनकु अभिलाष
पुट्टे''

अर्थात् ''जब इन लोगों का विवाह हुआ तब ये लोग छोटी बालिकाएँ थीं, चौदह सालों के पश्चात वनवास से लौटे तो हम इन्हें पहचान नहीं पा रहे हैं । अब हम देखना चाहते हैं कि उस समय की बच्चियों में और अब की शक्लों में कोई साम्यता पाई जाती है या नहीं !'' उस समय शत्रुघ्न

उनके बारे में बता रहे थे, तो श्रीराम खिडकी से सालियों को देख रहे थे । तब उर्मिला और माण्डवी एक तरफ गयीं तो वहाँ श्रुतिकीर्ति आती है । तब श्रीरामजी को सच में यह पूछने की आवश्यकता ही नहीं है कि यह स्त्री कौन है ? फिर भी अपने भाई को चिढाने के उद्देश्य से पूछने लगे ।

''नल्लनिमेनुदी नगुमोमु गलदि आ देवि येव्वरु शत्रुघ्न''

अर्थात् ''सावली रंग वाली, हंसमुख चेहरे वाली ये देवी कौन है शत्रुघ्न ?'' तब शत्रुघ्न कुछ कहे बिना मौन रह जाते हैं । शर्माने वाले अपने भाई को देखकर श्रीराम जी मुस्कुराने लगे । उसके पश्चात एक - एक कर सभी देवर सीतादेवी के पास आये । भरत और लक्ष्मण को आशीर्वाद देने के पश्चात सीताजी ने शत्रुघ्न को इस प्रकार आशीष दी -

''शत्रुघ्नुडा ! नीवेंत बुद्धिशालिवि
तम्मुलु आयननु मीरे सुमि तनकु
मरुदुलु आयननु मीरे सुमि तनकु
सहोदरुलु लेक तामु इप्पुडुनु
अभ्रात्रु कन्यकलमु अयिवुंटिमनिरि
मुग्गुरु वेनुकनु अबलसुम्मि अन्न
मूडु माटलमीरु तप्पुलेन्नकुमी
ओकमारु तांबूलमिय्य वच्चिननु
वद्दनि श्रुतकीर्ति वूरिकेयुन्न
रेंडवमोटिके पलिकिनगानी
गंड्रनि तोचकुमी नी मनसुलोनु''

अर्थात् ''शत्रुघ्न ! तुम कितने बुद्धिशाली हो । मेरे लिए तो भाई भी तुम्हीं हो और देवर भी तुम्हीं हो । हम बहनें अब तक बिना भाई के जी रहे हैं । श्रुतिकीर्ति तीन बहनों के बाद जन्मी है, बिल्कुल नादान है । अगर कभी वह ऐसी - वैसी बात करें, तो उसमें गलतियाँ मत ढूँढना । कभी तांबूल माँगने पर भी यदि श्रुतिकीर्ति चुप रही तब भी यह मत सोचना कि वह गर्वीली है । कभी दो - चार बातें कह भी दे तो मन में यह मत सोचना कि वह अहंकारी है ।''

इसी प्रकार जब माण्डवी और उर्मिला को क्रमश उनके पतियों को सौंपते समय उन देवरों ने सीता देवी से कुछ नहीं कहा । लेकिन अब शत्रुघ्न इस प्रकार कहते हैं ।

''मुग्धलुगारटो मीरु जानकी !
मी वेनक चेल्लेल्लु मुग्धलेगारा ?
कुरुलु कूडनिमुंदू कूकट्लु कुरच
पतितोनु अडवुलकेगिन दानवु
मायामृगमुनु बट्टी तेम्मन्नदानवु
मुग्धलुगारटो मीरु जानकी !
मी वेनुक चेल्लेल्लु मुग्धलेगार !''

अर्थात् 'जानकी जी आप मुग्धा हैं! आपके पीछे आपकी बहनें मुग्धा ही होंगी । आप तो पति के साथ वनवास जाकर लौटी हैं । वनवास के समय माया मृग को लाने की जिद करने वाली भी आप ही हैं । हे जानकीजी ! आप तो मुग्धा ही हैं ! आपके पीछे आपकी बहनें

मुग्धा ही होंगी !'' यहाँ पर शत्रुघ्न व्यंग्य करते हैं - ''आप जितनी नादान हैं उतनी ही नादान आपकी बहनें भी हैं ।'' बीती बातों को सुनकर सीतादेवी शर्म से सिर झुकाने लगीं । सिर झुकाकर बैठी हुई बहू को देखकर माँ कौशल्या पुत्र को देखकर कहने लगीं -

''मुग्गुरी वेनुकनु नुंडडे वीडु
मूडुमाटलु आरु तप्पुलेरुगाडु
गांड्रपु पालुकुलु पलुकनेटिकि
अनि इट्लु जानकिनि आडनेटिकि''

अर्थात् 'तीन भाईयों के बाद पैदा हुआ है । कभी भी इस प्रकार की बातें नहीं कीं और गलतियाँ भी कभी नहीं की हैं । आज इस प्रकार घमंडी बातें क्यों कर रहे हो ? और जानकी के सामने ऐसे क्यों बोल रहे हो ?''

जब माँ ने इस प्रकार कहा तब शत्रुघ्न को अपनी भूल की पहचान हुई और तब उन्होंने सीतादेवी को प्रणाम किया । तब माँ कौशल्या ने सीता जी से कहा -

''एंदुकु ? जानकी वप्पगिस्तावु
चेल्लेल्लु निन्नेमि उद्धरिस्तारु''

अर्थात् 'क्यों जानकी, इस प्रकार बहनों को क्यो सौंप रही हो? आखिर ये बहनें, क्या तुम्हारा उद्धार कर सकेंगी ?' फिर भी सीतादेवी अपनी बहनों को क्रमशः आशीष देती रहीं । उस संबंध में सीतादेवी, श्रुतिकीर्ति से यूँ कहती हैं -

''नीकेमि जेप्पुदुनु नेनु ? श्रुतिकीर्ति!
नीवु येरुगवटम्मा ? बुद्धिशालिवि
पुय्यमनक चंदनमु पुय्यबोकुमी
पुय्यमंटे नीवु वूरुकोकुमि
ओकमारु तांबूलमिय्य वच्चिननु
वद्दनि श्रुतकीर्ति वूरिके युंडु
रेंडोमाटिकि पिलिचिनगानी
पलुकुमी श्रुतकीर्ति पद्मायताक्षी''

अर्थात् 'श्रुतिकीर्ति! तुम से क्या कहूँ ? तुम तो सब कुछ जानती हो। बुद्धमति हो ! अगर चंदन लगाने से मना करते हैं तब मत लगाना। अगर चंदन लगाने को कहें तब चुप मत रहना, तांबूल लाने के लिए कहें तो एक बार तो चुप रह सकती हो। लेकिन दुबारा बुलाए जाने पर, हे श्रुतिकीर्ति ! कमलनयनी ! जवाब जरूर देना।''

मालवी और उर्मिला अपने - अपने शैय्यागृह में चली गई, लेकिन श्रुतिकीर्ति नहीं गई। तब शत्रुघ्न ने माँ कौशल्या को इस बात की खबर दी। तब कौशल्या कहने लगीं - ''अपनी सखियों के संग खेल रही है। साथ लेकर चले जाओ।'' फिर माँ कौशल्या ही श्रुतिकीर्ति को साथ लेकर शैय्यागृह प्रवेश करती हैं। तब श्रुतिकीर्ति के तेजोमय रूप का वर्णन लोक कवि इस प्रकार करते हैं।

''श्रुतकीर्ति वच्चेटि तेजम्मु चूची
कंचुश्रीस्तंभालु कांतुलनु मणगे
माणिक्यदीपालु मरि वेलगवाये''

अर्थात् ''आने वाली श्रुतिकिर्ति की तेजस्वी रूप को देखकर वहाँ सोने के खंभों की काँति भी फीकी पड गई है। मणिक दीप भी प्रज्वलित नहीं हुए।''

इतने में पति - पत्नी को कमरे के अंदर छोडकर ननद शांता ने बाहर से चिटकनी लगा दी। कौशल्या, शांता आदि सुहागिनें अक्षतों सहित उन्हें आशीर्वाद देती हुई उन्हें एकांत में छोड आई। फिर भी यहाँ लोक - कवियों ने उनके एकांत के समय होने वाले संवादों को सबके सामने प्रकट किया। एक बार तांबूल देने आए हुए पति शत्रुघ्न को श्रुतिकीर्ति मना कर चुप रह जाती है। तब शत्रुघ्न ने जबरदस्ती की, तो वे मूर्छित हो गई , तब उन्हें ले जाकर बिस्तर पर लिटाकर उनके कानों में कर्पूर छिडकते हुए उनकी आँखों को इत्तर से धोते हैं। इस प्रकार उनकी सेवा की। इस तरह उन्हें पुचकारते रहे।

इस संदर्भ का वर्णन लोक कवि यों करते हैं -

''शत्रुघ्न कोपदारि यनुचु
एवरिनोटा नइनविनि जडिसितिवेमो ?
एवरिकैना कोपदारिने कानी
नीकु शांतुड सुम्मि निजमु ना माटा''

अर्थात् ''हो सकता है कभी किसी के मुँह से ये बात सुनकर शायद डर गई हो कि शत्रुघ्न गुस्सैले स्वभाव के हैं। किसी पर तो मैं अवश्य गुस्सा कर सकता हूँ लेकिन तुम्हारे सामने शांत स्वभाव वाला ही हूँ। मेरी बातों में सच्चाई है।''

इस गीत में लोक कवि ने श्रुतिकीर्ति को कोमल स्त्री के समान, और शत्रुघ्न को गुस्सैले स्वभावी वाले के रूप में चित्रित किया है। श्रुतिकीर्ति का प्रसंग पुन : 'कुश - लव की युगल - कथा' में आता है। रावण के चित्रपट के कारण जब झगडे हुए, उन झगडों के कारण श्रीराम ने गर्भवती सीताजी को जंगल में छोड आने की आज्ञा दी। अंतः पुर की स्त्रियों के मन में इस घटना के कारण भय उत्पन्न हो जाता है। सभी माताएँ कौशल्या, सुमित्रा, कैकेयी सीताजी का पक्ष वहन करती हुई राम को समझानें लगीं। लेकिन फायदा नहीं हुआ। फिर शाँता ने समझाने की कोशिश की फिर भी निष्फल ही रहा। तीनों बहनें भी समझाने के लिए तैयार हुई लेकिन यह सोचकर चुप रह गई कि यह सही नहीं है। फिर दूसरे ही क्षण सोचने लगीं कि जब दीदी ही मर रही हैं तो हम इतनी विनम्र क्यों रहें। अंत में शांताजी को साथ लेकर चल पडीं। दूर से उन्हें देखकर श्रीरामजी सिर झुकाकर बैठ गए। आगे जाने में हिचकिचाने वाली दीदियों को देखकर श्रुतिकीर्ति ने कहा -

''इदे समयमु चदुरुकु पोवग
पदरे चदुरुकु पोदामु वेग
अक्क चावग अणकुवलेटिकि ?
मीरंता यिक्कडयुंडि
नेनैना चदुरुकु पोयेदनु''

''यही सही वक्त है समझाने के लिए, चलो जल्दी चलते हैं। वहाँ पर दीदी मरने वाली है तो हम क्यों इतने विनम्रपूर्वक रहें। ठीक है आप लोग यहीं रहिए, मैं खुद चली जाऊँगी।'' श्रुतिकीर्ति की बातों से उनमें भी जोश उत्पन्न हुआ। वहाँ जाकर मालवी और उर्मिला सोने के खंभे

की आड में खडी होकर मत्स्य, कुर्मा, वराहा, नरसिम्हा, वामना, भार्गवा, राम अवतारों की कीर्ति कर फिर अपनी दीदी की रक्षा करने के लिए कहती हुई वहाँ से चली गई ।

अब श्रुतिकीर्ति की बारी आई। दीदीयों की तरह वह किसी खंभे की आड में खडी नहीं हुई। शांताजी के पीछे खडी होकर बातें कीं। क्रोधावेश के कारण पहले जोर से कहने लगीं, फिर समझौते की बात याद कर अपने गले की आवाज को कम कर चुकीं। इस प्रकार वे समयानुकूल चलने वाली नारी हैं। उसने कहा -

''ताटकांतका! धर्मपालना!
शिवचापबंधना! लोकेशा!
अहल्यपावना! अंबुधिबंधना!
ओक्कयिंटने पुट्टिनवारमु
ओक्कयिंटने चोच्चिनवारमु
रावणुनिपयि मोहमुलिप्पुडु
अक्ककिमात्रमु कादु चूडंडी
माकंदरिकि कलिगुन्नदि देव !
यंदरिनि तेगटार्चुडि यनेनु
सीता जेसिन नेरमु चेप्पक
चेंडनीयमु मिम्मनी पलिके
यभ्यंतरकन्यलमई युंडगनु
चेल्लेगद मीकिलागुनु

अर्थात् 'हे ! धर्मरक्षक ! हे ! ताटक संहारक ! हे! शिव धनुष भंग करने वाले ! हे लोकेश्वर ! हे ! अहिल्या के रक्षक ! हे! अंबुधि बंधना !

हम एक ही घर में जन्मी हुई बहनें हैं। हम एक ही घर में ब्याही हैं। हे देव ! अब रावण के प्रति मोह केवल दीदी के मन में ही नहीं बल्कि हम सब में भी जागृत हो रहा है। हम लोगों का भी वध कीजिए। आखिर सीताजी की गलती क्या है ? जब तक आप नहीं बतायेंगे, हम छोडेंगे नहीं। हमारे ऊपर इल्जाम लगाकर आप यों चुप नहीं रह सकते।''

''लक्ष्मणजी की हँसी'' नामक गीत में जब रामजी का पुनः आगमन अयोध्या में हुआ उस समय श्रुतिकीर्ति का वर्णन एक मुग्धा नारी के रूप में हुआ था। 'कुश - लब की युगल - कथा' नामक गीत के समय जब सीता गर्भवती हुई थीं तब श्रुतिकीर्ति इतनी तर्कशील और निडर हो गई है।

श्रुतिकीर्ति ने दीदियों की तरह अवतारों का प्रस्ताव नहीं किया। उसने कहा, हे धर्मपालक ! इस संदर्भ में यह संबोधन सठीक बैठता है। वह यह जताना चाहती हैं कि रावण के चित्रपट के जरिए जो झगडा उत्पन्न हुआ उसमें सीताजी जितनी दोषी हैं वे लोग भी उतनी ही दोषी हैं। एकदम वह बगावत करने लगी कि चूँकि हम अंतःपुर की स्त्रियाँ हैं इसलिए आप हम पर ऐसा आरोप लगा रहे हैं। यहाँ दीदी के ऊपर प्रेम के कारण और धर्म के कारण वे ऐसा कहने के लिए तत्पर हुई। श्रीराम ने सिर उठाकर देखा लेकिन यह तो सिर झुकाने का समय था। उन्होंने अपने बगल में बैठे हुए महा - मुनियों से कहा -

''जनक चक्रवर्ती कूतुल्ल महिमलु
तेलिसे कदा मीकंदरकु अनेनु
येमि एरुगनि अबलल मनुचु
येटुलु चेप्पेदरो तमरैतेनु ?''

अर्थात् ''जनक महाराज की पुत्रियों की गरिमा का आभास अब तक आप लोगों को हो गया होगा कि ये लोग अपने आपको अबला कहती हुई कैसी बातें कर रही हैं। आप इस संदर्भ में क्या जवाब देना चाहते हैं।''

मुनिगण समाधान देने ही वाले थे तो फिर से श्रुतिकीर्ति बोल पडीं। अकारण निंदाएँ सुनकर उसमें क्रोध का आवेग बढने लगा। वह निर्दोष है इसलिए निडर होकर पूछने लगीं -

''अडवुललोपला कसुरवच्चिते
मन्ननतोडुत माट्लाडनेल ?
यंगदु साहायमिच्चि पंपगनेल ?
यसुरुनिलोपला कंपिनवारु
येमायेननि यडुगगरादा ?
यंतःपुर कन्यलमयियुंडग
चेल्लेगदा मीकीलागुननु
मरियेव्वरिकि चेल्लदु यनेनु''

अर्थात् ''वनवास के समय आपके साथ आईं तब उनके साथ आप इतने प्यार के साथ पेश क्यों आए ? अंगद को साथ देकर क्यों भेजा ? राक्षसों के पास गई हुई नारी से आपने यह क्यों नहीं पूछा कि वहाँ क्या हुआ ? क्योंकि हम अंतःपुर की कन्याएँ हैं इसलिए, आपका रोब चल रहा है। आप जैसे कोई और इस प्रकार का बर्ताव नहीं करेंगे।'' उसके लिए भी श्रीराम को कोई समाधान नहीं सूझा होगा। यहाँ श्रुतिकीर्ति ने एक चतुर वकील के समान अपनी निपुणता दिखायी।

श्रीराम ने सिर उठाकर देखा । फर लक्ष्मणजी को बुलाकर सीताजी को जंगल में छोडकर आने की आज्ञा दी । राजा की आज्ञा के सामने श्रुतिकीर्ति को चुप होना ही पडा । उनकी वाक्चतुरता निरर्थक हो गई । प्रस्तुत गीत में उसके चरित्र की महानता इस प्रकार प्रस्फुटित हुई । 'लक्ष्मण जी की हँसी' नामक गीत में माँ कौशल्या ने सीता देवी से कहा ''आखिर ये बहने तुम्हारा क्या उद्धार कर सकेंगी?' 'कुश - लव की युगल कथा' में उन बहनों द्वारा किया गया उद्धार कार्य इस प्रकार प्रस्तुत हुआ है । सभी बहनों में केवल श्रुतिकीर्ति ही ऐसी बहन है जो सीताजी का पक्ष लेती हुई सठीक, सतर्क बातें कह सकी ।'' हो सकता है शत्रुघ्न को पहले से ही श्रुतिकीर्ति की इस दृढता की जानकारी हुई होगी । इसलिए उन्होंने सीतादेवी से व्यंग्य किया -

''मुग्धलुगारटो मीरु जानकी
मीवेनुक चेल्लेल्लु मुग्धलु गारा''

''हे जानकी ! क्या आप मुग्धा नहीं हैं । आपकी बहनें क्या मुग्धाएँ नहीं है ।'' हम पाठकगणों को यह समझना होगा कि उक्त बातें शत्रुघ्न ने गुस्से के साथ नहीं कहीं, बल्कि अपनी पत्नी के मनस्तत्व को जानकर ही कहा होगा । अन्याय का सामना करने के लिए डटकर खडी होकर अपनी दीदी के प्राणों की रक्षा करने के लिए यह कहने के लिए भी तत्पर हो गयीं कि रावण के प्रति हम लोगों के मन में भी मोह है । इस प्रकार की धैर्यशाली नारी है श्रुतिकीर्ति ।

* * *

19. शांता

वाल्मीकी रचित रामायण में शांता के पात्र के प्रति कोई खासियत नजर नहीं आती है । इस रामायण में केवल इतना ही बताया गया है कि ऋष्यश्रृंग के साथ अपनी बेटी का विवाह करवाकर राजा दशरथ अपने दामाद के निर्देशन में पुत्रकामेष्ठी यज्ञ करने तैयार हो जाते हैं । वहाँ पर शांता केवल नाम मात्र के लिए रह जाती हैं । विवाह के अनंतर वह ससुराल चली जाती है । पुनःउसका संबंध श्रीराम आदि के जीवन से, नहीं के बराबर ही दिखता है । वाल्मीकीजी का विचार है कि श्रीराम की कथा के लिए शाँताजी का पात्र अनावश्यक है । वाल्मीकीजी ने तो उर्मिला चरित्र को ही भुला दिया है तो शांताजी के पात्र को विस्मित करने में कोई आश्चर्य है ही नहीं । वाल्मीकी जी की दृष्टि हर समय केवल राम - कथा पर ही रही है । उनका दृष्टिकोण ही अलग है । श्रीराम के चरित्र को जितनी प्राधान्यता उन्होंने दी है, वह अन्य चरित्रों के लिए दिखाई नहीं देती । वाल्मीकीजी जिन व्यक्तियों को भुला चुके वैसे पात्र शांता, उर्मिला, श्रुतिकीर्ति, माण्डवी आदि, वे लोक साहित्य में जीवित हो उठे हैं । इनमें से शाँताजी का स्थान सबसे ऊपर है । आंध्र के लोक - कवियों ने उन्हें उच्च स्थान पर बिठाया है क्योंकि वे एक ननद हैं ।

शांता देवी चार भाईयों की बडी दीदी हैं । चार भाभियों की बडी ननद हैं । ननद के रुप में शांता देवी प्रस्तुत गीत में दशरथ जी का राजमहल छोडकर आंध्र की स्त्री के रूप में अवतरित होती हैं, जहाँ शांता यथार्थ रूप से आंध्र प्रदेश की ननद रही हैं ।

जब शांतादेवी को ससुराल भिजवाने का समय आया तब राजा दशरथ अत्यंत प्रेम और आदर के साथ बुलाकर पूछने लगे ''बेटी ! तुम्हें जो भी चीजें चाहिए माँगों !'' उस समय शांतादेवी ने जिस प्रकार की इच्छा जाहिर की उससे पता चलता है कि उनके मन में अपने भाईयों के प्रति कितना प्रेम है । उसने अपनी इच्छा जाहिर की कि चार भाईयों के शक्ल सूरत से मिली हुई चार सोने की प्रतिमाएँ उन्हें दी जाए ।

आज का रिवाज है कि ससुराल जाते वक्त अपने संग लडकियां अपने परिवार के मुख्य फोटो ले जाती हैं । उन दिनों इस प्रकार का मौका नहीं था इस कारण शांता देवी इस प्रकार की प्रतिमाएँ बनवाकर ले गई । उनके भ्रातृ वात्सल्य की सीमा नहीं हैं ।

''शांता गोविंदनाम'' एक सुदीर्घ गीत है । इसमें अत्यंत विस्तार के साथ राजा दशरथ आदि लोगों द्वारा कोकिला देवी से प्रार्थना करना, शांतादेवी के साथ ऋष्यश्रृंग के विवाह आदि वर्णनों को विस्तार से प्रस्तुत किया गया है । ''सीता जी की विदाई'', ''सीता देवी के लुकाछुपी खेल'' आदि गीतों में शाँता का चरित्र अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है । इससे भी अधिक वनवास के पश्चात अयोध्या आये हुए सीता - रामजी के साथ शांता अधिक घुलमिल गई हैं । यहाँ शांता का चरित्र अत्यंत सरस एवं रोचक दिखाई देता है । ननद का धौंसपूर्ण व्यवहार, यहाँ ननद शांता में दिखाई नहीं देता । सीताजी के प्रति शांता का प्रेम अवर्णनीय है । भाभियों के प्रति उनका प्यार भुलाया नहीं जा सकता । 'सीताजी का पंखा' 'लक्ष्मणजी की हँसी', 'उर्मिला देवी की नींद', 'कुश - लव की युगल - कथा', 'कुश - लव का युद्ध' इन गीतों में शांता चरित्र के बिना लालित्य ही दिखाई नहीं देता । 'सीता की विदाई' नामक गीत में राजा

जनक अपनी बेटी जानकी को शांता के हाथ सौंपते हैं । जब राजा जनक ने अपनी बेटी को सासों के हाथ सौंपे, तब वे अपने आँसू रोक पाये थे लेकिन जब वे ननद को सौंपने लगे तो उनके आँसू रुके ही नहीं । तब शांता ने जवाब दिया -

''जनकुडा मी बिड्डकेमी कोदुवय्या
अलरुपान्पुमीदा अमरुंडगलदु''

अर्थात् ''जनक जी ! आपकी बेटी के लिए कमी किस बात की है । यहाँ सोने की शय्या पर आराम से रहेगी ।'' कहते हुए उन्होंने धीरज बांधा । सोने की शय्या पर ही शांता ने सीताजी को नहीं बिठाया बल्कि कोमल फूल की तरह सीताजी की हिफाजत भी की । लोक साहित्य में उत्तरकांड की कथा में जब शांताजी का चारित्रिक विकास दिखाई देता है तो उसमें उक्त कथन की सार्थकता दिखाई देती है । इस तरह कभी भी शाँता ने ननद होने के अधिकार को जताया ही नहीं । भाभियों के संग मिलकर खेला करती थीं । 'सीता के लुका - छिपी खेल' गीत में शांता का चरित्र ही प्रधान रूप से उभर आता है । सीताजी के संग ही खेलने के लिए उन्होंने उर्मिला, मालवी और श्रुतिकीर्ति को बुलाया । खेल के पहले ही उन्होंने खेल के नियमों को बताया कि अगर खेल में सीताजी हारीं तो उन्हें शांता के पास ही रहना होगा । शांता ने सीताजी की आँखें मूँदी । खेल के बीच में श्रीराम जी आए थे । सारी स्त्रियाँ घबराकर सीताजी के पीछे छिप गईं। शांता को अपने भाई पर थोडा गुस्सा भी आया और प्रश्न करने लगी - ''यह क्या है श्रीराम? यहाँ तुम्हारा क्या काम है ?'' तब श्रीराम ने जवाब दिया - ''सालियाँ

खेल रही हैं तो देखने की इच्छा हुई इसलिए चला आया ।'' सालियाँ शर्माने लगीं । तो शांता ने उन्हें अपने - अपने कमरे में भेज दिया । फिर प्रसन्न होकर सीता - रामजी को खेलने के लिए कहा । खेल के बीच ही सीताजी को बुलाकर कान में रहस्य सुनाने लगीं और अपनी आँखों के इशारों से सीताजी को चोर का पता बताकर सीताजी को ही जितवाईं । आगे सीताजी से यह भी कहा कि तुम जीत चुकी हो । जीतने की खुशी में करोडों धन राशि की माँग करो । राम आश्चार्यचकित हो गए और गुस्से से कहने लगे - ''दीदी! आपने ही बताकर सीता को जितवाया है । मैं कुछ नहीं दूँगा ।'' तब शांता ने रामजी का हाथ प्यार से पकडकर हँसती हुई कहने लगीं, ''हे राम ! सीता तो तुम्हारी ही संपत्ति हैं ना, ये सीता ही तुम्हारा धन है । फिर सीता को धन देने में गुस्सा क्यों होते हो ।'' यह कहकर उस समय पति - पत्नी को उन्होंने प्रसन्न किया ।

इस प्रकार सीता - रामजी के संग खेलती - खेलती उन्होंने हर दिन आनंद को हासिल किया । श्रीराम आदि लोग जब वनवास गये तो दुःखित होकर उनकी राह देखने लगीं । तभी यह सोचकर भी दुःखित हुई कि पिता की मृत्यु की खबर उन्हें कैसे सुनाया जाय ? जब वनवास खत्म कर श्रीराम आदि वापस लौटने लगे तो उनके आने की खबर पाकर ऋष्यश्रृंग, शांता को बडे प्यार से ले जाकर स्वागत की तैयारियाँ करने लगे । दूर से ही शांता को देखकर भक्तिश्रद्धा के साथ राघव ने वहीं से प्रणाम किया । दीदी के प्रति उस भाई की भक्ति ऐसी है ।

श्रीरामजी के राज्याभिषेक के समय आनेवाले सभी सज्जनों के लिए शाँता ने ही सिंहासन तैयार किये । इस उत्सव के अनंतर भोज

की तैयारियाँ शुरु हुयीं । शांता बडे उत्साह के साथ सबको भोजन परोसने लगीं । तो श्रीराम ने उन्हें बुलाकर ऋष्यश्रृंग को परोसने के लिए कहा । वे कहने लगे - ''दीदी ऋष्यश्रृंग को बहुत अधिक परोसो ।''

पुरुषों के भोजन के उपरांत सीताजी ने शांता को रत्नपीठ पर बिठाया और स्वयं मोतियों के सिंहासन पर बैठ गयीं । कहा जाता है कि उस समय शांता और सीताजी के संग मालवी, उर्मिला एवं श्रुतिकीर्ति ने भी खाना खाया । खाते वक्त भाभियों और ननद के बीच बातों की कोई कमी नहीं रही । उसी कतार में बैठी सीताजी की माता से शांता ने कहा -''सासुजी ! सुनिए ! मेरी माँ अतिथि सत्कार नहीं कर पायेंगी । इसलिए खाने की जो इच्छा हो पूछ कर खा लीजिए ।'' शांता की बातों को सुनकर राजा जनक की पत्नी ने जवाब दिया ''बेटी । हमें किसी बात की कमी नहीं है । कमी है तो केवल दशरथ के ना होने की ही कमी है ।'' सास के साथ बातें खत्म हुई तो फिर शाँता की नजर भभियों पर पडी । उनमें भी चौदह साल नींद में मग्न उर्मिला पर अधिक पडी । इतने में कुछ सोचकर मुस्कुराने लगीं, और कहने लगीं कि चौदह साल से अन्न त्याग चुकी हो, इस कारण खीर और विभिन्न प्रकार के पकवान सब प्यार से खाओ और सरयू नदी का पानी इच्छा के साथ पियो । अब तो लक्ष्मण आ ही गये हैं । आज रात तो नींद ही नहीं आयेगी । सौमित्री के साथ जो प्यार करना है । इन बातों को सुनकर मधुर मुस्कान लिए उर्मिला चुप रहीं । लेकिन जानकी चुप नहीं हुई । छोटी बहन को जो सुनाया उसका जवाब उन्होंने दे दिया ।

''सतुल रूपेरुगनी ऋषितल्पमंदू
ऋष्यश्रुंगुलू अन्ना मी भ्रमनुंडी

मुग्धरालवुचुन्न मुग्धनो वदिने
बुद्धिनी वेनुकसुम्मु पणतुलाकेल्ला
मीरु पेद्दलु मीकु प्रति युत्तरमुलू
इच्चेटिवारु येंतटिवारु गलरु ?
वदिनेगारटा मीरु मरदल्लतोनु
नव्वेटि भाग्यमेंतटिवारिकि गलदू ?
मीवंटि वदिनगार्लु गलग भमिडि
पुवुल पूजिस्तिमों पुरुषोत्तमुलनु
अनि शांतनू मन्निंचे''

अर्थात् ''स्त्रियों के रूप से भी अनभिज्ञ हमारे भाई ऋष्यश्रृंग ही आप के वश में हैं। आप तो हे भाभी! मुग्धा हैं, आप महान बुद्धिशाली है। आप तो बडी है, आप से हम क्या कह सकते हैं ? आप जैसी भाभी के संग हँसकर बातें करने का भाग्य भी कितनों को मिल सकता है ? आप जैसी भाभी को पाने के लिए हमने सचमुच सोने के फूलों से पूजा की होगी।''

शांता समान ननद पाने के लिए सोने के फूलों से पूजा करना आवश्यक ही होता है। भोजन के उपरांत शांता ने ही सभी सुहागिनों के बालों में फूल गूँथा। फिर उर्मिला के साथ सभी को कुमकुम दिलवायीं। भरत की पत्नी के साथ चंदन लगवायीं। घर के कामकाजों में वह कितनी श्रद्धा रखती हैं।

ननद शांता को पंखा करने में सभी भाभियाँ अत्यंत श्रद्धा दिखाती थीं। पहले सीताजी ने पंखा श्रुतिकीर्ति के हाथ देकर ननद शांता को

पंखा करने के लिए कहा। अपने ननद के हृदय को जानने वाली ये बहनें अत्यंत उत्साह के साथ ननद को पंखा करने लगीं।

''लक्ष्मणजी की हँसी' नामक गीत में जब लक्ष्मणजी नींद से उठे तब श्रीराम ने हनुमान के साथ शांता को बुलवाया। तब वे मोतियों की पालकी चढकर आईं। फिर उन्होंने उनकी प्रदक्षिणा कर प्रणाम किया। तब शांता को सिंहासन पर बिठाकर राघवजी, स्वयं वहीं बैठ गए। फिर धीरे से अपने मन की इच्छा को शांताजी को सुनाया। उस अंतः पुर में सभी प्रकार के काम शांता के साथ पहले विचार - विमर्श किये बिना श्रीराम नहीं करते। इसी कारण उन्होंने अपनी दीदी से कहा कि विवाह के समय ये सभी जन बच्चें ही थे। ये लोग भाई हैं तो वे सालियाँ।

''ई वेनुक पदुनाल्गुयेंड्लु अडवुललो
तिरिगेव्वरो मरी गुर्तेरुगरैरी
वीरिकिनि वारिकिनि तगुनो लेदो
जूडवलेननि तनकु अभिलाष पुट्टे''

अर्थात् ''चौदह सालों तक वनवास में रहने के कारण उनकी शक्ल सूरत भूल ही गया हूँ। अब मेरे अंदर यह इच्छा जगी कि क्या ये सभी एक दूसरे के लिए सही हैं या नहीं। यह देखना चाहता हूँ। ''तब शांता ने उत्तर दिया - खिडकी से देखो। खाने के कमरे में से देखो। मेरे बगल खडे होकर देखो। इन सब से अंजान सीताजी, श्रीराम की इच्छा सुनकर कहने लगीं कि ये कैसी इच्छा है। मैं ने कहीं नहीं सुना कि राजाओं की भी ऐसी इच्छा होती है ? झट श्रीराम ने धैर्य के साथ जवाब दिया - ''इसके लिए मेरी दीदी ने अनुमति दे दी है।'' उनका धैर्य है कि अगर दीदी 'हाँ' कहें तो उन्हें कोई टोक नहीं पायेंगे। उनका विचार है कि

उस घर में दीदी की बातों का कोई खण्डन नहीं करते । दीदी ने भी अनुमति दी है । इस बात को सुनकर सीताजी प्रसन्न हुईं ।

अलंकृत होकर आनेवाली भाभियों को देखकर शांता ने सीता को आज्ञा दी कि - ''इनके लिए आभरण लाने के लिए कहो जानकी ! तब शांता, गौतमजी द्वारा दिये गये, और अग्निदेव द्वारा दिये गये आभूषणों को चुन चुनकर उठाकर भाभियों को अलंकृत करने लगीं । शांता के इर्द - गिर्द बैठकर भाभियाँ उन्हें कोई पंखा करती रहीं, कोई चंदन लगाती रहीं, तो कोई तांबूल देने लगीं । तब श्रीराम ने अपने भाई शत्रुघ्न से कहा कि - ''तारों के बीच विराजमान बालचंद्र जैसी बैठी हुई हमारी दीदी को तो देखो !'' अब श्रीराम को अपनी सालियों को पहचानने के लिए उनके द्वारा किये गये कार्य सहायक हुये । शत्रुघ्न की सहायता से शांता के संग बैठी हुई अपनी सालियों को श्रीराम देख पाये । सालियों को देखने के पश्चात श्रीराम के मन में भी अपने भाईयों को अलंकृत करने की इच्छा जागृत हुई । इस कारण अपने भाईयों को स्नान करवाने निमित्त अपनी दीदी को हनुमान के द्वारा खबरें भिजवाया । भाईयों के बाल धोने का अधिकार बडी दीदी शांता को ही मिलता है । जब भाईयों ने प्रणाम किया तब उस दीदी ने 'देव वाक्य' के साथ उन्हें आशीर्वाद दिया । दीदी के इस आशीर्वाद को सुनकर श्रीराम आश्चर्यचकित होने की घटना 'कुश - लव का युद्ध' - गीत में प्राप्त होता हैं ।

सदा जानकीजी को शांताजी विशेष रूप से अलंकृत किया करती हैं । जब जानकी जी अलंकृत होने लगी तब शांता ने आकर कस्तूरी - चंदन का लेप अपने हाथों से लगया । जानकी को इस तरह अलंकृत

करने वाली शांता को देखकर उर्मिला हर समय उनका मजाक उडाती थीं । 'उर्मिला देवी की नींद' नामक गीत में नींद से उठकर जब उर्मिला ने भोजन आदि कार्य पूरा कर जब बैठी तो उन्हें देखकर शांता ने सीताजी से कहा, चौदह सालों तक शैय्या पर गहरी निद्रा में मग्न होने पर भी तुम्हारी बहन की सुंदरता कुछ घटी नहीं है । सोने की प्रतिमा जैसी दीप्ति न जाने उसमें कहाँ छुपी हुई है ? कही नजर न लगे । नजर तो उतार दो । सीताजी ने झट से कहा - ''मेरी बहनों की बात छोडिये ।'' आप पहले अपने भाईयों की नजर उतारिये । क्योंकि वे लोक पालक हैं । भाईयों का प्रसंग सुनकर शांता खीज उठी । कहने लगीं कि आप सभी बहने अत्यंत सुंदर स्त्रियाँ हैं । मेरे चारों भाईयों को अपने वश में करने की निपुणता आप लोगों में हैं । इसलिए आप लोगों को ही नजर लग सकती है । आप तो अपने प्रेमपाश में जकडने वाली हैं । इस बात को सुनकर सीताजी ने कहा - ''हमारे भाई ऋष्यश्रृंग तो वन में तपस्या करने वाले एक नादान मुनि है । ऐसे मुनि को, हे मेरी प्यारी ननद ! आप ने अपने प्रेमपाश में बांध रखा है ।'' इस प्रकार उन्होंने प्रत्युत्तर दिया । शांता को प्रत्युत्तर देने की क्षमता केवल भाभी सीता में ही है । भाभी - ननद के बीच घटित हास्य संवाद आदि लोक - कवियों के सुकोमल भाव संपत्ति के उदाहरण हैं ।

''कुश - लव की युगल कथा'' गीत में शांता के चरित्र को अधिक महत्व दिया गया है । वनवास की पूर्ति के बाद सीताजी को देखने सभी नगरवासी आए । उन सबकी कुशलता सीताजी पूछने लगीं । इतने में शांता वहाँ आई । वे उनसे बातें करती हुई अपने दुःख को व्यक्त करने लगी कि ''सीता का कोई पुत्र - संतान नहीं है ।'' सभी सुहागिनों ने कहा

कि सीता को अवश्य पुत्र संतान होगा । तब शांता उनसे प्रार्थना करने लगीं कि आप ऐसा आशीर्वाद दीजिए कि सीता प्यारे से पुत्रों को जन्में ।'' शांता पहले दुःखित हुई कि सीताजी को कोई संतान नहीं है ।

नगरवासियों से बातचीत करते हुए काफी समय बीत चुका । राजमहल में श्रीराम जानकी को खोजते हुए आये तब शाँता ने अपने भाई से कहा कि ''एक क्षण भी जानकी से दूर नहीं हो पा रहे हो क्यों ।'' फिर हँसी उडाने लगीं कि ''यह कोई जंगल में जानकी के द्वारा दिये गये दवाईयों का असर तो नहीं हैं ?'' शायद पति साथ में होने के कारण सीताजी इस बार अपनी ननद को कोई उत्तर नहीं दे पाई ।

श्रीराम, सीता, शांता, लक्ष्मण मिलकर उस समय चौपड खेल खेलने लगे । शांता श्रीराम के पक्ष में थी, सीतादेवी के पक्ष में लक्ष्मण थे । 'लुका - छिपी खेल' में कनखियों के इशारे से शाँता ने जानकी को जिताया । आज शांता पर सीता देवी ने स्वयं विजय पाया । सीता के विजय से श्रीराम क्रोधित हुए । हे जानकी ! कैसी स्त्री हो तुम ? कहते हुए श्रीराम ने धनुष भंग के समय से लेकर सारी बातें सुनाने लगे तब जानकीजी को अपने जीतने की खुशी गायब हो गई और आँखों में आँसू भर आये । शांता को अपने भाई की यह बात अच्छी नहीं लगी । तब श्रीराम को डांटने लगी कि 'हे राघव ! क्या तुम छोटे बच्चे हो । सीता के साथ यह जिद क्यों ? क्या जानकी ने तुम्हें खेलने के लिए कहा ? क्या जानकी ने तुम्हें हारने के लिए कहा ? आखिर स्त्रियों के संग खेले ही क्यों । हारने पर, धन माँगने पर गुस्सा क्यों ?'' श्रीराम अपने महल चले गये । शांता के साथ बातचीत करती हुई सीताजी श्रीराम के पास

गई नहीं । तब श्रीराम क्रोधित होकर अपने सारे शस्त्रों को नारी के रूप में परिवर्तित कर दिया । बाद में वहाँ आई सीता जी यह देखकर रोने लगीं । इस बात की जानकारी पाकर शांता अपने भाई के पास आकर श्रीराम पर फिर से गुस्सा कर, सीताजी को सत्य से अवगत कराकर लौट आई ।'' सीताजी के प्रति उनका लगाव इतना अधिक है ।

अब सीता गर्भवती हुई । शांता अत्यंत प्रसन्न हुई । सीताजी कुछ नहीं खा पा रही थीं तो उन्होंने अपनी माताओं से सीताजी को खाना खिलाने के लिए कहा । अपनी माताओं से शांता ने कहा कि कम से कम आपके डर से कुछ खा लेगी । उन्होंने स्वयं सोच लिया था कि जानकी को स्वयं मायके भेज दिया जाय । नगर की सारी सुहागिनें सीताजी को देखने आईं तो शांता ने उन सब से पहले पैर धोने के लिए कहा, उसके बाद ही उन्होंने सीताजी को दिखाया । जानकी के मन में अपने माता - पिता को देखने की इच्छा हुई तो अपनी इच्छा को भी उन्होंने ननद शांता को ही सुनाया । जल्दी से सारे प्रयत्न शांता ने किये । श्रीराम के दरबार में अपनी माताओं को साथ लेकर शांता गई । दरबार में आई हुई दीदी को देखकर श्रीराम ने आने का कारण पूछा । तब उन्होंने जवाब दिया कि सीता को मायके भेजना है । उसके पश्चात वे सभी भाई राजा जनक को ही यहाँ बुला भेजे । राजा जनक के आने की खबर सबसे पहले शांता ने ही सारी बहनों को दीं । इस संतोष की घडी में श्रीराम को शिकार पर जाने की इच्छा हुई । उसी समय शूर्पणखा, यति बनकर वहाँ आई । तब उस यति को अयोध्या में शांता के पास श्रीराम ने ही भिजवाया । उस यति को देखकर शांता ने आने

का कारण पूछा, तो शूर्पणखा, शांता के सामने अपनी सारी विद्याओं का बखान करने लगी। तब शांता को शक हो गया था। शांता ने कहा यति लोगों को ऐसी शिक्षा की क्या जरूरत है, जाओ। ये शिक्षाएँ तो जादूगर के लिए आवश्यक हैं। न जाने क्यों शांता के मन में जो शक उत्पन्न हुआ वह श्रीराम के मन में क्यों नहीं उठा ? शांता में विश्लेषण करने की शक्ति है। शांता ने यति को भिजवाना चाहा और कहा कि मेरे भाई तुम जैसी स्त्री के कान - नाक काट सकते हैं, लेकिन अब तुम्हें श्रीराम ने भेजा है - इस कारण हमें तुम्हारे साथ आदरपूर्वक व्यवहार करना पडा। शायद श्रीराम की आज्ञा न हो तो शांता उस यति को अयोध्या में कदम ही न रखने देती। तब शूर्पणखा ने इस प्रकार कहा-

''रामुडु पंपग वच्चिनदान्नी
तम्मुलनुचु बेदिरिंचेवेमे''

अर्थात् ''श्री राम ने मुझे भिजावाया है। मुझे अपने भाईयों का नाम सुनाकर क्यों डरा रही हो ?'' यह सुनकर शांता, श्रीराम की नादानी पर आश्चर्यचकित हुई। वे सोचने लगीं कि ''श्रीराम के बारे में क्या कहा जा सकता है ? यहाँ पर इक्ष्वाक् वंशज राजा दिलीप, भगीरथ, दशरथ आदि ने राज किया लेकिन किसी के समय में यतियों की चर्चा की आवश्यकता नहीं हुई। आज हुई है। आज श्रीराम बंदरों के साथ सहवास कर रहे हैं। राजधर्म क्या जान पायेंगे ?'' ''विनाश काले विपरीत बुद्धि'' कहावत आज सत्य सिद्ध हुई।

उस यति को देखने आई स्त्रियों को देखकर कहने लगीं कि ''आप लोग ससुराल में रहने वाली बहू नहीं हो क्या। वहाँ कोई नीति - नियम

नहीं हैं क्या ? घर में छोटे बच्चे दूध के लिए रोयेंगे नहीं ? घर में जेठ - देवरों की आज्ञाएँ नहीं है ? यहाँ आने के लिए आप पर कोई रोक - टोक नहीं हुई ? यह राजमहल सबके लिए आम जगह बन गया।'' फिर आँखों में आँसू भरकर सोचने लगीं कि राजा दशरथ के मरने के उपरांत यह राजभवन एक मेला सा हो गया है। यह बातें सुनकर सभी लोग अपने घर चली गयीं। इतने में रानियाँ कौशल्या, सुमित्रा, कैकेयी उस यति को देखने आईं। देखते ही शांता को और गुस्सा चढ गया। शांता ने कहा राजा दशरथ के मरने के बाद आप लोग भी यति - पूजा करने चली आईं। यह सुनकर वे सभी छोटा सा मुँह लेकर वापस चली गईं।

शांता की इस वाक्पटुता को देखकर शूर्पणखा ने कहा - ''सबके ऊपर हुकुम चला रही हो। यहाँ तुम अपने खाने निमित्त ब्राह्मण स्त्री बनकर आई हो। हे शांता ! इतनी बडी - बडी बातें क्यों कर रही हो।'' यति की बातें सुनकर शांता को और भी गुस्सा आ गया। फिर जानकी ने शांता से कहा - ''इससे बातें करना बेकार है। कुछ देकर इन्हें विदा कीजिए।'' तब सीताजी से उस यति ने कहा कि ''उसे रावण का चित्रपट चाहिए।'' तब सीताजी ने कहा - ''मैं रावण को नहीं जानती?'' तब उस यति ने सीताजी से कहा कि ''रावण के चित्रपट के अलावा उसे कुछ नहीं चाहिए।'' इतने में राम के आने की घंटी सुनाई दी तब यति ने सीताजी से कहा कि ''न जाने श्रीराम का हाल अभी कैसा होगा ? जल्दी से रावण का चित्रपट खींच दो। राम ने स्वयं मुझे भेजा है न जाने वे क्या कहेंगे।'' इस प्रकार यति जानकी को उकसाने लगी।

वह चुडैल उस समय रावण के चित्रपट में प्राण फूँककर उसे जानकी जी के सिर पर डाल दी। उसे देख शांता आदि लोग घबराने

लगीं । वहाँ पर शांता ने उस चित्रपट को आग में डलवा दिया लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ । कुँए में डलवा दिया लेकिन तब भी उस चित्र पट के प्राण उडे नहीं । तब उन्होंने विवश होकर सोचा कि श्रीराघव जब आयेंगे तो उनको कसम देकर यहाँ की सारी बातें सुनायेंगी । लेकिन उस चित्रपट ने उनके दांपत्य जीवन को तोड ही दिया । एकांत गृह में श्रीराम के सामने वह चित्रपट खडा हो गया । उसे देख सीताजी के प्रति श्रीराम के मन में जगा शक का बीज एक क्षण में ही महावृक्ष का रूप धारण कर गया ।

कई लोगों ने कई प्रयास किये लेकिन श्रीराम के शक का निवारण नहीं हुआ । शांता जी श्रीराम के पास आकर कहने लगीं कि 'सीता ने कोई अपराध नहीं किया है, अगर वे अपराध करतीं तो क्या मैं तुम्हारे आने तक उसे रोकती ?'' और आगे कहने की कोशिश की कि ''अगर तुम सूर्यवंशी हो ? और क्षत्रिय धर्म को मानने वाले हो ?'' लेकिन श्रीराम ने उन्हें कहने का मौका नहीं दिया । श्रीराम ने कहा ''अगर मैं सूर्यवंशी नहीं हूँ, तो क्या तुम सूर्य वंशिनी हो ? तुम क्षत्रिय धर्म को मानने वाली हो । अरे दीदी । तुम तो ब्राह्मण स्त्री हो । यहाँ शरण ले रही हो तो बेकार की बातें क्यों कर रही हो ? उस समय तो बुजुर्ग ने तुम्हें यहाँ लाकर रखा, आज मैं तुम्हें भिजवा देता हूँ चलो । अपना बोरिया - बिस्तर बाँध लो । कपडे देकर विदा कर देता हूँ । इस तरह खाने के खातिर हमारे शरण आयी हो ?'' रामजी ने इन वाक्यों के आगे ''दीदी'' कहकर संबोधित भी किया । यहाँ सीतादेवी पर क्रोध के कारण उन्होंने ऐसा कहा । वरना इनके मन में ''दीदी'' के प्रति गौरव

की भावना कभी नहीं गई । इसी कारण इस दशा में भी उन्होंने बोरिया - बिस्तर देने की बात कही है । विवश होकर शांता रोने लगी । इनका दुःख यह नहीं है कि भाई ने उन्हें दुत्कारा है बल्कि उनका दुःख जानकी के लिए है । जानकी की प्राण - रक्षा के लिए है । भाई द्वारा इतना धिक्कार पाने के पश्चात सीताजी की बहनें उनके पास आकर बाहर चलने के लिए कहने लगीं तो स्वयं वे उन्हें बाहर ले गई । असल में सीताजी की बहनें शांता को साथ ले जाने आई । अपनी भभियों को देखकर शांता अत्यंत दुःखी हुई । भाभियों ने ही उन्हें धीरज बंधाया ।

''चिन्नदानवा यम्मरो नीवु
मीरु पेंचिन तम्मुलु कारा
येक्कड बुध्दुलु वच्चेनु चेपुमा''

अर्थात् ''हे भाभी ! तुम छोटी तो नहीं हो । आपने ही तो अपने भाईयों को पाला - पोसा है, फिर भी न जाने उन्हें ये गुण कहाँ से आ गए ?'' यह कहती हुई वे सब शाँता की चरणों पर गिर पडीं । उनको लगा कि शांता से बढकर उनकी रक्षा करनेवाले और कोई नहीं है । शांता ने उन्हें उठाया और कहा ''मैं अब क्या कर सकती हूँ ? अब दरबार में आपको ही चलना पडेगा । यहाँ मेरी बात की कोई कदर ही नहीं हैं । आप लोग अब जाकर राजा की शरण लीजिए ।'' यह कहकर वे उन्हें सभा में ले गई । श्रीराम पर किसी की बातों का असर नहीं पड़ा । सीताजी का संहार करने के लिए, लक्ष्मणजी उन्हें जंगल ले गए । वध करने से पहले सीताजी ने कहा - ''हजार जन्मों में भी शांता ही मेरी ननद बने ।'' शांता की भाभी बनने के लिए वे हजार जन्म पाने के लिए प्रार्थना कर रही हैं । भाभी-ननद के बीच का प्यार ही अतिसुंदर है ।

सीताजी का संहार कर आनेवाले लक्ष्मणजी को देखकर श्रीराम ने सीता के क्रिया - कर्म करने निमित्त शांता को बुलाने के लिए कहा । उस दिन चले जाने की आज्ञा देने वाले श्रीराम आज सलाह मशवरे निमित्त बुलवा रहे हैं । श्रीराम ने तो बुलाया है लेकिन उनकी दीदी ने जवाब दिया कि - ''जब सीताजी को जंगल भिजवा रहे थे तब क्या मेरी सलाह ली है ? भिजवाने वाले राघव हैं, मारनेवाले तुम हो ! तुम दोनों मिलकर यह कार्य भी निपटा लो ।'' दीदी के तिरस्कार से छोटे भाई को दुःख हुआ होगा । यहाँ शांता के मन में अपने भाईयों से बढकर जानकी के प्रति ही अधिक प्रेम दिखायी देता है । इससे भी बढकर सीताजी तो निर्दोष हैं । एक निर्दोष पर अकारण ही आगे - पीछे न सोचकर मरवाने वाले भाई को वे किसी भी तरह क्षमा नहीं कर पाई ।

दसवें दिन सीता देवी के नाम पर जल छोडा जा रहा था । तब यमुना के तट पर बैठकर दुखित होने वाली शांता को कोई भी सांत्वना नहीं दे पाये । अक्षत किस प्रकार सुहागिनों पर डालना है, यह जानने के लिए श्रीराम ने फिर से शांता को बुलावा भेजा । तब उन्होंने जवाब दिया कि जिन हाथों से उनका वध किया है उन्हीं हाथों से कीजिए । उनका क्रोध अभी तक थमा नहीं ।

उस रात, भाई लक्ष्मण के पास आने पर शांता ने कहा - ''अगर तुम सूर्यवंशी हो और अगर तुम अपने भाई के छोटे भाई हो, तो तुमने जिस शस्त्र से सीताजी का संहार किया उसी से मेरा भी अंत कर दो ।'' ऐसी स्त्री केवल आंध्र प्रदेश के लोक - कवियों की ही सृष्टि हो सकती

है । इसके अलावा इस प्रकार की स्त्री के बारे में न हमने कहीं सुना है, ना ही देखा है ।

लक्ष्मणजी ने जब यह कहा कि ''उन्होंने सीताजी का संहार नहीं किया'' तब जाकर शांता को आनंद हुआ । सीताजी के खातिर शांता ने खाट पकड लीं । खान - पान त्याग दिया । जिस हालत पर सीताजी की बहनें भी नहीं पहुँचीं उस दशा तक ये पहुँच गई । शांता की इस विषम स्थिति के बारे में कई लोगों ने श्रीराम को बताया भी था । श्रीराम दीदी के पास आकर कहने लगे, ''दीदी ! मैं निर्दोष हूँ । मेरी गलती को माफ कर दो । और तुम खाना नहीं खाओगी तो मैं भी नहीं खाऊँगा'' यह कहते हुए दीदी के चरणों पर गिर पडे । सीता देवी के विरह में श्रीराम का नीरस पडना स्वाभाविक है लेकिन यहाँ तो शांता के प्राणों पर ही आ बनी । सीताजी के ऊपर शांता के प्रेम का वर्णन अवर्णनीय है । उनका प्रेम अपार है । बिना किसी स्वार्थ के संपूर्ण मन से उन्होंने सीताजी से प्रेम किया । दिखावे के लिए नहीं, बल्कि उन्होंने सच्चे दिल से सीताजी से प्रेम किया है । शांता के पात्र का चित्रीकरण लोक कवियों ने ऐसे किया है जैसे श्रीराम से भी बढ़कर शायद शांता ने ही सीताजी से अत्यधिक प्रेम किया हो ।

शांता के मन में सीता जी के प्रति प्यार की भावना को भरत जानते हैं । इसी कारण जब सीताजी को पुत्र संतान हुआ तो वे भागते हुए शांता के पास आये और इस खबर को उन्होंने सुनाया । भरत जानते हैं कि सीताजी के जीवित रहने की खबर सुनने के बाद वे कोई भी उपहार देने के लिए तैयार हो जायेंगीं । इसी कारण उन्होंने उपहार की माँग की ।

मुनि - आश्रम के लोग जब जच्चे - बच्चे के लिए तेल देने आए तो उन्हें एक ओर बुलाकर शांता ने कहा - ''आप लोग ही सीता के लिए माँ - बाप, रिश्तेदार सब कुछ हैं ।'' सीता के प्रति शांता के मन के प्यार को इस प्रकार पग - पग पर लोक कवि प्रदर्शित करते ही रहे । बच्चे को गोद लेकर सीताजी चिंतित होने लगी कि शांताजी अगर होती तो किस प्रकार इनका पालन - पोषण करतीं । सीता देवी लोरी के गीत इस प्रकार गाने लगीं कि - ''सोने की कटोरी में दूध, घी डालकर बुआ शांता आने ही वाली हैं, रोना नहीं ।

''कुश - लव का युद्ध'' नामक गीत में श्रीराम को अपने सपने में सीता देवी और पुत्र दिखाई दिये । इस विषय को श्रीराम ने अपनी दीदी को बताया । उन्होंने कहा - ''जब से मैंने जन्म लिया तब से कभी भी कोई भी स्वप्न नहीं देखा । आज मेरी पत्नी और पुत्र दिखाई दिये। दीदी! ये कैसा स्वप्न है ?'' लेकिन दीदी मौन रहीं । उसके बाद श्रीराम ने कहा कि मैंने अश्वमेध यज्ञ करने का निश्चय किया है । तब भी शांता मौन रहीं । उस समय श्रीराम ने कहा कि ''बहुत काम रह गये हैं तुम सोचकर बताना ।'' यह कहकर जाने की तैयारी करने लगे तब शांता ने जवाब दिया - ''अवश्य करो राघव ! बिना कुछ कहे मैं भी आऊँगी ।'' शांता ने इन वाक्यों को गुस्से में ही कहा । लेकिन श्रीराम ने उसे सच मान कर बाल धोने निमित्त शांता को लाने के लिए छोटे भाई के हाथ खबर भिजवाया तब शांता ने उस भाई से कहा कि ''राम - लक्ष्मण आप हैं तो हमें इन यज्ञों से क्या मतलब ? आप दोनों भाई सलाह - मश्वरा आपस में कर सकते हैं तो हमें इन यज्ञों से क्या मतलब ? जब

भाभी को वध कराने के लिए भेजा उस समय क्या एक बार भी श्रीराम ने मेरी सलाह माँगी है ? और क्या तुमने भी जानकी के कुशल - मंगल का समाचार सुनाया ? जंगलों में जानकी अपने पुत्रों के साथ खुश हैं । यही मेरे लिए काफी है । अब मैं कहीं नहीं आऊँगी ।'' लक्ष्मण, दीदी के इस धिक्कार से घबरा गये । भाई से कहने लगे कि ''भले ही किसी और को बुलाओ तो वे अवश्य आयेंगे, लेकिन दीदी नहीं आयेंगी ।'' इस प्रकार दीदी के गुस्से का सामना लक्ष्मणजी को करना पडा । ''पांडुरंग माहात्म्य'' काव्य में निगम शर्मा की दीदी अपने भाई द्वारा किये जानेवाले यज्ञ में स्वयं सम्मान पाने की इच्छा रखती हैं लेकिन यहाँ श्रीराम यज्ञ करते समय दीदी को बुलाने पर भी वे नहीं आती हैं । वे अपने भाई द्वारा की गई गलती को माफ नहीं कर पाई । ऐसे भाई द्वारा किये जानेवाले यज्ञ में उन्हें सम्मान के साथ बुलाने पर भी उन्होंने मनाकर दिया । प्रारंभ में इतना नकारने पर भी न जाने अंत में क्या सोचा होगा, अंत में शांता यज्ञ स्थान पर आ ही गईं । सोचने लगी कि ''मैं ही क्यों बुरी बनूं'' इसलिए श्रीराम को आशीर्वाद देने आ गईं । श्रीराम को आशीर्वाद देने के पश्चात अश्व के माथे पर उन्होंने गर्व से लिखवाया ''वीर रघुपति द्वारा छोडा गया अश्व ।''

बिना किसी कारण सीतादेवी को वनवास भेजने के कारण शांता अत्यधिक क्रोधित हुई । कुश - लव से युद्ध करते हुए जब तीनों भाई बेहोश हो गये तो स्वयं श्रीराम युद्ध करने चल पडे । उस समय दीदी को प्रणाम करने के बाद ही युद्ध के लिए आगे बढे । प्रणाम करने वाले भाई को उठाकर शांता ने आशीर्वाद दिया कि ''हे मेरे लाल, महालक्ष्मी

और पुत्रों के संग वापिस आजाओ । भाई लोगों के साथ, सेना के संग सीता के साथ सिंहासन पर आरुढ होकर हे राघव ! राज्य भार संभालो ।'' दीदी के आशीर्वाद वचन सुनकर श्रीरामजी आश्चर्यचकित हुए । ''यह किस प्रकार का आशीर्वाद है'' और उन्होंने कहा कि - ''इस प्रकार असत्य वाक्य क्यों बोल रही है ?'' तब शांता ने कहा - ''ये सब वाक्य सत्य ही होंगे और पुत्रों को लेकर ही आओगे ।'' उस निर्मल मन से निकले हुए दीदी के वाक्य सत्य ही निकलेंगे । भाई को इस प्रकार आशीर्वाद देती हुई यहाँ श्रीराम को और पाठकगण को भी उन्होंने आगे की कथा का संकेत दे दिया । उनके वाक्यों में निहित सत्य को जानने की कुतूहलता हुई । युद्ध के लिए रवाना होते हुए राम ने गर्व के साथ ढिंढोरा पिटवाया कि हम शांता के भाई हैं । शांता के भाई कहलवाने में ही उस भाई को गर्व महसूस होता है । शांता के प्रति श्रीराम के मन के प्रेम को व्यक्त करने वाली हर एक घटना को इन लोक - कवियों ने वर्णित किया है ।

वाल्मीकी के आश्रम में 'सीता - राम' के मिलन की रात में, श्रीराम नींद से उठकर अपने पुत्रों की दशा के बारे में सोचते हुए चिंतित हुए । उनकी आँखों में आँसू भर आये । श्रीराम को देखकर सीता देवी ने पूछा ''क्यों इतने दुखित हो रहे हैं ?'' और आगे पूछने लगीं ''क्यों शांताजी का कोई सपना आया ?'' इसका मतलब है शांता के बारे में कोई सपना आने पर श्रीराम सह नहीं पाते हैं । इससे पहले के अनुभव के कारण ही सीतादेवी ने श्रीराम से उस दिन भी इस प्रकार का प्रश्न किया । जानकीजी अपने पुत्रों के संग आ रही हैं, यह खबर शांताजी को बतलाने के लिए सभी उत्सुक हैं । इतने में ऋष्यश्रृंग जी आए और

उन्होंने कहा - ''जब मैंने कहा जानकीजी सुखी जीवन बिता रही हैं, तो तुमने विश्वास नहीं किया ? आज मैं देखकर आया हूँ तो बोलो अब मुझे क्या दोगे ?'' तब पत्नी ने जवाब दिया कि मक्खन लगाकर मीठा पकवान और पापड खिलाऊँगी । उस मुनि को शायद मीठे पकवान पसंद होंगे । इसी कारण शांता स्वयं ये सब पकवान बनाकर उन्हें खिलायीं ।

सीता देवी अपने पुत्रों के संग अयोध्या पहुँची । सभी लोग सीतादेवी के पुत्रों के सौंदर्य को मुग्ध होकर देखने लगे । शांताजी को डर लगा कि कहीं उनके भतीजों को नजर न लग जाये । इस कारण उन्हें अंदर जाने के लिए कहा । शांताजी के डर को जान कर उन स्त्रियों ने कहा कि ''जानकी के पुत्रों को मुट्ठी भर रुपयों से नजर उतार कर हे शांता ! हम सबमें बाँट दो ।'' इन बातों को सुनकर सीतादेवी ने जवाब दिया - ''जंगलों में घूमने वाले मेरे पुत्रों को किसी की बुरी नजर, क्या उतारना ? इससे अच्छा है शांताजी के भाईयों की नजर उतारिये ।'' तब शांता ने जवाब दिया ''हमारे भाईयों को क्यों ? तुम सभी सुंदर बहनों को ही मैं नजर उतारूँगी ।'' इस प्रकार जानकीजी के साथ हास - परिहास करने लगीं । जानकी - शांता के बीच में इस प्रकार के सरसपूर्ण संवाद सालों बीतने पर भी बदले नहीं । इतने साल बीतने के पश्चात भी ऐसे संवाद पाठकों के मन में नई अनुभूतियों को ही जगा रही हैं । कहा जाता है कि शांताजी और सीतादेवी के इन सरसपूर्ण संवादों से सभी लोग आनंदित हुए ।

वे सभी स्त्रियाँ सीतादेवी से उनकी समस्याओं के बारे में पूछने लगीं । सहजता के साथ सीतादेवी भी जवाब देती गई । बीच में सीता देवी ने

कहा - ''शांता जी हमें भूल चुकी हैं लेकिन मैं आप लोगों को कभी नहीं भूली ।'' सीताजी की बातों को सुनकर शांता ने शांतपूर्वक जवाब दिया - ''पुत्रों को देखने के लिए मैं तडपती रही हूँ, मैं कैसे भूल पाऊँगी ।'' इस व्यंग्य को सीता जान गई । झट से उन्होंने जवाब दिया कि ''भाईयों को देखकर भूल गई ।'' सोने की सीता की प्रतिमा को देखकर भूल गयी हैं ।'' तब शांता ने जवाब दिया कि ''क्या मैं ने सीता की सोने की प्रतिमा देखी? आज ही मैं ने देखा है । मेरे लिए तो सोने की सीता तुम्हीं हो ।'' श्रीराम के द्वारा बनवायी गयी स्वर्ण सीता की प्रतिमा को शांता ने नहीं देखा । शांता ने जिस सोने की सीता को देखा वह तो प्राणों वाली सुंदरी है । इस प्रकार लोक - कवियों ने शांता के शील का वर्णन अत्यंत रमणीयता से चित्रित किया है ।

हो सकता है कभी सीता देवी या शांता दोनों ने सरसपूर्वक बातें की होंगी लेकिन आज भी उनके बीच घटित हास्यपूर्वक संवाद तेलुगु प्रांत के हृदयों में स्थित है । शांताजी के समान स्त्री का चित्रीकरण करने वाले आंध्र के लोक - कवि निश्चय ही अत्यंत सम्माननीय हैं।

आंध्रों की युवतियाँ अगर शांता जैसी बन जाएँ तब जो भी कष्ट सीतादेवी को मिले हैं वैसे सभी कष्टों को ये स्त्रियाँ आनंद से झेल पायेंगी । आंध्र की युवतियाँ सभी शांताजी की वारिस ही बनें ।

* * *

20. कौसल्या

श्रीराम को महर्षि विश्वामित्र ने ''कौसल्या ! सुप्रजा ! रामा !'' कहा और महाकवि वाल्मीकि ने ''कोसल्या नंदवर्धना'' संबोधित किया । इस प्रकार उन दोनों ने उन के गुणों को सराहा । फिर भी श्रीराम को नाम की प्रतिष्ठा दिलाने वाली हैं कौसल्या । देवकी ने तो कृष्ण को केवल जन्म देने का ही भाग्य पाया है, पालने का नहीं । कौसल्या ने तो दोनों भाग्य पाये हैं जन्म देने का और पालने का भी ।

वाल्मीकी ने अपने काव्य में कुछ हद तक ही कौसल्या के पात्र का चित्रीकरण किया है । वहाँ वे अंतःपुर की स्त्री ही रहीं हैं, लोक कवियों ने उन्हें तेलुगु प्रांत की माँ के रूप में चित्रित किया है । 'कौसल्या के दोहद', 'कौसल्या के वमन' आदि गीत विशेष रूप से इनके ऊपर ही रचे गये हैं ।

'कौसल्याजी की गोद भराई' गीत में विशेषतः श्रद्धा के साथ रामजी के जन्म को लेकर ही वर्णित किया गया है । उसी गीत में कौसल्या श्रीराम को रत्न जटित पदक देती है । कहीं नजर न लग जाय इसके लिए वे गालों पर काला टीका भी लगाती हैं । ''चमकते हुए उन गालों को चूमने के लिए न जाने कौन सी तपस्या कौसल्याजी ने की होगी'' कहते हुए तेलुगु पद कवि त्यागराजु ने उनकी तपस्या के सामने प्रणाम किया ।

''सीतादेवी की विदाई'' गीत में सीताजी की माँ अपनी समधिन कौसल्या जी का हाथ पकड कर बुलाई और उन्हें तख्ते पर बिठाकर हाथ

में हाथ डाल कर आलिंगन किया, फिर अपनी बेटी को सौंप कर कहने लगी कि ''मैंने अपनी बेटी आपको सौंप दिया है, अब आप चाहे उसे पानी में डुबो दो या घी में।'' इसे सुन कौसल्या जी ने धीरज बांधा कि

''एलनाग नी बिड्डकेमी कोदवम्मा
अलरूपान्पुमीद अलरूंडगलदु''

अर्थात् ''वहाँ आपकी बेटी के लिए कमी क्या है, प्रेमपूर्वक शय्या पर आसीन होगी।'' जैसे उन्हें हामी भरी वैसे ही जब तक सीताजी उन के पास रहीं प्यार से ही पालीं। ससुराल में ही सीताजी रजस्वला हुई थीं। तब कौसल्या जी ने पंचांग दिखाकर तिल और गुड के लड्डू बनवाकर सुहागिनों को हल्दी कुंकुम दिलवाई। उसके बाद सुहाग रात का आयोजन किया। रामजी के शयन गृह को कौसल्या जी ने विभिन्न कीमती वस्तुओं से सजाया। पके हुए कपिथ फल सीताजी को अच्छे लगते हैं कहकर श्रीराम के द्वारा मंगवायीं। खूब सारा इत्तर मंगवाया था। प्रणाम करने आये बहू बेटे को यह कहकर वे आशीर्वाद देती हैं कि ''उन्हे जल्दी से पोते दें। बहू को बाजू बुलाकर सीख देती हैं कि,

''ओ कान्तामणि ! नीतो नी कान्तुडू पलिकिना पलुकुलनु परकांत केरिगिंचकु

अर्थात ''हे कांता! तुम्हारे पति ने तुम्हें जो भी बातें बतायीं, उन सब बातों को दूसरी स्त्रियों के सामने मत कहना।'' वे उन्हें दूध में ही नहाई। यह एक दिन की बात नहीं बल्कि सीतारामजी के हर रोज के कार्यों में वे सदा सीताजी के ही पक्ष में रहीं।

''सीता और गुलाल'' नामक गीत में जब सीताजी समय पर ध्यान दिए बिना गुड्डा गुड्डी के खेल में मग्न थीं तो सास कौसल्या आकर कहने लगीं,

''अन्नपानालु अटु एरूगकुंडा
इटुवलेने आटलु यटु मरगिनावे
आ कोडलिनि येत्तुकोनि अत्ता कौसल्या
अंतःपुरम्मुलकु अटु वेग वच्चे
पयिडि पल्लेमुलो भक्ष्यभोज्यमुलु
आरगिंचबेट्टे अत्ता कौसल्या''

अर्थात् ''खाना - पीना भूल कर इस प्रकार खेल में मग्न होना कब से सीखा है। बहू को गोद लेकर सास कौसल्या उन्हें जल्दी से अंतःपुर ले गई। वहाँ सोने की थाली में विभिन्न प्रकार के स्वादिष्ट भोजन रखकर सास कौसल्या ने उन्हें खिलाया।'' कहा जा सकता है कि कौसल्या जी ने अपनी बेटी शांता के समान ही सीताजी को भी पाला है। इससे भी यह कहना उचित होगा कि शांता के समान ही नहीं बल्कि उनसे बढकर ही सीताजी की देखभाल उन्होंने की है।

सासुमाँ के हाथों पेट भर खाने के बाद आराम से सीताजी, रामजी पर गुलाल छिडक कर भाग कर आयीं और सास से लिपट गयीं। भाग कर आई हुई सीताजी को देखकर कौसल्याजी ने पूछा,

''अत्ता कौसल्यनु अटु कौगिलिंचे
ओयम्म नी गुंडेलदुरूचुन्नावी

नीतोडी आडिन चेलिकत्ते लेवरू
निनु बट्टुकोनिवस्ते परिगेत्ती वस्तिवा ?''

अर्थात् ''भाग कर आते ही सास से लिपट गयीं। तब कौसल्याजी ने पूछा कि हे सीता ! तुम्हारा दिल क्यों जोर से धडक रहा है, कौन सी सखियाँ तुम्हारे संग खेल रही थीं ? क्या उनमें से कोई तुम्हें पकडने आयीं तो तुम भाग कर आ गयीं ?''

इतने में श्रीराम खूब सारा गुलाल बनवा कर छिडकने आ गए। आते ही माँ को सारी बातें सुनाने लगे कि,

''ओयम्मा मामीद वसंतमुलु जल्ली
मुच्चुवलेने वच्ची दागियुन्नादि
अंपुमनि श्रीरामुडटु पलुकगानु
अंपननि कौसल्या इटु पलुकगानु''

अर्थात् ''हमारे ऊपर गुलाल छिडक कर देखो यहाँ आकर बडी नादान सी छुप कर बैठ गयी है। यह कहते हुए श्रीराम ने सीता को भिजवाने के लिए कहा तो माँ कौसल्या ने भिजवाने से मना कर दिया।''

सास कौसल्या तो बहू पर मक्खी तक तो बैठने नहीं देतीं और गुलाल भी छिडकने नहीं देतीं। एक दिन श्रीराम ने अपने कमरे की चिटकनी इसलिये लगा दी क्योंकि सीताजी को आने में थोडी सी देरी हो गई थी। सीताजी ने बहुत मिन्नतें कीं फिर भी रामजी ने दरवाजा नहीं खोला। उल्टा उन्होंने जवाब दिया कि मेरे साथ बिस्तर और खाट हैं। सीताजी को तब सासजी की याद आई।

''अंकिंचिपोयेने अत्ता वासमुनकु
अत्ता कौसल्यकु अन्नी देल्पगनु
तल्ली कौसल्योच्चे रामु दग्गरूकु
दशरथुनी पुत्रुडवु जनकुनि अल्लुडवु
भूदेवल्लुडवु बुद्धटरा नीकु
सीता जेसिन तप्पु सीघ्रना जेप्पु
नाकु येरिगिंचरा ननुगन्न तंड्री''

अर्थात् ''जल्दी से सीतादेवी सास के निवास गयीं। सास कौशल्याजी को सारा समाचार सुनाने के लिए गयी। तब माँ कौशल्या, रामजी के पास आयीं। तुम तो राजा दशरथ के पुत्र हो और राजा जनक के दामाद हो। भूदेवी के दामाद होकर भी तुम्हारी अक्ल को हो क्या गया है ? जल्दी से बताओ कि आखिर सीता ने क्या गलती की है। हे मेरे लाडले ! मुझे समझाओ।'' इस प्रकार कौशल्याजी ने प्यार से प्रश्न किया तब मुस्कराते हुए सूर्य वंशज श्रीराम ने रत्न जटित चिटकनी खोल दी। ''सीता - कुंडी'' नामक गीत में यह विषय प्रस्तावित है। बहू की गलतियों को दस गुना बढाकर दिखाने वाली सासें हजारों मिल जायेंगी। बहू की गलती को एक क्षण में ही नकारने में समर्थ सासें विरले ही मिलती हैं। ऐसी साँसों में कौशल्याजी सदा ही आगे रहती हैं। कौशल्याजी अपने बेटों से भी अधिक प्यार बहुओं से करती हैं। अपनी बहू ही नहीं सब की बहुएं भी उन के लिए अत्यंत प्रिय हैं।

''उर्मिला देवी की नींद'' नामक गीत में जब ऊर्मिला और लक्ष्मण चिंतित थे, तब कौशल्याजी ने ही उन्हें सांत्वना दी और चमेली के तेल

उन के बालों में लगा कर उन के बाल धोयीं । सुमित्राजी से भी पहले उन्होंने ही उनके कुशल - मंगल की खबर लीं ।

''सतीपतुला चिंत जूची कौसल्या
संपेंगनूने देच्ची
रत्नपीठमुला नुंची कौसल्या
दंपतुलकु सिरसंटेनु''

अर्थात् ''पति - पत्नी को चिंतित होते हुए देख कर कौसल्याजी चमेली की तेल लायीं । फिर कौसल्याजी उन्हें रत्न जटित तख्ते पर बिठा कर उन दंपतियों के बाल धोयीं ।''

केवल बाल धो कर ही तृप्त नहीं हुई बल्कि जब सुमित्राजी उन्हें खाना परोस रहीं थीं, तब कौसल्याजी चांदी की कटोरियों से घी बडे चाव से परोसने लगीं । शांताजी ने लक्ष्मण को ''कौसल्या का लाडला'' कहकर संबोधित किया । कौसल्याजी के लिए केवल राम ही नहीं बल्कि सभी बेटे लाडले ही हैं और सभी बहुएं भी लाडली ही हैं । गर्भवती सीता को उन्होंने स्वयं खाना बना कर खिलाया ।

''अनुदिनमु कोडलिकि ता वड्डिंचे
अत्ता पेट्टिना भयमुन सिग्गुगा
रूचुलतोडा नन्नमु भुजियिंचे''

अर्थात् ''हर दिन बहू को स्वयं ही खाना परोसती थीं । सास के डर से और शरम के कारण सीताजी भी स्वादिष्ट खाना खा लेती थीं ।

खेल खूद में सीताजी खाना खाना भी भूल जाती थी । तब गोद में उठाकर भोजन खिलाने वाली स्त्री कौसल्याजी ही हैं । जब सीताजी गर्भवती हुई तब भी कौसल्या जी ही स्वादिष्ट भोजन खिलाती थी । इसीलिए तो ''भोज्येशु माता'' कहते हैं । कौसल्याजी का यह गुण श्रीराम से संबंधित घटना में मिलता है ।

श्रीराम चौदह साल के पश्चात् वापिस आकर माँ कौसल्याजी को प्रणाम करने लगे । वे अपने दुःख को रोक नहीं पायीं । आँखों से अश्रुओं की धारा बहती गयीं । उन्होंने कहा, ''हे मेरे लाडले ! आप तो कभी भी राजमहल के खाने के अलावा कुछ और तो खा नहीं पाते थे, इतने समय तक न जाने किन वनों में कौन कौन से फल खाकर, किस तालाब से पानी पीकर गुजारा किया ?'' कहती दुखित होने लगी तो श्रीराम ने उदासीनता से अपनी माँ को जवाब दिया,

''कूरेमी नारेमी क्षुत्तु बापुटकु
नारेमी चीरेमी नडुमु गट्टुटकु
अडवायेनेमी अयोध्यायेनेमी
ए राज्यामायेनेमी तमकुंडुटकुनु
पूरीपान्पायनेमी पान्पायनेमी
पट्टेमंचमायनेमी पवलिंचुटकु''

अर्थात् ''भूख मिटाने के लिए क्या साब्जी - वब्जी ? क्या वल्कल, क्या साडी कमर में बांधने के लिए ? हमें रहने के लिये कोई भी राज्य क्यों न हो, जंगल हो या अयोध्या क्या फरक पडता है ? झोंपडी का खाट हो या सुंदर पलंग, सोने के लिए क्या फरक पडता है ?

कहते हुए वन की सारी कठिनाइयों को बडी सरलता से टाल दिए । विलासी जीवन बिताने के उम्र में बेटे के मुँह से इस प्रकार के वैराग्य पूर्ण वचनों को सुनते ही वह माँ बेहोश हो गयीं । माँ का हृदय कितना तडपता है, कितनी पीडा हो सकती हैं, इन विषयों को लोक कवियों ने अत्यंत सहजता से वर्णित किया है । कौसल्या माँ की मात्रु - भावना को जताने के लिए यह घटना एक मील पत्थर समान साबित होती है ।

रावण के चित्र पट को देखकर जब श्रीराम ने सीताजी को संहार करने की आज्ञा दी तब माँ कौसल्या ने श्रीराम से जो बातें कहीं व वाक्य सीताजी के प्रति उन के मन के प्यार को जताती हैं ।

''औरा ! राघवा ! अनि ता बिलिचे
सीतकु नेरमु लेदु जूडुमी
सीतनु कावुमि शीघ्रम्मुननु
तल्लिननुचुने युडिगितिगानी
तल दुंतुनु यिंक येवरैना''

अर्थात् ''हाय राघव ! कहते हुए बुलाकर कहने लगीं, इसमें सीता की कोई गलती नहीं है, सीता की रक्षा जल्दी से करो, मैं तुम्हारी माँ हूँ इसलिए तुम से पूछ रही हूँ, तुम्हारे बदले अगर कोई और होते तो मैं उनका सिर काट देती ।''

उन्होंने कहा, सीता की कोई गलती नहीं है, जो तुम कर रहे हो उससे मैं सहमत नहीं हूँ । मैं तुम्हारी माँ हूँ इसलिए तुम बच गए, तुम्हारी जगह कोई और होते तो उनका सिर काट देती । अपना बेटा है सोचकर इस बार उन्होंने उन पर दया की है । लेकिन श्रीराम माँ की बातों का

मान नहीं रख पाये । श्रीराम जी पिता की बातों का तो पालन कर पाये लेकिन माँ की बातों का पालन करने में असमर्थ ही रहे ।

यज्ञ के समय जब तीनों भाई बेहोश हो गए तब श्रीराम ने ही युद्ध की तैयारी की । युद्ध के लिए निकलते समय माँ की अनुमति लेने के लिए हनुमान को माँ के पास भिजवाए । विषय की जानकारी पाकर कौसल्याजी ने कहा,

''रामुडेमी ? पैनंबेमी ?
यज्ञवेदिकायग्निहोत्रंबुलु
विडिचि येक्कडिकि वेल्लुटा ?''

अर्थात् ''श्रीराम ? कहाँ जा रहे हैं ? यज्ञशाला और हवन को छोडकर कहाँ जाने का इरादा है ? हवन को छोड कर कहाँ जा रहे हैं ? यहाँ बुलाओ ।'' कहकर उन्होंने हनुमान को आदेश दिया ।

युद्ध के लिए जा रहा हूँ, कहने वाले पुत्र से उस माँ ने जवाब दिया,

''वद्दु वद्दु आ युद्धभूमिकि
वेल्लवद्दु राघव यनेनु''

अर्थात् ''नहीं नहीं, उस युद्ध भूमि में मत जाओ हे राघव !'' तब श्रीराम ने कहा ''माँ आप के मुँह से इस प्रकार के वचन अपजय सूचित करते हैं । माँ!'' कहकर उन्होंने माँ से प्रार्थना की, तो कौसल्याजी ने कहा,

''अपजयंबुलु गाक इप्पुडु
जयमयियुंडुना राघवा नीकु

यिरुवुरी तम्मुला कय्यमुनकु
अप्पगिंचितिमि अंते चालु
ब्रतिकियुंटेनु बहूनाल्लकु
येरयेग सुखमुला पोंदगवच्चु
सौमित्रिनि सेनलातोनी शीघ्रमुगानु
रम्मनी बंपु हयमु वद्दु
अयोध्यलो युंडुमि नीवु अनेनु''

अर्थात् ''अब क्या ये सब अपजय नहीं तो और क्या हैं। राघव ! अब तुम्हें ये सब जीत समान लग रहे हैं ? दोनों भाइयों को तो युद्ध भूमि में छोड ही चुके हैं, इतना काफी है। अगर जीवित रहें तो कई दिनों के बाद ही सही, बहुत सारी खुशियाँ पा सकते हैं। अब सौमित्री को खबर भेज दो कि अपनी सेना के साथ लौट आयें। वह अश्व भी नहीं चाहिए। अब तुम अयोध्या में ही रहो।''

यह कहा नहीं जा सकता है कि कौसल्याजी की बातों में सच्चाई नहीं है। उनका कहना है कि जब दो बेटों को युद्ध - भूमि को सौंपने के बाद अब जीत का क्या मतलब है ? उनका आक्रोश है कि अब तो यज्ञ समाप्त कर जो बचे हैं वे कम से कम लौट आयें। हो सकता है वे वीर माता की तरह आदेश नहीं दे पायीं। इस घटना में तो उनका मातृ - हृदय इसी प्रकार की बातें कह पायेगा।

वे तो महा पराक्रमी श्रीराम की जननी हैं। लेकिन अब इन विषम पारिस्थितियों में वे कह रही हैं कि युद्ध और यज्ञ दोनों को छोडकर

केवल उनकी आँखों के सामने ही रहें। सगे पुत्र को ऐसे बाँधकर रखने में ही नहीं बल्कि सौतेले बेटे के अनौचित्य कार्य का खंडन भी उन्होंने इसी प्रकार किया है।

''गुह - भरत का अग्निप्रवेश'' नामक गीत में भरत अग्निप्रवेश करने चल पडे यह सोच कर कि पंचमी के दिन श्रीराम लौटे नहीं। तब कौसल्याजी वहाँ छाती पीटती हुई चली आयीं। वहाँ भरत की सगी माँ कहीं नहीं दिखाई दीं। वहाँ आते ही वे भरत से कहने लगीं ''यह क्या कर रहे हो ? इस प्रकार अग्निप्रवेश करना क्या तुम्हें शोभा देता है ?'' आप लोगों को पाने के लिए राजा दशरथ ने कितनी तपस्याएँ कीं ? कितने यज्ञ किये ? कहती हुई उनके जन्म वृत्त का वर्णन करने लगीं। मैं ने जिसे जन्म दिया वे तो मुनियों के हो गए, अब तो कम से कम तुम तो हमारे पास रहो। लोग कहते हैं कि ''सौतेले पुत्र की मौत त्यौहार के समान होती है, लेकिन मैं ऐसी नहीं हूँ। तुम हमारे सामने ही रहो। तुम्हारी माँ ने जो हमारे साथ किया है वह तो भुलाया नहीं जा सकता है, फिर भी तुम्हारे बिना तुम्हारी माँ जीवित नहीं रह पायेगी।

''कैकम्मा रघुराम चेसिन चेत
इहमुलु गृंकिना मरपुरादय्या
नीवग्नि जस्तेनु नीतल्ली नेडु
ब्रतिकेडी विधमेमी भरतुडा चेप्पुमा।''

अर्थात् ''रघुराम के प्रति जिस प्रकार का बर्ताव कैकेयी ने किया है, वह तो जीवन की समाप्ति तक भुलाया नहीं जा सकता है, लेकिन

अगर तुम आग में कूदकर अपनी जान दे दोगे तो आज तुम बताओ कि तुम्हारी माँ किस प्रकार जीवन यापन करेंगी ? कह कर प्रश्न कर फिर आगे कहने लगीं कि ''अब तुम प्रश्न कह सकते हो कि आखिर मैं कैसे जीवित रह रही हूँ ?''

''ना केमी भरतुडा नीवुंडगा !'' अर्थात् हे भरत ! जब तक तुम मेरे साथ हो तो मुझे किस बात की कमी है ?'' कहकर उन्होंने समाधान दिया। वे ऐसी मात्रु मूर्ति हैं जिनकी ऐसी सोच है कि वे भरत के रहते हुए अपने आप को पुत्रवती ही मानती हैं। वे कहती हैं कि अगर तुम आग में कूदना ही चाहते हो तो मुझे भी आग में डाल दो। फिर दुखित होकर कहने लगीं कि ''मैं अपने आप कूदना चाहती हूँ, लेकिन हे भरत! मैं पत्थर समान बन गयी हूँ।''

इतने में अपने आप को संभाल कर कहने लगीं कि तुम्हारे भाई - भाभी अवश्य आजायेंगे। तुम्हारे भाई को तुम्हें दिखाने की जिम्मेदारी मेरी है। अग्नि - प्रवेश मत करो। अगर तुम प्रमाण मांगोगे तो मैं यही कहूँगी कि मेरी बायीं आँख फडक रही है। इसलिए जल्दबाजी मत करो, हे भरत ! कहती हुई उन्हें रोकने का प्रयास करती हैं। यहाँ लोक कवियों को यह गुस्सा है कि जिस कैकेयी ने भरत के लिए राज्य माँगा है वे कैकेयी भरत के प्राणों की रक्षा करने के लिए प्रयत्न क्यों नहीं कर रहीं हैं ?''

यहाँ कौसल्याजी का इस प्रकार भरत को रोकना, यह अत्यंत रोचक घटना है। कवि पोतना की द्रौपदी यह जानती हुई भी उनके पुत्र को मारने वाले वे ही हैं, फिर भी अश्वत्थामा के प्राणों की भीख माँगती

है। वहाँ द्रौपदी अन्य स्त्री के प्रति दया के कारण अश्वत्थामा के लिए प्राणों की भीख मांगती है।

यहाँ तो कैकेयी ने स्वयं श्रीराम को वनवास भिजवाया। अपने पुत्र को केवल राज्य दिलाने मात्र से वे तृप्त नहीं हुई, श्रीराम को वनवास भिजवाकर, कौसल्याजी को सगे पुत्र से दूर भी कर चुकीं कैकेयी के इन कृत्यों के कारण राजा दशरथ मर गए। अकारण ही सभी को सुहागिन होने से वंचित होना पडा। सब से बढकर वे उनकी सौत हैं। फिर भी कौसल्याजी ने भरत से मिन्नतें कीं कि अगर भरत जीवित नहीं रहेंगे तो उन की माँ जीवित नहीं रहेंगी।

कवि पोतना की द्रौपदी से भी लोक कवियों की कौसल्या का स्तर ऊँचा हो गया है। लगा कि ''अहा ! कितनी महान है कौसल्या।'' अगर द्रौपदी का दिल स्त्री के लिए चिंतित हुआ है तो कौसल्याजी ने तो माँ की वेदना को ही बरसाया है। लोक कवियों ने यह उपाधि दी है न कि ''सत्य पुरूषों को जन्म देने वाली साध्वी कौसल्या।'' इस उपाधि को पाने वाली उस साध्वी के कार्य कितने महान हैं।

* * *

21. सुमित्रा

राजा दशरथ की पत्नियों में सुमित्रा अत्यंत विवेकशील हैं। वाल्मीकी जी ने उस पात्र का चित्रीकरण अत्यंत उदात्त रूप से किया है। वे सौमित्री की सगी माँ हैं। शत्रुघ्न को जन्म देनेवाली वीर माता भी वही हैं। वे वाक्चतुर हैं। लोक कवियों ने भी उदात्तता को नष्ट किये बिना उस पात्र का चित्रीकरण किया है।

शांता देवी को गोद लेते समय में सब लोगों के समझाने पर भी रानी कैकेयी जाने के लिए तैयार नहीं हुई। जब रानी कौशल्या ने जाकर बुलाया तब उन्होंने जवाब दिया कि तुम पुत्रों को जन्म दो मैं तो बांझ बनकर ही रह जाऊँगी। विवश होकर उन्होंने अपने पति को बताया तब राजा दशरथ को सुमित्रा की याद आई। उन्होंने कहा वाकचतुरता में प्रवीण सुमित्रा को भेजो। कहा जाता है कि रानी सुमित्रा के समझाने पर रानी कैकेयी मान गई। सुमित्रा के समझाने पर वे जाने के लिए तैयार हो गई।

न जाने रानी सुमित्रा ने रहस्यपूर्वक क्या कहा कि कार्य में सफलता मिल गई। रानी सुमित्रा की चतुरता यहाँ पर प्रकटित हुई जिस सफर के लिए राजा दशरथ, कैकेयी को मना नहीं पाए उसे रानी सुमित्रा ने करके दिखाया।

ऋष्यश्रृंग के रूप को देखकर रानी सुमित्रा का सहृदय मन रो पडा कि वे शांता के लिए योग्य वर नहीं हैं। श्रीराम के लोरी गीत में श्रीराम आदि के जन्म, नामकरण तथा झूले में डालने के वर्णन चित्रित किये गये

हैं। उस दिन रानी सुमित्रा ने स्वयं हल्दी, चंदन, फूल, इत्तर, पान के पत्ते आदि सजाकर सारी सुहागिनों को दिया है। दस किस्म के पकवान सहित, अच्छे नारियल भी सुमित्रा ने उन सुहागिनों को दिया। रानी सुमित्रा के इस प्रकार करने के पश्चात रानी कैकेयी ने भी सुहागिनों को तांबूल दिए। सुहागिनों को तांबूल देते समय रानी सुमित्रा का विनयपूर्वक व्यवहार जहाँ झलकता हैं वहीं तांबूल देते समय रानी कैकेयी का अहंकारपूर्ण व्यवहार झलकता है। इसका वर्णन लोक कवियों ने किया है।

''सीता की विदाई'' नामक गीत में राजा जनक की पत्नी ने सीता का हाथ रानी कौशल्या, रानी कैकेयी, रानी सुमित्रा और शांता जी के हाथ सौंपा। उस विदाई के समय उन्होंने क्या कहा है यह तो नहीं मालूम, लेकिन रानी सुमित्रा के हाथ जब वे सौंपने लगीं तो उस माँ ने अपने अंदर के सारे दुःख को उनके सामने व्यक्त किया। हो सकता है कि रानी सुमित्रा के चेहरे को देखकर, उनके विनयपूर्ण व्यवहार को देखकर जानकी की माता को लगा होगा कि अपनी बेटियों को इनके हाथों सौंपने में कोई डर नहीं है।

जानकी की माँ ने कहा - 'घी बनाना भी इन्हें नहीं आता ? सारे काम इन्हें सहनता से सिखाइये। जब तक इसे ठीक से अकल नहीं आयेगी, तब तक धीरे से समझाते हुए काम सिखाइये। इसे तो खाना माँगना भी नहीं आता इसलिए आप ही पूछकर खिलाइये। चावल खिलाकर पालो या अमृत पिलाकर, छोटी बच्ची को आपके हाथों में सौंप रही हूँ।''

''सिरिवंटि कोडलु हरिवंटि कोडुकू
मा बाला कादु सुमी मी बाला सुम्मि''

अर्थात् ''लक्ष्मी समान बहू, हरी समान बेटा है । अब ये हमारी लडकी नहीं आपकी ही लडकी है ।'' इस प्रकार सौंपने वाली उस माँ को देखकर रानी सुमित्रा ने कहा -

''तल्लिदंड्रादुलु अत्तमामलुनु
येल्ल बांधवुलुनु अयिंतिकिपुडु
एलनाग मी बिड्डु केमी कोदवम्मा
अरुपान्पुमीद यटु पवलिंचु

अर्थात् ''अब तो इस युवती केलिए माँ - बाप, सास - ससुर, नाते-रिश्ते इस चारों ओर हैं । आपकी बेटी के लिए आखिर यहाँ क्या कमी है । फूलों की शैय्या पर वह आराम से आसीन होगी'' कहते हुए उन्होंने धीरज बाँधा । तब उस माँ ने फिर कहा -

''कोम्मुटेनुगुवंटि कोमारूल्ल गनुनू
आडपडुचुलगन्ना अलपुसोलपेरुगु''

अर्थात् ''आप ने तो सुंदर हाथी जैसे बेटों को जन्म दिया है । बेटियों को जन्म देने की पीडा आप क्या जाने ?'' सुमित्रा ने जब उसका जवाब दिया

''मीरेला आ माटा आनतिच्चेरु
नाकु वोक्काडपडुचु नगरान गलदु
दशरथु कूतुरु शांतगिरि कन्ना

कौसल्या गाराबुपट्टी सुमि वदिना
मी सीता मा शांता सममुगा नुंडु
नम्मुमा पूबोणी नलिनायताक्षी
चेप्पिना पदि माटलु विनिपिंचुकोनी
कौगिलिंचुकोनी कन्नीरु निंचे''

अर्थात् ''आप ऐसे क्यों कह रही है । मेरी भी एक बेटी नगर में है । हे भाभी ! राजा दशरथ की बेटी शांता रानी कौसल्या की लाडली है । आपकी सीता और हमारी शांता दोनों साथ रहेंगी । हे कमलाक्षी इस बात पर विश्वास करो । इस प्रकार दस बातें सुनाकर आँखों में आँसू भरती हुई उनसे गले मिली ।'' सुमित्रा के द्वारा कही गई बातें सुनकर उन्होंने रानी सुमित्रा का आलिंगन किया । सीता - श्रीराम की पत्नी हैं । कौसल्या की बहू है, फिर भी सीता जी की माँ ने अत्यंत प्यार से रानी सुमित्रा को ही अपनी बेटी को सौंपा है । क्योंकि रानी सुमित्रा ने उस माँ को धीरज दिलाया । राजा दशरथ की बात - ''सुमित्रा वाक्चतुर हैं'' सर्वदा सत्य है । रानी सुमित्रा सहृदयी है इस कारण जानकीजी की माँ ने सोचा कि अपनी बेटी को उन्हें सौंपना ही सही है । रानी सुमित्रा के शील को व्यक्त करने के लिए इतना काफी है ।

लक्ष्मणजी जब भाई के संग वनवास जाने की आज्ञा माँगने के लिए आए तब ''संक्षिप्त रामायण'' नामक गीत में सुमित्रा ने कहा

''बालप्रायपुवाड चिन्निलक्ष्मणुडा
पन्नेंडुयेल्लदिया जनकसुता

पलुकंगनेरदु पनुलु नेर्वदु
रामु जूतामंटे बलुराजसुंदु
एंडवानलु तानु येरुगडु एन्नडू
अडवुलले नेट्लु चरियिंचनेर्चु
अडवुलकेगुमनी येट्लु दीविंतु
एन्नडु चूलाचे येन्नडू गंटी
येन्नडू पेंचितिरा निन्नु रघुरामा
येन्नडु पेंड्लाये भूमेलुटेपुडु''

अर्थात् ''छोटी सी उम्र वाले हे मेरे लक्षमण ! राजा जनक की बेटी केवल बारह वर्ष की हैं। बोलना भी ठीक से नहीं आता न काम करना आता है। श्रीराम की बात लो तो, वे पहले से ही राजसी ठाठ - बाट दिखाते हैं। उन्होंने भी तो कभी गर्मी, बारिश नहीं जाना। जंगल में कैसे वास करेंगे ? और मैं, कैसे वनवास जाने के लिए आशीर्वाद दूँ। कहती हुई दुखित हुई। कल - परसों ही तो शादी हुई है। कल परसों ही तो राजा जनक ने आपनी बेटी को विदा किया हैं। आज उन्हें वनवास जाते हुए देखना पड रहा है। वनवास जाने के लिए मैं कैसे आशीर्वाद दूँ।'' इस प्रकार के विचार वाल्मीकी कृत रामायण में नहीं मिलते। लक्ष्मण ने अपनी माँ को बताया कि वे सीता - रामजी के संग वनवास जा रहे हैं। उस माँ ने मना नहीं किया। वाल्मीकी कृत रामायण में सुमित्रा कहती है,

''रामम् दशरथं विध्दि, माम् विध्दि जनकात्मजाम्
अयोध्यामटवीम् विध्दि, गच्छ तात यथासुखम्''

इस श्लोक की भावना के साथ लोक कवियों ने 'सुमित्रा लंका यज्ञ' नामक गीत में कुछ और तथ्यों को भी जोडा है। वहाँ रानी सुमित्रा, लक्ष्मण को विस्तार से बताती हैं कि उन्हें क्या - क्या कार्य करने चाहिए।

''श्रीरामुलु तंड्रिगा सीतम्मा तल्लिगा भाविंचु लक्ष्मुमय्या
प्रोद्दु प्रोद्दुने लेची वदिने पादम्मुलकु दंडमयिना बेट्टुमी
तोटल पंड्लन्नी दोन्नेल बेट्टुकोनी मुंदुगा देच्चियिम्मु
पदुनालुगेंड्लु तर्लीपोयिना मीरु कलया रम्मनी पलिकेनु''

अर्थात् ''हे लक्ष्मण ! श्रीराम को पिता समान, सीता जी को माँ के समान मानकर चलो। सबेरे उठकर भाभी के चरणों को प्रणाम करो। वन में जो भी फल मिले उन्हें टोकरी में भरकर पहले लाकर उन्हें ही देना। जब चौदह साल बीत जायें तो आप सब मिलकर वापस आ जाओ।''

भाभी के पाद चरणों को प्रणाम करने के लिए वे आदेश देती हैं क्योंकि वे जानती हैं भाई को तो वे प्रणाम करेंगे ही। भाई के प्रति उनकी भक्ति ही ऐसी हैं और भक्ति न हो तो स्वयं भाई के संग, खुशी - खुशी वनवास जाने के लिए कौन तैयार होंगे ? यहाँ रानी सुमित्रा विशेष रूप से भाभी के पाद - चरणों को प्रणाम करने के लिए आदेश देती हैं। इतना ही नहीं वन के सारे फल टोकरी में भरकर पहले उन्हें देने के लिए कहती हैं। यहाँ ''सभी'' और ''सबसे पहले'' शब्द अर्थयुक्त हैं। ''सभी'' का अर्थ है सभी प्रकार के और दूसरा शब्द ''सबसे पहले'' का अर्थ है कि ''स्वयं पहले खाये बिना'', यह अर्थ यहाँ ध्वनित है। वन

के विभिन्न प्रकार के फलों को, पत्तों से बनी टोकरी में भरकर स्वयं उन्हें खाये बिना, भाभी को देने का आदेश वे देती हैं । अपनी माँ के इन आदेशों को सौमित्री ने श्रद्धा से निभाया । एक दिन भी उन्होंने कुछ नहीं खाया । सब से पहले लाकर अपनी भाभी को ही सौपे । ''ऋषियों के आश्रम'' नामक गीत में

''खर्जूरफलमुलु कदलीफलंबुनु
अंजूरफलमु अमृतफलमुलु
सारपप्पुनु मंची सारमवु पंड्लु
अरगामग्गिन अरटीपंड्लुनू
कंदमूलंबुलु घनमुगा देच्ची
वंडमनी लक्ष्मणुडु वदिनेकु निच्चे''

अर्थात् ''खजूर फल, केले फल, अंजीर फल, अमृत फल, लाकर लक्ष्मण जी ने अपनी भाभी को दिए । फिर कंदमूल लाकर पकाने के लिए कहा ।'' अत्यंत स्वादिष्ट फलों को खाते हुए, सीताजी ने श्रीराम से लक्ष्मण को भी देने के लिए कहा । उन बातों को सुनकर श्रीराम ने जवाब दिया कि इतने फल इकट्ठा कर लाने वाले लक्ष्मण क्या इन फलों को चखा नहीं होगा ? खाया नहीं होगा ? मेरे भाई को जीने की कला आती है । हो सकता है कि इस भाई को जैसे श्रीराम ने कहा जीने की कला आती हो लेकिन इंद्रजीत के वध करने की घटना में यह साबित हो गया था कि वनवास के समय उन्होंने कुछ भी नहीं खाया था ।

पुत्र को इस प्रकार पाल - पोसकर बडा करने के लिए उस माँ को तो बधाई देनी ही चाहिए । रानी सुमित्रा शिक्षित नारी है, सद्गुणी है,

इसी कारण लोक - कवियों ने उनके चारित्रिक विकास में इतनी उदात्तता निभायी । युद्ध के समय जब सौमित्री बेहोश हुए, उस संदर्भ में श्रीराम को सद्गुण संपन्न सुमित्रा जी की याद आई । शिक्षित, सद्गुणी से अब मैं क्या कहूँगा ? यह सोचते हुए वे दुखित हुए । सर्वगुणों से परिपूर्ण श्रीराम के द्वारा यह प्रशंसा पाना कि ''सद्गुणी सुमित्रा'' हैं, इस प्रकार की प्रशंसा पाने वाली उस माँ का जन्म धन्य है ।

''श्रीराम राज्याभिषेक'' नामक गीत में राजा श्रीराम को जब सुग्रीव ने माणिक का हार भेंट में दिया तो उस हार को श्रीराम ने सीता को देते हुए कहा कि - जिसके कारण तुमने जीवन में उन्नति पाई उन्हें इस हार को भेंट के रूप मे दे दो । तब वे हनुमान को बुलाकर उस हार को उन्हें सौंपती है । जीवन में उन्नति पाने के निमित्त जानकी जी ने हनुमान को हार भेंट के रूप में दिया तो अपने पुत्र के प्राणों की रक्षा करनेवाले हनुमान को रानी सुमित्रा ने भी स्वयं कई भेंट सौंपे ।

''संजीवी पर्वतंबेत्तिना हस्तमुला
सुमित्रा पच्चला कडियालु बेट्टे''

अर्थात् ''जिन हाथों से संजीवनी पर्वत को उठाकर लाए उन हाथों में सुमित्रा ने हीरे के कंगन पहनाए ।'' उस माँ को लगा कि जिन हाथों से वे संजीवनी पर्वत उठाकर ले आये उन हाथों के लिए कुछ भी दिया जाए फिर भी वे ऋणमुक्त नहीं हो पायेंगी । फिर भी हीरे के आभूषण देकर उन्होंने अपनी कृतज्ञता को व्यक्त किया । इतनी महान हैं रानी सुमित्रा । ''सीता का पंखा'' नामक गीत में जब सीताजी और शांता जी साथ बैठी थीं । तब,

''शांतकु सीतकु श्रुतकीर्ति सुरटी
विसरग चेतिभूषणालरया
मालवी सीता पादारविंदमुलु
मरि वत्तगा उर्मिलाकुमणिचिव्वा
सरसमाडेटी सतुलु सौभाग्यवतुलू
कोलविच्चेटी सतुलु कोलिचेटी सतुलू
क्षीरकन्यक चुट्टू वारधी नडुमा
कोरि केंदामरलु तीर्चिनट्लुंडा
तनुतामरलु कोन्नी विकसिंचिनट्लु
तगिनपुष्पाला चे तावि गोन्नट्लुंडगा''

अर्थात् ''शांता को और सीता को श्रुतिकीर्ति पंखा करने लगीं तो मालवी, सीता के पाद चरणों को दबाने लगीं। तब उर्मिला ने तांबूल बना कर दिया। इस प्रकार प्रेम जतानेवाली स्त्रियाँ, सेवा पाने वाली स्त्रियाँ, सेवा करने वाली स्त्रियाँ सौभाग्यवती स्त्रियाँ हैं। यह दृश्य ऐसे लगा जैसे लक्ष्मी देवी के इर्द गिर्द सरोवर के बीच लाल लाल कमल कतार में खिली हों।

इस दृश्य को सुमित्रा ने देखा। सीता और शांता अपनी बहनों के संग इस प्रकार आनंदित होकर बैठी हैं। इस दृश्य को देखकर रानी सुमित्रा की खुशी की सीमा नहीं रही। जल्दी से जाकर यह खबर उन्होंने रानी कौसल्या को सुनायी।

''सुमित्रा तनकनुला जूची ता बोयी
कौसल्याकिट्लनेनु संतोषमुननु

अक्क चूस्तिवे मना चक्रधरुल सतिनी
कंदुवा माटला कनकगिरिनुन्ना
कमलजुनी सतिमोदलु कामुरती वेनुका
इंद्रसति सहितमुगा चंद्रसति जेरी
इंद्रादी देवतांगनलेल्ला कोलुवा
मन गृहंबिंत पावनमायेनेडु
जानकिनि रामचंदृडु पेंड्लियाडा
शांता कूतुरुगानु सीता कोडलुगानु
नोचिन नोमुलन्नियु सफलमाये''

अर्थात् यह दृश्य देखकर सुमित्रा आनंदित हुई और तुरंत राणी कौसल्या को बुलाकर यह दृश्य दिखाकर कहने लगीं कि दीदी ! देखा, हमारे बेटे चक्रधर की पत्नी को, इंद्र की सति भी आकर सीता देवी के संग बैठ गयी। इंद्र आदि सभी देवता गण भी आकर उनकी सेवा में लगे हैं। जब से श्रीराम ने जानकी से विवाह किया तब से हमारा गृह पवित्र हो गया है। शांता को बेटी के रूप में और सीता को बहू के रूप में पाकर आपके द्वारा किये गये सारे व्रत सफल हो गये हैं।

अगर यह सोचा जाए कि सीता जैसी बहू को पाना व्रत का फल हो सकता है तब सुमित्रा जैसी सास को पाना भी अद्भुत ही होगा ना !

जो विचार रानी कौशल्या को नहीं आये ऐसे विचार रानी सुमित्रा को आये।

सुमित्रा के इस प्यार को देखकर रानी कौशल्या बहुत ही खुश हुई।

''चल्लनी चूपुला सौमित्री गन्ना
चेल्लेला निनु बोलगलरे चेल्लेल्लु''

अर्थात् ''दया से युक्त आँखों वाली, सौमित्री को जन्म देनेवाली, तुम जैसी बहन कहीं किसी और को मिलेंगी क्या !'' कहती हुई रानी कौसल्या ने बहनों से बढकर उन्हें सम्मान दिया ।

इर्ष्या नामक शब्द ही सुमित्रा नहीं जानती और उसके अर्थ को जानने का मौका ही नहीं है । सुमित्रा ने यह कभी नहीं सोचा कि जानकी, रानी कौसल्या की बहू है अपनी ही बहू मानकर वे प्रसन्न हुईं । छोटी बहू श्रुतिकीर्ति को स्वयं अपने साथ ले गईं । रानी सुमित्रा राम के दरबार में जाते समय श्रुतिकीर्ति को साथ लेकर सोने की पालकी चढीं । रानी कौशल्या के प्रति गौरव और रानी कैकेयी के प्रति प्रेम जताने वाली रानी सुमित्रा अपनी बहुओं को भी इसी प्रकार शिक्षा देती थी कि सासों के प्रति कोई भेदभाव न जताए । कहा जाता है कि उर्मिला, रानी कैकेयी की पालकी में आई थीं।

''उर्मिला देवी की नींद'' गीत में रानी सुमित्रा ने बेटे को पास बिठाकर उर्मिला को सोने की थाली में विभिन्न प्रकार के पकवान परोसे । गाय का घी, फलों के रस परोसे ।

थके - मांद आये बेटे के लिए रानी सुमित्रा ने शैय्या तैयार की । रेशमी तकिए से शैय्या सजाकर उस पर इत्तर भी छिडकी । सींखा का पंखा, चंदन, कस्तूरी, कटोरियों में मंगवाई । सुपारी, पान के पत्ते, चूना वहाँ पर रखवायी । उस राजगृह में बेटे और बहू के सोने के कमरे को

सजाने के लिए हजारों सेवकों के रहने के बावजूद भी स्वयं इस माँ ने उन्हें खाना खिलाकर उनकी शैय्या तैयार की। रावण के चित्रपट को देखकर जब श्रीराम ने सीता का वध करने का निश्चय किया तब माँ कौसल्या ने कहा - ''सीता की कोई गलती नहीं है । तुमने जो काम किया उसके लिए हम इसलिए चुप रहे क्योंकि तुम हमारे बेटे हो । अगर कोई और होते तो उनका सिर काट देते ।'' फिर भी श्रीराम माने नहीं । अब वहाँ सुमित्रा ने अत्यंत सहनशीलता से प्रश्न किया कि - ''अगर सीता की गलती होती तो क्या हम तुम्हारे आने तक ठहरते ? हम लोग ही सजा दे देते । गलती करनेवाले की रक्षा करने की कोई आवश्यकता नहीं है। सीता निर्दोष है । हे राघव ! क्या तुम अभी बच्चे हो ! अगर सीता ने गलती की होती तो हम तुम्हारे आने तक रुकते क्या ? सुमित्रा का विचार है कि जो गलती करे उन्हें झट से सजा दी जा सकती है । उनकी वाकचतुरता इतनी कठिन परिस्थितियों में भी कमजोर नहीं पड़ी।

''रामायण'' के अंतर्गत जितने भी स्त्री पात्र हैं उनमें से इनका स्थान उन्नत हैं । सुमित्रा के पुत्र होने के कारण ही लक्ष्मण इतने सुशील स्वभाव के हुए । उनके पुत्र होने के कारण ही 'सौमित्री' के रूप में प्रसिद्ध हुए । माँ के नाम के आधार पर प्रसिद्धि पाने वाले पुत्रों में सौमित्री ही प्रथम हो सकते हैं । सुमित्रा - सौमित्री - रामकथा के दो नेत्र हैं ।

* * *

22. कैकेयी

साधारण लोगों के दिलों में कैकेयी पात्र के बारे में कोई गौरव की भावना नहीं है । संस्कृत के नाटक रचनाकारों ने थोडा सा प्रयास किया था कि कैकेयी को निर्दोष साबित करें, लेकिन उनका प्रयास प्रयासमात्र ही रह गया है ।

लोक - काव्यों में उनकी दशा और भी दयनीय हो गई । उन्होंने प्रारंभ से ही कैकेयी को निर्दयी एवं क्रोधित नारी के रूप में चित्रित किया । ''शांता गोविंदनाम'' गीत में कैकेयी का पात्र पूरी तरह से वाल्मीकी कृत पात्र से भिन्न रहा है । शांता को लाने के लिए राजा दशरथ और कौसल्या की मिन्नतें करने पर भी वे नहीं आई । किसी तरह सुमित्रा की बातों पर चल पडी । कैकेयी को आते देखकर राजा दशरथ ने कहा -

''नाकु वशमु कादु गोविंदा
नल्ल राई अदि गोविंदा रामा
पाषाणमनी पल्के गोविंदा !

अर्थात् ''मेरे वश की बात नहीं है, गोविंदा ! वे काले पत्थर समान हैं, गोविंदा रामा ! पाषाण हैं गोविंदा ।'' राजा दशरथ को इतनी दुखित करने वाली कैकेयी क्या कौसल्या को सम्मान दे पायेंगी ? रानी कैकेयी के पास मंथरा को मिलाकर कुल तीन सेवक हैं, वे हैं - मंथरा, कौसल्या और सुमित्रा ।

सफर में रथ टूट गया था अगर पीछे मुडते तो सारा प्रयास बेकार जाता । तब राजा ने कैकयी से कहा कि ''मैं तुम्हें वरदान दूँगा । रथ को उठाओ ।'' तब कैकेयी सोने की कलम लाकर और उस से सोने की तख्त के ऊपर 'ओम' के साथ प्रारंभ कर 'गोविंदा' नाम से शुरु करते हुए लिखवाया कि श्रीराम को चौदह सालों तक वनवास दिलवाते हुए, भरत को राज्याभिषेक किया जाय । इन लोक कवियों ने पाठकों के मन में ऐसी भावना पैदा की कि रानी कैकेयी के मन में राम के जन्म से पहले ही ऐसी इच्छा रही होगी । इस प्रकार की कल्पना कर पाठकों के मन में द्वेष - भावना को जगाया है ।

कहा जाता है कि उन्होंने अपनी छोटी उँगली से ही रथ को उठाया था । शाँता को ले जाने की खुशी में राजा दशरथ के परिवार के सदस्य कैकेयी को भूल गए । शांता के पिता ने उन्हें देखा तब राजा दशरथ को खबर भिजवाया गया तब रानी सुमित्रा और कौशल्या ने आकर उन्हें ले जाकर राजा को सौंपा । इस प्रकार का वर्णन यहाँ पाया जाता है । कैकेयी को भुलाना क्या है ? उन्हें तो अपने परिवार के संग खुद ही चले जाना चाहिए था । रानी सुमित्रा और कौसल्या के शील से कैकेयी के शील को नीचा दिखाने के लिए ही हो सकता है लोक - कवियों ने इस प्रकार का वर्णन किया है । यहीं पर और एक घटना का वर्णन हुआ है कि ''पुत्र कामेष्ठी यज्ञ में कैकेयी अपने हारों को तोड मरोड कर बिलखती, रोती हुई आती है । उन्हें देखकर मुनि ऋष्यश्रृंग ने कहा ''मेरे विवाह को गुजरे इतने दिनों में कभी भी मैं ने इस प्रकार की स्त्री को नहीं देखा । आखिर ये स्त्री कौन हैं ?'' तब उनसे कहा

गया कि वे राजा की तीसरी पत्नी हैं । तब अत्यंत कठिनता से दर्भों के सहारे राजा के और इन की कमर को मिलाकर बांधा गया ।

खीर को लाकर रानी कौसल्या ने सुमित्रा को प्यार से खिलायी । लेकिन रानी कैकेयी रानी सुमित्रा को देखकर ''सौत के यहाँ जबरदस्ती से आई हो क्या ?'' कहकर उन पर उबल पडी ।

लोक - साहित्य में कैकेयी को और भी नीचा दिखाने की कोशिश की गयी । वहाँ हनुमान, श्रीराम, कुश - लव के द्वारा कही गई बातें उनके शील को और भी छोटा कर देती हैं ।

''गुह और भरत'' नामक गीत में श्रीराम यह जताने के लिए कि माँ की इच्छा की पूर्ति उन्होंने कर दी है, इस कारण सबसे पहले वे कैकेयी महल में आकर प्रणाम करते हैं । तब कैकेयी अत्यंत प्रेम से उन्हें उठाकर आशीर्वाद देती है । उस समय हनुमान कहते हैं कि

''आनाडोक्कडु रघुरामुडुंडगनु
पोम्मनि पंपगा पोये सुमि तल्ली
नेडिंदरमु गलमु नेलतरो विनवो''

अर्थात् ''उस समय तो केवल रघुराम ही थे । वे माँ की आज्ञा पाकर चले गये । लेकिन हे माँ ! आज हम सब के सब इनके साथ हैं ।'' यह सुनकर कैकेयी शर्मिंदा हो गई । उसके पश्चात श्रीराम के समझाने पर भी हनुमान के सामने तो वे अपने आप को छोटी ही मानने लगीं ।

सीतादेवी को संहार करने के लिए जब श्रीराम ने निश्चय किया तब कैकेयी ने श्रीराम को समझाने की कोशिश की कि सीता देवी ने

कोई गलती नहीं की है । तब श्रीराम ने रानी कैकेयी को खरी खोटी सुनाकर उन्हें अपमानित किया । वे कहने लगे कि

''नी तल्ली नी तंड्रिनी जंपे
नीवे मा तंड्रिनी जंपितिवि
नी कोडलु ननु जंपदलिचिनदी
सरिपोयेनु इक पालिक्कडिकि
कैका वचनामंता येरुगुदुरु
चालु अवलिकिका चनुदेंचनेनु''

अर्थात् ''तुम्हारी माँ ने तुम्हारे पिता को मारा । तुमने तो हमारे पिता को ही मार दिया । तुम्हारी बहू ने तो मुझे भी मारने की कोशिश की । बस अब चुप हो जाओ । बीती हुई बातों को सब जानते हैं । बस करो और यहाँ से वापिस लौट जाओ ।'' रानी कैकेयी के प्रति जो क्रोध, लोक - कवियों के मन में था उसे उन्होंने राम के द्वारा इस प्रकार कहलवाया ।

लगता है शायद लोक - कवियों का गुस्सा यह है कि कैकेयी ने ही राम को वनवास दिलवाया है । वह गुस्सा तब भी कम नहीं हुआ जब कुश - लव के संग सीता देवी अयोध्या वापिस चली आईं।

अंतः पुर की स्त्रियों के बीच खडी अपनी माँ से कुश - लव ने प्रशन किया -

''अम्मा ई स्त्रीलंदरिलोनु
अडवुलकंपिना अव्वेदनिरि

नाडु बंपुटा नम्मिक लेदु
नेडु बंपिते चूतमु मेमु
धरणीजनु एवरेमइनानु
अंटेनु तल तूंतुमु मेमु
नाडु सीतकु दिक्केवरु लेरु''

अर्थात् ''माँ इन सब स्त्रियों के बीच वह दादी कौन है, जो तुम्हें जंगल भेज चुकी हैं। उस समय की बात तो हम नहीं जानते। अगर आज भिजवाती तो हम दिखा देते। धरणी की पुत्री को किसी ने भी कुछ कह दिया तो हम उनका सर काट देंगे। उन दिनों हो सकता है सीताजी के लिए कोई रक्षक नहीं हैं।'' बालकों की बाते सुन सीताजी ने अपनी आँखें लाल कीं। उस दशा को देखकर शांता ने कहा, ''बच्चों पर क्यों गुस्सा कर रही हो ? आखिर जो होना था हो गया'', कहती हुई उन्हें शांत करने लगीं। राजा दशरथ के परिवार में केवल शांता ही एक ऐसी स्त्री है जिन्होंने कहा कि कैकेयी का कोई दोष नही हैं। शांता ही हैं जिन्होंने कैकेयी के प्रति एक शब्द भी नहीं कहा। सीताजी ने भी कई बार कैकेयी का समर्थन करते हुए कहा कि - ''कैकेयी माँ ने ही हमें पाल - पोस कर इतना बडा किया है।''

क्या कैकेयी सचमुच इतनी निंदा के योग्य है ? क्या कैकेयी, श्रीराम से भी गई बीती हैं कि जिन्होंने गर्भवती स्त्री को वध करने के लिए भेजा। कैकेयी ने केवल चौदह साल वनवास ही तो मांगा है। वहाँ भी श्रीराम अपनी पत्नी के संग घूमे थे। भाई के साथ रहे। तब तो कैकेयी, उन के सारे सुखों के बीच कभी नहीं आई। फिर भी लोक

- कवि कैकेयी का नाम सुनते ही अत्यंत क्रोधित हो जाते हैं। श्रीराम के ऊपर गुस्से को उन्होंने दबा रखा है। लोक साहित्य की आलोचना किया जाए तो यही साबित होता है कि सीता देवी की सजा को माफ करने के लिए प्रयत्न करने वाली कैकेयी से बढकर सीता देवी को मरवाने के लिए आदेश देनेवाले राम ही निर्दयी साबित होते हैं। लेकिन लोक कवियों की दृष्टि में निंदा पाने वाली केवल कैकेयी हैं। यही इनका दुर्भाग्य है। सचमुच उनका स्वभाव निंदा के योग्य होता तो क्या भरत जैसे उत्तम पुत्र का उदय हो पाता ? कैकेयी के पुत्र के रूप में भरत के गौरव में कमी होने के बावजूद भी भारत की माँ के रूप में ही कैकेयी को सम्मान मिला। संस्कृत के नाटक साहत्यि में उन्हें निर्दोष साबित करने के लिए कुछ प्रयास हुए, उसी प्रकार लोक साहत्यि में भी हुआ है। उस विषय की जानकारी को पाना आवश्यक है।

जिस कथा का वर्णन परंपरा के रूप में लोक - कवि करते हैं उसमें एक कथा है, जिसमें बालक राम पर कैकेयी का प्रेम वात्सल्य का वर्णन है। पूर्णिमा की रात एक बार चंद्रमा को देखकर बालक राम ने जिद पकडी कि उन्हें खेलने के लिए वहीं चंद्रमा ला दिया जाय। श्रीराम ने बहुत ही जिद पकडी। किसी के मनाने पर भी वे नहीं माने, उस समय रानी कैकेयी कुछ देर सोचकर एक बडा सा आईना लाकर ऐसे रखवाई कि उसमें चंद्र का प्रतिबिंब पडे। आइने में चंद्रमा के प्रतिबिंब को श्रीराम ने देखा तो झट उन्होंने रोना छोड दिया। खेलों में आसक्त पुत्र के खातिर पहाडों के ऊपर रहने वाले चंद्रमा को अपनी सूझ बूझ के कारण माँ कैकेयी नीचे ला पाई। वह मातृ मूर्ति, प्रेम मूर्ति बनकर पुत्र राम का नाम रामचंद्र रखने में समर्थ हुई।

वनवास के समय मुनि पत्नियों के साथ बातचीत करते समय सीतादेवी कहा करती थीं कि उनके कष्टों के पीछे रानी कैकेयी का हाथ है । लेकिन ये बातें श्रीराम को अच्छी नहीं लगती थीं । माँ कैकेयी के प्रति इनके दिल में अपार गौरव की भावना है । 'ऋषियों का आश्रम'' नामक गीत में सीता देवी मुनिपत्नियों से रानी कैकेयी के बारे में सब कुछ बताती हैं । तब वे ऋषि पत्नियाँ हाथ - पैर हिलाती हुई कहने लगीं कि ''सासों की रीति ही ऐसी होती है ।'' इन बातों को श्रीराम ने सुना । तब झट से उन्होंने सीतादेवी को बुलाकर पूछा कि - ''क्या मेरी माँ ने तुम्हें वनवास जाने के लिए कहा है ? सच बताओ !

''कैकदूरुटा चाल कानि पनुलय्या
निन्नु नडवुलकु बंप पन्नेना कैका
ननुबट्टी नी वोस्तिवी ननु विडलेका
कैकनु दूरुटा घनपाप मौटा
आ माटा तलपेट्टा नाणेंबु गादु''

अर्थात् ''श्रीराम कहते हैं, कैकेयी का अपमान करना क्या ठीक है ? मुझे उन्होंने वनवास भेजा है, मेरे कारण, तुम आयी हो, वह भी मुझ से दूर रहने के डर से । कैकेयी पर निंदा लगाना घोर पाप है । उस बात को सोचना भी उचित नहीं है ।''

उसी दिन कुछ देर पश्चात् सीता देवी कमलों के सरोवर से कमल लाकर उनकी पंखुडियों को श्रीराम पर डालने लगी तब श्रीराम ने कहा -

''अतिश्रमलपडि पूवुलतिवरो देच्ची
मा सिरसु पूजिंच मगुवा नीकेला
मा तल्लि कैकनु माटेमि यनकु
निन्नु पूजिंतुने नीरजनेत्रा''

अर्थात् ''मुझे पूजने की जरूरत नहीं है । केवल मेरी माँ कैकेयी के प्रति कुछ ना कहो तो मैं ही तुम्हारी पूजा करूँगा ।'' न जाने कैकेयी ने राम के मन में कौन सा स्थान पाया होगा । कवि वाल्मीकी ने इतने विस्तार से वर्णन नहीं किया । 'रामचरितमानस' के रचयिता कवि तुलसीदास वर्णन करते हैं कि श्रीराम ने अपने पालतू तोते का नाम कैकेयी रखा । हमारे कुछ लोक - कवियों ने कैकेयी के विषय को लेकर श्रीराम के विचारों को इतने उदात्त रूप में चित्रित किया है । इसी कारण ''गुह - भरत का अग्नि प्रवेश'' नामक गीत में यह चित्रित किया गया है कि वनवास के पश्चात श्रीराम अपनी पत्नी तथा भाईयों के संग सबसे पहले रानी कैकेयी के महल में ही पहुँचे थे । उस संबंध में रानी कैकेयी द्वारा स्वागत के सभी प्रयत्न उनके प्रेम वात्सल्य को ही दर्शातें हैं ।

''मुत्याला मुग्गुलु पेट्टिंचे कैकम्मा
रत्नाला रंगवल्लि रायिंचे कैकम्मा
माणिक्यमुला दिव्वेलेत्तिंचे कैकम्मा
मकरातोरणमुलु कट्टिंचे कैकम्मा
तनकेदुरु वच्चेटी तनयुलमीदा
भामिनुला येदुरु सेसलु चेल्लिंचे कैकम्मा''

अर्थात् ''कैकेयी माँ ने मोतियों के साथ रंगोलियों रखवायी। रत्नों से रंगोली उस कैकेयी माँ ने सजाया। मणिकों के दीये जलाई। हीरे के तोरण - बंदनवार सजाये। अपने सामने आए पुत्रों और बहुओं के ऊपर सुहागिनों से अक्षत डलवायीं।''

प्रणाम करने वाले पुत्र और बहू को उठाकर आशीर्वाद दिया कि ग्यारह हजार साल चिरंजीवी होकर राज्य भार संभालो। राम कथा के सूत्रधारों में कैकेयी पात्र भी एक है।

* * *

23. मंथरा

राम को वनवास दिलाने वाली हैं कैकेयी। इस नाम को पाने के पीछे मंथरा ही कारण रहीं हैं। ''श्रीरामायण विशेषार्थ'' नामक ग्रंथ में इस प्रकार कहा गया है।

''कैकेयी अहंकृतिः मंथरा तमः
कैकेयी मंथरा रामा वनवासदात्री
अहंकृतिः ब्रह्मात्मिका अपितमस्या
वृत्यामंथरया अतिपीडिता सती
श्रीरामं पट्टाभिषेकार्हम्
वनवासम् करयामास...''

''महाभारत'' नामक ग्रंथ में कहा गया है कि नारायण ने मुनियों से कहा कि वे मानव के रूप में श्रीराम के नाम से जन्म लेने वाले हैं। यह कहते हुए दुन्दुभि नामक गंधर्व कांता को बुलाकर कहा कि तुम कुबडी के रूप में मंथरा के नाम से भूलोक में जन्म लो, और फिर अपने तरीके से देवकार्य का निर्वाहण करो। अब इन विशेष अर्थों को तथा जन्म जन्मांतर से चली आ रही कथाओं को हटा कर, साधारण कहानियों के बीच संबंधों को दृष्टि में रखकर इस पात्र का विश्लेषण करेंगे।

कैकेयी की सेविका है मंथरा। अंतःपुर की एक दासी होकर भी एक राज्य के इतिहास को किस तरह बदल सकती है, उसे अत्यंत रोचक ढंग से मंथरा पात्र के द्वारा व्यक्त किया गया है। भोजराज मंथरा के बारे में कहते हैं -

''यामेहाहुर्निशीचरकुलोन्मुलने मूलहेतुम्
यस्याश्चित्तम् प्रकृतिकुटिलं गात्रमित्रंबभूव
अंभोजिन्याश्शिशिरसरसम् कासरीवाच्छमंभः
कैकेय्यास्सा हृदयमदयमथरा निर्ममंथ''

'महाभारत' के अंतर्गत रामायण में मंथरा भरत की आया के रूप में चित्रित की गई है। बचपन से लेकर भरत का पालन - पोषण उसी ने किया है। भरत की आया होने के नाते उनका भरत के पक्ष का वहन करना सहज ही है। अपने हाथों में ही पलकर बडे हुए भरत को राजा के रूप में देखने की उसकी अभिलाषा सहज ही लगती है। इसके अलावा वह श्रीराम से द्वेष भी करती हैं। इसका कारण इस प्रकार बताते हैं - ''पुराण नामचंद्रिका' में कहा गया है कि बचपन में जब श्रीराम गेंद खेल रहे थे तो मंथरा ने उसे छुपा दिया था, इससे श्रीराम क्रोधित होकर उसे गिराकर पैरों से पीटने लगे। उस क्रोध को मंथरा ने मन में रखा और श्रीराम को राजा बनाने में विघ्न उत्पन्न किया। 'रंगनाथरामायण' में कहा गया है श्रीराम ने मंथरा को पीटा ही नहीं बल्कि उसका एक पैर भी तोड दिया है।

''आ मंथरवरी नेगुदेंची
चिट्टंबू चेतला जंडुदट्टुटयु
कट्टल्करामुडा काष्ठंबू चेता
नडचिन नोक्क कालप्पुडे विरिगे...''

मंथरा, भरत की आया है और राम के द्वारा मार खाई हुई। इन दो कारणों से उन्होंने श्रीराम के राज्याभिषेक में विघ्न पैदा किया है।

श्रीराम सभी लोगों के प्रिय राम होने के कारण और स्वयं भरत भी मंथरा के कार्य से गुस्सा होने के कारण, उसके द्वारा किया गया कार्य अपराध साबित हुआ। जन्म से ही वह कुबडी थी। विकटरूप की थी उसके साथ वह अपने कार्यों से भी कुबडी और कुरुप हो गई। वाल्मीकी कृत 'रामायण' में मंथरा पात्र के लिए केवल प्रवेश ही है लेकिन उनका निर्गमन नहीं है। यह एक प्रकार की उदात्तता है। लेकिन लोक - साहित्य में उनके अनुकूल निष्क्रमण को भी दिखाया गया है। इस प्रकार यह एक चमत्कारयुक्त कविता बन गई है। लोक - साहित्य में ''कुश - लव की युगल कथा'' नामक गीत में उसके अंतरंग को चित्रित किया गया है। यज्ञ अश्व को लव ने ले जाकर वाल्मीकी के आश्रम के पास बांध कर रख दिया। शत्रुघ्न युद्ध कर लव को अयोध्या ले गए। उस नगर में लव को वध करने के लिए तैयारियाँ होने लगीं। बंदी बनकर बलि होने वाले अपने भाई को छुडवाने कुश अयोध्या पहुँचे। जाते समय सीताजी से पूछकर, कुश लंका में हनुमान द्वारा उन्हें दी गयी अंगूठी को भी अपने साथ ले गये। सीता देवी उसे शस्त्र देकर आशीर्वाद दिया फिर कुश से कहा - ''जिस रास्ते में रथ गया था उसी रास्ते में जाते हुए पूछो कि साकेतपुर जाने का रास्ता कौन सा है, उसी रास्ते में चले जाओ !'' उसने ऐसा ही किया। साकेत नगर में एक सरोवर के पास नगर की स्त्रियाँ खडी हुई थीं उसे देखकर उन लोगों ने पूछा - ''किसके पुत्र हो ? किस काम से आये हो ?'' उस पर उसने अपने आने का कारण बताते हुए कहा तो उन्होंने कहा कि -

''अल्लदिगो जूडुमु बालुंडु
यभिषेकपु जलमुलु निलिपेरु

यदुगो मंथरा बिंदेलु मुंचेनु
वेगंबूगनू वेल्लरा तंड्री!''

आर्थात् ''वहाँ देखो बालक खडा है । अभिषेक के लिए जल भी तैयार रखा है । वहाँ देखो मंथरा पानी भर रही है । हे लाल ! जल्दी जाओ ।'' पानी भारकर लव को बलि - पीठ तक ले जाते समय मंथरा भी साथ चलने लगी । जल्दी से कुश, मँथरा के पास गया । उस समय पानी भरकर वह गुंडी उठा रही थी । गुंडी उठाने में सहारा देने के लिए कुश भी उनके पास गए । माँ के द्वारा दी गई अंगूठी को धीरे से उस ने गुंडी में डाल दिया और उसे उठाने में सहायता भी किया । उसने अपने मन में सोचा कि बंदी बनाये गये बालक को यही अंगूठी मुक्त करेगी । गुंडी उठाकर मंथरा चलने लगी। धीरे- धीरे गुंडी भारी होने लगा ।

मंथरा के लिए लव एक दुष्ट जीव है । क्रूर जंतु समान है । हो सकता है उस समय तक उसे नहीं मालूम कि लव श्रीराम का बेटा है फिर भी एक छोटा सा बच्चा बलि होने जा रहा है इसके लिए उसमें थोडी सी भी दया नहीं थी । दुष्ट जीव, क्रूर जीव कहती हुई गाली देकर बलि होने वाले बालक पर जल उँडेलने लगी ।

''अंगुल्या युदकंबु नितनिपई सोका
हायनि श्रीयनि नतडे लेचे
अंगुल्यमंदुकोनि वेल धरिंचुचु
नाल्गुदिक्कुलु जूचेनु राजु''

अर्थात् ''अंगूठी सहित जल जैसे ही उस बालक पर गिरा वह खुशी से स्वयं ही उठकर खडा हुआ । उस अंगूठी को अपनी उँगलियों में

पहनकर राजा समान चारों ओर देखने लगा। यहाँ 'राजा' शब्द को सूचित करने वाले हैं लव । चारों दिशाओं को देखने वाले लव के सामने मंथरा दिखाई दी । वह एक राक्षस स्त्री के समान उसे दिखाई दी । वाल्मीकी रामायण में रामायण गाथा गाने वाले लव को मंथरा के बारे में पहले से ही जानकारी थी । लेकिन यहाँ उसके सामने खडी हुई स्त्री मंथरा ही है यह उसे कैसे मालूम होगा ? जानने की जरूरत भी नहीं है । जताने की जरूरत भी लोक - कवियों को नहीं है ।

''तन्नु चेरिना दानवा नातिनि
करचरणंबुलु गोब्बुन दृंचे
चुप्पनातिनि चीरिनट्टुगा
चीरिनाडु मंथरनप्पुडु
बलि बलि मंथरा बलिमा पुरिकी''

अर्थात् ''उसके पास पहुँचने वाली उस राक्षस स्त्री के हाथों को उसने झट से तोड दिया । उस मंथरा को उसने एक राक्षस स्त्री को जिस प्रकार चीरा जाता है उसी प्रकार उसने उसे चीर डाला । तब लव ने कहा - ''हे मंथरा ! हमारी नगरी के लिए बलि हो जाओ ।'' मंथरा का नाम लेकर पुकारना अयोध्या को हमारा नगर कहना यह दर्शाता है कि उसने स्वयं ही अपने आप को श्रीराम का पुत्र साबित किया । लव द्वारा किये गये इस कार्य को देखकर सारे देवता, सारे मंत्री, सभी प्रमुख लोग आश्चर्यचकित होकर देखने लगे । उन्हें देखकर लव ने कहा-

''आडदानिने चंपितिनि यनुचु
वंशाचारम् तप्पकुंडगनु
निलिपिति ननुकोंडि मीरनेनु''

अर्थात् ''आप सब लोग यही समझ लीजिए कि मैंने एक स्त्री का वध कर, वंश कीर्ति को बनाए रखा ।'' हमारा नगर कहने से बढकर वंश की रीति जब कहा गया तो उसकी अभिज्ञता और भी स्पष्ट रूप से व्यक्त हुई ।

वाल्मीकी जी ने श्रीराम के लिए वनवास दिलाने का कार्य मंथरा के द्वारा करवाया । लोक कवियों ने लव का अयोध्या प्रवेश मंथरा की मृत्यु के द्वारा चित्रित किया ।

यहाँ एक और विशेषता भी है पिता श्रीराम ने अपने बाल्य - काल में मंथरा को नीचे गिराकर पीटा । पुत्र लव अपने बचपन में ही मंथरा को पीट कर मार डाला । पिता की मार से बचकर मंथरा रामकथा को अपने ढंग से आगे चलाने में समर्थ हुई लेकिन पुत्र के हाथों राम - कथा में उस ने मृत्यु को पा लिया । साधारण पाठकों के लिए यह अत्यंत संतोषजनक विषय है । ज्ञानी लोग भी श्रीराम की प्रतिष्ठा के लिए तथा लव की प्राण प्रतिष्ठा के लिए उन्हें ही आधार माने बिना रह पाएंगे !''

* * *

24. शूर्पणखा

रामायण कथा को नये मार्ग पर ले जाने वाले पात्रों में शूर्पणखा प्रधान रही है । श्रीराम - रावण युद्ध के लिए बीज डालनेवाली तो वे ही हैं । जैसे तेनालीरामकृष्ण रचित 'पांडुरंगा महत्व' में कहा गया है महाभारत कथा में कर्ण न हो तो क्या महाभारत कथा लिखी जा सकती है ? यह कहते हुए महाभारत में कर्ण के पात्र को ही महान सिद्ध किया गया है । इसी प्रकार शूर्पणखा को छोड दिया जाए तो रामकथा की प्रामुख्यता नहीं रहेगी । यह अक्षर सत्य है । राम - कथा में राम कथा को आगे बढाने में दोहद देने वाले पात्रों में शूर्पणखा का पात्र अत्यंत प्रमुख है ।

संस्कृत नाटककारों ने विभिन्न पद्धतियों में शूार्पणखा के पात्र को चित्रित किया है । इन नाटककारों की दृष्टि में शूर्पणखा, सीता का रूप धारण करती है, मंथरा में प्रवेश कर कैकेयी के द्वारा अनोखे वर को माँगने के लिए प्रेरित करती है । इस प्रकार माया कैकेयी भी बनती है । इस तरह प्रत्येक नाटक में एक - एक पात्र के रूप में चित्रित होकर एक - एक प्रयोजन की सिद्धि में सहायक बनती है ।

लेकिन उन सब ने, पूर्व रामायण कथा के निर्वाहण को ही आलंबन रूप में लिया है । ''उत्तर रामकथा'' में वाल्मीकी और ''आध्यात्म रामायण'' के कवि ही नहीं, बल्कि संस्कृत नाटककार भी शूर्पणखा के प्रस्ताव को नहीं लाये । शिष्ट साहित्य में उनका चरित्र प्राचीन गाथा तक ही सीमित रहा है । तो उत्तर रामकथा के पात्रों में उसका जिक्र

ही नहीं हुआ । लोक - साहित्य में उत्तर कथा का आधार ही शूर्पणखा रही है । उन्होंने ऐसा चित्रित किया है कि सीता को त्यागने के पीछे शूर्पणखा ही मूल आधार सिद्ध होती है । इस विषय को प्रस्तावित करने के पहले पूर्व रामकथा में चित्रित शूर्पणखा के पात्र के बारे में थोडा सा अंश प्रस्तावित करना आवश्यक हो जाता है । पूर्व रामायण में शूर्पणखा के पात्र के व्यक्तित्व के बारे में एक आधुनिक आलोचक ने इस प्रकार कहा है -

"When surpanakha saw Rama by chance she fell in love with him and solicited his hand. There was nothing wrong in this. Rama did not reciprocate her love. There was nothing wrong in this either. The brothers at first cut jokes at her expense when she continued to exhibit her excessive love for Rama they punished her for her impertinence by cutting off her nose and ears.

Shri C. Rajagoplachary justifies this behaviour of the brothers in the following sentences:

“Some critic might ask whether it was proper thus to torment a woman, especially a woman in love. But if we exercise our imagination and have before as a monster of ugliness we can understand the situation. It is true that she could assume a charming form if she chose but in her intoxication of lust, she seems to have omitted even this allurement” (His Ramayana, Chapter 31)

Is ugliness a crime ? Is ugliness an object for merrument ? If Surpanakha was really ugly was it her fault or of her creator ?

If Surpanakha was in truth a 'monster of ugliness' the brothers, if they were kind hearted being Avathars, should have changed

her in good looking girl, and not cut off her nose making an ugly girl uglier.

This incident shows that the princes had neither culture nor chivalry. After all Surpanakha was a woman, whatever might be her looks and whatever might be her race".

Some believers in the Avathara aspect of Rama and Lakshmana silently or openly approve this most dis - graceful conduct of the brothers, presumably on the ground that avathars could do no wrong. If faith and hero - worship deprives a man of his reason, and excess of these virtues deprives him of even his common sense”. My studies in the Ramayanas - by P.H. Gupta, Page 162, 163.

अकस्मात श्रीराम को देखते ही शूर्पणखा के मन में उनके प्रति प्यार जागृत हो जाता है । अपनी इच्छा को उन्होंने व्यक्त भी किया है । इसमें कोई गलती नहीं है । श्रीराम ने उसके प्यार को स्वीकार भी नहीं किया है इसमें भी कोई गलती नहीं है । लेकिन वह लगातार अपने प्रेम को जताती रही, तब पहले तो उन भाईयों ने उसकी हँसी उडाई । फिर भी वह सही रास्ते पर नहीं आई तब उन दोनों भाईयों ने उसके कान और नाक काट डाले । श्री राजगोपालाचार्य शूर्पणखा द्वारा किये गये इस कार्य का समर्थन करते हुए कहते हैं ‘एक स्त्री जिसने प्यार किया है, उसके प्रति इस प्रकार की प्रतिक्रिया का जताना क्या सही है ? यह प्रश्न कोई भी आलोचक कर सकते हैं । गहराई से सोचने वाली घटना है । इस घटना में एक कुरूप राक्षसी अचानक सामने आकर खडी हो जाती है । यह सत्य है कि वह कामरूपिणी है । अगर चाहती तो वह वहाँ सुंदर रूप को धारण भी कर सकती थी । लेकिन प्यार में डूबी हुई

उस स्त्री को इस आकर्षण के बारे में ध्यान ही नहीं रहा । ।। राजाजी रामायण ३१ भाग ।। कुरूप होना क्या गुनाह है ? कुरूप की हँसी उडाना क्या सही है ? और सचमुच शूर्पणखा एक कुरूप राक्षस स्त्री ही होती तो वे दोनों भाई जो अवतार पुरुष माने जाते हैं उन्हें चाहिए था कि वे दया - हृदयी वाले होकर उस स्त्री के कान - नाक काट कर उसे और भी कुरूप बनाने के बदले उसे एक सुंदर स्त्री के रूप में बदल सकते थे । इस घटना के द्वारा यही साबित होता है कि वे दोनों राजकुमार संस्कार संपन्न नहीं है और सहृदय भी नहीं है । चाहे वह स्त्री किसी भी जाति की क्यों न हो, और उसकी कोई भी रूप रेखा क्यों न हो, लेकिन वह आखिर स्त्री ही है ना ! अवतारों में विश्वास रखने वाले कुछ लोग यह मानकर चलते हैं कि अवतारी पुरुष कोई भी अपराध नहीं करेंगे । इसी कारण राम - लक्ष्मण द्वारा किये गये इस घृणापूर्ण कार्य को भी प्रकट रूप से या कोई और रूप से ही सही वे लोग उनका समर्थन कर रहे हैं । वीर पुरुषों की आराधना, धार्मिक रूढिवाद ने मानव को विवेकहीन बना दिया है । अगर ये सीमा पार कर जाये तो वे साधारण विषयों को भी समझ नहीं पायेंगे ।

अवतार पुरुष होने के कारण राम - लक्ष्मण द्वारा शूर्पणखा के नाक - कानों को काट देना ही सही है, कहकर कुछ लोग उस कार्य का समर्थन कर रहे हैं । लेकिन यहाँ शूर्पणखा की गलती नजर नहीं आती है । प्यार करना तो कोई गुनाह नहीं है । अबला को इस प्रकार हिंसा दिलाने के पीछे उन दोनों भाइयों का क्या उद्देश्य हो सकता है, इसपर प्रश्न करने में भी कोई गलती नहीं है । आलोचकों के द्वारा किए गए

इन प्रश्नों का समाधान देने निमित्त लोक - साहित्य में एक पौराणिक गाथा कही गयी है । वह है शूर्पणखा के पूर्व जन्म के तथ्य ।

एक बार श्री महाविष्णु शेष शैय्या पर शयन कर रहे थे, उस समय महालक्ष्मी उनके पैरों को दबा रही थी । लक्ष्मी, नारायण बातचीत में मग्न थे, तो उनके पास एक अप्सरा आकर खडी हो गई । उसके अद्भुत सौंदर्य को देखकर नारायण आश्चर्यचकित हो गये । वे अपनी दृष्टि लक्ष्मी पर न डाल कर उस अद्भुत नारी के सौंदर्य पर केंद्रीकृत करने लगे । महालक्ष्मी की बातों का जवाब भी अन्यमनस्क हो कर देने लगे । अपने ही सामने पति का इस प्रकार परस्त्री के प्रति आकर्षित होना देखकर, महालक्ष्मी क्रोधित हुई । उनके आग्रह के कारण और क्या - क्या परिणाम हो सकते हैं, उसे सोचकर शेषनाग ने अपने फनों से एक पर्दा महाविष्णु और अप्सारा के बीच में डाल दिया । महाविष्णु के दर्शन में आडे आने के कारण उस अप्सरा ने क्रोधित होकर उनके फनों को दबा दिया । साथ देनेवाले शेषनाग को इस प्रकार हिंसित होते हुए देखकर, महालक्ष्मी गुस्से से उस अप्सरा को शाप देती है । कि तुम राक्षस स्त्री का जन्म धारण करोगी । वह अप्सरा ही आज की शूर्पणखा है । वह शेषनाग ही लक्ष्मण है । उस दिन अप्सरा ने जो कार्य किया उसके प्रतिशोध में लक्ष्मणजी के हाथों आज शूर्पणखा अपने नाक और कान खो चुकी । पूर्वजन्म की गाथाओं को कोई नकार नहीं सकते । उनके प्रति प्रश्न करने का अधिकार भी नहीं है । ''ऐसा हो सकता है'' कह कर चुप रहना ही हमारा धर्म है । ऐसा लगता है कि यह गाथा कल्पित न होकर सच भी हो सकती है ।

उस पूर्वजन्म की गाथा को छोडिये, शिष्ट साहित्य में पूर्व रामायण कथा में शूर्पणखा अपने विकृत रूप के साथ ही प्रेम- संवाद करती है ।

'लंका यज्ञ' नामक गीत में जब राम - लक्ष्मण के पास शूर्पणखा आई थी तब वह कुरूप की तरह चित्रित नहीं हुई, वह सज - धजकर आई थी ।

''कांत काविचीरा नडुमुन गट्टेनु चेंगल्वकीलुगंटू
चिन्नदी तन नुदुट वीणेकस्तुरी रेखा सोग चक्कग दीर्चेनू
अप्पुडु चुप्पनाति अतिवेगमुना''

अर्थात् ''उस समय वह नारी, लाल रंग की साडी पहनकर, लाल कमल हाथ में लेकर, माथे पर कस्तूरी बिंदी लगाकर, शूर्पणखा अत्यंत तेजी के साथ चली आयी ।''

तेलुगु लोक साहित्य में शूर्पणखा एक राक्षसी तथा विकृत स्त्री के रूप में ही सामने आई । यहाँ केवल शब्द की विकृति पाई जाती है, रूप की नहीं । उसका राम - लक्ष्मण के पास आने के पीछे भी एक कारण है । तपस्या करने में निमग्न अपने पुत्र का वध करने वाले लक्ष्मण के प्रति दुश्मनी निकालने वह आई थी । उसने सोचा कि पुत्र को मारने वाले को कुछ दिन के बाद ही सही क्या मार नहीं सकती ? इस प्रकार 'रंगनाथ रामायण' में शूर्पणखा का पात्र चित्रित किया गया है । पुत्र को मारने के कारण अपनी दुश्मनी निकालने के लिए आई हुई शूर्पणखा ने पूर्व रामायण की कथा को इस प्रकार आगे बढाया तो, उत्तर रामायण की कथा को आगे बढाने के पीछे वह अपने भाई को मारने की दुश्मनी को लेकर आई थी । युद्ध के पश्चात् श्रीराम, सीताजी

के संग मिलकर राजकाज चला रहे थे । सीताजी गर्भवती हुई । घर के सारे सदस्यों के लिए यह त्योहार जैसा था । शांति और सुख के साथ जीवन यापन करने वाले सीता-राम के जीवन में शूर्पणखा ने आकर एक तूफान खडा किया ।

एक दिन श्रीराम, भाइयों के साथ सुग्रीव आदि को संग लेकर शिकार खेलने गए । रास्ते में आनंद में मग्न होकर खेलने वाले उन लोगों को शूर्पणखा ने देखा । उसका स्त्रीहृदय दुखित हुआ कि मेरे भाई इस प्रकार क्यों मरे ? और ये लोग इस प्रकार आनंदित क्यों हो रहे हैं ? मैं पुरुष नहीं हूँ तो क्या मैं दुश्मनी नहीं निकाल सकती ? फिर दुखित हुई कि मैं स्त्री क्यों हुई ? तुरंत उसने निश्चय किया कि सीताजी को श्रीराम से मैं अलग कर दूँगी । तब वह यति का वेश धारण कर श्रीराम के पास आती है । श्रीराम को बताया गया कि कोई यति आई हुई है तब श्रीराम ने उस यति (शूर्पणखा) से पूछा कि वह किस देश से आई है ? तब यति ने जवाब दिया कि सभी देश उसी के हैं । और आगे कहा कि वह कई विद्याओं को जानती हैं और अपनी विद्याओं को देखने के लिए भी उसने अनुरोध किया ।

''ओडिगट्टी चुक्कलु एरग नेर्तु
एरिनचुक्कलु विडुवग नेर्तु
पारेडु पिडुगुलु पट्टग नेर्तु
पट्टिन पिडुगुलु पिलुवग नेर्तु
मंचु गुंचान बोसि कलुवग नेर्तु
मायलेल्ला रथमु गाविंपग नेर्तु

अरचेयी पात्रग वाडगा नेर्तु
वाना त्राडुगा पेनगा नेर्तु
मडुगुपई जेंगुनु वेसि निद्रिंपग नेर्तु
समुद्रमु जेंगुन दाटग नेर्तु
चेरुवु चेटग चेरुगग नेर्तु
चट्राट पत्ती कोय्यग नेर्तु
चट्रातिनि नारल वोलुवग नेर्तु
बोडितलकु बोंडुमल्लेलु मुडुवग नेर्तु
मोकालु पगिलि परुवग नेर्तु
इसुकलपोई बेट्टी वंडग नेर्तु
वुसिरिकायदोंतुलु पेट्टग नेर्तु
आनपकायदोंतुलु पेट्टग नेर्तु
आलुमगल नेडबापग नेर्तु
चिंतलेक्कि चिगुरु कोयग नेर्तु
सीतारामुल नेडबापग नेर्तु

अर्थात् ''अपने साडी के आंचल में सारे नक्षत्रों को चुन सकती हूँ। चुने हुए नक्षत्रों को छोड भी सकती हूँ। भागते हुए बिजलियों को पकड सकती हूँ, पकड कर बिजलियों को बुला भी सकती हूँ। बरफ को तोल भी सकती हूँ, माया से रथ बना भी सकती हूँ। और हथेली को पात्र के रूप में इस्तेमाल भी कर सकती हूँ। बारिश को रस्सी के रूप में बुन भी सकती हूँ। सरोवर में आँचल डालकर सो भी सकती हूँ। समुंदर को एक छलांग में लाँघ भी सकती हूँ। झील को सूप

बनाकर ओसना भी जानती हूँ। बडे पत्थर से कपास भी निकाल सकती हूँ। उससे वलकल भी बना सकती हूँ।

गंजे सिर में चंपा - चमेली गूँथ भी सकती हूँ। घुटनों के टूटने पर भी भाग सकती हूँ। रेत का चूल्हा बनाकर खाना भी बना सकती हूँ। गिराये बिना आँवले को एक के ऊपर एक रख भी सकती हूँ। लौकी को भी गिराये बिना एक के ऊपर एक रखकर ढेर लगा सकती हूँ। पति - पत्नी को भी अलग कर सकती हूँ। इमली का पेड चढकर उस पेड के पत्तें को तोड भी सकती हूँ। सीता - राम को अलग करना भी जानती हूँ।''

शूर्पणखा की सारी विद्याएँ विचित्र हो सकती हैं। सबसे बढकर जिस विद्या के बारे में कहा है - ''सीता - राम को अलग कर सकती हूँ'' यह स्वगत कथन है या प्रत्यक्ष कथन,यह समझ में नहीं आता। अगर शूर्पणखा ने यह बात प्रकट रूप से की होती तो श्रीराम, उसे सीता और शांता के पास भेजते ही नहीं। उक्त जो भी विद्याएं उसने बताई वे सभी अनोखे होने के कारण ही उसे अंत:पुर में जाने की आज्ञा दी। इस बात को सुनकर लक्ष्मण ने मना भी किया कि यति लोगों को अंत:पुर क्यों जाने दिया जा रहा है ? लेकिन श्रीराम ने प्रोत्साहित किया कि यह यति तो स्त्री ही है, इस कारण भेज दो। शूर्पणखा यति वेश में ही अयोध्या जाकर स्वागत - सत्कार पाई। तब सिंहासन पर बैठकर जानकी को बुलाने के लिए कहा। उस समय सीता अपनी बहनों के संग चौपड खेल रही थी, इस खबर को सुनकर वे हैरान हो गई। मेरे प्रति ये कैसा मोह है, ये यति कौन है ? सीतादेवी ने शांता जी को बुलाने के लिए कहा।

शांता भी राजसी ढाठ बाठ के साथ आई । तब उन्होंने डांटकर कहा कि यति लोगों के लिए ये विद्याएँ क्यों ? ये विद्याएँ तो जादूगर करते हैं ? फिर उसे जाने के लिए कहा, तब यति ने कहा ''मुझसे पूछने वाली तुम कौन होती हो ? जब तक रावण का चित्रपट खींचकर नहीं दोगी, मैं यहाँ से जानेवाली नहीं हूँ । इतने में श्रीराम के आने की घंटी बजी, तो शांता ने कहा-

राघवुनि चित्त मेरीति नुन्नदो
व्रायवे जानकी पटमनि पलिकिनदी''

अर्थात् ''न जाने राघव की मानसिक दशा इस समय कैसी है ? हे जानकी ! रावण का चित्रपट बनाकर दे दो ।'' तब सीता जी ने कहा, ''मैं अवश्य दस महीने वहाँ के कारावास में रही हूँ लेकिन मैं ने कभी भी उस पापी को नहीं देखा है । केवल पैर की अंगूठी ही देखी है ।'' तब यति ने जवाब दिया बस उतना काफी है । उसके बाद, बाकी सब यति ने ही स्वयं पूरा किया । फिर उस चित्रपट को ब्रह्म के पास ले जाकर कहा -

''अन्न चच्चि आरुनेललायेनु
नाटिनुंडि अन्ननु ता गाननु
अन्नमारुग चूचुकोंदुनु
पटमुन कायुवु पोयिमनियेनु
पटमुकु नायुस्सु ब्रह्म पोसे''

अर्थात् ''भाई के मरे छः महीने हो गये । उस दिन से मैंने भाई को नहीं देखा । भाई के बदले इस चित्रपट को ही देखा करूँगी । इस

कारण इस चित्रपट में प्राण फूँक दो । तब ब्रह्मा ने उस चित्रपट में प्राण फूँक दिये । ''शूर्पणखा वाकचतुर है उस चतुरता के कारण वहाँ श्रीराम और यहाँ ब्रह्मा ने भी आगे पीछे नहीं सोचा । रावण के चित्रपट में प्राण फूँकने के लिए उसने अत्यंत दीनता से प्रार्थना की । अपनी विद्याओं का विवरण देते समय वह गंभीर होकर बोली । उस चित्रपट को जल्दी से सीता के पास ले जाकर कहने लगी -

''नी पटमु नी नेत्ती पोडुचुको
आकाशवीधुल बोयेनु असुरा''

अर्थात् ''तुम्हारा चित्रपट है तुम्हीं अपने सर रख लो, कहती हुई आकाश मार्ग से वह राक्षसी चली गई ।'' जिस काम के लिए वह आयी थी वह काम तो पूरा हो गया है । अब जो बचा है उसे वह चित्रपट ही पूरा करेगा ।

वह चित्रपट जानकी को पकडकर कहने लगी कि ''चलो लंका चलते हैं ।'' इसे देखकर अंतःपुर के सारे लोग आश्चर्य चकित हो गये । अब वे घबराने भी लगे । उस चित्रपट को नष्ट करने के लिए कई मार्ग अपनाये । अंत में थककर उस चित्रपट को बिस्तर के नीचे छुपा कर रख दिये । जब सीता - राम, हास - परिहास की स्थिति में थे तब उस चित्रपट ने श्रीराम को नीचे गिराया । तब श्रीराम क्रोधित हुए और उन्होंने सीताजी को त्याग दिया । अकेली शूर्पणखा ने जो विष बीज बोया वह महावृक्ष बनकर ऐसा खडा हो गया कि अंतःपुर की सभी स्त्रीयाँ मिलकर भी उसे हटा नहीं पाई । रावण के चित्रपट को बनवाने

में शूर्पणखा ने जो चतुरता दिखाई वह अद्‌भुत है । उत्तर रामकथा का प्रधान अंश है - सीता का परित्याग । लोक - साहित्य में इस अंश का मुख्य कारण, रावण का चित्रपट ही है । यह शूर्पणखा के प्रयास से ही हुआ है । उस चित्रपट में सीताजी ने जो रेखाएँ खींची वे केवल रावण के पैर की अंगूठी मात्र ही है । पैर की अंगूठी को अंग्रेजी में 'ग्रेट टो' कहते हैं । 'ग्रेट' शब्द का अर्थ है 'सम्मान' और 'बडा' दो अर्थ पाये जाते हैं । यहाँ पैर की अंगूठी बहुत बडी घटना के लिए आधारभूत बनीं । काव्य नायक श्रीराम के चरण संबंधी विषय, जैसे विषयों को ही कथा नायिका सीताजी के पाद चरणों के बारे में भी वाल्मीकी ने वर्णन किया है । राम के पाद चरण महिमावान हैं, अत्यंत तेजस्वी हैं । आहिल्या का शाप विमोचन, पादुका पट्‌टाभिषेक इस तथ्य को निरूपित करते हैं । अब सीता के पाद चरणों के बारे में दो लोगों द्वारा वाल्मीकी ने कहलवाया हैं । उनमें एक लक्ष्मण है तो दूसरा रावण । सीतादेवी के चरणों को लक्ष्मण हर दिन प्रणाम करते हैं, इस कारण सीता के पाद - चरणों से वे चिर परिचित हैं । एक विषम परिस्थिति में इन चरणों को पहचानने का मौका मिला । यह लक्ष्मण का विषय रहा है । अब रावण के विषय में वाल्मीकी का कथन है कि सीता के प्रति रावण के मोह का प्रबल कारण है सीता देवी के चरणों की सुंदरता । रावण ने अपने मंत्रियों से कहा कि सीता के चरणों की लालिमा, और उन चरणों पर प्रतिष्ठित लाल रंग के नख चिह्नों ने उन्हें अत्यंत आकर्षित किया है ।

श्रीराम के चरण, महिमा एवं तेजस के लिए प्रसिद्ध हैं । सीताजी के चरण लालिमा एवं सुंदरता के लिए प्रसिद्ध हुए । इस नायक - नायिकाओं के चरणों द्वारा संपूर्ण रामायण कथा में कई प्रयोजनों की सिद्धि के उदाहरण मिलते हैं ।

वाल्मीकी रामायण के रचना काल में, चरणों की कसम खाकर, बात करने की एक प्रथा रही है । यह प्रथा उसी समय दिखाई देती है - जब बडे लोग अपने से छोटे लोगों को त्याग देते हैं । लक्ष्मण को त्यागते हुए राम ने दो बार, सुग्रीव का निषेध करते हुए वाली ने एक बार इन चरणों के ऊपर कसम खाने की प्रथा का अनुसरण किया है । बडों के चरणों पर झुककर छोटे लोगों द्वारा प्रणाम करने की पद्धति उस समय रही है । बडों द्वारा अगर इस कार्य को किया जाय अर्थात् छोटे लोगों के चरणों को प्रणाम करना उन दिनों शास्त्र सम्मत नहीं माना जाता था । लेकिन आंध्र के लोक कवियों ने अपनी रचनाओं में ऐसी विचित्र घटनाओं को जोडा है जैसे बडे लोगों द्वारा छोटों के चरणों की सेवा करना । यह एक विशेष एवं विचित्र विषय बन गया था ।

लक्ष्मण के चरणों को राम द्वारा दबवाना, कुश - लव के चरणों को राम द्वारा प्रणाम करवाना, इन सभी विचित्र विषयों का वर्णन लोक कवियों ने वर्णित किया है । इनमें लक्ष्मण का विषय राज्याभिषेक के समय का है । कुश - लव का विषय सीता के परित्याग करने के बाद के विषय से संबंधित है ।

श्रीराम का राज्याभिषेक तथा सीता के परित्याग के बीच रावण के चरण - पैर की अंगूठी आदि का प्रस्ताव आया है । इस प्रस्ताव को लाने वाली है शूर्पणखा ।

सीता - राम - लक्ष्मण, कुश - लव के चरणों के प्रस्तावित विषयों में क्रमश : सौंदर्य, तेज, त्याग, दया आदि गुण प्रकट होते हैं । लेकिन रावण के पैरों के अंगूठे के विषय में ये गुण नजर नहीं आते । शूर्पणखा का द्वेष, ईर्ष्या आदि गुण ही अत्यधिक रूप से प्रकटित होते हैं ।

रावण के चरणों का विषय पहले जैन रामायण में दिखाई देता है । यह रचना जैन - कवि हेमचंद्र सूरी रचित है । इसमें आश्चर्य की बात यह है कि यहाँ पादुकापट्टाभिषेक की प्रस्तावना ही नहीं है । इतना ही नहीं वहाँ रामजी एकपत्नीव्रत भी नहीं थे । अयोध्या लौट आने के पश्चात और तीन स्त्रियों से उन्होंने विवाह किया। यहाँ मैथिली ।।सीता।। महारानी है । सीताजी के सौत के नाम हैं प्रभावती, रतिनिभा, श्रीदामा । कहा जाता है कि उन्होंने ही सीता देवी को रावण के चरण - चित्र बनाने के लिए प्रेरित किया । जब सीता देवी उस चित्र को बना रही थी तब श्रीराम वहाँ प्रवेश करते हैं । ईर्ष्यालू सौतों ने श्रीरामजी से शिकायत की कि एकांत में सीता, रावण के चरणों की पूजा करती है ।

श्रीराम पर पहले इन बातों का असर नहीं हुआ । तब उन सौतों ने अपनी दासियों द्वारा पूरे नगर में ये खबर फैला दी कि सीता रावण के चरणों की पूजा करती है । जनता तो अफवाहों को ही मानती हैं । इसलिए जनता के लिए यही प्रधान विषय बन गया । प्रजा की बातों के कारण ही श्रीराम, सीता को त्यागने तैयार हो गये । लक्ष्मण के मना करने पर भी श्रीराम नहीं माने ।

हेमचंद्र सूरी की कथा में केवल रावण के चरणों का चित्र ही रहा है । वह भी सौतों की प्रेरणा से हुआ है । यहाँ सौतों की कल्पना श्रीराम

के एक पत्नीव्रत के नियम को भंग कर रही है । श्रीराम के एक पत्नीव्रत को भंग किये बिना आंध्र के लोक कवियों ने निपुणता से शूर्पणखा के पात्र को प्रवेश करवाकर अत्यंत रोचक कथा को रचा है । रावण के चित्रपट को इस पात्र ने ही पूरा किया था । इस संदर्भ में एक और विशेष बात यह है कि सीताजी ने रावण के संपूर्ण चरणों का चित्र नहीं बनाया । केवल अंगूठी मात्र का ही चित्र खींचा । इस तरह रावण का चित्रपट खींचना, उस कारण सीताजी पर श्रीराम का शंकित होना अत्यंत सामंजस्यपूर्ण प्रतीत होता है । इस प्रकार की कल्पना बंगाल में रचित रामायण में दिखाई देती है । वहाँ पर उस चित्रपट को बनाने वाली हैं 'कुकया' जो कैकेयी की बेटी है । इस 'कुकया' पात्र की सृष्टि चंद्रावती नामक एक कवियित्री के द्वारा हुआ । कुकया रावण को देखने की इच्छा ले कर एक पंखे पर रावण का चित्र बनवाकर, उसे थकी मांदी सोई हुई अपनी भाभी की छाती पर रख देती है । फिर जाकर श्रीराम से शिकायत करती है कि तुम्हारी पत्नी को रावण के प्रति लगाव है । वह ऐसी ननद है ।

भारत देश में ननदों की कट्टरता का प्रदर्शन करने वाली पात्र है 'कुकया'। चंद्रावती ने सीता देवी को त्यागने के लिए विशेष रूप से कैकेयी की पुत्री की सृष्टि की । यहाँ तेलुगु के लोक - कवियों ने शूर्पणखा के द्वारा ही उस कार्य की पूर्ति करवायी । कुकया से बढकर शूर्पणखा को ही इस काम को करने में लाभ प्राप्त होता है । उसने अपनी दुश्मनी निकाली क्योंकि उसे श्रीराम तो मिले नहीं, मिलना तो दूर उल्टा अपमान ही मिला । नाक - कान खो बैठी । उसका भाई

सीतादेवी के मोह में प्राण खो बैठा । भाई का संतान ही मिट गया । अंतःपुर के सारे लोग भी आग में जलकर भस्म हो गये । अपने परिवार के नाश के लिए कारक सीता - राम को सुख - संपत्ति में देखकर शूर्पणखा सह नहीं पाई । उसमें वह सफलीकृत भी हुई । लोक - कवियों ने इस प्रकार शूर्पणखा को उत्तर रामकथा के लिए मूल आधार के रूप में चित्रित किया ।

* * *

25. मंडोदरी

लंका के राजा रावण की महारानी है मंडोदरी । सीता ने अपना निर्णय सुनाया था कि रावण के संग मंडोदरी को ही लंकाराज्य चलाना चाहिए । ''सीता का कारावास'' नामक गीत में जब रावण ने सीताजी से कहा कि उसके साथ रहकर लंका पर राज करे, तब सीताजी ने बहुत प्यार से कहा कि इस लंका पर मेरी भाभी मंडोदरी राज करेंगी । अपने साथी स्त्रियों के प्रति गौरव की भावना दिखाने के गुण को लोक - कवियों ने स्त्रियों के गीतों में बडी उदात्तता से वर्णित किया है ।

'संक्षेप रामायण' नामक गीत में अशोक वन में रहने वाली सीतादेवी से रावण कई बार मिन्नतें करने लगता है कि वे उसे स्वीकारें । सीतादेवी जब नहीं मानी तो क्रोधित होकर रावण ने सीतादेवी को मारने का प्रयास भी किया । उस संदर्भ में मंडोदरी आदि स्त्रियाँ रोकती हैं ।

''मंडोदरी मोदलगु मगुवलंदरुनू
पणतुलजंपुट बहुदोषमानी
वद्दुवद्दुनुचुनू पारदोलिरि''

अर्थात् - ''मंडोदरी आदि स्त्रियों ने मिलकर कहा कि स्त्री का वध करना महापाप है । नहीं - नहीं कहते हुए उन्हें दूर भगाने लगीं ।'' इतना ही नहीं मंडोदरी विशेष रूप से सतर्क करती हुई कहती हैं ।

''आयुस्सु मूडुटकु लंका जेडुटकुनू
धरणिपति युसुरंत दनुजुलकु दगुल
पुत्रमित्रुलतोटि बुग्गियगुटकुनू
भूपुत्रि तेस्तिवा बुद्धिहीनुंडा

मनुजुलतो पोरू मनकेला चेपुमी
सतिपल्कुलु विनि दनुजेश्वरुंडु
लज्जिंचि तानेगे चदुरू स्थलमुनकु''

अर्थात् ''आयु घटाने के लिए, लंका को नष्ट होने के लिए धरणी - पति (राम) का गुस्सा असुरों को लगने के लिए, पुत्रों - मित्रों सहित भस्म होने के लिए ही क्या बुद्धिहीन होकर भूमि पुत्री को ले आए ? मानवों के संग लडाई आखिर हमें क्यों ? पत्नी की बातों को सुनकर वह लंकापति लज्जित होकर दरबार की ओर चल पडे ।''

राम के संग यह युद्ध इतना नष्टकारक है, श्रीराम के साथ दुश्मनी मोल लेना इतना अविवेकीपन है उसे स्पष्ट रूप से बहुत ही धैर्य के साथ कहने की शक्ति रखने वाली धैर्यवान नारी है मंडोदरी ।

''लंका - यज्ञ'' नामक गीत में ''मंडोदरी का सपना'' एक विचित्र घटना है । वाल्मीकी रचित रामायण में जब सीतादेवी लंका में थी तब श्रीराम के कुशल - मंगल समाचार ना मिलने के कारण निराश होकर सीतादेवी आत्महत्या करने का प्रयत्न करती है । सीतादेवी की रखवाली करनेवाली राक्षसगणों में त्रिजटा नामक राक्षसी जाकर कहने लगी कि मैंने एक सपना देखा है, जल्दी ही श्रीराम आकर लंका पर विजय पायेंगे और सफेद हाथियों के रथ में सीतादेवी के साथ अयोध्या जायेंगे । रावण का नाश अब अनिवार्य है । ऐसा मैंने सपना देखा । यह कहकर उसने कहा सीतादेवी को तंग मत करना । इस प्रकार सीतादेवी को आत्महत्या करने के प्रयत्न से रोकती है । त्रिजटा के इस स्वप्न वृत्तांत ने कहानी को नया मोड दिया । यहाँ के लोक गीतों में मंडोदरी के स्वप्न का वर्णन मिलता है ।

युद्ध के प्रयत्न तेजी से होने लगे । महल में रत्नों की शैय्या पर रावण और मंडोरी लेटे हुए हैं । बीच में रावण की पत्नी उठकर कहने लगी कि उन्होंने एक सपना देखा है । झट रावण ने उत्साह के साथ प्रश्न किया ।

''ऐमि कलगंटिवे वेलदिरो चेप्पवे येमि फलमु गंटिवे ?
पगराजुलातललु पगल कलगंटिवा पणति दक्कागंटिवा ?
रघुरामुनि बलमु नणतुननि गंटिवा, रमणि दक्कागंटिवा ?
मातृवंशमुवारू अणगिरनि गंटिवा, मगुवादक्कागंटिवा ?
अर्कवंशमुवारू अणगिरिन गंटिवा, अतिवादक्कागंटिवा ?''

अर्थात् ''क्या सपना देखा है, क्या दुश्मनों के सिर कटे पडे हुए देखा है ? हे स्त्री ! ऐसा सपना देखा है, हे रमणी ! रघुराम के बल का नाश हो गया है क्या ऐसा सपना देखा है, मातृ वंश के लोग नाश हो गए हैं ऐसा सपना देखा, सूर्यवंशी नाश हो गए ऐसा सपना देखा है।'' तब मंडोदरी ने बहुत ही निश्चल होकर जवाब दिया -

''पगराजुला तललु पगिलेननि कादया पणति दक्काकादया
रघुरामुला बलमु अणगेननि कादया, रमणि दक्का कादया
मातृवंशमुवारू मणिगेननि कादया, मगुवदक्का कादया
शत्रुवंशमुवारू चेदरिरनि कादया, चेडेदक्का कादया
अर्कवंशमुवारू अणगिरनि कादया अतिवदक्का कादया
ई रणमथनंबुन ई रणभूमिलो समरमनि कलगंटिनि
इंटिकेदुरूग नुन्न ओंटिस्तंभमु मेड कूलेनेनि कलगंटिनि
चेतिलोयेन्नहिट चेमपुव्वा कडियालु विरिगेननि कलगंटिनि
मुक्कुनायुन्नहिट मुत्यमुलयानत्तुमुणिगेननि कलगंटिनि

मेडलोनु युन्नहिट मंगलासूत्रमुलु जारेननि कलगंटिनि
निन्नु जंपिवेसि विभीषणुनिकि पट्टमनि कलगंटिनि''

''हे राजा! दुश्मनों के सिर कटते हुए मैंने नहीं देखा। रघुराम का बल नाश होते हुए भी मैंने नहीं देखा। मातृवंश मिट चुका है यह भी मैंने नहीं देखा, शत्रु - वंश के लोग तितर - बितर हो गये हैं, यह भी मैंने नहीं देखा। इस युद्ध भूमि में युद्ध को ही देखा है। घर के सामने एक मंजिला मकान गिर गया है, यह सपना देखा है। हाथ के कंगन टूटने का सपना देखा है। नाक में मोतियों के नथ को टूटते हुए देखा है। गले के मंगलसूत्र को फिसलते हुए देखा है। आपको मारकर विभीषण को राज दिलाने का सपना देखा है।'' मंडोदरी पतिव्रता नारी हैं उन्होंने सीतादेवी को पतिव्रता मानकर उन्हें सम्मान दिया है। श्रीराम को सीता देवी सौंपकर सुखपूर्वक जीवन यापन करने के लिए वे रावण को बार - बार सचेत करती हैं। उत्तम गृहिणी की तरह जो भी हित वाक्य पति को सुनाना चाहिए उन्हें उसी तौर से सुनाती हैं। लेकिन उस महिला शिरोमणि की बातों को राजा ने नजर अंदाज कर दिया। उस पतिव्रता नारी के सपने में भविष्य मे घटित होने वाली विपत्ति स्पष्ट दिखाई देती है। फिर भी रावण उनकी बातों को मानते नहीं। भाग्य ने अपना क्रम नहीं तोडा। मंडोदरी का सपना सच होकर खडा हुआ।

''लंका - सारथी'' नामक गीत में उन्होंने सपना देखा कि तिलक लगाया हुआ बंदर आकर लंका को नष्ट कर देता है। यह भी आगामी कथा का ही संकेत है। 'लंका - सारथी' में ही एक और विचित्र घटना घटी है। इसमें रावण की इच्छा पर मंडोदरी, सीतादेवी को अंतःपुर में स्वागत करती है।

कुंभकर्ण भाई के पक्ष खडे होकर उग्र रूप से युद्ध करते हुए शरीर त्याग देते हैं। कुंभकर्ण के मरने के पश्चात रावण और भी शक्ति पाने के लिए अंतः पुर में छुपकर पाताल होम करते हैं। इस विषय को जानकर अंगद लंका के अंतःपुर में घुस जाता है। वहाँ रावण के छुपे स्थान को बतलाने के लिए मंडोदरी की चोटी पकड कर घसीट कर लाता है। इस संदर्भ में मंडोदरी, रावण की रक्षा को लेकर और अपनी दशा को जानकर बहुत दुखित होती हैं। उस दुख को सुनकर रावण उसके पास आकर कहते हैं कि

''माणिक्यभूषणा ? मंडोदरी नीवु ना माटकतिचेयके
मुदिमि विधवरिकम्मुलु राकुंडा मीतंड्रि
मुनुपु वरमु निच्चेनु.....''

''हे मंडोदरी! तुम मेरी बातों को लेकर सोचो मत। तुम्हारे पिता ने एक वरदान दिया था जिससे तुम्हारे करीब कभी भी बुढापा या वैधव्य नहीं आयेंगे। इसलिए तुम चिंतित मत हो, कहते हुए रावण ने धीरज बाँधा। लेकिन मंडोदरी रावण के कर्मों को स्वीकार नहीं कर पाई। अंत में रावण की मृत्यु की खबर सुनकर दुखित होकर वह कहने लगती है।

''महराजनेनंत निनु गोलिचियुंडगा येंदु पोतिवि रावणा
पदिसिरस्सुलु नेडु दिगुवपार्लाडेननि पड्डीसुके वेडलेनु
नेल पडुकुंटेनु ओडलु ओत्तेननि पड्डीसुके वेडलेनु''

अर्थात् ''मैं तुम्हारी सेवा करने के लिए हूँ फिर भी हे महाराज ! इस प्रकार भटक क्यों गए ? आज दस सिर, मिट्टी में पडे हुए हैं, फर्श पर सोते तो सारा बदन दबाती, इस कारण तुम परलोक ही चले गए।''

अपने पति के प्रति उसका प्रेम ही ऐसा है । और अपने आप सोचती है, क्या ये संपत्ति, ये राजभोग सभी छूट जायेंगे ? इसके लिए कौन कारक है । तब उनके सामने विभीषण दिखाई दिये । झट कहने लगी,

''दय लेदु मी यन्न दग्गरकु चेरवू नीकन्न येव्वरय्या
रघुरामुतो चेप्पि यन्ननु जंपिस्ति यडलंग नीकेटिकि?''

''तुम्हें दया नहीं आई भाई को इस प्रकार मरवाते हुए । अपने भाई को राजा श्रीराम से कहकर मरवाया आखिर तुम्हें क्या मिला ? श्रीराम को अपने भाई के प्राणों के रहस्य को बताकर मरवा चुके हो । अब क्यों दुखित हो रहे हो ? कम से कम अब तो वानरों की सेना को लंका - प्रवेश से रोकने का प्रयास करो कहती हुई विभीषण को चेतनावनी देती है ।'' लंका - राज्य के प्रति उसका अनुराग ही ऐसा है । फिर यह सोचकर दुखित होने लगी कि

''वद्दिकतो नेनु नी वद्दने निलुचुंडि बुद्धि चेप्पालेदा''

अर्थात् ''बहुत ही विनयपूर्वक तुम्हारे बगल में खडी होकर तुम्हें हित वचन क्या मैं ने नहीं सुनाये ?''

मंडोदरी जैसे नारी रत्न की बातों को ना सुनने की वजह से ही रावण ने अपने प्राणों को खो दिया । वीरों के भी वीर इंद्रजीत को जन्म देने वाली वीर माता है मंडोदरी । लोक - कवियों ने उनको एक कुशल राजनीतिज्ञ के रूप में भी चित्रित किया है ।

* * *

26. सीता - पक्षी

मुरारी कवि रचित 'अनर्घ राघव' नाटक की पृष्ठभूमि में एक श्लोक का वर्णन मिलता है -

''यांति न्यायप्रवृत्तस्य
तिर्यंचोऽपि सहायताम्
अपंथानं तु गच्छंतम्
सोदरोऽपि विमुञ्चत''

राम - रावण की कथा के लिए यह मूल कथावस्तु है । श्रीराम जैसे न्याय के मार्ग पर चलने वालों के लिए तिर्यक - पशु - पक्षी आदि ही सहायक होते हैं । रावण जैसे अन्याय मार्ग पर चलने वालों के साथ सगे भाई भी साथ छोड देते हैं । यहाँ यह सूचित किया गया है कि रावण का साथ उन के भाई विभीषण ने छोड दिया है । यह सुलभ ढंग से समझ में आ जाता है । यहाँ भाई कहकर एकवचन का प्रयोग किया गया है ।

राम को साथ देने वाले तिर्यक जाति के विषय में बहुवचन का प्रयोग हुआ है । 'तिर्यक' शब्द का अर्थ है पशु - पक्षी आदि । कवि भास रचित 'प्रतिमा' नाटक में सुमंत्र, भरत से कहते है कि 'किष्किंधा' नामक प्रदेश वानरों का एक निवास स्थल है । तिर्यक जाति के वानर अच्छाई को पहचान कर तदनुरूप बर्ताव करते हैं । रामायण - कथा से संबंधित पशु - पक्षी आदि में वानर, भालू, हिरण, गिलहरी, गिद्ध, कौआ आदि हैं ।

इनमें गिद्ध और कौआ पक्षी जाति के हैं। श्रीराम को सबसे पहले सीता देवी के अपहरण की बात को सुनाने वाले हैं जटायु नामक गिद्ध। जटायु श्रीराम के पिता राजा दशरथ के दोस्त हैं। असल में दशरथ शब्द का अर्थ है जिसका वाहन पक्षी है, उसे दशरथ कहते हैं।

आन्ध्रभागवत के व्याख्यानकर्ता श्री आलपर्ति नागेश्वर शास्त्री के वाक्यों को देखिये, 'दशरथ' का अर्थ है जिनका वाहन पक्षी है। पक्षी का अर्थ है जो पक्षसहित हो। 'पक्ष' का अर्थ पंख है, इस कारण वेदों के अनुसार पक्षी शब्द के लिए उस के दो पंख, जो ज्ञान कांड और कर्म कांड को सूचित करते हैं। पक्षी वाहन का अर्थ है, जो वेदों में स्थित हैं, वेदों के प्रतिपादक हैं। इसके अलावा पक्ष शब्द के लिए शुक्ल पक्ष, कृष्ण पक्ष नामक दो पंख जो समय को सूचित करने वाले मास के समान है, अग्नि और चंद्र नामक दो पंख वाले समय रूपी हंस के समान हैं, पंख रूपी हाथों वाले शरीर समान, पलक रूपी पंख वाले नेत्र तथा दस इंद्रियों के राजा के लिए संकल्प - विकल्प नामक पंख समान मन के अर्थ को स्पष्ट किया गया है। इस व्याख्या को छोडकर वाल्मीकी कृत रामायण में राम गाथा से संबंधित तीन पक्षियाँ दिखाई देती हैं। वे हैं जटायु, संपाति और काकासुर। इसमें जटायु तथा संपाति ने जिस प्रकार की सहायता पहुँचाई वह तो स्पष्ट हैं। काकासुर ने जो अपकार किया है वह परोक्ष रूप से उपकार ही बन गया। 'सीता संदेश' में यह स्पष्ट साबित हुआ है।

श्रीराम की सहायता पहुँचाने वाले पक्षियों में जटायु प्रमुख है। सीता देवी को अपहरण कर ले जाने वाले रावण के साथ युद्ध कर मरणावस्था

में, राम - लक्ष्मण को सीता देवी का समाचार सुनाकर जटायु ने अपने प्राण त्याग दिये। इसके बाद हनुमान आदि कई वानरों ने राम की सहायता की। लेकिन उनमें से किसी भी वानर ने श्रीराम के लिए प्राणों को अर्पित नहीं किया। युद्ध - भूमि में मरने वाले सभी वानर संजीवनी पर्वत के कारण जी उठे। राम के प्रति गिलहरी ने जो भक्ति दिखाई उससे राम प्रसन्नचित होकर उसके पीठ पर हाथ फेरकर, उस पीठ पर जिस प्रकार के चिह्न अंकित किये, उसी प्रकार जटायु द्वारा किये काम की प्रशंसा कर श्रीराम ने उस पक्षी को अपने पिता समान मानकर उनकी अंतिम क्रियाएँ निभाए। इस संदर्भ में कहा जा सकता है कि श्रीराम को जन्म देने वाले दशरथ से बढकर श्रीराम को आँख भर देख सकने वाले जटायु का भाग्य ही महान है। 'राम' कार्य के निमित्त जटायु ने प्राण अर्पित किये तो उसके भाई संपाति ने श्रीराम कार्य के लिए निकले वानरों की प्राण रक्षा की। प्राण त्यागने के लिए प्रयत्न करनेवाले अंगद आदि वानरों को सीता देवी की खबर देकर उन्हें मरने से बचाया। इसी कारण वे दोनों भाई राम के बंधु बने। उस समय के कार्य को याद कर जटायु और संपाति से संबंधित जाति को आज भी श्रीराम के बंधु ही मानते आ रहे हैं। विष्णु के दशावतारों में रामावतार में ही नहीं कृष्णावतार में भी इस पक्षी की एक जाति है जो कृष्णपक्षी के नाम से प्रसिद्ध है। विष्णु का वाहन गरूड पक्षी है।

अब काकासुर का विषय लिया जा सकता है। काकासुर श्रीराम के शाप के कारण काना बन गया। उचित ना होने पर भी जिस काम को काकासुर ने किया है उस कारण श्रीराम गुस्सा होकर शाप देते हैं। इस प्रकार की एकमात्र घटना यही है। फिर भी इस घटना के कारण

'रामायण' के अंतर्गत एक विशेष प्रयोजन पाया जाता है । सीता देवी जब लंका में थी तब पहचान के रूप में हनुमान को इसी काकासुर का विषय बताया गया था । यह वृत्तांत सीता - राम के एकांत समय में घटित हुई थी । इस समय वही रहस्य - वृत्तांत एक पहचान के रूप में काम आया । कौए के रूप में राक्षस ने श्रीराम के साथ इस प्रकार का अनुचित कार्य किया है फिर भी उसी कौए ने दुखी श्रीराम को धीरज भी बंधवाया । सीता विरह में जब राम दुखी होकर घूम रहे थे तब उन्हें कौओं का चिल्लाना सुनाई पडा तब उन्होंने सोचा, इसके पहले वही कौए आसमान पर उडते हुए सीता देवी के विरह को सूचित कर चुके थे । लेकिन अब पेड पर बैठकर अत्यंत मधुर रूप से आलाप करते हुए यह सूचित कर रहे हैं कि जल्दी ही सीता देवी से मिलन होगा । इसी कौए के कारण पहले पर्णकुटी में सीता देवी के साथ वियोग हुआ । यही कौआ अब मुझे सीतादेवी से मिलानेवाला है । किष्किंधा कांड के प्रथम सर्ग में 55, 56 श्लोकों में यहीं विषय वर्णित हैं -

''तां विना स विहङ्गोयः पक्षी प्रणदितस्तदा
वायसः पादपगतः प्रहृष्टमभिनर्दति
एष वै तत्रा वैदेह्या विहगः प्रतिहारकः
पक्षी मां तु विशालाक्ष्याः समीपमुपनेष्यति''

वाल्मीकी रचित 'रामायण' में राम की सहायता करने वाले इन चार पशु - पक्षी के वृत्तांतों से दो संस्कृत कवि, और दो से भी बढकर अधिक आंध्र के लोक कवि संतृप्त नहीं हुए । उन्होंने सीता - राम की कथा के साथ हंस, भ्रमर, तोता और अंत में कोयल को भी जोड दिया ।

इसके कारण भले ही कथा के विस्तार में ये दोहदकारी सिद्ध हुए हैं, फिर भी सीता - राम के अन्योन्य प्रेम के लिए ये मानदंड साबित हुए हैं ।

सबसे पहले संस्कृत कवियों के विषय को लिया जा सकता है । सीता - राम की कथा के साथ हँस को जोडकर संस्कृत कवि वेदांत देशिकुडु ने कालिदास कृत 'मेघ संदेश' का मनन करते हुए 'हंस संदेश' की रचना की । बंग प्रांत के कवि ने 'भ्रमरदूत' की रचना की । सीता - राम से संबंधित उपर्युक्त संदेश काव्यों के इतिवृत्त में दो घटनाएँ प्रमुख हैं - तुंगभाद्रा नदी के एक हंस के साथ श्रीराम द्वारा सीता देवी को संदेश भिजवाने की एक घटना और एक सरोवर में पद्म पर बैठे हुए भ्रमर के साथ श्रीराम द्वारा सीतादेवी को खबर भिजवाने की घटना - ये दोनों प्रधान रहे हैं ।

अब आन्ध्र के लोक - कवियों का विषय । आन्ध्र काव्यों में राजा नल और दमयंती के बीच हंस का प्रस्ताव आता है । हो सकता है प्रभावती और प्रद्युम्न कथा में हंस और तोता द्वारा संदेश भिजवाने की घटना को याद करते हुए लोक कवियों ने सीता - राम की कथा में पक्षियों को दूत बनाकर भेजा होगा । यहाँ एक खास विशेषता है, विवाह के पूर्व ही कहा जाता है कि सीतादेवी ने श्रीराम के पास भ्रमर और पक्षियों द्वारा अपना संदेश भेजा है । यह 'राघव कल्याण' नामक गीत में वर्णित है । उस गीत के शब्दों का तो विश्लेषण करना होगा ।

''तुम्मेदरो ! चेप्पवे नीवंदंदु तिरूगाडुदू
हरूनि विल्लू विरचि श्रीरामचंद्रुलनु तन्नु पेंड्लाडु मनवे
कलिकि चिलुकरो ! जेप्पवे कारूण्या विभुनितोनु

हरुनि विल्लूविरचि आ रामचंद्रुलनु तन्नु पेंड्लाडुमनवे
राजहंसरो ! चेप्पवे मी राजीवनाभुनितो
हरुनि विल्लू विरचि आ रामचंद्रुलतो तन्नु पेंड्लाडु मनवे''

अर्थात् ''हे भ्रमर ! तुम तो सदा ही यहाँ - वहाँ घूमती ही रहती हो। जाकर श्रीरामचंद्र जी से कहो कि शिव धनुष भंग कर मुझसे विवाह करें। हे तोता ! उस करूणानिधि रामचंद्र जी से कहो, शिव धनुष भंग कर, मुझसे विवाह करें। हे राजहंस ! उस राजीव नाथ श्रीराम चंद्र जी से कहो कि शिव - धनुष भंग कर, मुझसे विवाह करें।''

सीतादेवी यह संदेश भेजती हैं कि शिव - धनुष भंग करके आकर उनसे शादी करें। इस प्रकार प्रार्थना करते समय सीतादेवी चिंतित होती हैं कि पक्षी जाति की तरह उसके पंख नहीं हैं।

''पक्षिजातुल्लारा ! मीरू परमात्मजूतुरूगा।
मी वंटिरेक्कल्लू तनकईना लेवाये येगिरिपोई जूतुनू''

पंखों से जिस प्रकार पक्षी जाति उडकर परमात्मा को देख सकती है उस प्रकार के भाग्य से वे वंचित हैं, इस कारण वे दुखित होती हैं। लोक कवियों का वर्णन है कि विवाह से पहले ही पक्षी जाति के द्वारा वे संदेश भेज चुकी हैं। आन्ध्र के लोक साहित्य में 'कोयल का संदेश' नामक एक गीत है जो लगभग पचास पंक्तियों का है। इस गीत में वर्णित है कि लंका के अशोक वन में दस महीनों तक सीता देवी बंदी बनी हुई थीं। उन दिनों में तब भी कोयल कूक देती थी हर एक कोयल के साथ सीतादेवी ने श्रीराम - लक्ष्मण को अपना संदेशा भेजा है।

सीता देवी कोयल से अपनी बीती हुई बातें बतलाती हैं। अपनी दयनीय स्थिति का भी वर्णन करती हुई कहती हैं,

''मासिन वस्त्रालु मईनंपु जडलु
कारिनवि कन्नील्लू कट्टिनवि जडलु''

अर्थात् ''मेरे वस्त्र मैले बन गए है। मोम समान जटायें, बढ गयी है। आँखो से अश्रु-धारा बहती रहती हैं और बाल उलझ गए हैं।'' यह कहकर बताती हैं कि वे श्रीराम की पत्नी हैं। उसके बाद संदेशा देने के लिए कोयल को रिश्वत देने का लोभ भी दिखाती हैं कि

''मुत्यालु इच्चेनु वज्रालु इच्चेनु''

''मोतियाँ भी दूँगी, वज्र भी दूँगी।'' लोक कवियों की विचारधारा है कि उस कोयल ने विश्वास किया है कि ये साध्वी नारी श्रीराम की पत्नी हैं और जब उन दोनों का मिलन होगा तो उस कोयल को मोतियाँ और वज्र भी सीता देवी दे सकती हैं। सीता देवी के इस प्रकार कहने के पश्चात कोयल उस पर्ण - कुटीर के पास गई। सदा वृक्षों में ही निवास करने वाली उस पक्षी के लिए वह पर्णकुटी परिचित ही है। उस समय श्रीराम अपने भाई लक्ष्मण के साथ एक चबूतरे पर बैठे हुए थे। कोयल ने उनकी प्रदक्षिणा की और उनके चरणों पर गिर पडी। उन दोनों भाईयों ने उस कोयल को देखकर पहचान लिया कि सुबह ही 'पुन्नाग' (तमाल वृक्ष) वन में उसे देख चुके हैं। और सोचा कि सुबह तो यें हमारे पास नहीं आई अब आकर हमारे चरणों पर गिर पडी। श्रीराम ने वात्सल्य से सोचा कि वह हमारा शरण पाने के लिए आई होगी। इस कारण उन्होंने प्रश्न किया कि किसी ने तुम्हें मारा है? या किसी ने

तुम्हें गाली दी है । जवाब में कोयल ने दोनों भाइयों से विनती की कि उसे किसी ने भी गाली नहीं दी, और न ही किसी ने उसे मारा है, यह कहती हुई वह 'सीता संदेश' को सुनाने लगी । तब दोनों भाइयों ने कहा, सीतादेवी के बिना हम दोनों सन्यासी बन गये हैं और विरागी भी हो गये हैं । फिर राम ने अपनी पत्नी को इस प्रकार का संदेशा भेजा ।

''जुव्विचेट्टुकिंद जूदमाडिन चोटु
राविचेट्टुकिंद रहस्यमुलाडिनचोटु
मामिडिचेट्टुकिंद माटलाडिनचोटु''

अर्थात् ''शमि पेड के नीचे जुआ खेलने की जगह, पीपल पेड के नीचे सरसपूर्ण बातें करने की जगह, आम के पेड के नीचे बातें करने की जगह ।'' इन सब बातों को याद कर श्रीराम कहने लगे -

''ओक शरमुन कूलनेसेदने जानकी !
ओनरूग देत्तुने जानकी !
एलागुनईनानु एलुदुनु
एल संशयम्मु जानकी !''

अर्थात् ''एक ही बाण से हे जानकी ! मैं उन्हें गिरा दूँगा । और जानकी तुम्हें ले आऊँगा । किसी भी तरह तुम्हें पा लूँगा । हे जानकी! क्यों शंका कर रही हो ।'' कहते हुए उन्होंने अभयदान भिजवाया । श्रीराम का संदेश कोयल ले जाकर सीता देवी को बतलाती है । इस वर्णन को कवि ने वाक्यों द्वारा व्यक्त नहीं किया है । कवि के ना बतलाने पर भी विश्वास किया जा सकता है कि कोयल ने उस कार्य को पूरा किया ही होगा । क्योंकि इस कथा में वह पक्षी राम - लक्ष्मण

से परिचित ही है । अब तोते का विषय । यही पक्षी प्रबंध कवियों के वर्णनों में उनके द्वारा रचित नायिकाओं के हाथ में बडे प्यार से विराजमान होती हुई दिखायी देती है । ''सीता जी का गुस्सा'' नामक गीत में वर्णित किया गया है कि सीता - राम के बीच उठने वाले अनबन को इस तोते ने ही समाप्त किया है ।

व्यायाम कर थके - मांदे श्रीराम जब पधारते हैं, उस समय वे सीता देवी से कहते हैं कि ''आकर उनका पसीना पोंछ दे ।'' सीता देवी पति की बातों का पालन नहीं करती । श्रीराम को क्रोध आ जाता है, उन की आँखे लाल हो गईं । खीज के साथ उठकर अपने हाथ में जो फूलों का गुच्छा था उसे उन पर फेंकते हैं । उसी चोट के कारण कोमली सीता मूर्छित हो जाती हैं । तब श्रीराम, सीता देवी की दासियों के साथ ठंडा सुगंधित जल मंगवा कर उस रमणी के ऊपर छिड़कते हैं । उन्हें होश आ जाता है । बेहोशी से तो वे उभर गई लेकिन उनका गुस्सा ठंडा नहीं पडा । गुस्से में वे अपने एक मंजिले के कोप गृह में जाकर पुरानी ओढनी ओडकर लेट गई । यहाँ सीतादेवी द्वारा पाले हुए तोते ने इस स्थिति को परखा । सीतादेवी ने तो सारे द्वार बंद कर लिए । पूरब द्वार में एक छोटे से छेद से होकर तोता अंदर आयी और उनके चरणों के पास बैठ गयी । सीतादेवी ने अपना चेहरा नहीं उठाया, ना ही उसके प्रणाम को स्वीकारा । फिर भी उस तोते ने ही उनसे बोलने का प्रायस किया । तब गुस्से से सीता देवी कहने लगी कि

''वदरके ओ चिलुका ! वद्दु लेम्मनकु
तल पगलकोट्टेनु तन्नि चंपेनु''

''हे तोता ! तंग मत करो ! मुझे उठने के लिए मत कहो । सिर काट दूँगी, मार - मारकर तुम्हारे प्राण ले लूँगी ।'' तब वह तोता श्रीराम के पास गयी और चरणों के पास बैठ गयी फिर उन्होंने भी उस तोते पर ध्यान नहीं दिया । सिर नहीं उठाया । ठीक है, तोते ने खुद ही श्रीराम से बातें शुरू की । तब श्रीराम ने कहा ।

''नेनु चेसिन तप्पु ने चेप्पलेनु
मी सीत चेसिनदि वासिगा चेपुडु
अलसोच्चि ने चेमटलार्चमंटेनु
एमेमि अनदामे एग्गिंपदाये
नाकु कोपमु रादे न्यायंबु चेप्पु?''

अर्थात् ''मैंने जो गलती की है उसे मैं कैसे बता सकता हूँ । लेकिन आपकी सीता ने जो किया है उसे विस्तार से बताऊँगा । थका - मांदा आकर मैंने जब पसीना पोंछने के लिए कहा तो बिना कुछ कहे उसने मेरी बातों की अनसुनी कर दी । न्याय बताओ क्या मुझे गुस्सा नहीं आयेगा ।'' कहते हुए उन्होंने तोते से प्रश्न किया । तोते को कुछ सूझा नहीं, फिर उस तोते ने सोचा कि उन पति - पत्नियों के पारस्परिक गुस्से को केवल लक्ष्मण ही मिटाने में समर्थ हैं । इस कारण वह तोता लक्ष्मण के पास गयी । शिकार जाकर लक्ष्मण उसी समय लौटे थे । तोते ने पति - पत्नी के गुस्से के बारे में बताया । तब लक्ष्मण छटपटाने लगा कि आस - पास की स्त्रियाँ जब सीताजी के गुस्से को कम नहीं कर पायीं तो क्या वह काम मुझसे हो पायेगा । इस पर तोते ने कहा कि तुम ऐसा ना कहो । उन्होंने प्यार से मुझे पाला है । कोई रास्ता दिखाओ । उस रास्ते पर मैं चलूँगी । तब लक्ष्मण ने कहा - ''ठीक है, तुम सीतादेवी

के पास जाओ । बातचीत के दौरान बतलाओ कि रामजी थोड़े से नीरस पड गये हैं । तब सीता देवी तुम से मिन्नतें करेगी । उस समय तुम उन्हें लेकर श्रीराम के पास आ जाओ । आप दोनों के आने तक मैं श्रीराम के गुस्से को कम कर, तैयार रहूँगा ।'' तोते ने ऐसा ही किया । जैसे ही सीतादेवी के कानों में पडा कि रामजी थोडे नीरस पड गए हैं तब झट से उठकर कहने लगीं कि ''मुझे विस्तार से बताओ । तब वह तोता चित्र समान खडी हो गयी । तब सीता देवी उस तोते से मिन्नतें करने लगीं ।

''एर्रनि मुक्कुकु वेयिस्तु वेंडि
पच्चनि रेक्कलकु पईडि पोदिगिस्तु
नीवु पोयेडिन्रोव सेनग वेईस्तु
सेनग तिनि चेईकडग चेलम त्रव्विस्तु
नीरु त्रागि निलुचुंड निम्म वेईस्तु
पालु त्रागि परुंड पंच वेईस्तु
अलसिकूर्चुंड अरूगु वेईस्तु
नीवु पोई रामुनि कावुमनि पलुकु
विल्लु विरिचिन नाटि वेड्कलु चेप्पु
वद्दंटे पोतुंदि वल्लभा ! यनुमु''

अर्थात् ''लाल रंग के नाक के लिए चाँदी के गहने बनवाऊँगी । हरे रंग के पंखों को सोने से भर दूँगी । जिस रास्ते पर तुम चलोगी वहाँ चने के पौधे डलवाऊँगी । चना खाकर हाथ धोने के लिए सोते खुदवाऊँगी । पानी पीकर खडे होने के लिए नीम के पेड उगवाऊँगी । दूध पीकर लेटने के लिए चबूतरा डलवाऊँगी । थक कर बैठने के लिए

आंगन बनवाऊँगी। तुम श्रीराम के पास जाकर मेरी रक्षा करने के लिए कहो। उन्हें धनुष - भंग के विषयों को याद दिलाओ और कहो कि, ''हे वल्लभ ! क्या ये रिश्ते यूँ ही छूट सकते हैं ?''

इस बात को सुनकर तोता कहने लगी।

''रामुनि कलकलु राकूडदेपुडु
वच्चिना सुलुवुगा वदलवु, नीवु
नातोटि वेगमु प्रीतिगा रम्मु !
लक्ष्मणुंडच्चट लावुन्नवाडु !!''

अर्थात् ''राम को कभी भी गुस्सा मत दिलाओ। गुस्सा आ गया तो जल्दी नहीं जायेगा। तुम मेरे साथ जल्दी चलो। लक्ष्मण वहाँ पहले से ही विराजमान हैं।'' तोते के साथ तब सीता देवी जल्दी से श्रीराम के बारह स्तंभो वाले भद्र - गृह में आती है। वहाँ लक्ष्मण अपने भाई की सेवा में निमग्न थे। आने वाली भाभी को देखकर लक्ष्मण ने हँसते हुए कहा - ''मेरे भाई तो इस पृथ्वी के जादूगर हैं। सीता देवी सिर झुकाकर खडी हो गईं। श्रीरामचंद्र जोर से हँस पडे। उन दोनों भाई की हँसी में अपनी भी हँसी मिलाकर तोता भी खिलखिलाकर हँस पडी। सीतादेवी को तब जाकर यथार्थ स्थिति अवगत हुई। तब उसने अपने पाले हुए तोते से पूछा - ''क्यूँ री तोता। झूठी - मूठी बातें क्यों कहीं ? तब बीच में आकर लक्ष्मणजी ने कहा

''नव्वुलकन्नदि नलिनाक्षि! चिलुका
दानि गद्दिंचकु वदिनेरो! नीवु
नीवु पेंचिन चिलुका नीपट्टुनुंडु''

अर्थात् ''हे नलिनाक्षी ! तोते ने तो यूँ ही मजाक में कह दिया। हे भाभी ! उस पर गुस्सा मत करो। तुम्हारे ही द्वारा पाली हुई तोता है, तुम्हारे ही साथ रहेगी।'' उस बात को सुनकर श्रीराम दिल से हँसे। श्रीराम की हँसी से सीतादेवी का गुस्सा कम हो गया। इस प्रकार उस पति - पत्नी के गुस्से को लक्ष्मण जी की सहायता से उस तोते ने खत्म कर दिया। श्रीराम ने तोते से कहा - ''आपकी सीता है।'' सीता देवी से लक्ष्मण ने कहा कि - ''ये आपके द्वारा ही पाली गयी तोता है।'' तोते का यह संदेश वनवास के पूर्व की घटना है। कोयल का संदेश सीतादेवी के कारावास के समय का है। वहाँ भी और यहाँ भी सीतादेवी ने उन पक्षियों को अपने से जो भी हो सके उस प्रकार की रिश्वतों को देने का वादा कर, उन्हें प्रलोभित किया। पाले हुए तोते को जितना प्रलोभित किया, उतना ही प्रलोभन करने का प्रयास उस कोयल के साथ भी किया, जिससे उनका परिचय ही नहीं था।

क्रौंच पक्षी के मरण से प्रारंभ रामायण कथा के साथ पक्षियों का संबंध इस प्रकार रहा है, इसे स्पष्ट करने का प्रयास ही लोक कवियों ने किया है।

* * *

27. सीता - वृक्ष

रामायण का नाम सुनते ही अशोक वन में साल वृक्षों की याद आ जाती है । सीतादेवी अशोक वन के बीच शिंशुपा वृक्ष के नीचे कई हफ्तों तक बैठी रहीं ।

वाली को मारने में श्रीराम समर्थ हैं, इस बात पर सुग्रीव को विश्वास दिलाने के लिए श्रीराम से उन्होंने विनती की कि वे साल वृक्षों को गिरा दें । हनुमान ने अशोक वन को जलाकर रावण की दृष्टि को आकर्षित किया । रामायण में वृक्षों का इतना गहरा संबंध पाया जाता है । रावण के अशोक वन के सौंदर्य का जितना अधिक वर्णन वाल्मीकी ने किया है उतना अयोध्या के उद्यानों का वर्णन उन्होंने नहीं किया है । लेकिन सुंदरकांड में सीता देवी के बारे में सोचते हुए हनुमान ने उन्हें संबोधित करते हुए कहा कि ''वन संचार कुशला ।'' सीता देवी के लिए 'वन' संचार कुशला कहने वाले वाल्मीकी के वचनों का व्याख्यान यहाँ लोक - कवियों ने किया है । सीतादेवी को पेडों से प्यार है, यह बात ''सीता की विदाई'' नामक गीत में व्यक्त हुआ है । जब सीता देवी ससुराल जाने लगीं तब सीता देवी की माँ यह सोचकर दुखित होने लगीं कि अब उसके अपने घर में गेंदों के पौधों को कौन उगा कर बडा करेंगी ? ससुराल में सीता देवी ने अपने आँगन में चमेली के पेड को बोया और यहाँ लोक - कवियों का वर्णन है कि उस पेड पर खूब सारे फूल खिले थे ।

''सीतम्म वाकिटा सिरिमल्लेचेट्टु
सिरिमल्लेचेट्टेमो चितकबूसिंदि

चेट्टू विरगकुंडा कोम्मा वंचंडि
कोम्मा विरगकुंडा पूलु कोयंडि
कोसिना पूलन्नी रासिपोय्यंडि
अंदुलो पेद्दपूलु दंड गुच्चंडि
दंड तीसुकुवेल्लि सीतकिव्वंडि
दाचुको सीतम्मा रामुडंपाडु
दाचुको सीतम्मा ! दाचुकोवम्मा
दाचुकोकुंटेनु दोचुकुंटारू''

अर्थात् ''सीता जी के आंगन में चमेली के पेड पर खूब सारे फूल खिले । इस तरह डाली को झुकाओ कि कहीं पेड न टूटे । डाली टूटे बिना फूलों को तोडो । तोडे हुए फूलों के ढेर लगाओ । उनमें से बडे फूलों को गूँथकर माला बनाओ । उस माला को ले जाकर सीता जी को दो । हे सीता ! इन्हें हिफाजत से रखो क्योंकि इन्हें श्रीराम ने भेजा है । पीछे के दरवाजे पर चोर छिपे हुए हैं छिपा लो सीता, छिपा लो ! छिपाओगी नहीं तो चोरी हो जायेंगे ।'' इस प्रकार फूलों को उगाकर, तोडकर प्यार से माला गूँथकर सब कुछ उनके द्वारा किये जाने पर भी इन लोगों ने इतनी उदात्तता दिखायी कि ये फूल श्रीराम के द्वारा भिजवाए गए हैं । हिफाजत से रखने के लिए चेतावनी भी देते हैं । इतने प्यार से इन्होंने फूलों की माला बनाई कि उसे देखते ही चोरी करने का प्रलोभ हो ही जाता है । वनवास के समय लक्ष्मण ने देखा कि सीता देवी जंगल की प्रकृति को देखकर तन्मय हो गईं । यह देखकर ''ऋषियों के आश्रम'' गीत में वे अपने भाई से कहते हैं कि

''वैदेहि लोकंपु वनिता यनरादु
प्रकृति बेंचिनबिड्ड परमपवित्र।''

अर्थात् ''यह नहीं कह सकते वैदेही इस लोक की स्त्री है। वे तो प्रकृति द्वारा पाली गई परम पवित्र नारी हैं।'' तब राम ने कहा - ''प्रकृति बेंचिनबिड्ड प्रकृति चित्रमुलु परगगांचग कोरि बयलुदेरिंदि''

अर्थात् ''प्रकृति की गोद में पली हुई बेटी प्रकृति की विशेषताओं को जानने के लिए अपनी इच्छापूर्वक चल पडी।'' इसी गीत में यह भी वर्णित किया गया है कि वन की विशेषताओं को देखने के लिए सीता देवी को प्रकृति की विशेषताओं के बारे में श्रीराम श्रद्धा से समझाने भी लगे।

''अनुजसमेतुडई अतिवतो कूडि
श्रीरामुलुंडिरि चित्रकूटमुन
कंदमूल फलंबुलंद सेविंचि
वन चित्रमुलनेल्ल वैदेहि कनगा
श्रीराघवुडु वानि चित्रमुल जेप्पा
सीतामहादेवी चेलगि विनुचुंडि
... .
सौमित्र नडुवगा भूमीशुडपुडु
वनचित्रमुलनु दा वैदेहितोडा
चेप्पुचु मार्गबु नोप्पु मीरंग''

अर्थात् - ''भाई के संग स्त्री के साथ उस चित्रकूट पर्वत पर श्रीराम जी विराजमान हैं। कंद - मूल फलों का सेवन करती हुई सीतादेवी उस

वन की विशेषताओं को देखने लगीं। तब श्रीराम उन दृश्यों की विशेषताओं के बारे में समझाने लगे। सीतादेवी तन्मय होकर सुनती रहीं। जंगल के रास्ते चलते समय जब कभी सीताजी चल ना सकने के कारण पीछे पड जाती तो श्रीराम उनमें फिर से उल्लास और जोश भरने के लिए पेडों को, पशु - पक्षियों को दिखाते हुए मार्ग के थकान को दूर कर दिया करते थे।''

'ऋषियों के आश्रम' गीत में लोक कवियों का वर्णन इस प्रकार है।

''इदिगो वस्तिमि सीता यिंपईन दारि
अदिगो चूडुमु बाट लमरियुन्नविगा
अल्लदिगो तोपु अदिगो चिरुमावि
अल्लवि दर्भलु आवंक जूडु
गोरुवंकलु बारुबारूलु तीरी
गोगणंबुलु चाला बागुन्नवविगो''

अर्थात् ''हे सीता ! देखो अब आ गये एक सुंदर से पथ पर, वहाँ देखो! सारे रास्ते कितने स्पष्ट दिख रहे हैं। वो देखो झाडी, वहाँ आम के पेड, वे सब दर्भ हैं। उस ओर देखो ! कितने सारे मैना कतार में जा रहे हैं। गायों का समूह कितना सुंदर दिख रहा है देखो ! ''इस प्रकार वनवास के उपरांत भी सीतादेवी के मन में पेडों के प्रति प्रेम को जगाने वाले उनके प्रिय श्रीराम जब युद्ध के पश्चात सीतादेवी सहित ऋषि भरद्वाज के आश्रम में पहुँचे। उस संदर्भ में 'सेतु महात्म्य' गीत में विशेष रूप से आश्रम की वृक्ष - संपदा का वर्णन इस प्रकार करते हैं।

''भामिनि गंटिवा भरद्वारजाश्रमं
यिंदलि वृक्षसंपत्ति येंदयिन लेदु
पूलनू ओक कोम्म पिंदेलोककोम्मा
कायलु ओक कोम्मा फलमुलोक कोम्मा
ये कालमुन पंड्लु येडतेगकनुंडु''

अर्थात् ''हे भामा ! भरद्वाज मुनी के आश्रम की यह वृक्ष - संपदा और कहीं भी दिखाई नहीं देती। एक डाली पर फूल हैं तो एक डाली पर कलियाँ। कच्चे फल एक डाली पर तो पके फल एक डाली पर। सभी कालों में फल तो रहेंगे ही।''

धरणी देवी की महानता के बारे में एक संदर्भ में ''ऋषियों का आश्रम'' नामक गीत में सीता देवी, श्रीराम को विवरण देती हुई कहती हैं।

''ऐल्ल जीवुलकुनु तल्लि मा धरणि
विविधमुलगु वृक्षमिल केल्लयी तल्लि''

अर्थात् ''सभी जीवों की माँ है मेरी धरणी। विभिन्न वृक्षों की भी माँ है।'' इसी गीत में ऋषि पत्नियाँ सीता देवी को खजूर, अंगूर, केले, नीम तथा बेर के फल लाकर देती हैं। ये उन्हें लेकर अपनी पति को देती हैं। तब पति प्रश्न करते हैं कि

''पध्माक्षी ई वनमुलो फलमुलन्नी
आरगिंचिना नीकु तृप्तगुनटवे''

अर्थात् ''हे पद्माक्षी ! इस वन में जितने भी फल मिलते हैं उन सबको खाया है। क्या कभी इनसे तृप्ति मिली है ?'' फलों को खाना

सीता देवी को तो अच्छा ही लगता है लेकिन इस बार सीता देवी ने जो जवाब दिया वह कुछ अलग ही है।

''कैकेयीकी मी तंड्रि इच्चिना वरमु
आकुललमू दिनि अडवि ब्रतुकंग
पिन्नत्ता कैकचे चेकूडेगदा
फलमुलकु कोरवेमि परमात्मा मनकु''

अर्थात् ''कैकेयी को आपके पिताजी ने जो वरदान दिये, वह हमें अर्थात् :जंगल में जाकर सूखे पत्ते खाने के लिए ही तो है ना ! छोटी सासू माँ की कृपा से हे परमात्मा ! हमें फलों की कोई कमी नहीं है।'' इस प्रकार सीतादेवी ने व्यंग्य किया।

फलों के प्रति, कंद मूलों के प्रति आसक्त होने के कारण ही जब सीतादेवी अंतःपुर में रहीं, उस समय श्रीराम के गुस्से को खत्म करने के लिए संदेशा ले जाने वाली तोते को रिश्वत के रूप में लड्डू, मिठाई का प्रलोभन न दिखाकर चने के वन और नींबू के पेडों को डलवाने की बात करती हैं। वे पेडों के प्रति प्यार जताने वाली नारी हैं। इस के आलावा उन की पूजा भी वे भक्ति के साथ करती हैं। ऐसे संदभों को भी लोक - कवियों ने दिखाया है।

''संक्षिप्त रामायण'' गीत में सीता देवी कमलों के सरोवर में कमलों की डालियों की पूजा इस प्रकार करती है।

''पद्नालुगु येंड्लु अडवि पालिंचि
मरलि अयोध्यकु मेमु चेरितिमि
मुत्यालतो पूजिस्तु रत्नाला पूजा

माणिक्यालतो पूजा मगुव ने जेस्तु
पट्टुचीरा यिस्तु पद्मायताक्षी''

अर्थात् ''चौदह सालों के वनवास के अनंतर अभी हम अयोध्या में लौटे हैं। अब मैं मोतियों से पूजा करूँगी, रत्नों से पूजा करूँगी, मणिकों से भी मैं पूजा करूँगी। हे पद्मायताक्षी ! तुम्हें रेशमी साडी भी अर्पित करूँगी।'' सीता देवी की इन बातों को सुनकर रामजी ने हँसते हुए व्यंग्य किया कि - ''डाली को प्रणाम किया, सरोवर को प्रणाम किया फिर सरोवर में रहने वाली इन हँसों को भी प्रणाम किया है कि नहीं ? इसी गीत में सीता जी कहती हैं कि ''मैं पेडों को रत्नों से और मोतियों से भी पूजा करूँगी। रेशमी साडियाँ भी दूँगी। लेकिन इन मिन्नतों से किसी भी तरह का कोई भी प्रयोजन वृक्षों के लिए नहीं होगा। फिर भी वृक्षों की पूजा कर मिन्नतें माँगने से उन मिन्नतों के कारण पेडों को और मानवों को भी लाभ ही होगा। लोक कवियों के इस प्रकार के विचारों की उदारता को व्यक्त करने वाली घटना, ''ऋषियों के आश्रम'' गीत में भी पाई जाती है। जंगल में भ्रमण करती हुई सीता देवी वृक्षों को देखकर बहुत ही प्रसन्न हुई।

''जानकी ईवंक जरूगु वृक्षमुला
जूचि यिट्लनि पल्के सोगसु गुल्कंग
कोम्मलारा ? मीरू कोसलेंद्रुडु
ए कष्टमुले लेका हितवु मीरंग
अरण्यवासंबु करमोप्पुनट्लु
जरिपि ययोध्यकु तलरंगजेय

वेडुदु नेनु मिमु वृक्षम्मुलारा
ओषधुलारा ईयुर्विलो मीरु
सकला प्राणुलकुनु चालगा प्राण
दानंबु चेयुचु तगियुन्नवारू
अयोध्यापट्णम्मु नंदिन वेनुका
मुत्याल रत्नाल मुरूवोप्पगानु
पूजिस्तु मिम्मुला पूबंट्लतोनु
तेनेलु पोयुदु तेकुवा मीकु
मिम्मेवरू कोट्टकुंड मेलुगलुगंग
ना विभुनितो चेप्पि नेवेवियैना
चेयिस्तु मीकुनु सिरि गल्गुनटुला
भागीरथिनि मीकु प्रेरिस्तुननुचु
परिपरिविधमुला प्रेमालि म्रोक्क
चूचिरि राघवुलु सुदति सोंपेल्ला''

फिर उन्होंने कहा - ''उस ओर के वृक्षों को देखकर बहुत ही प्यार से जानकी ने कहा कि ''हे वृक्ष ! आप कौशल - नरेश पर किसी भी प्रकार के कष्टों को न आने दें। मैं आप से विनती करती हूँ कि जब तक वनवास खतम कर अयोध्या न लौटें तब तक हमारी रक्षा कीजिए। ''हे औषधियुक्त वृक्ष ! सकल प्राणियों के लिए प्राण दान देने के लिए आप समर्थ हैं। जैसे ही हम अयोध्या नगर चले जायेंगे तब मैं मोतियों से, रत्नों से, फूलों से भरी गाडियों से आप की पूजा करूँगी। शहद लाकर आपको सौंपूँगी। आप की इस तरह रक्षा करूँगी कि आप को कोई काट न डाले। आपकी भलाई के लिए मैं अपने पति से कहकर आपके

लिए सब कुछ करूँगी । आपकी वृद्धि के खातिर भागीरथी से मैं प्रार्थना भी करूँगी । इस प्रकार बार - बार प्रणाम करने वाली अपनी सुंदर पत्नी को राघव ने प्यार से देखा ।''

''सकल प्राणियों के लिए प्राणदान देने वाले हे वृक्ष ! हम जब कुशल - मंगल अयोध्या लौटेंगे तब मैं फूलों से भरी गाडियाँ लाकर आपकी पूजा करूँगी । शहद भी सौंप दूँगी । केवल इतना कहकर वे चुप नहीं हुई, आगे उन्होंने कहा कि मैं अपने पति से कहकर आप को कोई काटे ना उसका भी इंतजाम करूँगी । पेडों को काटना मना है, ये पेडों को तथा मानवों को लाभ दिलाने वाले विषय हैं । एक समय था जब पेडों के पत्तों को भी तोडने पर, सजा होती थी । लेकिन अब जंगल काटकर भवन बना रहे हैं । वृक्ष - संपत्ति नष्ट हो जाये तो उससे मानवों का ही नाश होगा । यह लोक - कवि जानते हैं । सीताजी पेडों को बचाने के लिए ही सभी प्रकार के प्रयत्न करने की बात उठाती है । इस प्रकार सीताजी की मिन्नतें लोक - कवियों के विलक्षण भाव - संपत्ति को व्यक्त करते हैं । पेडों की वृद्धि के लिए जो भी करना हो उन्हें करने के लिए सीताजी तैयार हो गई । गंगा को ही प्रवाहित करवाने का आदेश देने के लिए वे तैयार हो जाती है । इस प्रकार भक्ति एवं प्रेम के साथ मिन्नतें माँगने वाली सीताजी को देखकर श्रीराम ने कहा

''एवरिकि म्रोक्किकतिवे यिंतिरो नीवु
एमनि म्रोक्किकतिवे यिंतिरो नीवु
नी चेता म्रोक्कुला नेनसिरेव्वारु
कोम्मलकु म्रोक्किकतिवा कोलनु म्रोक्किकतिवा
कोलनंदुगला हंसगामिकि म्रोक्किकतिवा''

''हे नारी ! किस - किस को प्रणाम कर रही हो । कौन सी मिन्नतें माँग रही हो ? किससे तुम मिन्नतें कर रही हो ? डालियों से या सरोवर से या फिर सरोवर में रहनेवाली हँस की जाति से ? तब सीताजी ने कहा,

''कोम्मलकु ने म्रोक्क कोलनकु म्रोक्का
कलहंसकु म्रोक्कगालेदु नेनु
वृक्षवर्गमुनकु वेलयंग म्रोक्कि
अडवुल कष्टंबु लापदलेल्ला
तोलगिंच म्रोक्किति तोयजाक्षुंडा''

अर्थात् ''ना मैंने डालियों से मिन्नतें माँगी ना ही सरोवर से और ना सरोवर में रहने वाले हँसों से । मैंने मिन्नतें माँगी तो केवल वृक्षों की वृद्धि के लिए और फिर हमारे लिए जंगलों में कोई कष्ट या विपदायें ना आएँ । इसी कारण मैंने वृक्षों से मिन्नतें माँगी ।''

वृक्ष संपदा के प्रति अपार भक्ति के अलावा उन वृक्षों से संबंधित स्वाद को भी सीताजी अच्छी तरह जानती हैं । इसी कारण जब वे गर्भवती थीं, तब अपनी सासों के समान कच्ची इमली खट्टे साग - सब्जी की माँग न कर टेक पेड में लगे शहद को खाने की इच्छा जाहिर करती हैं ।

लोक साहित्य में सीताजी के ही नहीं बल्कि वृक्षों के प्रति श्रीराम के उदात्त विचार व्यक्त होते हैं । वनवास के समय सीताजी के संग जहाँ भी वे घूमें उस समय का हर पल श्रीराम को याद है । भवभूति ने यही तो कहा है कि घने जंगल में वे उनके लिए प्रिय सखी रही हैं । ''कोयल का संदेश'' गीत में सीताजी के संदेश को सुनकर श्रीराम ने कहा -

''जुव्वि चेट्टुकिंद मनमिद्दरमुनू
जूदमाडिन चोटा जानकी
राविचेट्टु किंदा मनमिद्दरमुनू
रहस्यमाडिना चोटु जानकी
मामिडि चेट्टुकिंद मनमिद्दरमुनू
माटलाडिन चोटु जानकी!''

''शमी पेड के नीचे हे जानकी ! हम दोनों ने मिलकर जुआ खेला । पीपल पेड के नीचे हम दोनों ने मिलकर, हे जानकी! सरस - संवाद किये । हे जानकी ! आम के पेड के नीचे हम दोनों ने मिलकर बातें की ।'' कहते हुए सीताजी के साथ बिताए समय को याद करते हैं । जुआ ही खेला हो, या फिर बातें ही की हों, सब कुछ उन दोनों ने पेडों के नीचे हुए ।

अपनी किया हैं । वे रहस्यमयीं बातें, वो जुआ, इतना ही नहीं ये सब घटनाएं जिस जिस पेड के नीचे घटित हुई हैं, उन सबको भी याद कर वे दुखित हुए ।

अपनी थकान को दूर करने के लिए पेड की छाया से बढ़कर इस सृष्टि में और कोई जगह मिल ही नहीं सकती । एक बार वनवास के आरंभ में सीताजी के संग रामजी महुए के पेड के नीच बैठे हुए थे । उस पेड ने जो ठंडी हवा उन्हें पहुँचाई उस ठंडेपन ने उन्हें उनकी माँ के प्यार की याद दिलायी । ''संक्षिप्त रामायण'' में इसका वर्णन इस प्रकार है ।

''इंतितो कूर्चुंडे इरूविंदक्रिंदा
इरूविंदा नीविंता चल्लनयियुंडि
कौसल्यकंटेनु कडुप्रेमा जूपितिवि''

अर्थात् ''महुए के पेड के नीचे पत्नी के संग श्रीराम बैठे थे'' महुए वृक्ष ? तुमने इतनी शीतलता हम तक पहुँचाई कि माँ कौशल्या से भी बढकर अत्यंत प्रेम जता चुकी हो हे !'' महुए वृक्ष की शीतलता, माँ कौशल्या के प्यार से भी बढकर है । इस प्रकार का विचार प्रशंसनीय है । वनवास के समय जंगलों के रास्ते में चलने वाले सीतादेवी - श्रीराम के थकान को, जिस प्रकार इन वृक्षों ने दूर किया है, उसी प्रकार लोक - कवियों द्वारा रचित 'रामायण' भी महान कल्पवृक्ष समान, मानवों की जीवन यात्रा में माँ की तरह सहलाकर, उन के थकान को मिटाने में समर्थ रहा है । इसे इन वाक्यों द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है ।

''सीतम्मा श्रीरामुडु दारि गदिलिते
पारिजातंपूलू परिमलिंचिनवि''

अर्थात् ''सीताजी और श्रीराम जिस राह पर चलते गए उस राह में पारिजात फूलों ने अपना सुगंध फैला दिया है ।''

* * *